" दामिनी जैसी उन सभी महिलाओं को समिर्पीत जो अपनी अंदर के औरत को मारकर अपने मकसद के लिए जीना छोड़ देती है "

- प्रियांशी जैन

परिचय

पति के मौत के बाद दामिनी को पिछले दस साल किसी मर्द ने स्पर्श नही किया, हवेली में रहनेवाली हर नज़रे दामिनी की जवान शरीर को घूरती, हर हाथ दामिनी के बदन को मसलना चाहते,हर होंठ दामिनी के कौमार्य को पीना चाहते, हवेली में रहनेवाला हर मर्द दामिनी को अपने शरीर से रौंदना चाहता पर हवेली की बहु को छुने की हिम्मत किसी में ना थी।

शायद दामिनी भी शरीर सुख पाना चाहती थी, वे भी किसी मर्द के निचे रौंदा जाना चाहती थी शायद दामिनी भी चाहती थी की कोई उसके कौमार्य को अपने होंठो से लगाये, अपने बदन को मसला जाना शायद उसे भी पसंद आता और क्यों न आता पिछले दस सालो से वो शरीर सुख के लिए तरस गयी है, शादी के महज कुछ महीनों बाद ही तो उसका पति उसे छोड़ गया था। वो बिचारी तो उसे ठीक से देख भी न सकी थी और भगवान ने उसका वो सुख छिन लिया जो उसे देने की चाह तो हर कोई रखता लेकिन देने की हिम्मत कीसीमे न थी।

यह कहानी है एक ऐसी अबला स्त्री की जिसके कदमों में संसार की सारी भोग वस्तुओं का ढेर है लेकिन उसे कोई भी वस्तु रिझाती नही। यह कहानी है ऐसी कुँवारी स्त्री की जो मर्दों से घिरी है पर उसे यौन सुख देने की हिम्मत कोई न करता और यह कहानी है एक ऐसी बहु की जो अपने अंदर की औरत को मारे गुजार रही अपनी पूरी जिंदगी....

वो हवेली आज भी वैसे ही सुनसान थी जैसे की वो पिच्छले 10 साल से थी. आसमान में चाँद पुर नूर पे था और हर तरफ चाँदनी फैली हुई थी. उसके बावजूद हवेली के गलियारे अंधेरे में डूबे हुए थे. दूर से कोई देखे तो इस बात का अंदाज़ा तक नही हो सकता था के इसमें कोई ज़िंदा इंसान भी रहता है. आँगन में सूखी घास, बबूल की ख़त्मियाँ, खुला हुआ बड़ा दरवाज़ा, डाल पे बोलता हुआ उल्लू, हर तरफ मनहूसियत पुर जोश पर ही.

पूरी हवेली में 25 कमरे में जिसमें से 23 अंधेरे में डूबे हुए. सिर्फ़ 2 कमरो में हल्की सी रोशनी थी. एक कमरा था ठाकुर इंद्रदेव सिंग का और दूसरा उनकी बहू दामिनी का. हवेली में फेले हुए सन्नाटे की एक वजह 2 दिन पहले हुई मौत भी थी. मौत हवेली की मालकिन और ठाकुर इंद्रदेव सिंग की बीवी शकुंतला देवी की जो एक लंबी बीमारी के बाद चल बसी थी. उस रात हवेली में मौत का ख़ौफ्फ हर तरफ देखा जा सकता था. मरने से पहले बीमारी में दर्द की वजह से उठी शकुंतला देवी की चीखें जैसी आज भी हर तरफ गूँज रही थी.

मगर हमेशा यही आलम ना था. इस हवेली ने खूबसूरत दिन भी देखे थे. हवेली को इंद्रदेव सिंग के परदादा महाराजा कुबेर सिंग ने बनवाया था. ना तो आसपास के किसी रजवाड़े में ऐसी हवेली थी और ना ही किसी का इतना सम्मान था जितना कुबेर सिंग का था. परंपरा अगली कयि पीढ़ियों तक बनी रही. हर तरफ कुबेर सिंग के कुल पर लोक गीत गाए जाते थे. जो भी हवेली तक आया कभी खाली हाथ नही गया. जो भी गुज़रता, हवेली के दरवाज़े पे सर झुकाके जाता जैसे वो कोई मंदिर हो और यहाँ भगवान बस्ते हों.

आज़ादी के बाद महाराजा की उपाधि तो चली गयी मगर रुतबा और सम्मान वही रहा. लोग आज भी हवेली में रहने वालो को महाराज के नाम से ही पुकारते थे. और यही सम्मान इंद्रदेव सिंग ने भी पाया जब उनका राजतिलक किया गया. और फिर एक दिन पड़ोस के रजवाड़े की बेटी शकुंतला देवी को बहू बनाकर इस हवेली में लाया गया.

इंद्रदेव सिंग को शकुंतला देवी से 4 औलाद हुई. 3 बेटे और एक बेटी. सबसे बड़े बेटे वीरभद्र की शादी दामिनी से हुई और वही अपने पिता जी ज़मीन जायदाद की देखबाल भी करता था. दूसरा बेटा तेजप्रताप सिंग अपने बड़े भाई का हाथ साथ देता था पर ज़्यादा वक़्त अययाशी में गुज़रता था. तीसरा बेटा शमशेर सिंग अब भी विदेश में पढ़ रहा था. और सबसे छहोटी थी सबकी लड़ली श्यामला. 3 भाइयों की दुलारी और घर में सबकी प्यारी इंद्रदेव सिंग की एकलौती बेटी.

हवेली में हर तरफ हसी गूँजती रहती थी. आनेवाले अपनी झोलिया भरके जाते और दुआ देते के कुल का सम्मान सदा ऐसे ही बना रहे और शायद होता भी यही मगर एक घटना ने जैसे सब बर्बाद कर दिया. वो एक दिन ऐसा आया के इंद्रदेव सिंग से उसका सब छीन्के ले गया. उनका सम्मान, खुशियाँ, दौलत और उनका सबसे बड़ा बेटा वीरभद्र सिंग.

एक शाम वीरभद्र सिंग घर से गाड़ी लेके निकला तो रात भी लौटके नही आया. ये कोई नयी बात नही थी. वो अक्सर काम की वजह से रात बाहर ही रुक जाता था इसलिए किसी ने इश्स बात पर कोई ध्यान नही दिया. मुसीबत सुबह हुई जब खबर ये आई के वीरभद्र की गाड़ी हवेली से थोड़ी दूर सड़क के किनारे खड़ी मिली और वीरभद्र का कहीं कोई पता नही था. गाड़ी में खून के धब्बे साफ देखे जा सकता थे. तलाश की गयी तो थोड़ी ही दूर वीरभद्र सिंग की लाश भी मिल गयी. उसके जिस्म में दो गोलियाँ मारी गयी थी.

हवेली में तो जैसी आफ़त ही आ गयी. परिवार के लोग तो पागलसे हो गये. किसी को कोई अंदेशा नही था के ये किसने किया. पहले तो किसी की इतनी हिम्मत ही नही सकती थी के इंद्रदेव सिंग की बेटे पे हाथ उठा देते और दूसरा वीरभद्र सिंग इतना सीधा आदमी था का सबसे हाथ जोड़के बात करता था. उसकी किसी से दुश्मनी हो ही नही सकती थी.

उसके बाद जो हुआ वो बदतर था. इंद्रदेव सिंग ने बेटे के क़ातिल की तलाश में हर तरफ खून की नदियाँ बहा दी. जिस किसी पे भी हल्का सा शक होता उसकी लाश अगले दिन नदी में मिलती. सबको पता था के कौन कर रहा था पर किसी ने डर के कारण कुछ ना कहा. यही सिलसिला अगले 10 साल तक चलता रहा. इंद्रदेव सिंग और उनके दूसरे बेटे तेजप्रताप सिंग ने जाने कितनी लाशें गिराई पर वीरभद्र सिंग के हत्यारे को ना ढूँढ सके.

हत्यारा तो ना मिला लेकिन कुल पर कलंक ज़रूर लग गया. जो लोग इंद्रदेव सिंग को भगवान समझते थे आज उनके नाम पे थूकने लगे. जिसे महाराज कहते थे आज उसे हत्यारा कहने लगे. और हवेली को तो जैसे नज़र ही लग गयी. जो कारोबार वीरभद्र सिंग के देखरेख में फल फूल रहा था डूबता चला गया. इंद्रदेव सिंग ने भी बेटे के गम में शराब का सहारा लिया. यही हाल तेजप्रताप सिंग का भी था जिसे पहले से ही नशे की लत थी. कर्ज़ा बढ़ता चला गया और

ज़मीन बिकती रही.हवेली का 150 साल का सम्मान 10 सालों में ख़तम होता चला गया.

भाग - 1

दामिनी अपने कमेरे में अकेली लेटी हुई थी. नींद तो जैसे आँखो से कोसो दूर थी. बस आँखें बंद किए गुज़रे हुए वक़्त को याद कर रही थी. वो 20 साल की थी जब वीरभद्र सिंग की बीवी बन कर उसने इस हवेली में पहली बार कदम रखा था. पिच्छले 13 सालों में कितना कुछ बदल गया था. गुज़रे सालों में ये हवेली एक हवेली ना रहकर एक वीराना बन गयी थी.

दामिनी पास के ही एक ज़मींदार की बेटी थी. वो ज़्यादा पढ़ी लिखी नही थी और हमेशा गाओं में भी पली बढ़ी थी. भगवान में उसकी श्रद्धा कुछ ज़्यादा ही थी. हमेशा पूजा पाठ में मगन रहती. ना कभी बन सवारने की कोशिश की और ना ही कभी अपने अप्पर ध्यान दिया. उसकी ज़िंदगी में बस 2 ही काम थे. अपने परिवार का ख्याल रखना और पूजा पाठ करना.

पर जब इंद्रदेव सिंग ने उसे पहली बार देखा तो देखते ही रह गये. वो सादगी में भी बला की खूबसूरत लग रही थी. ऐसी ही तो बहू वो ढूँढ भी रहे थे अपने बेटे के लिए. जो उनके बेटे की तरह सीधी साधी हो, पूजा पाठ करती हो और उनके परिवार का ध्यान रख सके. बस फिर क्या था, बात आगे बढ़ी और 2 महीनो में दामिनी हवेली की सबसे बढ़ी बहू बनकर आ गयी.

उसके जीवन में पुरुष का संपर्क पहली बार सुहग्रात को उसके पति के साथ ही था. वो कुँवारी थी और अपनी टाँगें ज़िंदगी में पहली बार वीरभद्र के लिए ही खोली. पर उस रात एक और सच उस पर खुल गया. सीधा साधा दिखनेवाला वीरभद्र बिस्तर पर बिल्कुल उल्टा था. उसने रात भर दामिनी को सोने ना दिया. दर्द से दामिनी का बुरा हाल था पर वीरभद्र था के रुकने का नाम ही नही ले रहा था. वो बहुत खुश था के उसे इतनी सुंदर पत्नी मिली और दामिनी हैरत में अपने पति को देखती रह गयी.

यही समस्या अगले 3 साल तक उनकी शादी में आती रही. वीरभद्र हर रात उसे ठोकना चाहता था और दामिनी की रति क्रिया में रूचि बस नाम भर की थी. वो बस नग्न होकर टांगे खोल देती और वीरभद्र उसपर चढ़कर धक्के लगा लेता. यही हर रात होता रहा और धीरे धीरे वीरभद्र उससे दूर होता चला गया.

दामिनी को इस बात का पूरा ग्यान था के उसका पति उससे दूर जा रहा है पर वो चाहकर भी कुछ ना कर सकी. वीरभद्र बिस्तर पे जैसे एक शैतान का रूप ले लेता और वो उसके आक्रामक अंदाज़ का सामना ना कर पाती. उसके लिए इन सब कामों की ज़रूरत बस बच्चे पैदा करने के लिए थी, ना की ज़िंदगी का मज़ा लेने के लिए. धीरे धीरे बात यहाँ तक आ पहुँची के दोनो बिस्तर पे नंगे होते पर बात नही करते थे. और फिर एक दिन जब वीरभद्र की हत्या का पता चला तो दामिनी की दुनिया ही लूट गयी. वो इतनी बड़ी हवेली में जैसे अकेली रही गयी और पहली बार उसे अपने पति की कमी का एहसास हुआ.

उसके बाद जो हुआ वो उसने बस एक मूक दर्शक बनके देखा. खून में सनी तलवार जैसे हवेली में आम बात हो गयी थी. कोई किसी से बात नही करता था. अगले दस साल तक यही सन्नाटा हवेली में छाया रहा और इन सबका सबसे बुरा असर उसकी सास शकुंतला देवी पर हुआ जो बिस्तर से जा लगी. हर तरह की दवा की गयी पर उनकी बीमारी का इलाज ना हो सका. और 10 साल बाद उन्होने दम तोड़ दिया.

उस रात दामिनी अपनी सास के पास ही थी. घर में और कोई भी ना था. ठाकुर इंद्रदेव सिंग शराब के नशे में कहीं बाहर निकल गये थे. दूसरा बेटा तो कयि दिन तक घर ना आता था और बेटी श्यामला अपने भाई शमशेर के पास विदेश में थी. नौकर तो कब्के हवेली छोड़के भाग चुके थे. बस एक वही थी जो अपनी सास को मरते हुए देख रही थी, वहीं उनके पास बैठे हुए. शकुंतला देवी ने उसका हाथ पकड़ा हुआ था जब उन्होने आखरी साँस ली, पर उससे पहले उन्होने जो कहा उसने दामिनी को हैरत में डाल दिया. मरने से ठीक पहले शकुंतला देवी ने उसकी आँखों में देखा और उससे एक वादा लिया के वो इस हवेली की खुशियाँ वापस लाएगी. दामिनी की समझ में नही आया के कैसे पर एक मारती हुई औरत का दिल रखने के लिए उसने वादा कर दिया. फिर शकुंतला देवी ने जो कहा वो दामिनी की समझ में बिल्कुल नही आया. उनके आखरी शब्द अब भी उसके दिमाग़ में गूँज रहे थे

“ बेटी, औरत का जिस्म दुनिया में हर फ़साद की सबसे बड़ी जड़ है और ऐसा हमेशा से होता आया है. महाभारत और रामायण तक इसी औरत के जिस्म की वजह से हुई. पर इस जिस्म के सहारे फ़साद ख़तम भी किया जा सकता है” और इसके बाद शकुंतला देवी कुछ ना कह सकी.

उसकी सास की कही बात का मतलब अब उसे समझ आ रहा था. मरती हुई उस औरत ने उससे एक वादा लिया और ये भी बता गयी के उस वादे को पूरा कैसे करना है. कैसे इस पूरे परिवार को एक साथ फिर इस हवेली की छत के नीचे लाना है. ये बात अगर आज से दस साल पहले दामिनी ने सुनी होती तो शायद वो अपनी सास को ही थप्पड़ मार देती पर इन 10 सालों में जो उसने देखा था उसके कारण भगवान से उसकी श्रद्धा जैसे ख़तम ही हो गयी थी.

दामिनी अपने बिस्तर से उठी और कुछ सोचती हुई खिड़की तक गयी. खिड़की से बाहर का नज़ारा देखकर उसका रोना छूट पड़ा. आज जो आँगन कब्रिस्तान जैसा लग रहा है कभी इसी आँगन में देर रात तक महफ़िल जमा होती थी. नाच गाना होता था. हसी गूंजा करती थी. उसने अपने आँसू पोंचछते हुए खिड़की पर पर्दे डाल दिए और दरवाज़ा अंदर से बंद कर दिया. फिर उसने पलटके कमरे में लगे बड़े शीशे में अपने आप को देखा.

वो 33 साल की हो चुकी थी. पिच्छले 10 साल में उसने सिर्फ़ और सिर्फ़ दुख देखे थे पर इन सबके बावजूद जो एक चीज़ नही बदली थी वो था उसका हुस्न. वो आज भी वैसे ही खूबसूरत थी जैसे आज से 13 साल पहले जब दुल्हन बनकर इस कमरे में पहली बार आई थी. हन उस वक़्त थोड़ी दुबली पतली थी और अब उसका पूरा जिस्म गदरा गया था. तब वो एक लड़की थी और आज एक औरत. कमरे में ट्यूबलाइज्ट की सफेद रोशनी फेली हुई थी और नीले रंग की साड़ी में उसका रूप ऐसा खिल रहा था जैसे चाँदनी में किसी झील का पानी.

दामिनी ने अपना हाथ अपने कंधे पे रखा और साड़ी का पल्लू सरका दिया. दूसरे ही पल शरम से खुद उसकी अपनी आँखें झुक गयी. पहली बार आज उसने अपने आपको इस नज़र से देखा था. ये नज़र तो उसने अपने अप्पर तब भी नही डाली थी जब वो शादी के जोड़े में तैय्यार हो रही थी. उसने धीरे से अपनी नज़र उठाई और फिर अपने आप को देखा. नीले रंग का ब्लाउस और उसमें क़ैद उसके स्तन और नीचे उसकी गोरी नाभि. उसके होंठो पे एक हल्की सी मुस्कुराहट आई और उसने टेढ़ी होकर अपनी स्तनों को निहारा. जैसे दो पर्वत सर उठाए खड़े हों.

उसने अपना एक हाथ अपने पेट पे फेरते हुए अपने दाई तरफ के स्तन पे रखा और जैसे अपने आप ही उसके हाथ ने उसकी स्तन को दबा दिया. दूसरे ही पल उसके शरीर में एक ल़हेर से दौड़ गयी और उसके घुटने कमज़ोर से होने लगे. पहली बार उसने अपने आप को इस अंदाज़ में छुआ था और आज जो महसूस कर रही थी वो तो तब भी महसूस ना किया था जब यही स्तन उसके पति के हाथों में होती थी, जब वो इनको अपने मुँह में लेके चूसा करता था.

दामिनी ने जैसे एक नशे की सी हालत में अपने ब्लाउस के बटन खोलने शुरू कर दिए. उसे 10 साल से किसी मर्द ने नही छुआ था और 10 साल में ना ही कभी उसके जिस्म ने कोई ख्वाहिश की पर आज उसकी सास की कही बात ने सब कुछ बदल दिया. एक एक करके ब्लाउस के सारे बटन खुल गये और अगले ही पर वो सरक कर नीचे ज़मीन पे जा गिरा. ब्रा में अपनी स्तनों को देखकर दामिनी एक बार फिर शर्मा सी गयी पर अगले ही पल नज़र उठाकर अपने आपको देखने लगी. सफेद रंग की ब्रा में उसकी बड़ी बड़ी स्तन जैसे खुद उसपर ही क़यामत ढा रही थी. ब्रा उसकी स्तनों पे कसा हुआ था और आधे स्तन ब्रा से उभरकर बाहर आ रहे थे. जैसे किसी ग्लास में शराब ज़रूरत से ज़्यादा डाल दी गयी हो और अब छलक कर बाहर गिर रही हो. दामिनी अपना एक हाथ कमर तक ले गयी और ब्रा के हुक को खोलने की कोशिश करने लगी. जैसे ही खुद उसके हाथ का स्पर्श उसकी नग्न कमर पे हुआ, उसे फिर अपने घुटने कमज़ोर होते से महसूस हुए.

धीरे से ब्रा का हुक खुला और अगले ही पल उसके दोनो स्तन आज़ाद थे. दो पर्वत जो 33 साल की उमर होने के बाद भी ज़रा नही झुके थे. आज भी उसी अकड़ से अपना सर उठाए मज़बूत खड़े थे. दामिनी को खुद अपने अप्पर ही गर्व महसूस होने लगा. उसके दोनो हाथों ने उसकी स्तनों को थाम लिया और धीरे धीरे सहलाने लगे. उसके मुँह से एक ठंडी आह निकल गयी और पहली बार उसे अपनी टाँगो के बीच नमी का एहसास हुआ और उसका ध्यान अपने शरीर के निचले हिस्से की तरफ गया. उसकी टांगे मज़बूती से एक दूसरे से चिपक गयी जैसे बीच में उठती ख्वाहिश को पकड़ना चाह रही हो और स्तनों पर उसकी पकड़ और सख़्त हो गयी, जैसे दबके बरसो से दबी आग को बाहर निकलना चाह रही हो.उसने फ़ौरन अपनी साड़ी को पेटिकोट से निकाला और बिस्तर की तरफ उछाल दिया.

फिर उसके हाथ पेटिकोट को ऐसे उतरने लगे जैसे उसमें आग लग गयी हो. थोड़ी ही देर बाद उसका पेटिकोट भी बिस्तर पर पड़ा था और और वो सिर्फ़ एक पॅंटी पहने अपने आप को निहार रही थी. और तब उसे एहसास हुआ के उसने पिच्छले 10 साल में अपने उपेर ज़रा भी

ध्यान नही दिया. पॅंटी ने उसकी योनि को तो ढक लिया था पर दोनो तरफ से बाल बाहर निकल रहे थे. वजह ये थी के 10 साल में उसने एक बार भी नीचे शेव नही किया था. पति के मरने के बाद कभी ज़रूरत ही महसूस नही हुई. जब वो अपनी आर्म्स के नीचे के बाल साफ करती तो बस वही रुक जाती . कभी योनि की तरफ ध्यान ही ना जाता. यही सोचते हुए उसने अपनी पॅंटी उतारी और पहली बार अपने आपको पूरी तरह से नग्न देखा.

शीशे में नज़ारा देखकर दामिनी के मुँह से सिसकारी निकल गयी. उसे अपनी पूरी जवानी कभी एहसास ना हुआ के वो इतनी खूबसूरत है. कभी पूजा पाठ से ध्यान ही ना हटा. जैसे आज उसने अपने आपको पहली बार पूरी तरह नग्न देखा हो. उसका लंबा कद,बड़े बड़े भारी स्तन, पतली कमर और भारी उठी हुई नितंब. दो लंभी लंबी सफेद टाँगें और उनकी बीच बालों में छिपि उसकी योनि. वो पलटी और अपनी कमर से लेके अपनी नितंब तक को निहारा. वो जो देख रही थी वो किसी भी मर्द को पागल कर देने के लिए काफ़ी थी.

ये सोचते हुए वो मुस्कुराइ. बस एक चीज़ से छूट कारा पाना है और वो थे उसकी योनि को छिपा रहे लंबे बाल. उसने अपना एक हाथ उठे हुए बालों पे फिराया और चौंक पड़ी. बाल गीले थे. उसका हाथ टाँगो के बीच आया तो एहसास हुए के खुद अपने आपको देख कर उसकी योनि गीली हो चुकी थी. जैसे ही उसने अपनी योनि को थोड़ा सहलाया उसके घुटने जवाब दे गये और वो ज़मीन पे गिर पड़ी. आज पहली बार उसने जाना के योनि गीला होना किसे कहते हैं और क्यूँ उसका पति उसे ठोकने से पहले लिंग पे तेल लगता था. क्यूंकी कभी भी उसकी योनि गीली नही होती थी और इसलिए उसे लिंग लेने में तकलीफ़ होती थी.

दामिनी ने ज़मीन पे पड़े पड़े ही अपने घुटने मोड और टांगे फैलाई. योनि खुलते ही उसे एसी की ठंडक का एहसास अपनी योनि पे हुआ. हाथ योनि तक आया और फिर धीरे धीरे उपर नीचे होने लगा. उसकी आँखें आनंद के कारण बंद होती चली गयी और मुँह से एक लंबी आ निकल गयी. हाथ थोड़ा और नीचे आया तो वो जगह मिली जहाँ उसके पति का लिंग अंदर घुसता था. जगह मिली तो एक अंगुली अपने आप ही अंदर चली गयी. जोश में दामिनी ने गर्देन झटकी तो शीशे में फिर खुदपे नज़र पड़ी. नीचे कालीन पे पड़ा उसका नंगा जिस्म जैसे दुनिया की सबसे खूबसूरत चीज़ लग रहा था.

बिखरे बाल, मूड़ी कमर, छत की तरफ उठे हुए स्तन, जोश और एसी की ठंडी हवा के कारण सख़्त हो चुके निपल्स, खोली हुई लाबी टाँगें, गीली खुली हुई उसकी योनि और उसकी योनि को सहलाता उसका हाथ. इस नज़रे ने खुद उसके जोश को सीमा के पार पहुँचा दिया और फिर जैसे उसकी योनि और हाथ में एक जंग छिड़ गयी. मुँह से लंबी आह निकालने लगी और बदन अकड़ता चला गया.

जब जोश का तूफान ठंडा हुआ तो दामिनी के जिस्म में जान बाकी ना रही थी. उसने अपने आपको इतना कमज़ोर कभी महसूस ना किया था. बदन में जो ल़हेर उठी थी आज से पहले कभी ना उठी थी. उसकी योनि से पानी निकल कर उसकी नितंब तक को गीला कर चुक्का था. उसने फिर अपने आप को शीशे में निहारा तो मुस्कुरा उठी. आज जैसे उसने अपने आप को पा लिया था. वो थोड़ी देर वैसे ही पड़ी अपने नंगे जिस्म को देखती रही और फिर जब

उठने की कोशिश की तो दर्द की एक ल़हेर उसके सर में उठी. अपने सर पे हाथ फेरा तो 2 बातों को एहसास हुआ. एक के उसने जोश में अपना सर ज़मीन पे पटक लिया था जिसकी वजह से सर में दर्द हो रहा था और दूसरा योनि सहलाते गर्मी इतनी ज़्यादा हो गयी थी के योनि से बाल तक तोड़ लिए थे जो अभी भी उसकी उंगलियों के बीच फसे हुए थे. उसने अपने सर को सहलाया और अचानक उसकी हसी छूट पड़ी. आज उसे पता था के उसे क्या करना है.

दामिनी यूँ ही ज़मीन पे काफ़ी देर तक नग्न ही पड़ी रही और उसे पता ही नही चला के कब उसकी आँख लग गयी. जब नींद खुली तो सुबह के 5 बाज रहे थे.उसने कल रात ही सोच लिया था के उसे क्या करना है और कैसे करना है. अब तो बस सोच को अंजाम देने का वक़्त आ गया था.

उसने उठकर अपने कपड़े पहने और बाल ठीक करके नीचे आई. घर में अभी भी हर तरफ सन्नाटा था. वो खामोश कदम रखते अपने ससुर के कमरे तक पहुँची. दरवाज़ा खुला था. वो अंदर दाखिल हो गयी. ठाकुर इंद्रदेव सिंग नशे में धुत सोए पड़े थे. शराब की बॉटल अभी तक हाथ में थी. एक नज़र उनपर डालकर दामिनी का जैसे रोना छूट पड़ा. एक वक़्त था जब इंद्रदेव सिंग का इंद्रदेव सिंग हर तरफ फेला था. हर कोई उन्हें इज़्ज़त की नज़र से देखता था, उनका अदब करता था. शराब को कभी उन्हें कभी भी हाथ ना लगाया था. और आज उसी इंसान से हर कोई नफ़रत करता है, हर तरफ उसके नाम पे थुका जाता है.

दामिनी ने अपने ससुर के हाथ से शराब की बॉटल लेके एक तरफ रख दी. अगर हवेली की इज़्ज़त को दोबारा लाना है तो सबसे पहले उसे अपने ससुर को इस 10 साल की लंबी नींद से जगाना होगा, ये बात वो बहुत आछे से जानती थी. एक इंद्रदेव सिंग ही हैं जो सब कुछ दोबारा ठीक कर सकते हैं और अभी तो एक सवाल का जवाब उसे और चाहिए थे, के उसके पति को मारने की हिम्मत किसने की थी. किसकी जुर्रत हुई थी के हवेली की खुशियों पे नज़र लगाए.

दामिनी बाहर बड़े कमरे में रखे सोफे पे आके बैठ गयी. उसे इंतेज़ार था घर के एकलौते नौकर दामूकाका का. दामूकाका ने अपनी सारी ज़िंदगी इसी हवेली की सेवा करते गुज़ार दी थी और बुढ़ापे में भी अपने ज़िंदगी के आखरी दीनो में हवेली का वफ़ादार रहा. उसने वो सब देखा जो हवेली में हुआ पर कभी गया नही. यूँ तो अब वो ही हवेली का सारा काम करता था पर अब उसके कामों में एक काम और जुड़ गया था. 24 घंटे नशे में धुत ठाकुर का ख्याल रखना. उसके दिन की शुरुआत भी ठाकुर की जगाने और उनके नहाने का इन्तेजाम करने से ही होती थी.

थोड़ी ही देर में दामिनी को नौकर के कदमों की आहट सुनाई दे गयी.

“अरे बहू आप? इतनी सुबह?” दामूकाका ने पूछा.

“हां वो आपसे कुछ काम था. मेरा कल माँ दुर्गा का व्रत था और आज पूजा के बाद ही मैं कुछ खा सकती हूँ. अभी देखा तो घर में पूजा का समान ही नही है. आप लाल मंदिर जाकर पूजा

की सामग्री ले आइए. क्या क्या लाना है मैं सब इस काग़ज़ पे लिख दिया है” दामिनी ने काग़ज़ का एक टुकड़ा दामूकाका की तरफ बढ़ाते हुए कहा. लाल मंदिर हवेली से तकरीबन 100 किलोमीटर की दूरी पे था और दामूकाका 4-5 घंटे से पहले वापिस नही आ सकता था ये बात दामिनी अच्छी तरह जानती थी.

“जैसा आप कहें” दामूकाका ने काग़ज़ का टुकड़ा लेते हुए कहा. “ पर घर का काम?”

“वो सब मैं देख लूँगी. आप जल्दी ये सब समान ले आइए” दामिनी ने उसे जाने का इशारा करते हुए कहा.

बहू की भगवान में कितनी शरद्धा है. कितना पूजा पाठ करती है और फिर भी उपेरवाले ने बेचारी को भरी जवानी में ऐसे दिन दिखाए. ये सोचता हुआ दामूकाका धीरे धीरे दरवाज़े की तरफ बढ़ गया.

बाहर सवेरे का सूरज दिखना शुरू हो गया था. अब वक़्त था ठाकुर को जगाने का. दामिनी अपने कमरे में पहुँची और अपनी ब्रा और पॅंटी उतार फेंकी. विधवा होने के कारण उसे हमेशा सफेद सारी में ही रहना पड़ता था पर उसमें भी उसका हुस्न देखते ही बनता था. ब्रा ना होने के कारण सफेद ब्लाउस में उसकी दोनो स्तन हल्की हल्की नज़र आने लगी थी. दामिनी ने आईने में एक नज़र अपने उपेर डाली और सारी का पल्लू थोड़ा सा एक तरफ कर दिया और ब्लाउस का उपेर का एक बटन खोल दिया. सफेद ब्लाउस में अब उसकी स्तन पल्लू ना होने के कारण और ज़्यादा नज़र आने लगी थी. निपल तो साफ देखा जा सकता था और ब्लाउस का एक बटन खुल जाने के बाद उसका क्लीवेज किसी की भी धड़कन रोक देने के लिए काफ़ी था.

अपने आप को देखकर दामिनी फिर मुस्कुरा उठी.वो अभी ठाकुर को जाकर जगाने का सोच ही रही थी के नीचे से इंद्रदेव सिंग की आवाज़ आई. वो चिल्लाकर भुसन को आवाज़ दे रहे थे. दामिनी ने जल्दी से अपना पल्लू ठीक किया, सर पे घूँघट डाला और तेज़ कदमो से चलती नीचे बड़े कमरे में आई.

“जी पिताजी”

उसकी आवाज़ सुन इंद्रदेव सिंग पलटे.

“दामूकाका कहाँ है बहू”

“जी उन्हें मैने लाल मंदिर भेजा है. घर में पूजा की सामग्री नही है. मेरा कल से व्रत था जो मुझसे पूजा के बाद ख़तम करना है” दामिनी ने सोचा समझा जवाब दिया.

“ह्म. ठीक है” इंद्रदेव सिंग एक नज़र बहू पे डाली और कुछ कह ना सके पर चेहरे पे आई झुंझलाहट दामिनी ने देख ली थी.

“आपके नहाने का पानी हमने गरम कर दिया है और बाथरूम में है. आप नहा लीजिए तब तक हम नाश्ता बना देते हैं” दामिनी ने कहा

इंद्रदेव सिंग अब भी नशे में धुत थे ये बात दामिनी से छुपि नही. कदम अब भी लड़खड़ा रहे थे.

“ठीक है” कहते हुए इंद्रदेव सिंग वापिस अपने कमरे में जाने के लिए पलते और लड़खड़ा गये. घुटना सामने रखे सोफे से टकराया और वो गिरने लगे. दामिनी ने फ़ौरन आगे बढ़के सहारा दिया और इस चक्कर में उसकी सारी का पल्लू उसका सर से सरक कर नीचे जा गिरा.

“संभलके पिताजी” दामिनी ने अपने ससुर के सीने के दोनो तरफ बाहें डाली और उन्हें गिरने से बचाया. इंद्रदेव सिंग का एक हाथ उसके सारी के बीच नंगे पेट पे आया और दूसरा उसके कंधे पे. कुछ पल के लिए उसका सीना दामिनी की स्तनों से दब गया. जब संभले तो एक नज़र दामिनी पे डाली. वो अभी तक उन्हें सहारा दे रही थी इसलिए सारी का पल्लू ठीक नही किया था. इंद्रदेव सिंग ने आज दूसरी बार उसका चेहरा देखा था. पहली बार जब उसे पहली बार उसके बाप के घर देखा था और आज. वो आज भी उतनी ही सुन्दर लग रही थी, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा. और फिर नज़र चेहरे से हटके उसके गले से होती उसकी स्तनों पे आ गयी जो ब्रा से बाहर निकलके गिरने को हो रही थी. सफेद रंग के ब्लाउस में निपल साफ नज़र आ रहे थे. दूसरे ही पल उन्होने शरम से नज़र फेर ली.

पर ससुर की नज़र को दामिनी से बची नही. वो जानती थी के ससुर जी ने वो सब देख लिया है जो वो दिखाना चाहती थी. जब इंद्रदेव सिंग संभले तो उसने अलग हटके अपने सारी ठीक करी.

“आप थोड़ी देर यहीं बैठ जाइए. मैं तब तक आपके लिए चाय ला देती हूँ” कहते हुए उसने ससुर जी को वहीं बिठाया और किचन की तरफ बढ़ गयी. किचन में जाकर उसने एक प्याली में चाय निकाली और फिर ब्लाउस में से वो छहोटी से बॉटल निकाली जो उसकी माँ ने शादी से पहले उसे दी थी.

“ये एक जड़ी बूटी है. ये पुरुष में काम उत्तेजना जगाती है.इसे अपने पास रखना. अगर कभी तेरा पति बिस्तर पे तेरा साथ ना दे रहा हो तो उसे ये पीला देना. फिर वो तुझे रात भर सोने नही देगा” ये बात उसकी माँ ने उसे मुस्कुराते हुए बताई थी. उस वक़्त दामिनी ये बात सुनके शरम से गड़ गयी थी और उसका दिल किया था के इसे फेंक दे. पर फिर जाने क्या सोचकर रख ली थी और आज यही चीज़ उसके काम आ रही थी. माँ तो रही नही पर उनकी चीज़ आज काम आई सोचते हुए दामिनी ने आधी बॉटल चाय की प्याली में मिला दी.

ठाकुर को चाय की प्याली थमाकर वो उनके नहाने का पानी बाथरूम में रखने चली गयी. वापिस आई तो ठाकुर चाय ख़तम कर चुके थे.

“हमें तो पता ही नही था के आप इतनी अच्छी चाय बनाती हैं बेटी” इंद्रदेव सिंग ने कहते हुए

चाय की प्याली नीचे रखी

“शुक्रिया पिताजी” कहते हुए दामिनी चाय की प्याली उठाने को झुकी और इंद्रदेव सिंग का कलेजा उनके मुँह को आ गया.

बहू के झुकते ही उसका क्लीवेज फिर उनकी आँखो के सामने एक पल के लिए आया और उन्होने अपने जिस्म में एक हरकत महसूस की. लिंग ने जैसे एक ज़माने के बाद आज अंगड़ाई ली हो. ठाकुर को अपने उपेर आश्चर्या हुआ. वो हमेशा सोचते थे के अपने काम पे उन्हें पूरा काबू है पर आज उनकी बेटी समान बहुर को देख कर उनका जिस्म उन्हें धोखा दे रहा था. उन्हें इस बात का ज़रा भी एहसास नही था के ये कमाल उनकी चाय में मिली जड़ी बूटी का था.

दामिनी चाय की प्याली रखकर वापिस आई तो देखा के ठाकुर उठने की कोशिश कर रहे हैं पर नशे के कारण कदम लड़खड़ा रहे थे. उसने फिर आगे बढ़के सहारा दिया.

“आइए हम आपको बाथरूम तक ले चलते हैं” कहते हुए दामिनी ने ठाकुर को सहारा दिया. ठाकुर इंद्रदेव सिंग बहू का कंधा पकड़के खड़े हुए. दामिनी ने एक हाथ से उनका पेट पकड़कर एक हाथ से उनका दूसरा हाथ पकड़ रखा था जो उसके कंधे पे था. उसके हाथ की नर्माहट और उसके जिस्म की गर्माहट इंद्रदेव सिंग साफ महसूस कर सकते थे. अंजाने में ही उनकी नज़र फिर बहुर के ब्लाउस पे चली गयी. क्लीवेज तो ना दिखा क्यूँ सारी पूरी तरफ से स्तनों के उपेर थी पर इस बात का अंदाज़ा ज़रूर हो गया के ब्लाउस का अंदर बहुर की स्तन कितनी बड़ी बड़ी हैं.

धीरे कदमों से दोनो बाथरूम तक पहुँचे. ठाकुर को अंदर छोड़कर दामिनी बाहर कमरे में आई ही थी के अंदर बाथरूम में ज़ोर की एक आवाज़ आई. वो भागकर फिर बाथरूम में पहुँची तो देखा के इंद्रदेव सिंग नीचे गिरे पड़े थे.

“ओह पिताजी. आपको चोट तो नही आई” उसने अपने ससुर को उठाके बिठाया.

“नही कोई ख़ास नही. पेर फिसल गया था पर मैने दीवार का सहारा ले लिया इसलिए ज़्यादा ज़ोर से नही गिरा.” ठाकुर ने अपनी कमर सहलाते हुए जवाब दिया.

“ये कम्बख़्त दामूकाका. इसे पता है के हमें नहलाने का काम इसका है फिर भी सुबह सुबह गया ” ठाकुर ने गुस्से में कहा.

“ग़लती हमारी है पिताजी. हमने भेजा था.” दामिनी ने कहा

“फिर भी. उसे सोचना चाहिए था.” ठाकुर ने फिर अपनी कमर पे हाथ फिराया.

“लगता है आपकी कमर में चोट आई है. हमें दिखाइए” कहते हुए दामिनी ठाकुर के पिछे आई

और इससे पहले के वो कुछ कहते उनके कुर्ते को उपेर उठाकर कमर देखने लगी

इंद्रदेव सिंग जैसे हक्के बक्के रह गये. वो मना करना चाहते थे पर बहू ने इंतेज़ार ही नही किया.

“ज़्यादा चोट नही आई पिताजी. हल्की सी खरोंच है” दामिनी ने कुर्ता फिर नीचे करते हुए कहा.

“ह्म्म्म्म...” ठाकुर बस इतना ही कह सके.

“आप बैठिए. हम आपको नहला देते हैं वरना आप फिर गिर जाएँगे.” दामिनी ने कहा

ठाकुर उसे मना करना चाहते थे पर शरीर में उठी काम उत्तेजना ने चुप कर दिया. दामिनी ने उनका कुर्ता पकड़के उतारा और ठाकुर ने अपने दोनो हाथ हवा में उठाकर उसकी मदद की. अब जिस्म पे सिर्फ़ एक धोती रह गयी.

“घूँघट में नहलाओगी? कुछ नज़र आएगा?” ठाकुर ने मुस्कुराते हुए पूछा.

दामिनी ने अपने चेहरे से घूँघर हटा दिया और सारी का पल्लू अपनी कमर में पेटिकोट के साथ फँसा लिए. अब उसका पल्लू उसके ब्लाउस के बीच से जा रहा था और एक भी छाती को नही ढक रहा था. इंद्रदेव सिंग ने उसका चेहरे को साफ तरह इतनी नज़दीक से पहली बार देखा था. उन्होने उसपे एक भरपूर नज़र डाली और दिल ही दिल में तारीफ किए बिना ना रह सके. और फिर नज़र जैसे अपने आप उसकी स्तनों से आके चिपक गयी जो अब पल्लू हट जाने के वजह से ब्लाउस में साफ नज़र आ रही थी.

दामिनी ने अपने ससुर के शरीर पे पानी डालना शुरू किया. पानी वो इस अंदाज़ में डाल रही थी के आधा पानी ठाकुर के उपेर गिरता और आधा उसके अपने उपेर. थोड़ी ही देर में ठाकुर के साथ साथ वो भी पूरी तरह भीग चुकी थी. उसका ब्लाउस उसकी स्तनों से चिपक गया था. अंदर ब्रा ना होने के कारण अब उस ब्लाउस का होना ना होना एक बराबर था. वो ठाकुर के सामने खड़ी थी जिसकी वजह से उसकी स्तनों का भरपूर नज़ारा उसके ससुर को मिल रहा था. उसने साबुन उठाया और अपने सासूस के सर पे लगाना शुरू किया.

उधर इंद्रदेव सिंग का अपने उपेर काबू रखना मुश्किल हो रहा था. सालों से उन्होने किसी को नही ठोका था और आज एक औरत का जिस्म इतने करीब था. उनकी बहू झुकी हुई उनके सर पे साबुन लगा रही थी. पानी से भीगा ब्लाउस अब जैसे था ही नही. उसकी दोनो स्तन उनके सामने साफ नज़र आ रही थी. दामिनी उनके इतना करीब थी के वो अगर अपना मुँह हल्का सा आगे कर दें तो उसके क्लीवेज को चूम सकते थे.

दामिनी घूमकर ठाकुर के पिछे आई और कमर पे साबुन लगाने लगी. बुढ़ापे में भी अपने ससुर

का जिस्म देखकर उसकी मुँह से जैसे वाह निकल पड़ी थी. इस उमर में इतना तन्दुस्त जिस्म. बुढ़ापे का कहीं कोई निशान नही,चौड़ी छाती, मज़ब्बूत कंधे. उसे इस बात का भी अंदाज़ा था के ठाकुर एकटूक उसकी स्तनों को ही घूर रहे थे और यही तो वो चाहती भी थी. अचानक वो आगे को गिरी और और अपनी दोनो स्तन ठाकुर के कंधो पे रखके दबा दी.

“माफ़ कीजिएगा पिताजी. पेर फिसल गया था” कहते हुए तो खड़ी हुई और पानी डालकल साबुन धोने लगी.

अचानक उसकी नज़र बैठे हुए ठाकुर की टाँगो की तरफ पड़ी और उसकी आँखें खुली रह गयी. उसके ससुर का लिंग खड़ा हुआ था ये धोती में भी साफ देखा जा सकता था. साफ पता चलता था के लिंग कितना लंबा और मोटा है. दामिनी को पहली बार अंदाज़ा हुआ के लिंग इतना लंबा और मोटा भी हो सकता है. उसके पति का तो शायद इसका आधा भी नही था. एक बार को तो उसे ऐसा लगा के हाथ आगे बढ़के पकड़ ले.अपने दिल पे काबू करके दामिनी ने नहलाने का काम ख़तम किया और मुड़कर बाथरूम से बाहर निकल गयी.

इंद्रदेव सिंग की नज़र तो जैसे बहू की स्तनों से हटी ही नही. जब वो नहलाकर जाने के लिए मूड़ी तो उनका कलेजा जैसे फिर उनके मुँह को आ गया. सारी भीग जाने की वजह से दामिनी की नितंब से चिपक गयी थी और नितंब के बीच की दरार में जा फासी थी. उसकी उठी हुई नितंब की गोलैईयों को देखकर ठाकुर के दिल में बस एक ही बात आई.

“बहुत सही नाम रखा इसके माँ बाप ने इसका. दामिनी”

पानी में भीगी दामिनी जैसे भागती हुई अपने कमरे में पहुँची. इस सारे कार्यक्रम में उसका खुद का जिस्म जैसे दहक उठा था. अगर वो 2 मिनट और बाथरूम में रुक जाती तो उसे पता था के वो खुद अपने ससुर का लिंग अपने हाथ में ले लेती. कमरे में घुसते ही उसे अपने जिस्म से भीगे कपड़े उतार के फेकने शुरू किए. नग्न होकर वो बिस्तर पे जा गिरी और एक बार फिर उसकी उंगलियो की योनि से जुंग शुरू हो गयी.

उधेर दामिनी के जाते ही इंद्रदेव सिंग का हाथ अपनी धोती तक पहुँच गया. उन्हें याद भी ना था के आखरी बार अपने हाथ से कब काम चलाया था उन्होने. शायद बचपन में कभी. और आज बहू ने उनसे ये काम बुढ़ापे में करवा दिया. लिंग को हाथ से हिलाते इंद्रदेव सिंग ने जैसे ही बहू के नंगे जिस्म की कल्पना अपने नीचे की तो पुर शरीर में जैसे रोमांच की एक ल़हेर सर से पावं तक दौड़ गयी.

योनि में लगी आग ठंडी होकर जब उंगलियों पे बहने लगी तो दामिनी ने उठकर अपने कपड़े समेटे. दिल तो चाह रहा था के अभी ससुर जी के सामने जाके टांगे खोल दे पर उसने अपने उपेर काबू रखा. पहेल उसने इंद्रदेव सिंग से ही करनी थी वरना सारा खेल बिगड़ सकता था. उसे ऐसी बनना था के इंद्रदेव सिंग लट्तू की तरह उसी की आगे पिछे घूमता रहे. कपड़े बदलकर भीगे हुए कपड़ो को सूखने के लए वो अपने कमरे की बाल्कनी में आई तो उसे अपना पहले देवर तेजप्रताप सिंग की गाड़ी आती दिखाई दी.

तेजप्रताप सिंग को ज़्यादातर लोग कुल का कलंक कहते थे. वजह थी उसकी अययाशी की आदत. औरतों के बाज़ार में उसका आना जाना था, नशे की उसे लत थी. अक्सर हफ्तों तक घर वापिस नही आता था पर किसी की हिम्मत कभी नही हुई के उसे पलटके कुछ कहे. ऐसा रौब था उसका. उसका बाप तक उसके आगे कुछ नही कहता था. तेज अपनी मर्ज़ी का आदमी था. जो चाहा करता. आज भी वो 2 हफ्ते बाद घर वापिस आया था.

तेज का कमरा जहाँ था वहाँ तक जाने के लिए उसे दामिनी के कमरे की आगे से होके गुज़रना पड़ता था. वो हमेशा रुक कर पहले अपनी भाभी का हाल पुछता था और फिर अपने कमरे तक जाता था. आज भी ऐसा ही होगा ये बात दामिनी जानती थी. वो पलटकर अपने कमरे तक वापिस पहुँची और कमरे का दरवाज़ा खोल दिया. कार पार्क करके यहाँ तक पहुँचने में तेज को कम से कम 5 मिनट्स का टाइम लगेगा. ये सोचे हुए वो बाथरूम में पहुँची. अपने सारे बाल गीले किए और अपनी सारी और ब्लाउस उतार दिया. अब सिर्फ़ एक काले रंग के पेटिकोट और उसी रंग के ब्रा में वो शीशे के सामने आके खड़ी हो गयी, जैसे अभी नहा के निकली हो. दरवाज़ा उसके पिछे था और वो शीशे में देख सकती थी. थोड़ी देर वक़्त गुज़रा और उसे तेज के कदमो के आवाज़ आई. जैसे जैसे कदम रखने की आवाज़ नज़दीक आती रही वैसे वैसे दामिनी के दिल की धड़कन बढ़ती रही. उसके जिस्म में शरम, वासना और दार की अजीब सी ल़हेर उठ रही थी. थोड़ी देर बाद दरवाज़ा थोड़ा सा खुला और उसे तेज का चेहरा नज़र आया.

तेजप्रताप सिंग 2 हफ्ते बाद घर कुछ पैसे लेने के लिए लौटा था. जो पैसे वो लेके गया था वो वेश्या ठोकने और शराब पीने में उड़ा चुक्का था. उसने गाड़ी हवेली के सामने रोकी और अंदर दाखिल हुआ. सामने ही उसके बाप का कमरा था पर उसने वहाँ जाना ज़रूरी नही समझा. वैसे भी वो सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए आया था. पैसे लेके उसने वापिस चले जाना था. वो अपने कमरे की तरफ बढ़ गया. रास्ते में भाभी का कमरा पड़ता था. उनका हाल वो हमेशा पुछता था. दामिनी पे उसे दया आती थी. बेचारी भारी जवानी में इस वीरान हवेली में क़ैद होके रह गयी थी. वो दामिनी के कमरे के सामने रुका और दरवाज़ा हल्का सा खोला ही था के उसका गला सूखने लगा.

दामिनी लगभग आधी नग्न शीशे के सामने खड़ी बाल बना रही थी. वो शायद अभी नाहके निकली थी और जिस्म पर सिर्फ़ एक ब्रा और पेटिकोट था. लंबे गीले बाल उसके पेटिकोट को भी गीला कर रहे थे जो भीग कर उसकी नितंब से चिपक गया था. एक पल के लिए वो शरम के मारे दरवाज़े से हट गया और अपने कमरे की तरफ चल पड़ा पर फिर पलटा और दरवाज़े से झाँकने लगा. उसने अपनी ज़िंदगी में कितनी औरतों को नग्न देखा था ये गिनती उसे भी याद नही थी पर दामिनी जैसी कोई भी नही थी. गोरा मखमल जैसा जिस्म, मोटापे का कहीं कोई निशान नही, लंबे बाल, पतली कमर और गोल उठी हुई नितंब. इस नज़ारे ने जैसे उसकी जान निकल दी. वो एक अय्याश आदमी था और भाभी है तो क्या, योनि तो आख़िर योनि ही होती है ऐसी उसकी सोच थी. वो औरो के चक्कर में जाने किस किस वेश्या के यहाँ पड़ा रहता था और उसे अब अपनी बेवकूफी पे मलाल हो रहा था. घर में ऐसा माल और वो बाहर के धक्के खाए? नही ऐसा नही होगा.

दामिनी जानती थी के पिछे दरवाज़े पे खड़ा तेज उसे देख रहा था. शीशे के एक तरफ वो उसके चेहरे की झलक देख सकती थी. उसने बड़ी धीरे धीरे अपने गीले बाल सुखाए ताकि उसका देवर एक लंबे वक़्त तक उसे देख सके. वो जान भूझ कर अपनी नितंब को थोड़ा आगे पिछे करती और उसकी वो हरकत तेज की क्या हालत कर रही थी ये भी उसे नज़र आ रहा था. थोड़ी देर बाद उसने अपना ब्लाउस उठाया और पहेनटे हुए बाथरूम की तरफ चली गयी. कपड़े पहेन कर जब वो वापिस आई तो तेज भी दरवाज़े पे नही था. उसने अपने कपड़े ठीक किए और दरवाज़ा खोलकर बाहर निकली.

बाहर निकलकर दामिनी ने एक नज़र तेज के कमरे की तरफ डाली. दरवाज़ा बंद था. उसने एक लंबी साँस ली और सीढ़ियाँ उतरकर बड़े कमरे में आई. उसके ससुर कहीं बाहर जाने को तैय्यार हो रहे थे.

“दामूकाका आ गया क्या?” इंद्रदेव सिंग ने पूछा

“जी नही. तेज आए हैं” दामिनी सिर झुकाके बोली

“आ गया अय्याश” कहते हुए इंद्रदेव सिंग ने एक नज़र दामिनी पे डाली. अभी यही औरत जो घूँघट में खड़ी है थोड़ी देर पहले उन्हें नहला रही थी. थोड़ी देर पहले इसकी दोनो स्तन उनके चेहरे के सामने आधी नग्न लटक रही थी सोचकर ही इंद्रदेव सिंग के बदन में वासना की लहर दौड़ उठी. अब उनकी नज़र में जो उनके सामने खड़ी थी वो उनकी बहू नही एक जवान औरत थी.

“मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ. शाम तक लौट आउन्गा. दामूकाका आए तो उसे मेरे कपड़े धोने के लिए दे देना.” कहते हुए इंद्रदेव सिंग बाहर निकल गये

दामिनी उन्हें जाता देखकर मुस्कुरा उठी. ये साफ था के वो नशे में नही थे. और उसे याद भी नही था के आखरी बार इंद्रदेव सिंग ने हवेली से बाहर कदम भी कब रखा था.

यही सोचती हुई वो इंद्रदेव सिंग के कमरे में पहुँची और चीज़ें उठाकर अपनी जगह पे रखने लगी. गंदे कपड़े समेटकर एक तरफ रखे. एक नज़र बाथरूम की तरफ पड़ी तो शरम से आँखें झुक गयी. यहीं थोड़ी देर पहले वो अपने ससुर के सामने आधी नग्न हो गयी थी. अभी वो इन ख्यालों में ही थी के कार स्टार्ट होने की आवाज़ आई. वो लगभग भागती हुई बाहर आई तो देखा के तेज कार लेके फिर निकल गया था.

“फिर निकल गये अययाशी करने.” जाती हुई कार को देखके दामिनी ने सोचा.

ससुर का कमरा साफ करके वो किचन में पहुँची. खाना बनाया और खाने ही वाली थी के याद आया के उसने दामूकाका को कहा था के उसका व्रत है. वो बाहर आके उसका इंतेज़ार करने लगी और थोड़ी ही देर में दामूकाका लौट आया.

“लो बहू. आपकी पूजा का पूरा समान ले आया.” कहते हुए दामूकाका ने समान उसके सामने रख दिया.

दामिनी ने व्रत खोलने का ड्रामा किया और खाना ख़ाके अपने कमरे में आ गयी. दोपहर का सूरज आसमान से जैसे आग उगल रहा था. इस साल बारिश की एक बूँद तक नही गिरी थी. वो सुबह की जागी हुई थी. बिस्तर पे लेटी ही थी के आँख लग गयी ओर अपने अतीत के मीठे सपने मैं खो गयी

वीरभद्र के एक हाथ में दामिनी की सारी का पल्लू था जो वो अपनी और खींच रहा था. दूसरी तरफ से दामिनी अपनी सारी को उतारने से बचने के लिए पूरा ज़ोर लगा रही थी और वीरभद्र से दूर भाग रही थी.

“छोड़ दीजिए ना. मुझे पूजा करनी है” उसने वीरभद्र से कहा.

“पहले प्रेम पूजा फिर काम दूजा” कहते हुए वीरभद्र ने उसकी सारी को ज़ोर का झटका दिया. दामिनी ने अपने दोनो हाथों से कसकर सारी को थाम रखा था जिसका नतीजा ये हुए के वो एक झटके में वीरभद्र की बाहों में आ गयी.

“उस भगवान का सोचती रहती हो हमेशा. पति भी तो परमेश्वर होता है. हमें खुश करने का धर्म भी तो निभाया करो” वीरभद्र ने उसे देखके मुस्कुराते हुए कहा.

“आपको इसके अलावा कुछ सूझता है क्या” दामिनी वीरभद्र के हाथ को रोकने की कोशिश कर रही थी जो उसके पेट से सरक कर उसकी सारी पेटिकोट से बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था.

“तुम्हारी जैसी बीवी जब सामने हो तो कुछ और सूझ सकता है भला” कहते हुए वीरभद्र ने अपने एक हाथ उसके पेटिकोट में घुसाया और सारी बाहर खींच दी.

दामिनी ने सारी को दोनो हाथों से पकड़ लिया जिसकी वजह से वो पूरी तरह से वीरभद्र के रहमो करम पे आ गयी. वीरभद्र ने आगे झुक कर अपने होंठ उसके होंठो पे रख दिया और दूसरा हाथ कमर से नीचे होता हुआ उसकी नितंब पे आ गया.

दामिनी ने दोनो हाथ वीरभद्र के सीने पे रख उसे पिछे धकेलने की कोशिश की. इस चक्कर में उसकी सारी उसकी हाथ से छूट गयी और खुली होने की वजह से उसके पैरों में जा गिरी. अब वो सिर्फ़ ब्लाउस और पेटिकोट में रह गयी थी. वीरभद्र ने उसे ज़ोर से पकड़ा और अपने साथ चिपका लिया. उसका लिंग पेटिकोट के उपेर से ठीक दामिनी की योनि से जा टकराया. दूसरा हाथ नितंब पे दबाव डाल रहा था जिससे योनि और लिंग आपस में दबे जा रहे थे.

“छोड़ दीजिए ना” दामिनी ने कहा

“नही जान. बोलो ठोक दीजिए ना” वीरभद्र ने कहा और दामिनी शरम से दोहरी हो गयी.

“हे भगवान. एक तो आपकी ज़ुबान. जाने क्या क्या बोलते हैं” कहते हुए दामिनी ने पूरा ज़ोर लगाया और वीरभद्र की गिरफ़्त से आज़ाद हो गयी. छूट कर वो पलटी ही थी के वीरभद्र ने उसे फिर से पकड़ लिया और सामने धकेलते हुए दीवार से लगा दिया. दामिनी दीवार से जा चिपकी और उसकी दोनो स्तन दीवार से दब गयी. वीरभद्र पिछे से फिर दामिनी से चिपक गया और उसके गले को चूमना लगा. नीचे से उसका लिंग दामिनी की नितंब पे दब रहा था और उसका एक हाथ घूमकर दामिनी की एक स्तन को पकड़ चुका था.

“बलात्कार करोगे क्या” दामिनी ने पूछा जिसके जवाब में वीरभद्र ने उसकी स्तन को मसलना शुरू कर दिया. उसका लिंग अकड़ कर पत्थर की तरह सख़्त हो गया था ये दामिनी महसूस कर रही थी. उसके लिंग का दबाव दामिनी की नितंब पे बढ़ता जराहा था और एक हाथ दोनो स्तनों का आटा गूँध रहा था.

“ओह दामिनी.आज नितंब मरवा लो ना” वीरभद्र ने धीरे से उसके कान में कहा.

“बिल्कुल नही” दामिनी ने ज़रा नाराज़गी भरी आवाज़ में कहा “ और अपनी ज़ुबान ज़रा संभालिए”

वीरभद्र का दूसरा हाथ उसका पेटिकोट उपेर की तरफ खींच रहा था. दामिनी को उसने इस तरह से दीवार के साथ दबा रखा था के वो चाहकर भी कुछ ना कर पा रही थी. थोड़ी ही देर में पेटी कोट कमर तक आ गयी और उसकी नितंब पर सिर्फ़ एक पॅंटी रह गयी. वो भी अगले ही पल सरक कर नीचे हो गयी और वीरभद्र का हाथ उसकी नग्न नितंब को सहलाने लगा.

दामिनी की समझ में नही आ रहा था के वो क्या करे. वो चाहकर हिल भी नही पा रही थी. वो अभी नाहकार पूजा करने के लिए तैय्यार हो ही रही थी के ये सब शुरू हो गया. अब दोबारा नहाना पड़ेगा ये सोचकर उसे थोड़ा गुस्सा भी आ रहा था.

तभी उसे अपनी नितंब पे वीरभद्र का नंगा लिंग महसूस हुआ. उसे पता ही ना चला के उसने कब अपनी पेंट नीचे सरका दी थी और लिंग को उसकी नितंब पे रगड़ने लगा था.

“थोड़ा झुक जाओ” वीरभद्र ने कहा और उसकी कमर पे हल्का सा दबाव डाला. दामिनी ने झुकने से इनकार किया तो वो फिर उसके कान में बोला.

“भूलो मत के लिंग के सामने तुम्हारी नितंब है. अगर नही झुकी तो ये सीधा नितंब में ही जाएगा. सोच लो”

दामिनी ना चाहते हुए भी आधे मन के साथ झुकने लगी.

“दामिनी, दामिनी” बाहर दरवाज़े पे से उसकी सास शकुंतला देवी की आवाज़ आ रही थी.

“बेटा पूजा का वक़्त हो गया है. दरवाज़ा खोलो”

दामिनी सीधी खड़ी हो गयी और कपड़े ठीक करने लगी. वीरभद्र तो कबका पिछे हटके पेंट फिर उपेर खींच चुक्का था. चेहरे पे झल्लाहट के निशान साफ दिख रहे थे जिसे देखकर दामिनी की हसी छूट पड़ी.

“बहू” दरवाज़े फिर से खाटकाया गया और फिर से आवाज़ आई

“बहू” और इसके साथ ही दामिनी के नींद खुल गयी. बाहर खड़ा दामूकाका उसे आवाज़ दे रहा था.

“क्या हुआ?” दामिनी ने बिस्तर से उठते हुए पूछा

“बड़े मलिक आपको याद कर रहे हैं” दामूकाका की आवाज़ आई

“अभी आती हूँ” कहते हुए दामिनी अपने बिस्तर से उठी

उसका ध्यान अपने सपने की और चला गया. वीरभद्र से ये उसकी आखरी मुलाकात थी. इसके बाद वीरभद्र जो गया तो फिर ज़िंदा लौटके नही आया. दामिनी की मोटी मोटी आँखों से आँसू बह निकले.जीतने समय वो वीरभद्र की बीवी रही हमेशा यही होता था जो उसने सपने में देखा था.वो हमेशा उसके करीब आने की कोशिश करता और वो यूँ ही टाल मटोल करती. कभी बिस्तर पे उसका साथ ना देती. उसके लिए ठुकाई का मतलब सिर्फ़ टांगे खोलके लेट जाना था. बस इससे ज़्यादा कुछ नही पर वीरभद्र ने उसके साथ कभी बदसुलूकी नही की. वो हमेशा की तरह उससे आखरी वक़्त तक वैसे ही प्यार करता रहा और ना ही उसने बिस्तर पर कभी ज़्यादा की ज़िद की. पूछ ता ज़रूर था पर दामिनी के मना कर देने पे हमेशा रुक जाता था. कभी ज़बरदस्ती नही करता था. वो भारी कदमों से अपनी पति की तस्वीर की तरफ गयी और उसपे हाथ फिराती तस्वीर से बातें करने लगी.

“आप फिकर ना करें. जो भी आपकी मौत का ज़िम्मेदार है वो अब ज़्यादा दिन साँसें नही लेगा” उसने भारी आवाज़ में अपने पति की तस्वीर से कहा.

“अपने पति को हमेशा प्यासा रखा और अपने ससुर पे डोरे डाल रही हूँ. वाह रे भगवान” सोचते हुए दामिनी नीचे आई.

भाग - 2

दामूकाका काम ख़तम करके जा चुक्का था. अब हवेली में सिर्फ़ दामिनी और इंद्रदेव सिंग रह गये थे. दामिनी नीचे आई तो इंद्रदेव सिंग बड़े कमरे में बैठे उसका इंतेज़ार कर रहे थे.

“आओ बहू. बैठो” इंद्रदेव सिंग ने पास पड़ी कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए कहा. ”एक बात बताओ. तुमने आखरी बार नये कपड़े कब लिए थे.

ससुर ने पूछा तो दामिनी को ध्यान आया के उसने पिच्छले 10 साल में एक नया कपड़ा नही खरीदा. आखरी बार नये कपड़े उसे वीरभद्र ने ही लाके दिए थे.

“जी याद नही. कभी ज़रूरत ही नही पड़ी. हमारे पास पहले से ही इतने कपड़े हैं के हमने सारे पहने ही नही. और वैसे भी जिसे सफेद सारी पहन नी हो उसे नये कपड़े लाके क्या करना” दामिनी ने कहा.

“अब ऐसा नही होगा. आपको सफेद सारी पहेन्ने की कोई ज़रूरत नही.वीरभद्र के चले जाने से आपकी ज़िंदगी ख़तम हो जाए ऐसा हम नही चाहते. हम आपके लिए कुछ कपड़े लाए हैं. ये ले जाइए और कल से ये पहना कीजिए.” इंद्रदेव सिंग ने पास रखे कपड़ो की तरफ इशारा करते हुए कहा.

“पर लोग क्या कहेंगे?” दामिनी थोड़ा झिझक रही थी.

“उसकी आप चिंता ना करें. वैसे भी अब यहाँ आता कौन है. यहाँ सिर्फ़ आप और हम हैं. आप ये कपड़े ले जाएँ” ठाकुर ने ऐसी आवाज़ में कहा जैसे कोई फ़ैसला सुनाया हो. मतलब साफ था. दामिनी आगे कुछ नही कह सकती थी. उसे अपने ससुर की बात मान लेनी थी.

दामिनी ने आगे बढ़के कपड़े उठाए.

“और एक बात और” इंद्रदेव सिंग ने कहा”घर में आपको घूँघट करने की ज़रूरत नही. आपका चेहरा हमसे छुपा नही है.”

“जी जैसा आप कहें” दामिनी कपड़े उठाके कमरे से बाहर जाने लगी “आप कपड़े बदलके बाहर आ जाएँ. हम खाना लगा देते हैं”

दामिनी कपड़े लेके उपेर अपने कमरे में पहुँची और कपड़े एक एक करके देखने लगी. सब कपड़े रंगीन थे. ब्लाउस सारे लो नेक थे और ज़्यादातर ट्रॅन्स्परेंट थे. केयी ब्लाउस तो बॅकलेस

थे. उसने कपड़ो की तरफ देखा और मुस्कुरा उठीं. इंद्रदेव सिंग को फसाना इतना आसान होगा ये उसने सोचा नही था पर अगले ही पल उसने अपने सवाल का जवाब खुद ही मिल गया. 10 साल से वो इंसान सिर्फ़ शराब के नशे में डूबा रहा. किसी औरत के पास नही गया और आज जब एक जवान औरत खुद इतना नज़दीक आ गयी तो बहू बेटी का लिहाज़ कहाँ रह जाता है. फिर तो सामने सिर्फ़ एक जवान जिस्म नज़र आता है. और वो खुद कहाँ उससे अलग थी. क्या वो खुद गरम नही हो गयी थी अपने ससुर को नहलाते हुए. उसे भी तो 10 साल से मर्द की जिस्म की ज़रूरत थी.

दामिनी ने कपड़े समेटकर अलमारी में रखे और फिर नीचे आई. इंद्रदेव सिंग खाने की टेबल पे उसका इंतेज़ार कर रहा था.

वो किचन में गयी और खाना लाके टेबल पे लगाने लगी. ऐसा करते हुए उसे कई बार इंद्रदेव सिंग के नज़दीक आने पड़ा. उसने साफ महसूस किया के उसके ससुर की नज़र कभी सारी से नज़र आ रहा उसके नंगे पेट पे थी तो कभी ब्लाउस में बंद उसकी बड़ी बढ़ी स्तनों की निहार रही थी. उसने खामोशी से खाना लगाया और खुद भी सामने बैठ कर खाने लगी.

“खाना अच्छा बना लेती हैं आप” इंद्रदेव सिंग ने कहा

“जी शुक्रिया” दामिनी ने अपने ससुर के कहे अनुसार घूँघट हटा दिया. उसकी नज़र इंद्रदेव सिंग की नज़र से टकराई तो उसमें वासना की ल़हेर साफ नज़र आई.

“हम जो कपड़े लाए थे वो नही पहने आपने?”

“जी सुबह पहेन लूँगी. फिलहाल खाना लगाना था तो ऐसे ही आ गयी”

दामिनी दोबारा उठकर इंद्रदेव सिंग को खाना परोसने लगी. वो ठाकुर के दाई तरफ खड़ी प्लेट में खाना डालने के लिए झुकी तो सारी का पल्लू सरक कर सामने रखी दाल में जा गिरा.

“ओह….माफ़ कीजिएगा” दामिनी फ़ौरन सीधी खड़ी होकर सारी झटकने लगी.

इंद्रदेव सिंग की नज़र मानो उसकी छाती से चिपक कर रह गयी. वो सारी का पल्लू हटाकर उसे साफ कर रही थी. ब्लाउस में बंद उसकी स्तनों को देख कर इंद्रदेव सिंग सिर्फ़ ये सोचते रह गये के ये स्तन नग्न कैसी दिखती होंगी, कितनी बड़ी होंगी, कितनी गोरी होंगी अंदर से.

“मैं कुछ और ला देती हूँ” दामिनी ने सारी का पल्लू ठीक किया. उसे पता था के इंद्रदेव सिंग इतनी देर से क्या घूर रहा था.

“नही ठीक है. हम खा चुके” कहते हुए इंद्रदेव सिंग उठकर अपने कमरे की तरफ बढ़ गये.

दामिनी बर्तन उठा कर किचन की तरफ बढ़ चली. एक वक़्त था जब नौकरों की लाइन होती थी घर में और आज उसे खुद बर्तन साफ करने पड़ रहे थे. ये सोचते हुए वो किचन की सफाई करने लगी. एक बात जो सोचकर वो खुश हो रही थी वो ये थी के हमेशा नशे में डूबा रहने वाला उसका ससुर आज शराब के करीब तक नही गया था. पूरा दिन अपने पुर होश में रहा.

आहट सुनकर वो पाली तो देखा के इंद्रदेव सिंग किचन के दरवाज़े पे खड़ा था.

“बहू ज़रा दामूकाका को बाहर उसके कमरे से बुला लाओ. हमारे पैरों में दर्द हो रहा है. थोड़ा मालिश कर देगा आकर.” ठाकुर ने कहा

“पर वो तो अब तक सो चुके होंगे” दामिनी पलटकर बोली

“तो क्या हुआ. जगा दो” इंद्रदेव सिंग ने ठाकुराना अंदाज़ में कहा.

“इस उमर में क्यूँ उनकी नींद खराब करें. हम ही कर देते हैं” दामिनी ज़रा शरमाते हुए बोली

“आप? आप कर सकेंगी?” इंद्रदेव सिंग ज़रा चौंकते हुए बोला

“हां क्यूँ नही. आप कमरे में चलिए. हम तेल ज़रा गरम करके ले आते हैं” दामिनी ने कहा

इंद्रदेव सिंग पलटकर अपने कमरे में चले गये. दामिनी ने एक कटोरी में थोड़ा तेल लिया और उसे हल्का सा गरम करके ससुर के पिछे पिछे कमरे में दाखिल हो गयी.

इंद्रदेव सिंग सिर्फ़ अपनी धोती पहने खड़े थे. कुर्ता वो उतार चुके थे.

“हमने सोचा के जब आप कर ही रही तो ज़रा कमर पे भी तेल लगा देना” ठाकुर ने कहा

“जी ज़रूर” कहते हुए दामिनी ने अपने सारी का पल्लू अपनी कमर में घुसा लिया.

इंद्रदेव सिंग कमरे के बीच में खड़ा हुआ था. दामिनी ने बिस्तर की तरफ देखा और जैसे इशारे में ठाकुर को लेट जाने के लिए कहा. बदले में इंद्रदेव सिंग ने कहा के खड़े हुए ही ठीक है.

दामिनी ठाकुर के सामने जाकर अपने घुटनो पे बैठ गयी.

ठाकुर ने अपनी धोती खींचकर अपने घुटनो के उपेर कर ली.दामिनी ने अपने हाथों में थोड़ा तेल लिया और अपने ससुर की पिंदलियों पे लगाके मसल्ने लगी. उसके च्छुने भर से ही ठाकुर के मुँह से एक लंबी आह छूट गयी. जाने कितने अरसे बाद एक औरत आज दूसरी बार उनके इतना करीब आई थी. उसके हाथ जिस्म पे लगे ही थे के ठाकुर के लिंग में हलचल होनी शुरू

हो गयी थी. समझ नही आ रहा था के अपने आपको कोसें के अपने मरे हुए बेटे की बीवी का सोचकर लिंग खड़ा हो रहा है या फिर सिर्फ़ सामने बैठे हुए एक जवान खूबसूरत जिस्म पे ध्यान दें.

दामिनी अब उनके घुटनो के उपेर तक तेल लगाके हाथों से रगड़ रही थी. ठाकुर ने नीचे की तरफ देखा तो लिंग ने जैसे आंदोलन कर दिया हो. दामिनी सामने बैठी हुई थी. उसने सारी का पल्लू साइड में पेटिकोट के अंदर घुसा रखा था जिससे वो एक तरफ को सरक गया था. उसका क्लीवेज पूरी तरह से नज़र आ रहा था और उपेर से देखने के कारण ठाकुर की नज़र उसकी स्तनों के बीच गहराई तक उतर गयी और वो ये अंदाज़ा लगाने लगे के इन स्तनों का साइज़ क्या होगा. लिंग अब पुर जोश पे था.

दामिनी सामने बैठी अपने ससुर की टाँगो की सख़्त हाथों से मालिश कर रही थी. उसे पूरी तरह खबर थी के खड़े उसे उसके ससुर की नज़र उसके ब्लाउस के अंदर तक जा रही थी और वो उसकी स्तनों का नज़ारा कर रहा था. उसने जान भूझ कर अपनी सारी को इस तरह से लपेटा था के उसका क्लीवेज खुल जाए और जो वो करना चाहती थी वो हो गया. उसका ससुर खड़ा हुआ उसकी स्तन निहार रहा था और गरम हो रहा था. इस बात का सबूत उसका खड़ा होता लिंग था जो धोती में एक टेंट जैसा आकर बना रहा था. दामिनी की साँसें उखाड़ने लगी थी. एक तो मरद की इतना नज़दीक, उपेर से ऐसी हालत में जिसमें उसकी स्तनों की नुमाइश हो रही थी, तीसरे वो एक मर्द के जिस्म को काफ़ी वक़्त बाद हाथ लगा रही थी और सबसे ज़्यादा उसके ससुर का खड़ा होता लिंग जिसे दामिनी बड़ी मुश्किल से नज़र अंदाज़ कर रही थी. दिल तो कर रहा था के बस नज़र जमाएँ उसे देखती ही रहे.

बैठे बैठे उसके घुटने में दर्द हुआ तो दामिनी ने ज़रा अपनी पोज़िशन बदली और अगले पल जो हुआ उसने उसके दिल की धड़कन को दुगना कर दिया. जैसे ही वो उपेर की उठी उसके ससुर का खड़ा लिंग सीधा उसके माथे पे लगा. 10 साल बाद कोई लिंग उसके जिस्म से लगा था. हल्के से टच ने ही दामिनी के अंदर वासना की लहरें उठा दी और उसे अपनी टाँगों के बीच होती नमी का एहसास होने लगा. जब बात बर्दाश्त के बाहर होने लगी तो वो उठकर इंद्रदेव सिंग के पिछे आ गयी और पिछे बैठ कर टाँगो पे तेल मलने लगी.

दामिनी का माथा उनके लिंग से टकराया तो इंद्रदेव सिंग का जिस्म काँप उठा. लगा के लिंग को अभी धोती से आज़ाद करके बहू के हाथ में थमा दें पर दिल पे काबू रखा. लिंग खड़ा है इस बात का अंदाज़ा तो बहू को हो गया होगा. जाने क्या सोच रही होगी ये सोचकर इंद्रदेव सिंग थोड़ा झिझके पर अगले ही पल जब दामिनी उठकर पिछे जा बैठी तो ठाकुर का दिल डूबने लगा. बहू को लिंग का अंदाज़ा हो गया था इसलिए वो पिछे की तरफ चली गयी. ज़रूर इस वक़्त मुझे दिल में गालियाँ दे रही होगी. नफ़रत कर रही होगी मुझसे. सोच रही होगी के कितना गिरा हुआ इंसान हूँ मैं जो खुद अपनी बहुर के लिए ऐसा सोच रहा हूँ.

दामिनी अब अपने ससुर की टाँगो पे तेल लगा चुकी थी. उसने फिर तेल की कटोरी उठाई खड़ी हो गयी. उसने अपनी हथेली में तेल लिया और ठाकुर की कमर पे तेल लगाने लगी.हाथ ससुर की कमर पे फिसलने लगे. पीछे से भी धोती में खड़ा हुआ ठाकुर का लिंग उसे साफ

दिख रहा था और उसके अपने घुटने जवाब दे रहे थे. टाँगो के बीच की नमी बढ़ती जा रही थी. उसने कमर पे तेल और लगाकर सख़्त हाथो से मालिश शुरू कर दी और ऐसी ही एक कोशिश में उसका हाथ कमर से फिसल गया और वो लड़खड़ा कर पिछे से इंद्रदेव सिंग के साथ जा चिपकी. उसने दोनो हाथों से अपने ससुर के जिस्म को थाम लिया ताकि गिरे नही और इंद्रदेव सिंग के साथ लिपट सी गयी. दोनो स्तनों ठाकुर की कमर पे जाकर दब गयी और दामिनी के मुँह से आह निकल गयी. वो एक पल के लिए वैसे ही ठाकुर को थामे खड़ी रही और फिर शर्माके अलग हो गयी.

पर इन कुछ पलों ने ही ठाकुर को काफ़ी कुछ समझा दिया. अचानक से बहू का हाथ फिसला और फिर जैसे कमाल हो गया. बहू की दोनो स्तनों उनकी कमर पे आके दब गयी और बहू उनसे लिपट गयी. वो जानते थे के ऐसा उसने गिरने से बचने के लिए किया है पर जब वो अगले कुछ पल अलग नही हुई तो इंद्रदेव सिंग को अजीब लगा. कमर पे स्तन अभी भी दबी हुई थी और ठाकुर का खुद पे काबू करना मुश्किल हो रहा था. बहुत दिन बाद स्तनों का स्पर्श उनके जिस्म को मिला था. उनकी साँसें उखाड़ने लगी और पूरा ध्यान कमर पे दबी स्तनों पे चला गया. और फिर जो हुआ वो सुनके ठाकुर के दिमाग़ में केयी बातें साफ हो गयी. उन्हें थामे थामे बहू के मुँह से निकली आह की आवाज़ वो बखूबी जानते थे. ऐसी आह औरत के मुँह से तब ही निकलती है जब वो गरम होती है. तो आग दोनो तरफ बराबर थी. अगर उनका लिंग खड़ा हो रहा था तो दामिनी की योनि में भी आग लग रही थी.

दामिनी अपने ससुर से अलग हुए और फिर कमर पे तेल लगाने लगी. फिर उसने अपने हाथों से ठाकुर को इशारा किया के वो अपनी दोनो बाँहे उपेर उठाए. ठाकुर ने आर्म्स उपेर उठाई और दामिनी जिस्म के दोनो तरफ तेल लगाने लगी. इस कोशिश में वो ठाकुर के काफ़ी करीब आ चुकी थी और उसकी स्तन फिर ठाकुर की कमर पे दबने को तैय्यार थी. दामिनी से और रहा नही गया. उसकी अपनी वासना उसे पागल कर रही थी. उसने हाथ जिस्म ठाकुर के साइड से सरका कर उसकी छाती पे तेल लगाने लगी. ऐसा करने से उसे अपने ससुर के और करीब आना पड़ा और उसके स्तन फिर ठाकुर की कमर से जा लगी.उसके जिस्म में जैसे गर्मी और ठंडक एक साथ उठ गयी. ठंडक मर्दाना जिस्म के इतना करीब होके और गर्मी उसकी टाँगो के बीच उसकी योनि में. वो ठाकुर के सीने पे तेल मलने लगी और पिछे हाथ हिलने से उसकी दोनो स्तन ठाकुर की कमर पे घिसने लगी.

इंद्रदेव सिंग का अब खुद पे काबू रखना मुश्किल हो गया था. दामिनी अब उनकी कमर पे तेल लगा रही थी और पिछे से उसकी दोनो स्तन उनकी कमर पे दब रही थी. ये बात साफ थी के बहू अपनी स्तनों को उनकी कमर पे और ज़्यादा घिस रही थी, और उनके करीब होके स्तन कमर पे दबा रही थी. उसके मुँह से निकलती आह सीधा उनके कानो में पड़ रही थी. ठाकुर ने अपना हाथ बहू के हाथ पे रखा और उसे सहलाने लगे. दूसरे हाथ से उन्होने अपनी धोती थोड़ी ढीली की और लिंग को बाहर निकाला. दामिनी उनसे लगी खड़ी थी. हाथ छाती पे तेल लगा रहे थे, स्तन कमर पे दब रही थी और उसका सिर उनके कंधे पे टेढ़ा रखा हुआ था. उन्हें दामिनी का हाथ धीरे से पकड़के नीचे किया और अपने लिंग पे ले जाके टीका दिया.

दामिनी की वासना से हालत खराब थी. वो और ज़ोर से अपने ससुर के साथ चिपक गयी थी

और स्तन ज़ोर ज़ोर से उनकी कमर पे रगड़ रही थी. वो जानती थी के अब तक इंद्रदेव सिंग जान गये होंगे के वो भी गरम हो चुकी है पर इस बात की अब उसे कोई परवाह नही थी. वो उनकी छाती को अब मालिश के लिए नही सहला रही थी. अब इस सहलाने में सिर्फ़ और सिर्फ़ वासना थी. उसके मुँह से निकलती आह इस बात का साफ सबूत थी के वो ठुकना चाहती थी.

लिंग लेना चाहती थी अपने अंदर. टाँगो खोल देना चाहती थी आज 10 साल बाद. उसने अपना सर ठाकुर के कंधे पे रख दिया और अपने ससुर के जिस्म से चिपक गयी. फिर धीरे से उसे एहसास हुआ के ठाकुर ने उसके हाथ को सहलाना शुरू कर दिया है. मतलब आग दोनो तरफ लग चुकी थी और दोनो को ही इस बात का अंदाज़ा था के आग पुर जोश पे है. ठाकुर के हाथ ने दामिनी के हाथ को नीचे सरकाना शुरू किया और इससे पहले के वो कुछ समझ पाती उसके हाथ में एक लंबा सख़्त डंडा सा कुछ आ गया.

ठाकुर ने जैसे ही अपनी लिंग पे दामिनी का हाथ खींचा तो दामिनी ने हाथ फ़ौरन वापिस खींचना चाहा. पर ठाकुर की गिरफ़्त मज़बूत थी. उसने हाथ हटने ना दिया और अपने लिंग पे दामिनी के हाथ से मुट्ठी सी बना दी. दामिनी ने फिर हाथ हटाने की कोशिश की पर हटा नही पाई. एक औरत का हाथ अपने लिंग पे ठाकुर को अलग ही मज़ा दे रहा था. इस लिंग का आखरी बार इस्तेमाल कब हुआ था ये ठाकुर को याद तक नही था.

उसने धीरे धीरे दामिनी के हाथ को आगे पिछे करना शुरू कर दिया और लिंग को उसके हाथ से सहलाने लगा. थोड़ी देर बाद उसने अपना हाथ हटा लिया पर दामिनी का हाथ अपने आप लिंग पे आगे पिछे होता रहा. ठाकुर के मुँह से आह आह की आवाज़ ज़ोर से निकलने लगी. तेल लगा होने के कारण बड़ी आसानी से लिंग दामिनी के हाथ में फिसल रहा था. गर्मी बढ़ती जा रही थी. इतने वक़्त से ठाकुर ने ठुकाई नही की थी इसलिए अब खुद पर काबू रखना मुश्किल हो रहा था. वो जानते थे के ज़्यादा वक़्त नही टिक पाएँगे वो इस गरम जिस्म के सामने.

दामिनी इस हमले के लिए तैय्यार नही थी. उसने लिंग बहुत कम अपने हाथ में पकड़ा था वो भी अपने पति के बार बार ज़िद करने पर. उसने हाथ हटाना चाहा पर हटा नही पाई. ठाकुर ने अभी भी उसका हाथ अपने हाथ में पकड़ रखा था और उसकी उंगलियाँ अपने लिंग पे लपेटकर मुट्ठी सी बना दी थी. दामिनी ने फिर हाथ हटाने की कोशिश की पर फिर नाकाम रही. अब उसके ससुर ने हाथ आगे पिछे करना शुरू कर दिया था और पूरा लिंग दामिनी के तेल लगे हाथ में आगे पिछे हो रहा था. ठाकुर ने थोड़ी देर बाद हाथ हटा लिया पर दामिनी ने अपना हाथ हिलाना जारी रखा. आज पहली बार वो अपनी मर्ज़ी से एक लिंग को पकड़ रही थी और उसका मज़ा ले रही थी. ठाकुर के लिंग की लंबाई का अंदाज़ा उसे साफ तौर पे हो रहा था. लग रहा था जैसे किसी लंबे मोटे लिंग पे उसका हाथ फिसल रहा हो. ठाकुर के मुँह से जैसे जैसे आह निकलती दामिनी के हाथ की रफ़्तार और तेज़ होती जाती .

वो पिछे से अपने ससुर से चिपकी खड़ी थी और उसका लिंग हिला रही थी. स्तन उसकी कमर

पर रगर रही थी और नीचे से अपनी योनि ठाकुर की नितंब पे दबा रही थी. धीरे धीरे ठाकुर की आह तेज़ होती चली गयी और दामिनी पागलों की तरह लिंग हिलाने लगी अचानक उसके ससुर की जिस्म थर्रा उठा, एक लंबी आह निकली और एक गरम सा लिक्विड दामिनी के हाथ पे आ गिरा. ठाकुर के लिंग ने माल छोड़ दिया था. दामिनी ने लिंग हिलाना चालू रखा और लिंग से पिचकारी पे पिचकारी निकलती रही. कुछ दामिनी के हाथ पे गिरी, कुछ सामने बिस्तर पर और और ज़मीन पर. जब माल निकलना बंद हुआ तो ठाकुर की साँस भारी होनी लगी, उसका जिस्म दामिनी की गिरफ़्त में ढीला पड़ने लगा तो वो समझ गयी के काम ख़तम हो चुका है. वो ठाकुर के जिस्म से शरमाते हुए अलग हुए, तेल की कटोरी उठाई और कमरे से बाहर आ गयी.

बाहर आकर दामिनी सीधा अपने कमरे में पहुँची. आज बहुत सी चीज़ें पहली बार हुई थी. उसने पहली बार अपनी मर्ज़ी से लिंग पकड़ा था, पहले बार किसी मर्दाने जिस्म से अपनी मर्ज़ी से सटी थी, पहली बार किसी मर्द के साथ गरम हुई थी और उसके और ससुर के बीच पुराना रिश्ता टूट चुका था. अब जो नया रिश्ता बना था वो वासना का था, जिस्म की भूख का था. वो ठाकुर के लिंग को को तो हिलाके ठंडा कर आई थी पर खुद उसके जिस्म में जैसी आग लग गयी थी. योनि गीली हो गयी थी और लग रहा था जैसे उसमें से लावा बहके निकल रहा हो. उसके हाथ पे अभी भी ठाकुर के लिंग से निकला पानी लगा हुआ था. वो अपने बिस्तर पे गिर पड़ी. टांगे खुद ही मूड गयी, सारी उपेर खींच गयी, पॅंटी सरक कर घुटनो तक आ गयी, हाथ योनि तक पहुँचा और फिर जैसे उसकी टाँगो के बीच एक जुंग का आगाज़ हो गया.

दरवाज़े खटखटाने की आवाज़ से दामिनी की आँख खुली तो देखा के सुबह का सूरज आसमान में काफ़ी उपेर जा चुका था. रात कब उसकी आँख लग गयी उसे पता तक ना चला. सुबह देर तक सोती रही. दामूकाका फिर जगाने आया था. उसे अपने उठ जाने का बताकर दामिनी बाथरूम में पहुँची. हालत अभी भी कल रात वाली ही थी. पॅंटी अभी तक घुटनो में ही फासी हुई थी और ठाकुर का माल अभी भी हाथ पे ही लगा हुआ सूख चुका था. उसने बाथरूम में पहुँचकर अपने कपड़े उतारे और नग्न खड़ी होकर फिर शीशे में देखने लगी.

आज जो उसे नज़र आया वो उसने पहले कभी नही देखा था. अबसे पहले शीशे में उसे सिर्फ़ एक परिवारिक औरत नज़र आती थी जिसकी भगवान में बहुत श्रद्धा थी. पर आज उसे एक नयी औरत नज़र आई. वो औरत जो चीज़ों को अपने हाथ में लेना जानती थी. जो अपने जिस्म का का इस्तेमाल करना जानती थी. जो हर चीज़ पे काबू पाना चाहती थी. जो अब और प्यासी ना रहकर अपने जिस्म की आग मिटाना चाहती थी. और सबसे ज़्यादा, जो ये पता लगाना चाहती थी के उसके पति के साथ क्या हुआ था. कौन था जिसने एक सीधे सादे आदमी की हत्या की थी.

दामिनी ने पास पड़ी क्रीम उठाई और नीचे बाथ टब के किनारे पे बैठ गयी. उसकी योनि पे अभी भी घने बाल थे. अब इस जगह के इस्तेमाल का वक़्त आ गया था तो इन बालों की ज़रूरत नही थी. उसने क्रीम अपने हाथ में ली और धीरे धीरे योनि पर और योनि के आस पास लगानी शुरू की. हाथ योनि पे धीरे धीरे उपेर नीचे होता रहा और दामिनी को एहसास हुआ के उसकी योनि में उसी के हाथ लगाने से फिर गर्मी बढ़ती जा रही है.

वो हाथ को ज़ोर से हिलाने लगी और टांगे फेलते चली गयी. दूसरा हाथ अपने आप स्तनों पे पहुँचकर उन्हें हिलाने लगा. उसने एक अंगुली पे ज़रा ज़्यादा क्रीम लगाई और उसे धीरे धीरे योनि की गहराई तक पहुँचा दिया. दूसरी अंगुली भी जल्दी ही पहली के साथ अंदर तक उतरती चली गयी. अभी उसने मज़ा लेना शुरू ही किया था के नीचे से एक शोर की आवाज़ आई. लगा जैसे दो आदमियों में बहस हो रही है. एक आवाज़ तो उसके ससुर की थी पर दूसरी आवाज़ अंजानी लगी. उसने जल्दी से रेज़र उठाया और अपनी योनि से बाल साफ करना शुरू किए.

नहा कर दामिनी नीचे पहुँची तो बहस अभी भी चालू थी. उसके ससुर एक अंजान आदमी से किसी बात पे लड़ रहे थे. दोनो आदमियों ने दामिनी को नीचे आते देखा तो खामोश हो गये.

"सोच लीजिए. मैं अब और इंतेज़ार नही कर सकता" वो अंजान शक्श ये कहकर वापिस दरवाज़े से निकल गया.

"इसकी हिम्मत दो देखो. कल तक हमारे जूते चाटने वाला आदमी आज हमारे दरवाज़े पे खड़ा होकर हमारे सामने आवाज़ उँची कर रहा है" ठाकुर ने दामिनी को देखते हुए कहा

दामिनी ने इस वक़्त घूँघट निकल रखा था क्यूंकी घर में दामूकाका भी था. इस वजह से वो कुछ ना बोली और ठाकुर पेर पटक कर अपने कमरे में दाखिल हो गये.

"कौन था ये आदमी" दामिनी ने किचन में आते ही दामूकाका से पूछा पर दामूकाका ने कोई जवाब ना दिया और एक ग्लास और कुछ नमकीन लेकर ठाकुर के कमरे की तरफ बढ़ गया.

शाम ढाल चुकी थी. ठाकुर अब तक अपने कमरे से बाहर नही आए थे. दामिनी अच्छी तरह से जानती थी के कमरे में घुसे रहने की दो वजह थी. एक तो ये के कल रात जो हुआ उसके बाद ठाकुर उससे नज़रें मिलने से कतरा रहे हैं और दूसरा गुस्से में डूबे वो फिर शराब की बॉटल खोले बैठे होंगे. ये बात तभी साफ हो गये थी जब दामूकाका ग्लास और नमकीन लेकर ठाकुर के कमरे की तरफ गया था.

"अब वक़्त आ गया है कुछ बातों पे से परदा उठ जाए" सोचते हुए दामिनी ठाकुर के कमरे की तरफ बढ़ी. दामूकाका अपना काम निपटाके जा चुका था. हवेली में अब सिर्फ़ दामिनी और ठाकुर बाकी रह गये थे.

दामिनी अपने ससुर के कमरे में पहुँची तो देखा के वो शराब के नशे में धुत बिस्तर पे पसरे पड़े थे. उसने अंदर आकर दरवाज़ा बंद कर लिया.

वो अपने ससुर के बिस्तर के पास पहुँची और गौर से देखने लगी. ज़ाहिर था के शराब का नशा अब हद के पार जा चुका था और उन्हें कुछ भी खबर नही थी के आस पास क्या हो रहा है.वो दिल मसोस कर रह गयी. इस हालत में वो उसके सवालो के जवाब देना तो दूर की बात है

अपना नाम तक बता दें तो बहुत बड़ी बात होगी.उसने शराब की बॉटल और ग्लास उठाकर एक तरफ रखा और ससुर को ढंग से बिस्तर पे लिटाया. कमरे में इधर उधर पड़ी चीज़ें उठाकर सलीके से जगह पर रखी और बाहर जाने के लिए मूडी पर तभी इंद्रदेव सिंग के मुँह से एक आवाज़ सुनकर वापिस पलटी. कमरे में काफ़ी ठंडक और ठाकुर सर्दी से सिकुड़कर लेटे हुए थे. दामिनी पलटकर वापिस आई और चादर उठाकर अपने ससुर के उपर डालने लगी के तभी उसकी नाज़ुर उनकी धोती में बने हुए उभार पे पड़ी.

दामिनी का दिल एक बार फिर ज़ोर से धड़कने लगा. कल इंद्रदेव सिंग का लिंग हिलाते हुए वो उनके पिछे खड़ी थी इसलिए देख नही पाई थी. काफ़ी लंबा और मोटा था इस बात का अंदाज़ा तो उसे हो गया था पर नज़र नही पड़ी थी. उस वक़्त बैठा हुआ लिंग भी किसी लंबे मोटे साँप की तरह लग रहा था. दामिनी के घुटने काँप उठे और उसे समझ नही आया के वो क्या करे. एक तरफ तो उसका दिल ठुकने के लिए कर रहा था पर ठाकुर जिस हालत में सोए पड़े थे उसमें ऐसा कुछ भी हो पाना मुमकिन नही था.

ठाकुर से ठुकने की बात सोचकर ही दामिनी की टाँगो के बीच फिर नदी बहने लगी. वो सोचने लगी के अगर ठाकुर उसे ठोक्ते तो कैसा होता पर अगर माणा कर देते तो क्या? आज सुबह जब वो उसके सामने आए थे तो उससे नज़र नही मिला पा रहे थे. ज़ाहिर था के वो कल रात मालिश करते हुए जो हुआ वो सोचकर झिझक रहे थे. कैसे भी हो आख़िर वो थे तो उसके ससुर ही और वो उनके मरे हुए बेटे की बीवी. उनकी बेटी के समान. दामिनी वहीं बिस्तर पे बैठ गयी और सोचने लगी के अगर ज़रूरत पड़ी तो ठाकुर को खुश करने के लिए उसे क्या करना चाहिए. वो बिस्तर पे बिल्कुल अनाड़ी थी. पति के साथ वो कभी उसका साथ नही देती थी. बस वो जो कहता था वो सुनती रहती थी, करती भी नही थी.

अचानक उसके दिमाग़ में अपने पति का ख्याल आ गया. वो बिस्तर पे काफ़ी कामुक था. रोज़ नयी नयी फरमाइश करता रहता था. ज़ाहिर था जो चीज़ें उसे पसंद थी वही बाकी मर्दों को भी पसंद होगी.उसने वो सब बातें एक एक करके याद करनी शुरू की. उसका पति चाहता था के वो लिंग हाथ से हिलाए, उसे मुँह में लेके चूसे,ठुक्ते वक़्त अलग अलग पोज़िशन में आए और भी ना जाने क्या क्या. दामिनी ने मॅन में सोच लिया के वो वही सब अपने ससुर के साथ करेगी जिसके लिए उसने अपने पति को हमेशा मना किया और उसमें से एक चीज़ थी लिंग चूसना जो उसका पति उसे हमेशा बोलता था पर वो करती नही थी.

ठाकुर इस वक़्त गहरी नींद में थे. दामिनी ने एक नज़र उनके चेहरे पे डाली और फिर धोती में बंद उनके लिंग पर. अगर उसने बाद में ये लिंग चूसना ही है तो अभी थोड़ी प्रॅक्टीस क्यूँ ना कर ली जाए. ससुर जी अभी सो रहे हैं तो कुछ अगर ग़लत भी हुआ तो कुछ नही होगा. कम से कम उसे पता तो चल जाएगा के आख़िर करना क्या है. इन सबसे ज़्यादा जो ख्वाहिश उसके दिल में उठ रही थी वो थी लिंग को देखने की.

दामिनी थोडा आयेज को झुकी और काँपते हाथो से अपने ससुर को हिलाया.

"पिताजी. सो गये क्या?" उसने इस बात की तसल्ली करनी चाही के ठाकुर सचमुच गहरी नींद में है.जब दो तीन बार हिलने पर भी ठाकुर की आँख नही खुली तो दामिनी समझ गयी के कोई ख़तरा नही. फिर भी एक आखरी तसल्ली करने के लिए उसके पास रखा एक स्टील को फ्लवरपॉट उठाया और ज़ोर से ज़मीन पे फेका.

रात की खामोश पड़ी हवेली फ्लवरपॉट गिरने की आवाज़ से गूँज उठी. खुद दामिनी के कान बजने लगे पर ठाकुर की नींद नही खुली.

अपनी तसल्ली होने पर दामिनी मुस्कुराइ और फिर ठाकुर के बिस्तर पे आके बैठ गयी. काँपते हुए हाथों के उसने फिर ठाकुर की धोती की तरफ बढ़ाया. उसका गला सूख रहा था और पूरा जिस्म सूखे पत्ते के जैसे हिल रहा था. एक तो जिस्मानी रिश्ता और वो भी अपने ही ससुर के साथ. पाप और वासना के इस मेल ने उसके रोमांच को और बढ़ा दिया था.

धीरे से दामिनी ने अपना हाथ ठाकुर के सोए हुए लिंग पे रखा और सिहर उठी.लगा जैसे लोहे की कोई गरम रोड उसके हाथ में आ गयी हो. उसकी दोनो टांगे आपस में और सिकुड गयी और छहोट की दीवारें आपस में घिसने लगी. उसने हाथ को धीरे धीरे लिंग पे आगे पिछे किया और लिंग की पूरी लंबाई का अंदाज़ा लिया.

"बैठा हुआ भी कितना लंबा है" दामिनी ने धीरे से सोचा

उसने धोती के उपेर से ही लिंग को धीरे धीरे हिलाना और दबाना शुरू किया. आनंद की वजह से उसकी दिल की धड़कन और तेज़ हो गयी थी. आँखें मदहोश सी हो रही थी. दूसरा हाथ अपने आप उसकी योनि पे पहुँच गया और धीरे धीरे सारी के उपेर से ही उपेर नीचे होने लगा.

थोड़ी देर ऐसे ही हिलाकर दामिनी ने ठाकुर की धोती को एक तरफ सरकाना शुरू किया ताकि लिंग को बाहर निकाल सके. ठाकुर आराम से लेटे हुए थे इसलिए थोड़ी परेशानी हो रही थी. दामिनी ने अपना हाथ धीरे से धोती के अंदर घुसकर लिंग की तरफ बढ़ाया और उसके मुँह से आह निकल पड़ी.

ठाकुर ने धोती के नीचे कुछ नही पहेन रखा था. दामिनी के हाथ अंदर डालते ही उसके हाथ में ठाकुर का लिंग आ गया. दामिनी के होश उड़ गये.पहली बार उसने बिना किसी के कहे अपनी मर्ज़ी से एक लिंग को अपने हाथ में लिया था. मज़ा जो आ रहा था उसे शब्द बयान नही कर सकते. दामिनी ने पूरे लिंग पे हाथ फिराया और उसे देखने के लिए पागल सी होने लगी. उसने अपने हाथ की गिरफ़्त लिंग पे मज़बूत की और दूसरा हाथ योनि से हटाकर उससे धोती का एक सिरा पकड़ा. हाथ को एक ज़ोर का झटका दिया तो धोती खुलकर एक तरफ हो गया और दामिनी के आँखो के सामने ठाकुर का लंबा मोटा काला लिंग आ गया.

दामिनी की आँखें और मुँह दोनो ही खुले रह गये. लिंग कैसा होता है आज उसने ये पहली बार गौर से देखा था. कुछ देर तक वो लिंग को ऐसे ही पकड़े देखती रही. कुछ ना किया.फिर धीरे

से अपना हाथ पुर लिंग की लंबाई पे फिराया. लिंग अपने आप थोड़ा हिला और ठाकुर के जिस्म में थोड़ी हरकत हुई. दामिनी ने फ़ौरन अपना हाथ रोक लिया और ठाकुर को देखने लगी पर लिंग वैसे ही पकड़े रखा. फिर उसे एहसास हुआ के उसके लिंग हिलने से ठाकुर को नींद में भी मज़ा आया था और जिस्म जोश की वजह से हिला था. ये सोचकर दामिनी ने लिंग फिर धीरे से सहलाया और लिंग में फिर करकट हुई. तभी उसे कल रात की बात याद आई जब ठाकुर ने अपना लिंग उसके हाथ में देकर मुट्ठी बना दी थी. यही सोचते हुए दामिनी ने फिर लिंग को वैसे ही हाथ में पकड़ लिया और उसी तरह से आगे पिछे करने लगी.

उसने हाथ ने फिर अपना जादू दिखाया. नशे में सोए पड़े ठाकुर का लिंग नींद में भी खड़ा होने लगा. देखते देखते लिंग अपनी पूरी औकात पे आ गया और दामिनी हैरत से देखने लगी. अगर वो दोनो हाथों से पकड़ ले तो भी पूरा लिंग नही पकड़ पाएगी. मुट्ठी मुश्किल से लिंग को पूरा घेर पा रही थी. दामिनी वैसे ही लिंग को हिला रही थी के तभी उसके अपने पति के वो शब्द याद आए जो वो हर रात उसे कहता था

"जान. लिंग मुँह में लेके चूसो ना एक बार" ये उसके पति के हमेशा ख्वाहिश होती थी जिसे दामिनी ने कभी पूरा नही किया था. लिंग मुँह में लेने का सोचकर ही उसे उल्टी सी आती थी और वो हमेशा वीरभद्र को मना कर देती थी. ठाकुर के लिंग को हिलाते हिलाते दामिनी के दिमाग़ में ख्याल आया के क्यूँ ना आज ये भी करके देखा जाए. उसका पति हमेशा कहता था इसका मतलब मर्द को लिंग चुसवाने में मज़ा आता है. आज अगर वो कर सकी तो अपने ससुर को भी इसी तरह अपने वश में रखेगी. ना कर सकी तो कुछ और सोचेगी. यही सोचते हुए दामिनी ने अपने होंठ पर जीभ फिराई और मुँह को खोला.

लिंग के उपेर के हिस्से को उसने अपनी सारी से साफ किया और मुँह को ऐसे ही खोलके लिंग मुँह में लेने के लिए झुकी ही थी के उसकी साँस उपेर की उपेर और नीचे की नीचे रह गयी. सामने बड़े शीशे में कमरे का दरवाज़ा दिखाई दे रहा था और दिख रहा था दरवाज़े पे खड़ा दामूकाका जो ना जाने कबसे खड़ा हुआ सब देख रहा था.

दामिनी घबराकर फ़ौरन पलटी. लिंग उसके हाथ से छूट गया और वो बिस्तर से उठकर खड़ी हो गयी. नज़रें दरवाज़े पे खड़े दामूकाका से मिली. उसके यूँ अचानक पलट जाने से बुद्धा दामूकाका भी घबरा गया और फ़ौरन पलटकर चला गया.

दामिनी की समझ में नही आया के क्या करे. हवेली में क्या हो रहा था अगर ये बात बाहर निकल गयी तो रही सही इज़्ज़त भी चली जाएगी. वो कहीं मुँह दिखाने लायक नही रहेगी. अगर उसके देवरो और ननद को ये बात पता चली तो वो क्या करेंगे? तेज तो शायद उसे काटकर फेक देगा. और उसका अपना खानदान? उसके बाप भाई? वो तो कहीं के नही रहेंगे. दामिनी की पूरी दुनिया उसकी आँखों के सामने घूमने लगी. समझ नही आया के क्या करे. उसने पलटकर अपने ससुर की तरफ देखा. वो अभी भी सोए पड़े थे और लिंग अब भी वैसा ही खड़ा था पर जिस लिंग को देखकर उसकी योनि में आग लग रही थी अब उसे देखकर कुछ महसूस नही हुआ. वो धीमे कदमो से ठाकुर के कमरे से बाहर निकली और बाहर बड़े कमरे में आकर सोफे पे बैठ गयी.

दामूकाका ने सब देख लिया था. जाने क्या सोच रहा होगा. अगर उसने किसी को कहा तो? अगर उसने ठाकुर को ही बता दिया तो? वो रात को यहाँ क्या करने आया था? शायद उसके फ्लवरपॉट फेकने की आवाज़ सुनके आया होगा. अब क्या करूँ? दामिनी का दिमाग़ जैसे फटने लगा और उसे अपना पूरा प्लान एक पल में डूबता सा लगने लगा. दामूकाका इस हवेली के बारे में सब कुछ जानता है और इज़्ज़त भी करता था. अब मैं उसकी नज़रों में एक वेश्या से ज़्यादा कुछ नही बची.

तभी दामिनी के दिमाग़ में एक ख्याल आया. "दामूकाका इस हवेली के बारे में सब कुछ जानता था."

यही बात दामिनी अपने दिमाग़ में काई बार दोहराती रही. उसे कुछ सवालों के जवाब चाहिए थे और दामूकाका इस हवेली के बारे में सब कुछ जानता था. दामिनी ने इससे आगे और कुछ ना सोचा. वो उठ खड़ी हुई और तेज़ कदमो से दामूकाका के कमरे की तरफ बढ़ी.

दामूकाका हवेली के बाहर बड़े दरवाज़े के पास बने एक छहोटे से कमरे में रहता था. वो हवेली से बाहर निकली तो देखा के दामूकाका हवेली के लॉन में ही तेज़ कदमो से इधर उधर घूम रहा था. देखने में बेचेन से लग रहा था. वो एक छहोटी सी कद काठी का आदमी था. मुश्किल से साढ़े पाँच फुट और बहुत ही दुबला पतला. 70 के आसपास था इसलिए कमज़ोर जिस्म में एक मुर्दे जैसा लगता था.वो परेशान सा यहाँ वहाँ घूम रहा था के सामने आती दामिनी को देखकर अपने कमरे में जाने के लिए मुड़ा.

"दामूकाका" दामिनी की मज़बूत आवाज़ सुनकर वो ठिठक गया.

"माफ़ करना बहूरानी. वो हवेली में ज़ोर से कुछ गिरने की आवाज़ आई तो मैं तो बस देखने गया था. पर मैं तो....." वो बोल ही रहा था के दामिनी ठीक उसके सामने आ खड़ी हुई.

"ये बात अगर मेरे और तुम्हारे अलावा किसी और को पता चली को गर्दन काट कर हवेली के दरवाज़े पे टंगा दूँगी" दामिनी की घायल शेरनी सी आवाज़ सुनकर दामूकाका सहम गया. दामिनी के लंबे छोड़े कद के आगे वो 70 साल का कमज़ोर छोटा सा बुद्धा ऐसा लग रहा था जैसे किसी शेरनी के सामने हिरण का बच्चा.

"ज़ुबान खुले तो कटवा दीजिएगा बहूरानी. आप भरोसा रखिए ..... " दामूकाका फिर दोबारा अपनी बात पूरी ना कर सका. वजह थी उसके पाजामे पे रखा दामिनी का हाथ.

दामिनी ने आगे बढ़कर दामूकाका के लिंग को थाम लिया. दामूकाका घबराकर फ़ौरन पिछे हटा पर दामिनी साथ साथ आगे बढ़ी. वो पिछे एक पेड़ के साथ जा लगा और दामिनी आगे बढ़कर उससे सॅटकर खड़ी हो गयी.

उसकी नज़र ठीक दामूकाका की नज़रों से जा मिली. दामूकाका का लिंग इतना छोटा था के

दामिनी को अपने हाथ से पाजामे में लिंग ढूँढना पड़ा. एक तो छोटा सा आदमी और बुढहा. ये तो होना ही था सोचते हुए दामिनी ने हाथ उपेर किया और उसके पाजामे का नाडा खोल दिया.

"ये आप क्या कर रही हैं बहूरानी?" दामूकाका बोल ही रहा था के दामिनी ने उसके मुँह पे अंगुली रखकर खामोश होने का इशारा किया और उसके सामने अपने घुटनो पे बैठ गयी.

दामूकाका की कुछ समझ नही आ रहा था. सब कुछ इतनी जल्दी हो रहा था के उसका दिमाग़ झल्ला रहा था. उसने सामने बैठी दामिनी पे एक नज़र में डाली और दामिनी ने एक झटके में उसका पाजामा नीचे खींच दिया.दामूकाका ने नीचे झुक कर पाजामा पकड़ने की कोशिश की पर नाकाम रहा. दामिनी ने दूसरा हाथ उसकी छाती पे रखा और उसे वापिस सीधा खड़ा कर दिया.

दामूकाका का जिस्म काँप रहा था. दामिनी ने उसका छोटा सा लिंग अपने हाथ में लिया और धीरे धीरे हिलाने लगी और मुँह उठाकर नज़र दामूकाका से मिलाई.

"मैं तुमसे कुछ सवाल करूँगी दामूकाका. और मुझे सीधे सीधे जवाब चाहिए. कुछ भी छुपाया तो काट कर इसी लोन में गाड़ दूँगी" दामिनी की आवाज़ में जाने क्या था के उसे सुनकर ही दामूकाका की धड़कन रुकने लगी. पूजा पाठ में हमेशा डूबी रहने वाली ये औरत आज उसे कोई जल्लाद लग रही थी. वो सामने बैठी उसका लिंग ऐसे हिला रही थी जैसे अपने सवालों के जवाब के लिए उसे रिश्वत दे रही हो.

"जी बहूरानी" दामूकाका ने धीमी आवाज़ में कहाँ. दामिनी अब भी उसका लिंग हिला रही थी पर कुछ असर नही हो रहा था. लिंग वैसे ही बैठा हुआ था बल्कि और भी सिकुड रहा था.

"आज जो आदमी आया था वो कौन था?" दामिनी ने पहला सवाल पूछा. उसे महसूस हुआ के अपने ही नौकर का छोटा सा लिंग हिलाते हुए भी उसकी योनि फिर गीली होने लगी थी. उसका दूसरा हाथ खुद ही फिर उसकी योनि पे पहुँच गया. दामिनी ने लिंग गौर से देखा और अगले ही पल आगे बढ़ी और मुँह खोलकर लिंग मुँह में ले लिया.

दामूकाका का छोटा सा लिंग दामिनी के मुँह पे पूरा समा गया. उसने ज़िंदगी में पहली बार कोई लिंग अपने मुँह में लिया था, वो भी घर के बूढ़े नौकर का. मुँह में एक अजीब सा स्वाद भर गया. नाक में पसीने की बदबू चढ़ गयी. एक पल को दामिनी का दिल किया के मूह से निकाल दे पर उसने ऐसा किया नही और अपना मुँह आगे पिछे करने लगी. उसने महसूस किया के दामूकाका का लिंग अब तक बैठा हुआ था. ज़रा भी खड़ा नही हुआ था.

पर दामूकाका के जिस्म से उठ रही हरकत को वो साफ तौर पर महसूस कर सकती थी. जैसे ही उसने उसका लिंग अपने मुँह में लिया था वो काँप उठा था. पता नही मज़े की वजह से या किसी और कारण पर उसका जिस्म थर्रा गया था. और जब दामिनी ने लिंग मुँह में आगे पिछे करना शुरू किया तो दामूकाका के दोनो हाथ पिछे की और हो गये और उसने अपने पिछे पेड़ को पकड़ लिया था. दामिनी के लिए बड़ा मुश्किल हो रहा था उसके लिंग को अपने मुँह में रख

पाना. एक तो बैठा हुआ लिंग, वो भी छोटा सा और उपेर से दामिनी का पहली बार. पर वो फिर भी लगी रही. उसने लिंग एक पल के लिए मुँह से निकाला और अपना सवाल दोहराया.

"वो आदमी कौन था दामूकाका"

दामूकाका ने एक नज़र उसके चेहरे पे डाली. उसके मुँह से बोल नही फूट रहे पर जैसे तैसे बोला.

"ठाकुर साहब का भतीजा. उनके एकलौते भाई का एकलौता बेटा. ठाकुर साहब के अपने परिवार के सिवा और उनके खानदान में बस एक यही है" दामूकाका ने जवाब दिया.

दामिनी ने लिंग मुँह से निकाला " मुझे नही पता था के ससुर जी का कोई भाई भी है" बोलकर उसने लिंग फिर मुँह में ले लिया

"है नही था. बरसो पहले वो और उनकी पत्नी एक कार दुर्घटना में मर गये थे. ठाकुर साहब ने ही उसे पाल पोस्के बड़ा किया था" दामूकाका बोला

"फिर?" दामिनी ने लिंग मुँह में लिए लिए ही कहा.

"फिर वो ज़मीन की देखबाल और घर के बिज़्नेस में हाथ बटाने लगा. ज़्यादातर समय वीरभद्र के साथ ही रहता था और फिर वीरभद्र की मौत के बाद सारा काम वो खुद ही देखने लगा. ठाकुर साहब और आपके देवर तेज तो बस वीरभद्र के हत्यारे को ढूँढने में ही रह गये. काम काज से उनका ध्यान ही हट गया"

"ह्म्म्म्म" दामिनी लिंग चूस्ते चूस्ते बोली

"इसका नाम राजवर्धन सिंग है.राजवर्धन ही घर के सारे बिज़्नेस संभलता रहा और इसी में उसने कब धीरे धीरे सब कुछ अपने काबू में कर लिया इसका पता ही नही चला. धीरे धीरे ठाकुर साहब की सब ज़मीन राजवर्धन सिंगदाद उसने अपने नाम पे कर ली और किसी को इस बात की भनक तक नही पड़ी. जब पता चला तब तक देर हो चुकी थी."

दामिनी के लिए अब लिंग चूसना मुश्किल हो रहा था. उसे बड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी लिंग को मुँह में रखने के लिए क्यूंकी दामूकाका का लिंग अब भी बैठा हुआ था जिस वजह से उसका दामिनी का मुँह दुखने लगा था. और फिर वो लिंग चूस भी तो पहली बार रही थी. लिंग खड़ा नही था पर दामिनी जानती थी के फिर भी दामूकाका को मज़ा ज़रूर आ रहा है. जाने कब आखरी बार किसी औरत के करीब गया होगा ये, सोचते हुए दामिनी उठकर खड़ी हो गयी. अब वो दामूकाका के बिल्कुल सामने खड़ी थी. दामूकाका ने उसे सवालिया नज़रों से देखा जैसे कहना चाह रहा हो के लिंग चूसना बंद क्यूँ कर दिया.

"फिर क्या हुआ?" दामिनी ने कहा और धीरे से दामूकाका के और नज़दीक आ गयी. उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिए और ठीक सारी के उपेर से अपनी योनि पे रख दिया. दामूकाका और दामिनी दोनो के जिस्म काँप उठे. दामिनी ने अपने हाथ को थोड़ा सा सख़्त किया और ज़ोर लगाकर दामूकाका का हाथ अपनी टाँगो के बीच तक दबा दिया. अब उसकी योनि दामूकाका की मुट्ठी में थी.

"बस अब एक ये हवेली ही है जो अभी भी ठाकुर साहब के पास है और कुछ ज़मीन जो श्यामला के पास है. वरना और कुछ भी नही" कहते हुए दामूकाका ने धीरे से उसकी योनि को टटोलना शुरू किया. दामिनी के मुँह से आह निकल गयी और वो दामूकाका से सटकार खड़ी हो गयी. उसकी दोनो स्तन दामूकाका के जिस्म से सिर्फ़ 1 इंच की दूरी पे थी.

"अब वो ये हवेली खरीदना चाहता है. कह रहा था के ठाकुर साहब ये हवेली छोड़कर कहीं और चले जाएँ और वो मुँह माँगी रकम देने को तैय्यार है" दामूकाका ये कहते हुए सारी के उपेर से दामिनी की टाँगो में ऐसे हाथ चला रहा था जैसे याद करने की कोशिश कर रहा हो के योनि कैसी होती है.दामिनी के टांगे खुद ही खुलती जा रही थी ताकि दामूकाका आराम से जो चाहे कर सके.

"ठाकुर साहब बेचने को तैय्यार नही हैं. उसी बात पे झगड़ा हो रहा था" दामूकाका ने कहा और अपने हाथ को दामिनी की योनि पे उपेर से नीचे तक सहलाया तो दामिनी जैसे मस्ती में पागल होने लगी. जाने कितने अरसे बाद उसके अपने हाथ के सिवा किसी और का हाथ उसकी योनि की मालिश कर रहा था. वो दामूकाका से तकरीबन सटी खड़ी थी. जब वासना का ज़ोर जिस्म में और बढ़ गया तो वो अपने हाथ नीचे ले गयी और धीरे धीरे अपनी सारी को उपेर सरकाना शुरू किया.

"क्या तेज को इस बात का पता है?" दामिनी ने दामूकाका से पुछा. उसकी सारी खींचकर उसकी जाँघो के उपेर आ चुकी थी.

"तेज को अय्याशि से फ़ुर्सत ही कहाँ है के उसे ये पता होगा"दामूकाका ने दामिनी की और देखते हुए कहा. दोनो के जिस्म गरम हो चुके थे पर बात बराबर कर रहे थे.दामूकाका ने दामिनी की टाँगो को अपने हाथ से थोड़ा और खोलना चाहा तो उसका हाथ पे दामिनी की नग्न टाँग महसूस हुई. उसे पता ही ना चला था के कब दामिनी ने अपनी सारी उपेर खींच ली थी.

दामिनी दामूकाका के इतने करीब खड़ी थी के वो नीचे देख नही सकता था पर हां वो नीचे से सारी उपेर उठाके नग्न हो चुकी है इस बात का एहसास उसे हो गया था. धीरे धीरे दामूकाका का हाथ दामिनी की नग्न जाँघो पे सरकाने लगा. दामिनी को जैसे रात के अंधेरे में भी सूरज दिखने लगा था. उसने दामूकाका के हाथ को पकड़कर अपनी टाँगो के बीच खींचा और ठीक अपनी पॅंटी के उपेर से अपनी योनि पे रख दिया. वो जानती थी के दामूकाका भले एक 70 साल का बुद्धा नौकर ही सही पर मर्द तो है और वो भी गरम हो चुका है इस बात का अंदाज़ा

उसे हो गया था. अगले ही पल दामिनी की सोच सही निकली. दामूकाका ने उसकी पँटी को एक तरफ सरकया और हाथ सीधा उसकी नग्न योनि पे रख दिया.

दामिनी की साँस रुक गयी. उसे लगा जैसे वो अभी मरने वाली है. इतना मज़ा उसे ज़िंदगी में कभी नही आया था. दामूकाका उसकी नग्न योनि पे हाथ ऐसे रगड़ रहा था जैसे चिंगारी उठाने की कोशिश कर रहा हो. दामिनी अब भी उसे सटके खड़ी थी इसलिए वो देख अब भी कुछ नही सकता था जिसकी कमी वो अपने हाथ से पूरी कर रहा था. जैसे अपने हाथ से उसकी योनि देखना चाह रहा हो, अंदाज़ा लगाना चाह रहा हो. दामिनी ने अपनी बंद आँखें खोली और सीधे दामूकाका को देखा. वो उसकी साँस के साथ उठती और गिरती स्तनों को देख रहा था. दामिनी जानती थी के वो नौकर है और आगे बढ़ने की हिम्मत नही कर पा रहा है. उसने दामूकाका का दूसरा हाथ पकड़ा और अपनी एक छाती पे रखके दबा दिया. इस के साथ ही जैसे आसमान फॅट पड़ा. हाथ स्तन पे रखते ही दामूकाका ने अपनी दो उंगलियाँ उसकी योनि में घुसा दी और स्तन को ऐसे कासके पकड़ लिया जैसे दबाके कुछ निकालने की कोशिश कर रहा हो. दामिनी का पूरा बदन काँप उठा. उसकी साँस रुक गयी. दिमाग़ में बम फॅट पड़े और योनि से नदी सी बह निकली. उसने एक हाथ से कस्के दामूकाका का लिंग पकड़ लिया और दूसरे हाथ से दामूकाका के योनि पे रखे हाथ को दबा दिया. और इसके साथ ही उसके घुटने कमज़ोर पड़ गये और वो समझ गयी के वो ख़त्म चुकी है.

दामिनी ने अपनी सारी को नीचे गिराया और दामूकाका से दूर हटके खड़ी हो गयी. उसने अपना मुँह दूसरी तरफ कर लिया और अपनी साँस पे काबू करने लगी. उसने देखा भी नही के दामूकाका क्या कर रहा है. जब पलटी तो वो अपने कमरे की तरफ जा रहा था.

"दामूकाका." उसकी आवाज़ सुनकर दामूकाका पलटा

"मेरे पति को किसने मारा? क्या राजवर्धन सिंग ने?" दामूकाका ने अपने दोनो कंधे झटकाए जैसे कहना चाह रहा हो के पता नही और अपने कमरे की तरफ बढ़ गया.

भाग - 3

सुबह दामिनी देर तक सोती रही. आज दामूकाका ने भी उसे आकर नही जगाया. शायद कल रात की बात पे हिचकिचा रहा है.सोचते हुए दामिनी उठी और बाथरूम की तरफ बढ़ गयी.

नाहकार जब वो नीचे उतरी तो ठाकुर इंद्रदेव सिंग फिर कहीं बाहर गये हुए थे. वो किचन में पहुँची तो दामूकाका दोपहर का खाना बनाने की तैय्यरी कर रहा था.

"आपने आज मुझे जगाया नही?" उसने दामूकाका से पूछा पर दामूकाका ने जवाब ना दिया. जब दामिनी ने देखा के दामूकाका उसकी तरफ नज़र नही उठा रहा है तो वो बाहर आकर सोफे पे बैठ गयी.

थोड़ी देर बाद दामूकाका किचन से बाहर आया.

"बहूरानी आपसे एक बात कहनी थी."उसने दामिनी की और देखते हुए कहा.

"मैं जानती हूँ आप क्या कहना चाह रहे हैं काका. कल रात....." दामिनी बोलना ही चाह रही थी के दामूकाका ने उसकी बात को काट दिया

"मैं समझ सकता हूँ. आप जवान हैं और 10 साल से इस हवेली में क़ैद हैं. मुझसे आपसे कोई शिकायत नही बहूरानी. मैं तो सिर्फ़ इतना कहना चाह रहा था के अगर किसी को इस बात की भनक भी पड़ गयी तो...."दामूकाका ने बात अधूरी छोड़ दी.

"किसी को कुछ पता नही चलेगा काका. और वैसे भी इस हवेली में अब आता जाता कौन है" दामिनी ने जैसे मज़ाक सा बनाते हुए हासकर कहा.

दामूकाका की समझ में नही आया के वो क्या कहे. वो थोड़ी देर ऐसे ही खड़ा रहा और फिर वापिस किचन में जाने के लिए मुड़ा.

"दामूकाका" दामिनी ने कहा.

"आपने आखरी बार एक किसी औरत को नग्न कब देखा था" दामिनी ने सीधा उसकी आँखो में देखते हुए पूछा.

दामूकाका हड़बड़ा गया. इस सीधे हमले के लिए वो तैय्यार नही था. इस तरह का सवाल और वो भी हवेली की मालकिन से. उसके मुँह से बोल ना फूटा.

"बताइए काका. आखरी बार किसी औरत के साथ कब थे आप. कल रात से पहले" दामिनी ने सवाल फिर दोहराया.

"मेरी बीवी के गुज़रने से पहले." दामूकाका ने धीमी आवाज़ में कहा" कोई 25 साल पहले"

"25 साल?" दामिनी ने हैरत से कहा"आपका कभी दिल नही किया?"

दामूकाका कुछ ना बोला तो उसने सवाल फिर दोहराया.

"दिल करता भी तो क्या करता बहूरानी? कहाँ जाता?" दामूकाका ने अपनी नज़र नीचे झुका रखी थी. जैसे शरम से गढ़ा जा रहा हो.

"अब दिल करता है?" दामिनी ने फिर सीधा सवाल दागा.

दामूकाका कुछ ना बोला. दामिनी ने सवाल फिर पूछा पर दामूकाका से जवाब देते ना बना.

दामिनी उठकर फिर दामूकाका के करीब आ गयी. उसने दामूकाका का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ लाकर बिठाया.

"मुझे आपकी मदद चाहिए काका" दामूकाका अब उसकी तरफ ही देख रहा था.

"मुझे अपनी पति के हत्यारे का पता लगाना है. मैं आपकी मदद चाहती हूँ. बदले में आप जो कहें मैं करने को तैय्यार हूँ" दामिनी जैसे एक सौदा कर रही थी.

"पर कैसे?"दामूकाका की कुछ समझ नही आया.

"वो आप मुझपे छोड़ दीजिए. बस आपको मेरे साथ रहना होगा. जो मैं कहूँ वो करना होगा."

दामूकाका की अब भी कुछ समझ में नही आ रहा था.

"ज़्यादा सोचिए मत काका. बस आप मेरे कहे अनुसार चलते रहिए. मेरी खातिर. मैं आपके हाथ जोड़ती हूँ"दामिनी की आँख में पानी भर आया"मैं अब और इस हवेली में एक मूर्ति बनकर नही रह सकती"

दामूकाका ने फ़ौरन उसके सामने हाथ जोड़ लिए

"आप जैसा कहें मैं वैसा ही करूँगा मालकिन. आप रोइए मत. आपको इस हालत में देखकर मुझे भी बुरा लगता है. आपको जो ठीक लगे मुझे बता दीजिएगा और मुझसे जो बन पड़ेगा मैं

करूँगा."

दामिनी धीरे से मुस्कुराइ. दोनो थोड़ी देर ऐसे ही खामोश बैठे रहे.

"मैं खाना बना लेता हूँ" कहते हुए दामूकाका उठा और किचन की तरफ बढ़ चला.

"पिताजी कहाँ हैं?"दामिनी ने पूछा

"वो तो सुबह से ही बाहर गये हुए हैं."दामूकाका ने कहा और फिर कुछ सोचकर फिर दामिनी से पूछा

"कल रात ठाकुर साहब के कमरे में आप और ठाकुर साहब दोनो....."दामूकाका हिचकिचा कर बोला

"नही वो नशे में सो रहे थे. उन्हें कुछ पता नही था."दामिनी ने कहा" सब बता दूँगी काका. आपको सब समझ आ जाएगा धीरे धीरे"

दामूकाका ने अपना सर हिलाकर उसकी हां में हां मिलाई और किचन की तरफ बढ़ गया. दरवाज़े पर पहुँच कर वो फिर पलटा और दामिनी से कहा

"एक बात कौन बहूरानी?"

दामिनी ने सवालिया नज़र से दामूकाका की तरफ देखा.

"आपके पति के खून का राज़ इसी हवेली में कहीं है. इन दीवारो में क़ैद है कहीं जो 10 साल से नज़र नही आया. इस वीरान पड़ी हवेली में कहीं कुछ ऐसा है जो आपकी पति की मौत के साथ जुड़ा हुआ है. अगर आप अपने पति की हत्या का राज़ मालूम करना चाहती हो तो इस हवेली से पुच्छना होगा. यहीं कहीं दफ़न है सारी कहानी" कहते हुए दामूकाका फिर किचन में चला गया

दामूकाका के जाने के बाद दामिनी थोड़ी देर वहीं बड़े कमरे में बैठी रही और फिर उठकर अपने कमरे में आ गयी.दामूकाका के कहे शब्द उसके कान में गूँज रहे थे. "इस हवेली में कहीं कुछ ऐसा है जो आपके पति की मौत के साथ जुड़ा हुआ है" उसे ये बात हमेशा से महसूस होती थी के काफ़ी कुछ ऐसा है जो वो जानती नही और उसने कभी पता करने की कोशिश भी नही की. उसकी दुनिया तो सिर्फ़ उसके कमरे में बसे मंदिर तक थी. शादी से पहले भी, शादी के बाद भी और विधवा हो जाने के बाद भी. उसे अपने उपेर हैरत हो रही थी के कैसे उसने 10 साल गुज़र दिए, खामोशी से. शायद सामने रखी मूर्ति को पूजते पूजते वो खुद भी एक मूरत ही हो गयी थी. खामोश, चुप चाप रहने वाली एक गुड़िया जिसे किसी चीज़ से कोई मतलब नही था. जिसे जो कह दिया जाता वो कर देती. उसे हैरत थी के कैसे उसने 10 साल से अपने

पति के बारे में जानने की कोई कोशिश नही की. कैसे सब चुप हो गये थे कुछ अरसे के बाद और वो भी उन चुप लोगों में से एक थी.खामोशी से सब वीरभद्र को भूल गये थे. वो सिर्फ़ सामने लगी एक तस्वीर में सिमट गया था और इसमें सबसे ज़्यादा कसूर शायद उसकी अपनी बीवी का था जिसने ना उसके जीते जी कभी उसे कोई सुख दिया और ना ही उसके मरने के बाद उसकी बीवी होने का फ़र्ज़ अदा किया.

पर अब ऐसा नही होगा, सोचते हुए दामिनी उठी और फिर शीशे के सामने जा खड़ी हुई.

"मैं अब अपनी ज़िंदगी इस तरह से बेकार नही होने दूँगी"जैसे वो अपने आप से ही कह रही हो. वो अब भी सफेद सारी में ही थी.

"वक़्त आ गया है के इसे हमेशा के लिए अपने जिस्म से हटाया जाए" कहते हुए दामिनी ने अपनी सारी उतरनी शुरू की और सामने रखी उसकी ससुर की लाल रंग की सारी की तरफ देखा.

अचानक उसे वो शाम याद गयी जब वो आखरी बार अपने पति से मिली थी. उसे ठोकने के लिए बेताब वीरभद्र अपनी माँ की आवाज़ सुनकर ऐसे ही रह गया था. सामने योनि खोले हुए झुकी खड़ी बीवी को उसी हालत में छोड़कर उसे बाहर जाना पड़ा था.

दामिनी की आँखों के सामने वो गुज़री शाम फिर से घूमने लगी. शकुंतला देवी यानी उसकी मर चुकी सास को मंदिर जाना था जिसके लिए उन्होने वीरभद्र को बुलाया. उस वक़्त शाम के लगभग 5 बज रहे थे. वीरभद्र तैय्यार होकर नीचे पहुँचा और अपनी माँ को कार में बैठाकर मंदिर की तरफ निकल गया. उसने अपनी माँ को मंदिर छोड़कर कहीं काम से जाना था और आते हुए फिर मंदिर से शकुंतला देवी को लेते हुए आना था. उनके जाने के बाद दामिनी अपने कमरे में बैठी टीवी देख रही थी. वीरभद्र के जाने के कोई 4 घंटे बाद नीचे उठा शोर सुनकर वो भागती हुई नीचे आई. उस वक़्त हवेली में रौनक हुआ करती थी. इंद्रदेव सिंग का पूरा खानदान यहीं था. घर में नौकरों की लाइन हुआ करती थी इसलिए शोर भी काफ़ी तेज़ी से उठा था. दामिनी भागती हुई नीचे आई तो बड़े रूम का नज़ारा देखकर उसकी आँखें खुली रह गयी. वीरभद्र सिंग खून से सना हुआ सोफे पे पड़ा था. दामिनी को उस वक़्त उस बात का बिल्कुल अंदाज़ा नही था के वो मर चुका है. उसे लगा के शायद घायल है. और ना ही शायद कोई और ये बात मान लेने को तैय्यार था के वीरभद्र के जिस्म में अब जान बाकी नही रही. ठाकुर इंद्रदेव सिंग अपने बेटे की लाश के पास खड़े जाने नौकरों से क्या कुछ नही लाने को कह रहे थे. कभी पानी, तो कभी कोई दवाई. तेज डॉक्टर को लेने के लिए पहले से ही जा चुका था. श्यामला अपने भाई के चेहरे पे हल्के हल्के थप्पड़ मार रही थी, जैसे एक मुर्दे को जगाने की कोशिश कर रही हो. वो नज़ारा देखकर दामिनी तो जैसे वहीं खड़ी ही रह गयी थी और अगले ही पल चक्कर खाकर गिर पड़ी. फिर क्या हुआ उसे कुछ याद नही.

जब होश आया तो हवेली में मरघाट सन्नाटा था. हर तरफ खामोशी थी. उसे याद नही किसने पर किसी ने धीरे से उसके कान में कहा था के वीरभद्र अब नही रहा. उसके बाद कुछ दिन

तक क्या हुआ उसका दामिनी को कोई अंदाज़ा नही रहा. वो होश में होते भी होश में नही थी. कब वीरभद्र का संस्कार किया गया, कब उसे सफेद सारी में लपेट दिया गया दामिनी कोई कुछ याद नही था. वो जैसे एक सपने में थी और उसी सपने में उसने अगले 10 साल गुज़र दिए. पति की मौत के बाद जैसे उसे किसी से कोई सरोकार ना रहा.वो और भगवान में विलीन हो गयी. घंटो मूर्ति के सामने बैठी पूजा करती रहती. उसके अपने मायके से उसके माँ बाप उसे मिलने आए, उसका एकलौता भाई आया, उसे साथ ले जाने के लिए पर वो कहीं नही गयी. जैसे ये हवेली एक ही जगह पे खड़ी थी वैसे भी दामिनी भी वहीं अपने कमरे में ही क़ैद रही. 10 साल तक.

दामिनी ने अपना सर झटका और ये सारे ख्याल दिमाग़ से हटाए.आज 10 साल बाद उसकी नींद खुली थी. पूरी तरह. और अब वो सब कुछ अपने हाथ में कर लेना चाहती थी. अपने पति के हत्यारे को अंजाम तक पहुँचना चाहती थी, इस हवेली की खुशी को लौटना चाहती थी. इस हवेली में फिर से वही रौनक देखना चाहती थी.

दामिनी ने शीशे में अपने आपको देखा. वो सफेद सारी उतारकर एक बार फिर नग्न खड़ी अपना जिस्म देख रही थी. पिच्छले दो दिन में कितना कुछ बदल गया था. उसने अपने आपको इतनी बार नग्न कभी नही देखा था जितना इन 2 दिन में देख लिया था. टांगे थोड़ी फेलाकर उसने अपनी योनि पे एक नज़र डाली जहाँ दामूकाका की उंगलियाँ कल रात घुसी हुई थी. दामिनी पलटी और लाल सारी उठाकर पहेन्ने लगी.

उसके पति की मौत से जुड़े कई सवाल थे जो उसे 2 दिन से परेशान कर रहे थे. हवेली जिस जगह पर थी वो गाओं से काफ़ी बाहर थी. मंदिर गाओं के दूसरी तरफ था. फिर भी कार से मंदिर जाने तक 20 मिनट से ज़्यादा समय नही लगता था. उसके सिवा वीरभद्र को कहाँ जाना था ये बात कोई नही जानता था जबकि वो हमेशा घर में बताके जाता था के उसने कहाँ जाना है. पर उस शाम इस बात का उसने किसी से कोई ज़िक्र नही किया था. उसने कहीं जाना था ये उसने शकुंतला देवी को मंदिर छोड़ने के बाद उनसे कही थी पर तब भी उन्हें नही बताया था के वो कहाँ जा रहा है. उसकी लाश हवेली से मुश्किल से 10 कदम की दूरी पे मिली थी. वो शकुंतला देवी को छोड़कर वापिस हवेली की तरफ क्यूँ आया था. उसपर 2 गोलियाँ चलाई गयी और लाश रात के 9 बजे के आस पास मिली थी. लाश जिस हालत में मिली थी उसे देखकर यही लगता था के उसे गोली मुस्किल से 15 मिनट पहले मारी गयी थी मतलब के उस रात ढल चुकी थी तो रात के सन्नाटे में हवेली में किसी ने गोली की आवाज़ क्यूँ नही सुनी. वो हवेली से शाम के 5 बजे निकला था, मतलब के 5.30 तक उसने अपनी माँ को मंदिर छोड़ दिया होगा. तो फिर अगले 3 घंटे तक वो कहाँ था? उसकी लाश उसकी बहेन श्यामला को मिली थी जो उस रात गाओं में अपनी किसी सहेली के घर से आ रही थी. रास्ते में वीरभद्र की गाड़ी खड़ी देखकर उसने गाड़ी रोकी तो गाड़ी में कोई नही था. खून के निशान का पिच्छा किया तो भाई की लाश मिली. पर उससे 10 मिनट पहले ही इंद्रदेव सिंग हवेली में आए थे. तो उस वक़्त गाड़ी वहाँ क्यूँ नही थी? हवेली से गाओं तक का पूरा रास्ते पर ठाकुर ने लॅप पोस्ट्स लगवा रखे थे और तकरीबन उसी वक़्त घर के सारे नौकर वापिस गाओं जाते थे फिर उनमें से किसी ने कुछ होते क्यूँ नही देखा? वीरभद्र के 2 आदमी हमेशा उसके साथ होते थे, हथ्यार के साथ पर उस शाम वो अकेला क्यूँ गया? श्यामला भी उस शाम

अकेली गयी थी. हिफ़ाज़त के लिए रखे गये हत्यारबंद आदमी उस शाम कहाँ थे? सोच सोचकर दामिनी का सर फटने लगा तो उसे दामूकाका की कही बात फिर याद आने लगी " आपके पति की हत्या का राज़ इसी हवेली में बंद है. दफ़न है यहीं कहीं"

दामिनी लाल सारी पेहेन्के नीचे आई तो दामूकाका खाना बनाकर बड़े घर की सफाई में लगा हुआ था. दामिनी को देखा तो देखता ही रह गया. 10 साल से जिसे सफेद सारी में देखा था उसे लाल सारी में एक पल के लिए तो पहचान ही नही पाया.

"काफ़ी खूबसूरत लग रही हो बहूरानी" दामूकाका ने कहा

दामिनी ने मुस्कुरा कर उसका शुक्रिया अदा किया और सफाई में उसका हाथ बटाने लगी.

"आप रहने दीजिए"दामूकाका ने मना किया भी तो दामिनी हटी नही

"ऐसी अच्छी लगती हैं आप. ऐसी ही रहा करो. भरी जवानी में ही सफेद सारी में लिपटी मत रहा करो" दामूकाका ने कहा तो दामिनी ने उसकी तरफ देखा

"पिताजी ने लाकर दी है" दामिनी ने कहा तो दामूकाका काम छोड़कर कुछ सोचने लगा

"मैं जानती हून आप क्या सोच रहे हैं काका. कल रात की बात ना. आपने कल रात जो देखा था वो मेरी मर्ज़ी थी. इस हवेली में फिर से सब कुछ पहले जैसा हो उसके लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है के पिताजी होश में आए. आअप जानते हैं ना मैं क्या कह रही हूँ?" दामिनी ने पूछा

दामूकाका ने सर इनकार में हिलाया.

"आपकी ग़लती नही है काका. मैं शायद खुद भी नही जानती के मैं क्या कह रही हूँ, क्या सोच रही हूँ और क्या कर रही हूँ. मैं सिर्फ़ इतना जानती हूँ के मेरे नंगे जिस्म की हल्की सी झलक पाकर पिताजी ने परसो पूरा दिन शराब नही पी थी और काफ़ी अरसे बाद अब वो हवेली से बाहर निकले हैं." दामिनी ने कहाँ तो दामूकाका ने हैरानी से उसकी तरफ देखा.

"आप ठीक सोच रहे हो काका."दामिनी ने जैसे उसका चेहरा पढ़ते हुए कहा "और इसलिए मैने आपसे कहा था के मुझे आपकी मदद चाहिए. ये बात हवेली से बाहर ना निकले. बदले में आप जो चाहें आपको मिल जाएगा. जो कल रात मैने आपको दिया वो मैं दोबारा देने को तैय्यार हूँ"

दामिनी ने जो बे झिझक कहा था वो बात सुनकर दामूकाका का सर चकराने लगा था. दामिनी कुछ करने वाली है ये बात वो जानता था पर क्या अब समझ आया. वो अपने ही ससुर के साथ सोने की बात कर रही थी.

"पर बहूरानी"दामूकाका से कुछ बोलते नही बन पा रहा था.

"पर क्या काका?" अब दोनो में से कोई कुछ काम नही कर रहा था.

दामिनी अच्छी तरह से जानती थी के दामूकाका का खामोश रहना कितना ज़रूरी था. ये बात अगर गाओं में फेल गयी तो रही सही इज़्ज़त भी चली जाएगी. इस हवेली की तो कोई ख़ास इज़ात नही बची थी पर उसके आपके पिता और भाई की इज़्ज़त पर भी दाग लग जाएगा. क्या सोचेंगे वो ये जानकर के उनकी अपनी बेटी अपने ससुर से ठुकवा रही है.

"बहूरानी आपके पिता समान हैं वो. पाप है ये" दामूकाका ने हिम्मत जोड़कर कहा

"पाप और पुण्या क्या है काका? मैने तो कभी कोई पाप नही किया था आज तक पर मुझे क्या मिला? भारी जवानी में एक सफेद सारी?"कहते हुए दामिनी दामूकाका के करीब आई

"और आप काका? आप पाप की बात कर रहे हैं? क्या आप मेरे पिता समान नही हैं? कल रात जब मेरी टाँगो के बीच में अपनी उंगलियाँ घुसा रहे थे तब ये ख्याल आया था आपको के मैं आपकी बेटी जैसी हूँ? जब मेरी स्तन को दबा रहे थे तब ये ख्याल आया था के ये पाप है"दामिनी का चेहरा अब सख़्त हो चला था. वो सीधा दामूकाका की आँखो में झाँक रही थी.

"कल जब मैने आपका अपने मुँह में ले रखा था तब ये ख्याल आया था आपको काका? नही. नही आया था क्यूंकी तब आपके साआँने आपकी बेटी जैसी एक लड़की नही सिर्फ़ एक औरत थी. मुझमें आपको सिर्फ़ एक औरत का नंगा जिस्म दिखाई दे रहा था और कुछ नही." कहते हुए दामिनी फिर आगे आई और अपनी सारी का पल्लू गिरा दिया.

सारी का पल्लू जैसे ही हटा तो ब्लाउस में बंद दामिनी की दोनो स्तन दामूकाका के सामने आ गयी. ब्लाउस दामिनी की बड़ी बड़ी स्तनों के हिसाब से छोटा था इसलिए दोनो स्तन जैसे बाहर को निकलकर गिर रही थी.क्लीवेज ही इतना ज़्यादा दिखाई दे रहा था के किसी के भी मुँह में पानी आ जाए.दामूकाका का सर चकराने लगा. उसने अपने मुँह दूसरी तरफ कर लिया.

"क्या हुआ काका? रात तो बड़ी ज़ोर से दबाया था. अब उधर क्यूँ देख रहे हो?"कहते हुए दामिनी ने दामूकाका का सर पकड़ा और अपनी स्तनों की तरफ घुमाया

दामिनी की दोनो स्तन अब दामूकाका के चेहरे से ज़रा ही दूर थी. दामिनी उससे लंबी थी. 70 साल का वो बूढ़ा जिस्मानी तौर पे दामिनी से कमज़ोर था. उसका चेहरा सिर्फ़ दामिनी की दोनो स्तनों तक ही आ रहा था इसलिए वो उसकी नज़रों के सामने थी. दामिनी ने फिर वो किया जिससे दामूकाका की रही सही हिम्मत भी जवाब दे गयी. उसने दामूकाका का सर पकड़कर आगे की तरफ खींचा और अपने क्लीवेज में दबा लिया. इसके साथ ही दामिनी और दामूकाका दोनो के मुँह से आह निकल गयी.

दामूकाका का चेहरा आगे से दामिनी के नंगे क्लीवेज पे दब रहा था. उसके नंगे जिस्म का स्पर्श मिलते ही दामूकाका के जिस्म में फिर हलचल होने लगी. बुद्धा ही सही पर था तो मर्द

ही. जब दामिनी ने पकड़ ढीली की तो उसने अपने सर पिछे हटाया और दामिनी की दोनो स्तनों की तरफ देखने लगा. कल रात उसने एक हाथ से एक छाती दबाई ज़रूर थी पर अंधेरे में कुछ देख ना सका था और दबाई भी बस पल भर के लिए थी. अगले ही पल दामिनी ख़त्म गयी थी और उससे अलग हो गयी थी. उसकी दोनो नज़रें जैसे दामिनी की स्तनों से चिपक कर रही गयी.

"क्या हुआ काका? अब ध्यान नही आ रहा बेटी और पाप का?"दामिनी ने कहा पर दामूकाका अब उसकी कोई बात नही सुन रहा था. वो तो बस एकटक उसकी स्तनों को ब्लाउस के उपेर से निहार रहा था. पर उसकी हिम्मत नही पड़ रही थी के इसके अलावा कुछ आगे कर सके.

दामिनी ने जैसे उसके दिल में उठती ख्वाहिश को ताड़ लिया और अपने ब्लाउस के बटन खोलने लगी.

"लो काका. आप भी क्या याद रखोगे. इस उमर में एक जवान जिस्म का नज़ारा करो" दामिनी को खुद पे हैरत होने लगी थी. पिच्छले दो दिन में वो दिमागी तौर पे तो बदल ही गयी थी पर उसकी ज़ुबान पे एकदम से अलग हो गयी थी. कहाँ दबी दबी सी आवाज़ में बोलने वाली एक मासूम सी लड़की और कहाँ बेबाक उँची आवाज़ में बोलती एक शेरनी के जैसी औरत जिसने शब्द भी रंडियों की तरह बोलने शुरू कर दिए थे.

रूपपली ने बटन तो सारे खोल दिए थे पर ब्लाउस को दोनो तरफ से पकड़ रखा था. दामूकाका इंतेज़ार कर रहा था के वो ब्लाउस दोनो तरफ से खोले तो उसे अंदर का नज़ारा मिले पर दामिनी वैसे ही खड़ी रही.

"क्या हुआ काका?"दामिनी ने पूछा तो दामूकाका ने उसकी तरफ देखा पर कुछ बोला नही. मगर उसकी आँखें साफ उसके दिल की की बात कह रही थी.

"दामिनी धीरे से मुस्कुराइ और ब्लाउस को दोनो तरफ से छोड़ दिया और ब्रा में बंद उसकी स्तन दामूकाका के सामने थी. गोरी चाँदी पे काला ब्रा अलग ही खिल रहा था. दामूकाका की साँस तेज़ होने लगी थी. इस उमर में इतनी उत्तेजना उससे बर्दाश्त नही हो रही थी. लग रहा था जैसे अभी हार्ट अटॅक हो जाएगा.

"ये आपके लिए है काका. देखो जी भर के देखो" कहते हुए दामिनी ने दामूकाका का हाथ पकड़ा और अपनी एक स्तन पे रख दिया. उसने दामूकाका के हाथ पे थोड़ा ज़ोर डाला और उसका इशारा पाकर दामूकाका ने भी अपने हाथ को थोड़ा बंद किया. नतीजा? दामिनी की छाती थोड़ी सी दब गयी.

"ओह काका" दामिनी के मुँह से निकल पड़ा"थोड़ा सा और ज़ोर लगाओ"

उसने कहा तो दामूकाका ने अपना हाथ और ज़ोर से दबाया और उसकी ब्रा के उपेर से ही

छाती को मसल्ने लगा.

"हां काका. ऐसे ही. और ज़ोर से. मज़ा आ रहा है ना आपको भी" कहते हुए दामिनी ने अपनी आँखें बंद कर ली.

दामूकाका को इतना इशारा काफ़ी थी. उसने अपना दूसरा हाथ भी दामिनी की छाती पे रख दिया और दोनो स्तनों को दबाने लगा. दोनो की साँस भारी हो चली थी. दामूकाका कभी उसकी स्तनों को सहलाता तो कभी ज़ोर लगाकर दबाता पर अब उसके हाथ में इतनी ताक़त नही बची थी. दामिनी और ज़ोर से दबाओ कह रही थी और दामूकाका पूरा ज़ोर लगा रहा था. दोनो एकदम चिपके खड़े थे.

दामिनी ने अपनी आँखें बंद किए ही अपना एक हाथ थोड़ा नीचे किया और पाजामे के उपेर से दामूकाका का लिंग टटोलने लगी. उसके जिस्म में आग लगी हुई थी. टांगे कमज़ोर हुई जा रही थी. उसने दामूकाका के छहोटे से लिंग को हाथ से पकड़के दबाया. उसे हैरत थी के दामूकाका का लिंग अब भी बैठा हुआ था पर शायद इस उमर में इससे ज़्यादा वो कर भी नही सकता था. ये सोचकर दामिनी ने अपना एक हाथ अपनी ब्रा के नीचे रखा और अपनी ब्रा को एक तरफ से खींचकर अपनी छाती को बाहर निकाल दिया.

अब उसकी एक छाती ब्रा के अंदर थी और दूसरी नीचे की तरफ से बाहर. वो दामूकाका से लगी खड़ी थी और उसका एक हाथ पाजामे के उपेर से लिंग हिला रहा था. उसने आँखें खोली तो दामूकाका आँखें फाडे उसकी बाहर निकली छाती को देख रहा था. धीरे से दामूकाका का हाथ उपेर आया और उसकी नग्न छाती पे पड़ा. दामिनी जैसा पागल होने लगी. घर के बूढ़े नौकर का ही सही पर हाथ था तो एक मर्द का. उसके निपल्स खड़े हो गये थे. दामूकाका एक बार फिर उसकी छाती पे लग गया था और पूरी ताक़त लगाकर दबा रहा था जैसे आटा गूँध रहा हो.

"चूसोगे नही काका" दामिनी ने कहा और फिर खुद ही अपनी एक छाती को पकड़कर दामूकाका के मुँह की तरफ कर दिया. उसका निपल दामूकाका के मुँह से जा लगा. दामूकाका ने मुँह खोला और निपल को मुँह में लेने ही लगा था के दामिनी ने कहा

"चूसो काका. अपनी बेटी समान लड़की की छाती चूसो. जो करना है करो. पाप को भूल जाओ पर एक बात याद रखना. ये बात अगर हवेली के बाहर गयी तो गर्दन काटकर हवेली के दरवाज़े पे टाँग दूँगी"

दामिनी की आवाज़ में कुछ ऐसा था के दामूकाका अंदर तक काँप गया. जैसे किसी घायल शेरनी के गुर्राने की आवाज़ सुनी हो. उसका खुला मुँह बंद हो गया और वो दामिनी की तरफ देखने लगा. उसकी आँखों में डर दामिनी को साफ नज़र आ रहा था और दामिनी की आँखों में जो था वो देखकर तो दामूकाका को लगा के वो पाजामे में ही पेशाब कर देगा.

"डरो मत काका"दामिनी फिर मुस्कुराइ तो दामूकाका की जान में जान आई"खेलो मेरे जिस्म से. ये आपका हो सकता है जब भी आप चाहो बस आपकी ज़ुबान बंद रहे और जो मैं कहूँ वो हो जाए. आपको मेरे साथ मेरी हर बात मान लेनी होगी बिना कोई सवाल किए. समझे?" दामिनी ने पूछा. दामूकाका ने हां में सर हिला दिया.

तभी बाहर कार की आवाज़ सुनकर दोनो अलग हो गये. ठाकुर इंद्रदेव सिंग वापस आ गये थे. दोनो एक दूसरे से अलग हुए और अपने कपड़े ठीक करने लगे.

इससे पहले के ठाकुर इंद्रदेव सिंग हवेली के अंदर आते, दामिनी अपने कपड़े ठीक करते हुए जल्दी जल्दी उपेर अपने कमरे की तरफ चली गयी. उसका ब्लाउस अभी भी खुला हुआ था और एक छाती अब भी ब्रा से बाहर थी. उसने ऐसे ही आगे से ब्लाउस को दोनो तरफ से थामा और लगभग दौड़ती हुई अपने कमरे में पहुँची. कमरे के अंदर पहुँचते ही उसे एक लंबी साँस छोड़ दी. ब्लाउस छोड़ दिया और उसकी एक छाती फिर बाहर निकल पड़ी. दामिनी अंदर से बहुत गरम हो चुकी थी. 2 दिन से यही हो रहा था. 2 बार अपने ससुर और 2 बार दामूकाका के करीब जाने से उसके जिस्म में जैसे आग सी लगी हुई थी. उसे खुद अपने उपेर हैरत थी के उसके जिस्म की ये गर्मी इतने सालो से कहाँ थी जो पिच्छले 2 दिन में बाहर आई थी. वजह शायद ये थी के उसने अब अपने आपको मानसिक तौर पे बदला था जिसका नतीजा अब पूरे जिस्म पे नज़र आ रहा था. वो ऐसे ही बिस्तर पे गिर पड़ी और अपनी बाहर निकली छाती को खुद ही दबाते हुए दामूकाका की कही बात के बारे में सोचने लगी. उसे इस हवेली के अंदर से ही तलाश शुरू करनी थी. अब 2 दिन से चल रहे खेल से आगे बढ़ने का वक़्त आ गया था. उसे चीज़ों को अब अपने हाथ में लेना था. दामूकाका उसकी मुट्ठी में आ चुका था. और अब बारी थी इस कड़ी के सबसे ख़ास हिस्से की, ठाकुर इंद्रदेव सिंग की.

दामिनी शाम तक अपने ही कमरे में रही. दामूकाका खाने को पुच्छने आया था उसने अपने कमरे में ही मंगवा लिया. रात का अंधेरा फेल चुका था. दामूकाका जब खाना देने आया था उसने धीरे से दामिनी के कान में कहा के ठाकुर साहब ने उसे आज मालिश के लिए माना किया है. कहा है के आज ज़रूरत नही है.

दामिनी उसकी बात समझते हुए बोली "आज से उन्हें मालिश की ज़रूरत आपसे नही है काका" दामूकाका समझ गया के वो क्या कहना चाह रही है. वो इस हवेली में बहुत कुछ होता देख चुका था.

"अब और ना जाने क्या क्या देखना होगा" सोचते हुए वो वापिस चला गया.

दामिनी खाना खाकर नीचे आई तो दामूकाका जा चुका था. अब हवेली में सिर्फ़ वो और इंद्रदेव सिंग रह गये थे. उसने अपने ससुर के कमरे की तरफ देखा जो शायद अंदर से बंद था. वो कमरे के आगे से निकली और किचन तक पहुँची. किचन में उसने एक कटोरी में तेल लिया और हल्का सा गरम किया. हाथ में तेल की कटोरी लिए वो इंद्रदेव सिंग के कमरे तक पहुँची और धीरे से नॉक किया.

"अंदर आ जाओ बहू" इंद्रदेव सिंग जैसे उसके आने का ही इंतेज़ार कर रहे थे.

दामिनी कमरे के अंदर पहुँची. वो लाल सारी में थी. हाथ में तेल की कटोरी थी. ब्लाउस के उपर का एक बटन उसने खुद ही खोला छोड़ दिया था. तेल की कटोरी एक तरफ रखकर उसके अपने ससुर की तरफ देखा.

इंद्रदेव सिंग सिर्फ़ धोती पहने खड़े थे. कुर्ता वो पहले ही उतार चुके थे. इंद्रदेव सिंग और दामिनी की नज़रें मिली. दोनो ने कुछ नही कहा. एक दूसरे की तरफ पल भर देखने के बाद शौय सिंग बिस्तर पे जाके लेट गये और दामिनी तेल की कटोरी लिए बिस्तर तक पहुँची. साइड में रखी टेबल पे तेल रखकर वो भी बिस्तर पे चढ़ गयी. अपने ससुर के बिस्तर पर. लाल सारी में.

इंद्रदेव सिंग उल्टे पेट के बाल लेटे हुए थे. दामिनी ने पीठ पे थोड़ा तेल गिराया और धीरे धीरे मालिश करने लगी. उसके हाथ ठाकुर की पूरी पीठ पे फिसल रहे थे. कंधो से शुरू होकर ठाकुर की नितंब तक.

"थोड़ा सख़्त हाथ से करो बहू" इंद्रदेव सिंग ने कहा तो दामिनी थोड़ा आगे होकर अपने ससुर के उपेर झुक सी गयी जिससे के उसके हाथ का वज़न ठाकुर के पीठ पे पड़े. वो अपने घुटनो के बल खड़ी सी थी. घुटने के नीचे का हिस्सा ठाकुर के फेले हुए हाथ को च्छू रहा था. ठाकुर का हाथ नीचे से उसके पेर पे सटा हुआ था और दामिनी को महसूस हो रहा था के वो उसे सहला रहे हैं. उसके खुद के जिस्म में धीरे धीरे से फिर वही आग उठ रही थी जिसे वो पिच्छले 2 दिन से महसूस कर रही थी.

जब वो पीठ पे हाथ फेरती हुई नीचे ठाकुर की नितंब की तरफ जाती और फिर हाथ उपेर लाती तो उसका हाथ ठाकुर की धोती में हलसा सा अटक जाता. ऐसे ही एक बार जब हाथ फिसलकर नीचे आया तो नीचे ही चला गया. दामिनी को महसूस ही ना हुआ के कब ठाकुर ने अपनी धोती ढीली कर दी थी जिसकी वजह से उसका हाथ ठाकुर की धोती के अंदर तक चला गया. इंद्रदेव सिंग ने धोती के नीचे कुछ नही पहेन रखा था इसलिए जब दामिनी का हाथ नीचे गया तो सीधा रेंग कर ठाकुर की नितंब पे चला गया. दामिनी ने फ़ौरन अपना हाथ वापिस खींचा जैसे 100 वॉट का झटका लगा हो और इंद्रदेव सिंग की तरफ देखा पर वो वैसे ही लेटे रहे जैसे कुछ हुआ ही ना हो. दामिनी एक पल के लिए रुकी और उठकर ठाकुर के पैरो की तरफ आ गयी.

उसने तेल अपने हाथ में लेकर अपने ससुर की पिंदलियों में पे तेल मलना शुरू किया. घुटनो के नीचे नीचे उसने सख़्त हाथ से ठाकुर की टाँगो की मालिश शुरू कर दी. वो फिर अपने घुटनो के बल बिस्तर पे खड़ी सी थी और ठाकुर के दोनो पावं उसके बिल्कुल सामने. जब वो हाथ घुटनो की तरफ उपेर की और ले जाती तो उसे थोड़ा आगे होकर झुकना पड़ता और हाथ नीचे की और लाते हुए फिर वापिस पिछे आना पड़ता. मालिश करते हुए दामिनी ने महसोस्स किया के वो थोडा सा आगे खिसक गयी थी और जब झुककर वापिस पिछे आती तो ठाकुर

का पंजा नीचे से उसकी जाँघ पे अंदर की और टच होता. योनि से सिर्फ़ कुछ इंच की दूरी पर. फिर भी दामिनी वैसे ही मालिश करती रही. ठाकुर के पेर का स्पर्श उसे अच्छा लग रहा था. उसने नज़र उठाकर ठाकुर के चेहरे की तरफ देखा तो वो दोनो आँखें बंद किए पड़े थे. धोती खुली होने की वजह से थोड़ी नीचे सरक गयी थी और ठाकुर की नितंब आधी खुल गयी थी.

"सीधे हो जाइए पिताजी" दामिनी ने बिस्तर के एक तरफ होते हुए कहा.

उसके पुर हाथों में तेल लगा हुआ था जो उसकी सारी पे भी कई जगह लग चुका था. सारी बिस्तर पे इधर उधर होने की वजह से सिकुड़कर घुटनो तक उठ गयी थी और घुटनो के नीचे दामिनी की दोनो टांगे खुल गयी थी.

ठाकुर उठकर सीधे हुए तो दामिनी को एक पल के लिए नज़रें नीचे करनी पड़ गयी. वजह थी ठाकुर का लिंग जो पूरी तरफ खड़ा हो चुका था और धोती में टेंट बना रहा था. धोती खुली होने की वजह से ऐसा लग रहा था जैसे लिंग के उपेर बस एक कपड़ा सा डाल रखा हो. दामिनी ने ठाकुर के चेहरे की तरफ देखा तो उन्होने अब भी अपनी दोनो आँखें बंद कर रखी थी. वो फिर धीरे से आगे बढ़ी और ठाकुर की छाती पे तेल लगाने लगी. तेल लगाकर वो फिर अपने घुटनो के बल खड़ी सी हो गयी और हाथों पे वज़न डालकर तेल छाती से पेट तक रगड़ने लगी. उसकी नज़र अब भी ठाकुर के खड़े लिंग पे ही चिपकी हुई थी. धोती थोड़ी से नीचे की और सरक गयी थी जिससे उसे ठाकुर की झाँटें साफ नज़र आ रही थी. वो जब तेल रगड़ती नीचे की और जाती तो लिंग की जड़ से बस कुछ इंच की दूरी पे ही रुकती. दिल तो उसका कर रहा था के आगे बढ़कर लिंग पकड़ ले पर अपने दिल पे काबू रखा और तेल लगाती रही. इसी चक्कर में उसकी सारी का पल्लू खिसक कर नीचे गिर पड़ा था जिसे दामिनी ने दोबारा उठाकर ठीक करने की कोशिश नही की. उसकी दोनो स्तन ब्लाउस में उपेर नीचे हो रही थी. उपेर का एक बटन खुला होने के कारण क्लीवेज काफ़ी हाढ़ तक गहराई तक नज़र आ रहा था. एक ही पोज़िशन में रहने के कारण दामिनी का घुटना अकड़ने लगा तो उसने अपनी पोज़िशन हल्की सी चेंज के और उसकी टाँग ठाकुर के हाथ से जा लगी. ठाकुर का हाथ सीधा उसकी घुटनो से नीचे नग्न टाँग पे आ टिका. पर ना तू दामिनी ने साइड हटने की कोशिश की और ना ही ठाकुर ने अपना हाथ हटाने की कोशिश की. दामिनी वैसे ही ठाकुर की छाती पे तेल रगड़ती रही और नीचे धीरे धीरे ठाकुर ने उसकी टाँग को सहलाना शुरू कर दिया. दामिनी की आँखें भी बंद होने लगी.

अब मालिश मालिश ना रह गयी थी. दामिनी भी वैसे ही बस एक ही जगह आँखें बंद किया हाथ ठाकुर की छाती पे रगड़ रही थी और ठाकुर उसकी घुटनो से नीचे नग्न टाँग को सहला रहा था. अचानक दामिनी ने महसूस किया के ठाकुर का हाथ उसकी सारी में उपेर की और जाने की कोशिश कर रहा है. जैसे ही ठाकुर की हाथ अंदर उसकी नग्न जाँघ पे लगा तो दामिनी की दोनो आँखें खुल गयी. उसे झटका सा लगा और वो अंजाने में ही एक तरफ को हो गयी. ठाकुर का हाथ उसकी टाँग से अलग हो गया.

एक पल को दामिनी को भी बुरा सा लगा के वो अलग क्यूँ हुई क्यूंकी ठाकुर के सहलाने में

उसे भी मज़ा आ रहा था. उसने फिर थोड़ा सा तेल अपने हाथ में लिया और ठाकुर के पेट पे डाला. तेल को उसके रगड़कर हाथ सख़्त करने के लिए जैसे ही अपना वज़न अपने हाथ पे डाला ठाकुर के मुँह से कराह निकल गयी. शायद वज़न कुछ ज़्यादा हो गया था. वो हल्का सा मुड़े और एक हाथ से दामिनी की कमर को पकड़ लिया.

"माफ़ कीजिएगा पिताजी" दामिनी ने ठाकुर की तरफ देखा पर वो कुछ नही बोले और आँखें वैसे ही बंद रही.

दामिनी ने फिर मालिश करनी शुरू कर दी पर ठाकुर का हाथ वहीं उसकी कमर पे ही रहा. उन्होने उसकी ब्लाउस और पेटिकोट के बीच के हिस्से से कमर को पकड़ रखा था. नग्न कमर पे उनका हाथ पड़ते ही दामिनी जैसे हवा में उड़ने लगी. ठाकुर का हाथ धीरे धीरे फिर उसकी कमर को सहलाने लगा और दामिनी की आँखें फिर बंद हो गयी. वो ठाकुर को पेट को सहलाती रही और वो उसकी नग्न कमर को. हाथ धीरे से आगे से होकर उसके पेट पे आया और फिर कमर पे चला गया. अब वो उसके नंगे पेट और कमर को सिर्फ़ सहला नही रहे थे, बल्कि मज़बूती से रगड़ रहे थे. एक बार ठाकुर का हाथ दामिनी के पेट पे गया तो सरक कर आगे आने की बजाय नीचे की और उसकी नितंब पे गया. उन्होने एक बार हाथ दामिनी की पूरी नितंब पे फिराया और फिर उसके एक कूल्हे को अपने मुट्ठी में पकड़ लिया.

दामिनी फिर चिहुन्क कर एक तरफ को हुई. वो शायद इन अचानक हो रहे हमलो से थोड़ा सा घबरा सी जाती पर ठाकुर का हाथ हट जाते ही अगले ही पल खुद अफ़सोस करती क्यूँ ठाकुर के हाथ का मज़ा आना बंद हो जाता.

"लाइए आपके हाथ पे कर देती हूँ" कहते हुए दामिनी ने ठाकुर का अपनी तरफ का हाथ सीधा किया. ठाकुर का पंजा उसके कंधे पे आ गया और वो दोनो हाथ से अपने ससुर की पूरी आर्म पे तेल लगाके मालिश करने लगी. उसकी सारी का पल्लू अब भी नीचे था और स्तन सिर्फ़ ब्लाउस में थी. ब्रा दामिनी आने से पहले ही उतारकर आई थी. उसके ससुर की कलाई उसकी एक छाती पे दब रही थी जिसकी वजह से ब्लाउस पे पूरा तेल लग गया था. लाल ब्लाउस होने के बावजूद उसके निपल्स साफ नज़र आने लगे थे. जैसे जैसे उसकी मालिश का दबाव ठाकुर के हाथ पे बढ़ रहा था वैसे वैसे ही उनकी कलाई का दबाव उसकी छाती पे बढ़ रहा था. धीरे धीरे हाथ कंधे से सरक कर उसके गले पे आ गया और ठाकुर की आर्म उसकी दोनो स्तनों पे दब गयी. दामिनी की साँस भारी हो चली थी और उसे महसूस हो रहा था के ठाकुर की साँस भी तेज़ हो रही है. दामिनी ने बंद आँखें खोली तो देखा के ठाकुर की छाती तेज़ी से उपेर नीचे हो रही है. लिंग अब पूरा अकड़ चुका था और धोती में हिल रहा था. धोती अब भी लिंग के उपेर पड़ी थी इसलिए दामिनी सिर्फ़ अंदाज़ा ही लगा सकती थी के वो कैसा होगा. चाहकर भी वो धोती को लिंग से हटाने से अपने आपको रोके हुए थी. ठाकुर ने अब उसकी स्तनों पे अपनी आर्म का दबाव बढ़ाना शुरू कर दिया था. उनके हाथ का पंजा दामिनी के क्लीवेज पे हाथ और नीचे वो अपनी कलाई से उसकी दोनो स्तनों को रगड़ रही थी.

दामिनी ने ठाकुर के अपनी तरफ के हाथ को छोड़कर दूसरे हाथ को उठाया. वो अब भी उसी

साइड बैठी हुई थी जिसकी वजह से उसे दूसरा हाथ अपनी तरफ लेना पड़ा. पहले हाथ की तरफ ये हाथ उसके कंधे तक नही पहुँचा. ठाकुर ने उसके इशारे से पहले ही खुद डिसाइड कर लिया के हाथ कहाँ रखा जाना चाहिए. उन्होने हाथ उठाकर सीधा दामिनी की दोनों स्तनों पे रख दिया. दामिनी की साँस अटकने लगी. ये ठाकुर का अपने हाथ से उसकी स्तन पे पहला स्पर्श था. उसने इस बार ना तो पिछे होने की कोशिश की और ना ही हाथ हटाके कहीं और रखने की कोशिश की. वो चुपचाप आर्म पे मालिश करने लगी और ठाकुर ने अब सीधे सीधे उसकी दोनो स्तनों को दबाना शुरू कर दिया. दोनो की साँस तेज़ हो चली थी और दोनो की ही आँखें बंद थी. ठाकुर ज़ोर ज़ोर से दामिनी की दोनो स्तनों को मसल रहे थे और वो भी अब मालिश नही, उनके हाथ को सहला रही थी जो उसे इतने मज़े दे रहा था. ठाकुर ने अपना दूसरा हाथ ले जाकर उसकी नितंब पे रखा दिया और सहलाने लगे.वो उसके दोनो कूल्हे अपने हाथ में पकड़ने की कोशिश करते पर दामिनी की मोटी नितंब का थोड़ा सा हिस्सा ही पकड़ पाते. अब दोनो के बीच पर्दे जैसे कुछ नही रह गया था और जो हो रहा था वो साफ तौर पे हो रहा था पर फिर भी दोनो में से बोल कोई कुछ नही रहा था. ठाकुर का हाथ अब सारी के उपेर से ही उसकी नितंब के बीचो बीच रेंग रहा था और धीरे से पिछे से होता उसकी योनि पे आ गया और इस बार दामिनी और बर्दाश्त नही कर सकी. उसे लगा के अब अगर वो नही हटी तो ठाकुर को लगेगा के वो भी ठुकने के लिए बेताब है जो उसके प्लान का हिस्सा नही था.

"मैं चलती हूँ पिताजी. मालिश हो गयी" कहकर दामिनी उठने लगी पर ठाकुर ने उसका एक हाथ पकड़के फिर बिठा लिया.

दामिनी ने ठाकुर की तरफ देखा तो वो आँखें खोल चुके थे. उसे सवालिया नज़रों से ठाकुर की तरफ देखा जैसे पुच्छ रही हो के अब क्या और इससे पहले के कुछ समझ पाती, ठाकुर ने एक हाथ से अपनी खुली हुई धोती को एक तरफ फेंक दिया और दूसरे हाथ से दामिनी का हाथ अपने लिंग पे रख दिया जैसे कह रहे हों के यहाँ की मालिश रह गयी.

दामिनी ने हाथ हटाने की कोशिश की पर ठाकुर ने उसका हाथ मज़बूती से पकड़ रखा था. कुछ पल दोनो यूँ ही रुके रहे और फिर धीरे से दामिनी ने अपना हाथ लिंग पे उपेर की और किया. ठाकुर इशारा समझ गये की दामिनी मान गयी है और उन्होने अपना हाथ हटा लिया. दामिनी ने दूसरे हाथ से लिंग पे थोड़ा तेल डाला और अपना हाथ उपेर नीचे करने लगी. ठाकुर के लिंग पे जैसे उसकी नज़र चिपक गयी थी. उसने अब तक देखे सिर्फ़ 2 लिंग थे. अपने पति का और अब ठाकुर का. यूँ तो उसने दामूकाका का लिंग भी पकड़ा था पर उसे देखा नही थी. और दामूकाका का छोटा सा लिंग तो ना होने के बराबर ही था. वो दिल ही दिल में ठाकुर के लिंग को अपने पति के लिंग से मिलाने लगी. ठाकुर का लिंग लंबाई और चौड़ाई दोनो में उसके पति के लिंग से दुगना था. दामिनी के मुँह में जैसे पानी सा आने लगा और नीचे योनि भी पूरी तरह गीली हो गयी. अब जैसे उसे खबर ही नही थी के वो क्या कर रही है. बस एकटूक लिंग को देखते हुए अपना हाथ ज़ोर ज़ोर से उपेर नीचे कर रही थी. थोड़ी देर बाद जब उसका हाथ थकने लगा तो उसने अपना दूसरा हाथ भी लिंग पे रख दिया और दोनो हाथों से लिंग को हिलाने लगी जैसे कोई खंबा घिस रही हो. ठाकुर को एक हाथ वापिस उसकी नितंब पे जा चुका था और नीचे सारी के उपेर से उसकी योनि को मसल रहा था. दामिनी दोनो हाथों से लिंग पे मेहनत कर रही थी और नीचे ठाकुर की अंगलियों उसकी योनि को जैसे कुरेद रही

थी. दामिनी ने इस बार हटने की कोई कोशिश नही की थी. चुपचाप बैठी हुई थी और योनि मसलवा रही थी. उसका ब्लाउस तेल से भीग चुका था और उसके दोनो निपल्स साफ नज़र आ रहे थे पर उसे किसी बात की कोई परवाह नही थी. उसे तो बस सामने खड़ा लिंग नज़र आ रहा था. ठाकुर ने दूसरा हाथ उठाके उसकी छाती पे रख दिया और उसकी बड़ी बड़ी स्तनों को रगड़ने लगे. एक उंगली उसके क्लीवेज से होती दोनो स्तनों के बीच अंदर तक चली गयी. फिर उंगली बाहर आई और इस बार ठाकुर ने पूरा हाथ नीचे से उसके ब्लाउस में घुसाकर उसकी नग्न छाती पे रख दिया. ठीक उसी पल उन्होने अपने दूसरे हाथ की उंगलियों को दामिनी की योनि पे ज़ोरसे दबाया. दामिनी के जिस्म में जैसे 100 वॉट का कुरेंट दौड़ गया. वो ज़ोर से ठाकुर के हाथ पे बैठ गयी जैसे सारी फाड़ कर उंगलियों को अंदर लेने की कोशिश कर रही हो. उसके मुँह से एक लंबी आआआआआअहह छूट पड़ी और उसकी योनि से पानी बह चला.. अगले ही पल ठाकुर उठ बैठे, दामिनी को कमर से पकड़ा और बिस्तर पे पटक दिया.इससे पहले के दामिनी कुछ समझ पाती, लिंग उसके हाथ से छूट गया और ठाकुर उसके उपेर चढ़ बैठे. उसकी पहले से ही घुटनो के उपेर हो रखी सारी को खींचकर उसकी कमर के उपेर कर दिया. दामिनी आने से पहले ही ब्रा और पैंटी उतारके आई थी इसलिए सारी उपेर होते ही उसकी योनि उसके ससुर के सामने खुल गयी. दामिनी को कुछ समझ में नही आ रहा था इसलिए उसकी तरफ से ठाकुर को कोई प्रतिरोध का सामना ना करना पड़ा. वो अब अब तक ठाकुर के अपनी योनि पे दभी उंगलियों के मज़े से बाहर ही ना आ पाई थी. जब तक दामिनी की कुछ समझ आया के क्या होने जा रहा है तब तक ठाकुर उसकी दोनो टांगे खोलके घुटनो से मोड़ चुके थे. उसके दो पावं के पंजे ठाकुर के पेट पे रखे हुए थे जिसकी वजह से उसकी योनि पूरी तरह से खुलके ठाकुर के सामने आ गयी थी. दामिनी रोकने की कोशिश करने ही वाली थी के ठाकुर ने लिंग उसकी योनि पे रखा और एक धक्का मारा.

दामिनी के मुँह से चीख निकल गयी. उसे लगा जैसे किसी ने उसके अंदर एक खूँटा थोक दिया हो. एक तो वो 10 साल से ठुकी नही थी और 10 साल बाद जो लिंग अंदर गया वो हर तरह से उसके पति के लिंग से दोगुना था. उसकी योनि से दर्द की लहर उठकर सीधा उसके सर तक पहुँच गयी. उसका पूरा जिस्म अकड़ गया और उसने अपने दोनो पावं इतनी ज़ोर से झटके के ठाकुर की मज़बूत पकड़ में भी नही आए. उसने बदन मॉड़कर लिंग योनि से निकालने की कोशिश की पर तब तक ठाकुर उसके उपेर लेट चुके थे. दामिनी ने अपने दोनो नाख़ून ठाकुर की पीठ में गाड़ दिए. कुछ दर्द की वजह से और कुछ गुस्से में और कुछ ऐसे जैसे बदला ले रही हो. उसके दाँत ठाकुर के कंधे में गाडते चले गये. इसका नतीजा ये हुआ के ठाकुर गुस्से में थोड़ा उपेर को हुए और उसके ब्लाउस को दोनो तरफ से पकड़के खींचा. खाट, खाट, खाट, ब्लाउस के सारे बटन खुलते चलये गये. ब्रा ना होने के कारण दामिनी की दोनो स्तन आज़ाद हो गयी. बड़ी बड़ी दोनो स्तन देखते ही ठाकुर उनपर टूट पड़े. एक स्तन को अपने हाथ में पकड़ा और दूसरी का निपल अपने मुँह में ले लिया. दामिनी के जिस्म में अब भी दर्द की लहरें उठ रही थी. तभी उसे महसूस हुआ के ठाकुर अपना लिंग बाहर खींच रहे हैं पर अगले ही पल दूसरा धक्का पड़ा और इस बार दामिनी की आँखों के आगे तारे नाच गये. योनि पूरी फेल गयी और उसे लगा जैसे उसके अंदर उसके पेट तक कुछ घुस गया हो. ठाकुर के अंडे उसकी नितंब से आ लगे और उसे एहसास हुआ के पहले सिर्फ़ आधा लिंग गया था इस बार पूरा घुसा है. उसकी मुँह से ज़ोर से चीख निकल गयी

"आआआआहह पिताजी" दामिनी ने कसकर दोनो हाथों से ठाकुर को पकड़ लिया और उनसे लिपट सी गयी जैसे दर्द भगाने की कोशिश कर रही हो.

उसका पूरा बदन अकड़ चुका था. लग रहा था जैसे आज पहली बार ठुक रही हो. बल्कि इतना दर्द तो तब भी ना हुआ था जब वीरभद्र ने उसे पहली बार ठोका था. उसके पति ने उसे आराम से धीरे धीरे ठोका था और उसके ससुर ने तो बिना उसकी मर्ज़ी की परवाह के लिंग जड़ तक अंदर घुसा दिया था.. ठाकुर कुछ देर यूँही रुके रहे. दर्द की एक ल़हेर उसकी छाती से उठी तो दामिनी को एहसास हुआ के दूसरा धक्का मारते हुए उसके ससुर ने उसकी एक स्तन पे दाँत गढ़ा दिए थे. ठाकुर ने अब धीरे धीरे धक्के मारने शुरू कर दिए थे. लिंग आधा बाहर निकालते और अगले ही पल पूरा अंदर घुसा देते. दामिनी के दर्द का दौर अब भी ख़तम नही हुआ था. लिंग बाहर को जाता तो उसे लगता जैसे उसके अंदर से सब कुछ लिंग के साथ साथ बाहर खींच जाएगा और अगले पल जब लिंग अंदर तक घुसता तो जैसे उनकी आँखें बाहर निकलने को हो जाती. उसकी पलकों से पानी की दो बूँदें निकलके उसके गाल पे आ चुकी थी. उसकी घुटि घुटि आवाज़ में अब भी दर्द था जिससे बेख़बर ठाकुर उसे लगातार ठोके जा रहे था. लिंग वैसे ही उसकी योनि में अंदर बाहर हो रहा था बल्कि अब और तेज़ी के साथ हो रहा था. ठाकुर के हाथ अब दामिनी की मोटी नितंब पे था जिसे उन्होने हाथ से थोड़ा सा उपेर उठा रखा था ताकि लिंग पूरा अंदर तक घुस सके. वो उसके दोनो निपल्स पे अब भी लगे हुए थे और बारी बारी दोनो चूस रहे थे. दामिनी की दोनो टाँगें हवा में थी जिन्हें वो चाहकर भी नीचे नही कर पा रही थी क्यूंकी जैसे ही घुटने नीचे को मोडती तो जांघों की नसे अकड़ने लगती जिससे बचने के लिए उसे टांगे फिर हवा में सीधी करनी पड़ती. कमरे में बेड की आवाज़ ज़ोर ज़ोर से गूँज रही थी.दामिनी की नितंब पे ठाकुर के अंडे हर झटके के साथ आकर टकरा रहे थे. दोनो के जिस्म आपस में टकराने से ठप ठप की आवाज़ उठ रही थी. ठाकुर के धक्को में अब तेज़ी आ गयी थी. अचानक एक ज़ोर का धक्का दामिनी के योनि पे पड़ा, लिंग अंदर तक पूरा घुसता चला गया और उसकी योनि में कुछ गरम पानी सा भरने लगा. उसे एहसास हुआ के ठाकुर ख़त्म चुके हैं. मज़ा तो उसे क्या आता बल्कि वो तो शुक्र मना रही थी के काम ख़तम हो गया. ठाकुर अब उसके उपेर गिर गये थे. लिंग अब भी योनि में था, हाथ अब भी दामिनी के नितंब पे था और मुँह में एक निपल लिए धीरे धीरे चूस रहे थे. दामिनी एक लंबी साँस छोड़ी और अपनी गर्दन को टेढ़ा किया. उसकी नज़र दरवाज़े पे पड़ी जो हल्का सा खुला हुआ था और जिसके बाहर खड़ा दामूकाका सब कुछ देख रहा था.

दामिनी की आँख खुली तो रात अब भी पुर नूर पे थी. उसने घड़ी की तरफ देखा तो रात के 2 बज रहे थे. वो अब भी आधी नग्न हालत में पड़ी थी. .साड़ी उपेर को खिसकी हुई थी और कमर से खुल गयी थी. उसकी योनि तो ढाकी हुई थी पर टांगे जाँघ तक खुली हुई थी. ब्लाउस के सारे बटन ठाकुर ने तोड़ दिए थे जिसके कारण वो उसे चाहकर भी बंद नही कर सकती थी. ब्लाउस उसके सीने से हटकर दोनो तरफ से कमर के नीचे दबा हुआ था और दोनो स्तन खुली पड़ी थी. दामिनी ने गर्दन घूमाकर ठाकुर की तरफ देखा तो वो भी वैसे ही नंगे सोए पड़े थे. लिंग बैठ चुका था और उनका एक हाथ अब भी दामिनी के पेट पे था. दामिनी ने उठने की कोशिश की तो दर्द से उसकी चीख सी निकल गयी. उसकी योनि में अब भी दर्द हो रहा था. स्तन चूसे जाने की वजह से पूरी लाल थी और एक छाती पे ठाकुर के दाँत के निशान बने हुए थे. दामिनी ने अपनी योनि पे हाथ फिराया तो कराह उठी. नीचे उसकी नितंब पे भी ठाकुर ने

अपने नाख़ून गाड़ा दिए थे.

दामिनी ने ठाकुर का हाथ अपने पेट से हटाया और फिर बिस्तर पे गिर पड़ी. उसने अपने आपको ढकने की कोई कोशिश नही की. फायडा भी नही था. वो चाहती भी तो यही थी के ऐसा हो पर ये नही जानती थी के इस तरह होगा. ठाकुर ने उसको संभलने का कोई मौका नही दिया. जो आग 10 साल से जमा हो रही थी एक झटके में दामिनी के उपेर निकाल दी. इससे पहले के दामिनी कुछ समझ पाती वो ठुक रही थी अपने ही ससुर से. उन्होने उसके दर्द की कोई परवाह नही की. बस उसे किसी वेश्या की तरह नीचे पटका और उसपर चढ़ गये.

दामिनी का ध्यान फिर से अपने गुज़रे कल में चला गया. कहाँ वो सीधी सादी से लड़की जो अपने भगवान में खोई रहती थी और कहाँ ये बदली हुई औरत जो अपने ससुर के बिस्तर पे नग्न पड़ी हुई थी, उनसे ठुक्वने के बाद. जिसकी योनि में उसका नौकर तक उंगलियाँ कर चुका था. उसने एक ठंडी आह भारी और अपने भगवान को कोसने लगी. उसने क्या सोचा था और नसीब ने उसे क्या दिन दिखाए थे. कहाँ वो इस हवेली में एक बहू की हैसियत से आई थी और अपने ही ससुर की रखेल बनने की तैय्यारि कर रही थी. वजह सिर्फ़ एक थी. उसे अपने पति के क़ातिल का पता लगाना था, पता करना था के वो कौन शक्श था जिसने उसकी ज़िंदगी बर्बाद की थी.

"यही बदला दिया है तूने मेरी पूजा पाठ का, है ना?" उसने अपने दिल ही दिल में भगवान पे जैसे चीखते हुए कहा.

अचानक उसका ध्यान दरवाज़े की तरफ गया जो अब बंद हो चुका था. दामूकाका ने उसकी पूरी ठुकाई देखी थी. जाने वो काब्से दरवाज़े पे खड़ा सब कुछ देख रहा था. शायद दामिनी के चीख सुनकर आया था या शायद उससे पहले ही खड़ा था. जब ठाकुर के ख़त्म जाने के बाद दामिनी ने उसकी तरफ देखा तो एक पल के लिए दोनो की नज़र एक दूसरे से टकराई. दामिनी ने सीधे दामूकाका की आँख में आँख डालकर देखा तो दामूकाका ने नज़र नीची कर ली और दरवाज़ा बंद करके वापिस चला गया. उसके बाद ठाकुर यूँ ही थोड़ी देर दामिनी के उपेर. लिंग सिकुड़कर खुद ही योनि से बाहर निकल गया तो वो बिस्तर पे ढेर हो गये. दोनो जाग रहे थे पर किसी ने कुछ नही कहा. ना दामिनी ने उठकर अपने आपको ढकने की कोशिश की और ना ही ठाकुर बिस्तर से उठे. दोनो यूँ ही नंगे पड़े पड़े जाने कब सो गये थे.

दामिनी ने नज़र उठाकर घड़ी की तरफ देखा तो 3 बज चुके थे. उसने एक पल के लिए उठकर अपने कमरे में जाने की सोची पर फिर एक ठंडी आह भारी, अपने आपको किस्मत के हवाले किया और वहीं अपने ससुर के बिस्तर पे ही फिर सो गयी और सपने मैं खो गयी

दामिनी एक जंगल के बीचो बीच खड़ी थी. चारो तरफ ऊँचे पेड़ थे. अजीब अजीब सी आवाज़ आ रही थी. अंधेरा इतना के हाथ को हाथ नही सूझ रहा था. उसने पेर आगे बढ़ाने की कोशिश की तो दर्द की एक तेज़ ल़हेर उठी. वो नंगे पेर थी और उसने एक काँटे पे पेर रख दिया था. दामिनी ने अपना पेर उठाया और काँटे को बाहर खींचकर फिर लड़खड़ा कर आगे बढ़ी.

आसमान पे नज़र डाली तो पूरा चाँद था पर चाँदनी नही थी. कोई रोशनी कहीं से नज़र नही आ रही थी. हर तरफ घुप अंधेरा. पास ही किसी साँप की फूंकारने की आवाज़ आ रही थी जो धीरे धीरे नज़दीक आ रही थी. शायद वो साँप उसी की तरफ बढ़ रहा था. दामिनी ने तेज़ी से कदम उठाए और आवाज़ से दूर भागने लगी. पर जैसे जैसे वो कदम आगे उठा रही थी किसी शेर के गुर्राने की आवाज़ नज़दीक आ रही थी. शायद आगे कोई शेर था जिसकी तरफ वो भागी जा रही थी. दामिनी फ़ौरन रुकी और दूसरी तरफ भागने लगी. साँप और शेर की आवाज़ अब भी उसके पिछे से आ रही थी. अचानक एक शोर सा पेड़ से उठा और दामिनी को बहुत से बंदर हल्के हल्के दिखाई दिए. वो बंदर बहुर शोर मचा रहे थे. शायद उन्हें उसका अपने इलाक़े में आना पसंद नही आ रहा था. दामिनी रुकी और फिर पलटकर दूसरी तरफ को भागने लगी. पर अब बंदर भी उसके पिछे पड़े हुए थे. उसके पिछे साँप, शेर और बंदर तीनो आ रहे थे. दामिनी को समझ नही आ रहा था के क्या करे. बस बदहवास भागती जा रही थी. साँप से दूर. शेर से दूर, बंदरों से दूर.

भागती भागती अचानक वो जंगल से निकलकर एक खुले मैदान में आ पहुँची. यहाँ अंधेरा नही था. यहाँ चाँदनी थी. रोशनी में आई तो दामिनी को एहसास हुआ के उसकी ब्लाउस खुली हुई है और अंदर ब्रा नही थी जिसकी वजह से उसकी दोनो बड़ी बड़ी स्तन खुली हुई थी और भागते हुए उपेर नीचे हो रही थी. दामिनी ने एकदम अपने ब्लाउस को पकड़के सामने किया और अपने सीने को ढका. वो भागते भागते थक चुकी थी और जानवर शायद अब उसके पिछे नही थे क्यूंकी शोर बंद हो गया था. दामिनी तक कर ज़मीन पे बैठी ही थी के शोर फिर उठा. वो एक खुले मैदान में थी जिसके चारों तरफ घना जंगल था. ऊँचे पेड़ थे जिनके अंदर अंधेरे की वजह से कुछ नज़र नही आ रहा था. अचानक शोर फिर उठा और एक तरफ से सारे पेड़ हिलने लगे. उनपर से बड़े बड़े बंदर ज़मीन पे उतरकर चीखते हुए दाँत दिखाते हुए दामिनी के तरफ बढ़ने लगे. दामिनी घबराकर फिर उठी और भागने को हुई ही थी के देखा के दूसरी तरफ से एक बड़ा सा साँप जंगल से निकला और उसकी तरफ बढ़ा. तीसरी तरफ से एक बहुत बड़ा शेर जंगल से निकल गुर्राते हुए उसकी तरफ आने लगा. बंदरों का शोर उसके कानो के पर्दे फाड़ रहा था. वो तीन तरफ से घिर चुकी थी. दामिनी के पास अब और कोई चारा नही था सिवाय इसके के चौथी तरफ से फिर जंगल में भाग उठे. वो फिर जंगल की तरफ भागी पर अचानक उसके सामने से एक तेज़ रोशनी आती हुई दिखाई दी. दामिनी फिर सहम कर रुक गयी. रोशनी धीरे धीरे नज़दीक आती गयी और साथ ही कार के एंजिन की आवाज़ भी आने लगी. रोशनी अब बहुत नज़दीक आ गयी थी और दामिनी को अपनी आँखों पे हाथ रखना पड़ा. अचानक एक कार जंगल से निकली और दामिनी से थोड़ी दूर जाकर रुक गयी. दामिनी ने आँखें खोलकर देखा तो वो कार वीरभद्र की थी. उसकी जान में जान आ गयी. उसका पति उसे बचाने को आ गया था. वो खुश होते हुई कार की तरफ भागी तो ध्यान दिया के सारे जानवर अब जा चुके हैं. शायद कार से डरकर भाग गये थे. वो खुश होती कार के पास पहुँची ही थी के कार का दरवाज़ा खुला और खून से लथपथ वीरभद्र गाड़ी से बाहर निकलकर गिर पड़ा. उसकी आँख, नाक, कान मुँह हर जगह से खून निकल रहा था. उसने ज़मीन पे गिरे गिरे मदद के लिए दामिनी की तरफ हाथ उठाया. दामिनी अपने पति के पास पहुँची और ज़मीन पे बैठ कर उसका सर अपनी गोद में रख लिया.

"क्या हुआ आपको?" उसने लगभग चिल्लाते हुए वीरभद्र से पूछा.

"दामिनी ....." वीरभद्र जवाब में बस इतना ही कह सका. उसके मुँह से खून अब और ज़्यादा बहने लगा था. आअंखों में खून उतर जाने की वजह से आँखें लाल हो गयी थी.

दामिनी ने परेशान होकर अपने चारों तरफ देखा जैसे मदद के लिए किसी को ढूँढ रही हो और सामने से उसे दामूकाका आता हुआ दिखाई दिया एक बार फिर उसकी हिम्मत बँधने लगी.

"दामूकाका" वो दामूकाका की तरफ देखके चिल्लाई " देखिए इन्हें क्या हो गया है. मदद कीजिए. इन्हें डॉक्टर के पास ले जाना पड़ेगा"

पर दामूकाका अब उससे थोड़ी दूर रुक गया था और खड़ा हुआ सिर्फ़ देख रहा था.

"आप रुक क्यूँ गये. इधर आइए ना" दामिनी फिर चिल्लाई पर दामूकाका वहीं खड़ा हुआ उसे एक मुर्दे की तरह देखता रहा.

"दामिनी" अपने पिछे से एक जानी पहचानी भारी सी आवाज़ सुनकर दामिनी पलटी तो देखा के पिछे उसके ससुर ठाकुर इंद्रदेव सिंग खड़े हुए थे.

"पिताजी" दामिनी की आँखों में खुशी के आँसू आ गये

"देखिए क्या हो गया" उसने अपनी पति की तरफ इशारा किया.

जवाब में ठाकुर ने उसके बाल पकड़े और उसे खींचकर सीधा खड़ा कर दिया. वीरभद्र का सिर उसकी गोद से निकलकर ज़मीन पे गिर पड़ा. दामिनी की कुछ समझ नही आ रहा था के क्या हो रहा है. ठाकुर उसे बाल से पकड़कर खींचता हुआ कार की तरफ ले गया और कार के बोनेट पे उसे गिरा दिया.

"क्या कर रहे हैं पिताजी?" दामिनी ने पूछा तो ठाकुर ने उसे खींचकर फिर सीधा खड़ा किया, घुमाया और उसे झुककर उसका सर कार के बोनेट से लगा दिया. अब दामिनी झुकी हुई अपने ससुर के सामने खड़ी थी.

उसने उठने की कोशिश की पर पिछे उठ नही पाई. ठाकुर अब पिछे से उसकी सारी उठा रहे थे और दामिनी चाहकर भी कुछ नही कर पा रही थी. जैसे उसके हाथ पावं में जान ही ना बची हो. जैसे किसी अंजान ताक़त ने उसे पकड़ रखा हो. ठाकुर सारी उठाकर अब उसकी कमर पे डाल चुके थे. नीचे से दामिनी की दोनो टाँगें और नितंब खुल गयी थी. उसकी योनि पिछे से ठाकुर के सामने खुली हुई थी.ठंडी हवा लगी तो दामिनी को महसूस हुआ के आज तो उसने पॅंटी भी नही पहनी थी.

"ये कैसे हुए, कैसे भूल गयी मैं" दामिनी सोच ही रही थी के उसे अपनी योनि में कुछ घुसता हुआ महसूस हुआ. उसके बदन में दर्द की चुभन उठती चली गयी. लगा जैसे योनि को फाड़

कर दो हिस्सो में कर दिया गया हो. वो लंबी सी मोटी चीज़ अब भी उसके अंदर घुसती चली जा रही थी. उसका सर और हाथ कार के बोनेट पे रखे हुए थे और दोनो स्तन सामने लटक गयी थी. एक हाथ आगे आया और उसके एक स्तन को पकड़कर दबाने लगा.

दामिनी के अंदर जान बाकी नही थी. वो चाहकर भी कुछ ना कर पा रही थी. बश झुकी खड़ी थी. पीछे से उसके ससुर ने एक हाथ से उसकी नितंब और दूसरे हाथ से उसकी एक स्तन पकड़ रखी थी. थोड़ी दूर खड़ा दामूकाका अब ज़ोर ज़ोर से हस रहा था. एक लंबी मोटी से चीज़ उसकी योनि में अब भी और अंदर घुसने की कोशिश कर रही थी.

हड़बड़ा कर दामिनी की आँख खुली तो देखा के वो एक सपना देख रही. उसके पूरा बदन पसीने से भीग चुका था और वो सूखे पत्ते की तरफ काँप रही थी. ठाकुर अब उसकी साइड में नही थे और वो अकेली ही बिस्तर पे आधी नग्न पड़ी थी. उसे बहुत ज़ोर से सर्दी लग रही थी. हाथ लगाया तो देखा के उसका माथा किसी तवे की तरह गरम हो चुका था. सपना जैसे अब भी उसकी आँखों के सामने घूम रहा था और दामूकाका के हस्ने की आवाज़ अब भी उसके कान में थी.

दामिनी लड़खड़ाते हुए बिस्तर से उठी. खड़ी होते ही खुली हुई साड़ी ज़मीन पे जा गिरी. दामिनी ने झुक कर उसे उठाया पर बाँधने की कोई कोशिश नही की. सामने से ब्लाउस खुला हुआ था और उसकी स्तन बाहर लटक रही थी. दामिनी ने साडी को अपने सामने पकड़ा और स्तनों को ढका. वो धीरे धीरे चलती ठाकुर के कमरे से बाहर निकली और इधर उधर देखा. हवेली सुनसान पड़ी थी. दामूकाका भी कहीं नज़र नही आ रहा था. वो धीमे कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ते अपने कमरे में पहुँची और फिर जाकर अपने बिस्तर पे गिर पड़ी. उसके जिस्म में बिल्कुल जान नही थी. पूरा बदन आग की तरह गरम हो रहा था. सर्दी भी उसे बहुत लग रहा था. माथा गरम हो चुका था और बुखार की वजह से आँखें भी लाल हो रही थी. दामिनी बिस्तर पे पड़े पड़े ही अपने जिस्म से कपड़े हटाए और नग्न होकर बाथरूम में आई. दरवाज़े का सहारा लिए लिए ही उसने बाथटब में पानी भरा और नहाने के लिए टब में उतर गयी.

शाम ढल चुकी थी. दामिनी अब भी अपने कमरे में ही थी. उसने सुबह से कुछ नही खाया था और ना ही अपने कमरे से निकली थी. बुखार अब और तेज़ और हो चुका था और दामिनी के मुँह से कराहने की आवाज़ निकलने लगी थी. उसने कई बार बिस्तर से उठने की कोशिश की पर नाकाम रही. गर्मी के मौसम में भी उसने अलमारी से निकालकर रज़ाई ओढ़ रखी थी पर सर्दी फिर भी नही रुक रही थी. वो बिस्तर पे सिकुड सी गयी. जब दर्द की शिद्दत बर्दाश्त नही हुई तो उसकी आँखो से आँसू बह चले और वो बेज़ार रोने लगी.

उसे याद था के वीरभद्र के मरने से पहले जब वो एक बार बीमार हुई थी तो किस तरह उसके पति ने उसका ख्याल रखा था और आज वो अकेली बिस्तर पे पड़ी कराह रही थी. पति की याद आई तो उसका रोना और छूट पड़ा. वो बराबर रज़ाई के अंदर रोए जा रही थी पर जानती थी के ये रोना सुनने वाला अब कोई नही है. उसे खुद ही रोना है और खुद ही चुप हो जाना है. आँसू अब उसके चेहरे से लुढ़क कर तकिये को गीला कर रहे थे.

"बहू" दरवाज़े पे दस्तक हुई. बाहर दामूकाका खड़ा था

"खाना तैय्यार है. आके खा लीजिए." वो उसे रात के खाने पे बुला रहा था.

"नही मुझे भूख नही है" दामिनी ने हिम्मत बटोरकर कहा.

दामूकाका वापिस चला गया तो दामिनी को फिर अपने उपेर तरस आ गया. आज बीमार में उसे कोई खाने को पुच्छने वाला भी नही है. उसे अपनी माँ और भाई की याद आई जो कैसे उसे लाड से ज़बरदस्ती खिलाया करते थे, उसे अपने पति की याद आई जो उसकी कितनी देखभाल करता था.

थोड़ी देर बाद दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई तो दामिनी ने रज़ाई से सर निकालकर बाहर देखा. दरवाज़े पे उसके ससुर खड़े थे जो हैरानी से उसे देख रहे थे. वजह शायद रज़ाई थी जो उसने गर्मी के मौसम में भी अपने उपेर पूरी लपेट रखी थी.

"क्या हुआ?" ठाकुर ने पूछा

"जी कुछ नही. बस थोड़ी तबीयत खराब है" दामिनी ने उनकी तरफ देखते हुए कहा

ठाकुर धीरे से उसके नज़दीक आए और उसके माथे को छुआ. अगले ही पल उन्होने हाथ वापिस खींच लिया.

"हे भगवान. तुम्हें तो बहुत तेज़ बुखार है बहू" ठाकुर ने कहा

"नही बस थोड़ा सा ऐसे ही बदन टूट रहा है. आप फिकर ना करें" दामिनी ने उठने की कोशिश करते हुए कहा.

ठाकुर ने उसका कंधा पकड़कर उसे वापिस लिटा दिया.

"हमें माफ़ कर दो बेटी. हम जानते हैं के ये हमारी वजह से हुआ है. कल रात हमने तुम्हें बहुत तकलीफ़ पहुँचाई थी." ठाकुर की आवाज़ भी भारी हो चली. जैसे अभी रोने को तैय्यार हों.

दामिनी ने जवाब में कुछ ना कहा.

"बहू, कल रात जो हुआ हम उसके लिए माफी माँगते हैं. कल रात....." ठाकुर बोल ही रहे थे की दामिनी ने उनकी बात बीच में काटी दी.

"पिताजी कल रात जो हुआ वो मर्ज़ी से होता है, ज़बरदस्ती से नही. ज़रा सोचिए के जब

आपको मर्ज़ी हासिल हो चुकी थी तो बलात्कार की क्या ज़रूरत थी"

दामिनी के मुँह से निकली इस बात ने बहुत कुछ कह दिया था. उसने अपने ससुर के सामने साफ कर दिया था के वो खुद ठुकवाने को तैय्यार है, उन्हें उसे ज़बरदस्ती हासिल करने की कोई ज़रूरत नही है. वो खुद उनके साथ सोने को तैय्यार है तो उन्हें खुद उसे पकड़के गिराने की क्या ज़रूरत है. उसने साफ कह दिया था के असली मज़ा तो तब है जब वो खुद भी अपनी मर्ज़ी से ठुकवाके साथ दे रही हो. उसमें क्या मज़ा के जब वो नीचे पड़ी दर्द से कराह रही हो.

दामिनी के बात सुनकर ठाकुर ने उसकी आँख में आँख डालकर देखा. जवाब में दामिनी ने भी अपना चेहरा पक्का करके नज़र से नज़र मिला दी, झुकाई नही. दोनो इस बात को जानते थे के अब उनके बीच हर बात साफ हो चुकी है. ठाकुर ने प्यार से फिर उसका सर सहलाया और पास पड़ा फोन उठाकर डॉक्टर का नंबर डायल करने लगे.

भाग - 4

दामिनी यूँ ही कुछ देर तक श्यामला की डायरी के पेजस पलट कर देखती रही पर वहाँ से कुछ हासिल नही हुआ. उसमें सिर्फ़ कुछ बड़े शायरों की लिखी हुई गाज़ल थी, कुछ ऐसी भी जो काई सिंगर्स ने गायी थी. जब डायरी से कुछ हासिल नही हुआ तो परेशान होकर दामिनी ने श्यामला की अलमारी खोली पर वहाँ भी सिवाय कपड़ो के कुछ ना मिला. दामिनी श्यामला के कमरे की हर चीज़ यहाँ से वहाँ करती रही और जब कुछ ना मिला तो तक कर वहीं बैठ गयी.

उसे श्यामला के कमरे में काफ़ी देर हो गयी थी.शाम ढलने लगी थी. दामिनी ने एक आखरी नज़र श्यामला के कमरे में फिराई और उठकर बाहर निकलने ही वाली थी के उसकी नज़र श्यामला के बिस्तर की तरफ गयी. चादर उठाकर बिस्तर के नीचे देखा तो हैरान रह गयी. नीचे एक अश् ट्रे और कुछ सिगरेट के पॅकेट रखे थे. कुछ जली हुई सिगरेट भी पड़ी हुई थी.

"श्यामला और सिगरेट?" दामिनी सोचने पे मजबूर हो गयी क्यूंकी श्यामला ही घर में ऐसी थी जो अपने दूसरे भाई तेज को सिगरेट छोड़ने पे टोका करती थी. वो हर बार यही कहती थी के उसे सिगरेट पीने वालो से सख़्त नफ़रत होती है तो फिर उसके कमरे में सिगरेट क्या कर रही है? या वो बाहर सिर्फ़ तमाशा करती थी और अपने कमरे में चुप चाप बैठ कर सिगरेट पिया करती थी? पर अगर वो पीटी भी थी तो सिगरेट कहाँ से लाती थी? गाओं में जाकर ख़रीदती तो पूरा गाओं में हल्ला मच जाता?

दामिनी हैरानी से सिगरेट की और देखती रही. शायद दामिनी किसी और से ये सिगरेट मँगवाती थी पर किससे? घर में कौन ऐसा था जो ये ख़तरा उठा सकता था क्यूंकी अगर किसी को पता चल जाता तो श्यामला को तो कोई कुछ ना कहता पर उस इंसान का गला ज़रूर कट जाता जो श्यामला को सिगरेट लाके देता था.

दामिनी फिर परेशान होकर कमरे में ही बैठ गयी. ये सच था के श्यामला हमेशा उसे परेशानी में डाल देती थी. उसे देखकर ही दामिनी को लगता था के वो जो दिखती है वैसी है नही. लगता था जैसे पता नही कितने राज़ उसने अपने दिल में दफ़न कर रखे थे. दामिनी ने जब भी उससे बात करने की कोशिश की थी, श्यामला हर बार दूसरी तरफ मुँह घुमा लेती थी जैसे उससे नज़र मिलाने से घबरा रही हो. अचानक दामिनी को कुछ ध्यान आया और उसे एक सवाल का जवाब मिल गया. घर में उसके देवर तेज के अलावा सिगरेट सिर्फ़ दामूकाका पिया करता था. बाद में डॉक्टर के मना करने पे छोड़ दी थी पर जब श्यामला यहाँ थी तो वो सिगरेट रखा करता था अपने पास. और वही एक ऐसा था जो एक बार ठाकुर के गुस्से का सामना कर सकता था क्यूंकी वो इस घर के सबसे पुराना नौकर था. दामिनी ने सोच लिया के वो दामूकाका से इस बारे में बात करेगी.

सिगरेट वापिस बिस्तर के नीचे सरका कर दामिनी उठी और श्यामला की डायरी उठाकर कमरे

से बाहर निकली. कमरे पे फिर से उसने लॉक लगाया और डायरी पढ़ती हुई नीचे की और चल दी. डायरी में हर शायरी ऐसी थी जिसे पढ़कर सिर्फ़ लिखने वाले के दर्द का अंदाज़ा लगाया जा सकता था. हर शायरी में मौत का ज़िक्र था. हर पेज में लिखने वाले ने अपनी मर जाने की ख्वाहिश का ज़िक्र किया था. डायरी पढ़ती हुई दामिनी अपने कमरे में पहुँची और डायरी को सामने रखी टेबल की तरफ उच्छाल दिया. डायरी थोड़ी सी खुली और एक पेज उसमें से निकल कर बाहर गिर पड़ा. दामिनी ने झुक कर काग़ज़ का वो टुकड़ा उठाया और पढ़ने लगी

तूने मयखाना निगाहों में च्छूपा रखा है

होशवालो को भी दीवाना बना रखा है

नाज़ कैसे ना करूँ बंदा नवाज़ी पे तेरी

मुझसे नाचीज़ को जब अपना बना रखा है

हर कदम सजदे बशौक किया करता हूँ

मैने काबा तेरे कूचे में बना रखा है

जो भी गम मिलता है सीने से लगा लेता हूँ

मैने हर दर्द को तक़दीर बना रखा है

बख़्श कर आपने एहसास की दौलत मुझको

ये भी क्या कम है के इंसान बना रखा है

आए मेरे परदा नशीन तेरी तवज्जो के निसार

मैने इश्क़ तेरा दुनिया से च्छूपा रखा है

काग़ज़ के टुकड़े पे लिखी ग़ज़ल को पढ़कर दामिनी ने जल्दी से श्यामला की डायरी खोली और पेजस पलटने लगी. कुछ बातों पे फ़ौरन उसका ध्यान गया. पहली तो ये के ये काग़ज़ इस डायरी का हिस्सा नही था.

सिर्फ़ डायरी के अंदर कुछ इस अंदाज़ से रखा गया था के डायरी उठाने पर बाहर निकलकर ना गिरे. श्यामला की डायरी इंपोर्टेड थी जो उसके सबसे छहोटे भाई ने विदेश से भेजी थी इसलिए पेपर्स की क्वालिटी काफ़ी अच्छी थी जबकि जो काग़ज़ उसमें रखा गया था वो एक सादा पेपर था जो किसी स्कूल के बच्चे की नोटबुक से फाडा हुआ लगता था. ऐसी नोटबुक जो गाओं में कहीं भी आसानी से मिल सकती थी. दूसरी और सबसे ज़रूरी चीज़ ये थी के ये लाइन्स श्यामला ने नही लिखी थी. हॅंडराइटिंग बिल्कुल अलग थी. दामिनी की हॅंडराइटिंग बहुत साफ थी और काग़ज़ पे लिखी हुई लाइन्स को देखके तो लगता था जैसे किसी ने काग़ज़ पे कीड़े मार दिए हों. तीसरी बात ये थी की श्यामला की डायरी में लिखी हुई सब लाइन्स एक लड़की की तरफ से कही गयी शायरी थी और काग़ज़ पे लिखी हुई ग़ज़ल एक लड़के की तरफ से कही गयी थी. चौथी बात ये के डायरी में श्यामला ने जो भी लिखा था सब इंग्लीश में था. लाइन्स तो सब उर्दू या हिन्दी में थी पर स्क्रिप्ट इंग्लीश उसे की थी. दामिनी जानती थी के श्यामला हिन्दी अच्छी तरह से लिख नही सकती थी इसलिए स्क्रिप्ट वो हमेशा इंग्लीश ही उसे करती थी पर काग़ज़ में स्क्रिप्ट भी हिन्दी ही थी.

दामिनी फिर सोच में पड़ गयी. क्या सच में श्यामला का कोई प्रेमी था? शायरी को पढ़कर तो यही लगता था के वो जो कोई भी था, श्यामला को बहुत चाहता था पर इश्क़ मजबूरी ज़ाहिर नही कर सकता था. दामिनी का सर जैसे दर्द की वजह से फटने लगा. वो उठी और डायरी को उठाकर अपनी अलमारी में रख दिया.

खिड़की पे नज़र पड़ी तो बाहर अंधेरा हो चुका था. वो जानती थी के आज रात वो अपने कमरे में नही सोने वाली है. आज की रात तो उसने ठाकुर के कमरे में सोना है, उनकी बीवी की तरह. रात भर अपने ससुर से ठुकवा है. यही सोचते हुए वो शीसे के सामने पहुँची और मुस्कुराते हुए जैसे एक नयी दुल्हन की तरह सजकर तैय्यार होने लगी. उसने सोच लिया था के बिस्तर पे ठाकुर से बात करेगी और हवेली के बारे में वो सब मालूम करेगी जो वो जानती नही. जो उसके इस घर में आने से पहले हुआ था.

त्य्यार होकर दामिनी बाहर आई तो दामूकाका किचन में था.

"पिताजी जाग गये?" दामिनी ने दामूकाका से पूछा

"नही अभी सो ही रहे हैं. मैं जगा दूं?" दामूकाका ने जवाब दिया

"नही मैं ही उठा देती हूँ. आप खाना लगाने की तैय्यार कीजिए" कहते हुए दामिनी किचन से बाहर जाने लगी पर फिर रुक गयी और दामूकाका की तरफ पलटी

"काका आप सिगरेट पीते हैं क्या"

दामूकाका हैरानी से दामिनी की और देखने लगा

"नही अब नही पीता. पहले पीता था पर फिर डॉक्टर ने मना किया तो छोड़ दी. क्यूँ?" उसे दामिनी के बात का जवाब देते हुए पूछा

"नही ऐसे ही पुच्छ रही थी. घर में और कोई भी सिगरेट पीता था? मेरे यहाँ आने से पहले?" दामिनी फिर दामूकाका के पास वापिस आकर खड़ी हो गयी

"सिर्फ़ एक छहोटे ठाकुर पीते हैं. आपके देवर तेज सिंग" दामूकाका ने जवाब दिया

"पहले तो घर में इतने नौकर होते थे. कोई नौकर वगेरह?" दामिनी ने फिर पूछा

"नही बेटी. नौकरों की कहाँ इतनी हिम्मत के हवेली में सिगरेट या बीड़ी पिएं. अपनी नौकरी सबको प्यारी होती है" दामूकाका बोला

"पर आप तो पीते थे ना काका. आपको नौकरी प्यारी नही थी?" दामिनी ने सीधे दामूकाका की आँखों में देखते हुए कहा

दामूकाका से इस बात का जवाब देते ना बना.

"चलिए छोड़िए. एक बात और बताइए. इस हवेली में आपने आज तक सबसे अजीब क्या देखा है जो आज तक आपकी समझ में नही आया और जिस बात ने आज तक आपको परेशान किया है" दामिनी ने पूछा

दामूकाका परेशान होकर इधर उधर देखने लगा. उससे दामिनी के इस सवाल का जवाब भी नही दिया जा रहा था. दामिनी समझ गयी के वो परेशान क्यूँ है और बोल क्यूँ नही रहा. उसका इशारा खुद दामिनी की हरकतों की तरफ था.

"नही काका. जो मैं कर रही हूँ उसके अलावा" दामिनी ने कहा

दामूकाका ने एक लंबी साँस छोड़ी और वहीं किचन में दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया

"देखो बेटी. कभी कभी ये ज़रूरी हो जाता है के जो गुज़र चुका है उसे गुज़रने दिया जाए. पुरानी बातों को जानकार क्या करोगी. क्यूँ अचानक गढ़े मुर्दे उखाड़ने की कोशिश कर रही हो तुम?" उसे दामिनी से कहा

"आप मेरी बात का जवाब दीजिए काका. जिन गढ़े मुर्दों की आप बात कर रहे हैं उनमें एक मेरा पति भी है" दामिनी की आवाज़ ठंडी हो चली थी

दामूकाका ने जब देखा के वो नही मानेगी तो उसने हथ्यार डाल दिए

"ठीक है तो सुनो. मैने इस हवेली में अपनी पूरी ज़िंदगी गुज़ार दी. यहाँ जो होता था एक तरीके से होता था. बड़े ठाकुर की मर्ज़ी से होता था. उनके गुस्से के सामने कोई मुँह नही खोलता था और ना ही किसी की हिम्मत होती थी के उनकी मर्ज़ी के खिलाफ कुछ कर सके. पर एक किस्सा ऐसा है जो आज तक मुझे समझ नही आया."

"क्या काका" दामिनी ने कहा

"तुमने हवेली के पिछे वाला हिस्सा देखा है? जहाँ अब पूरा बबूल की ख़त्मियों का जंगल उग चुका है?" दामूकाका ने पूछा

"हां देखा है. क्यूँ?" दामिनी अब गौर से सुन रही थी

"कभी उस जगह पे फूलों का एक बगीचा होता था. ठाकुर साहब को फूल बहुत पसंद थे. जब तुम आई थी तब भी तो था. याद है?" दामूकाका ने 10 साल पहले की बात की तरफ इशारा किया

दामिनी ने दिमाग़ पे ज़ोर डाला तो ध्यान आया के दामूकाका सच कह रहा था. वहाँ एक बगीचा हुआ करता था. बहुत खूबसूरत. वो खुद भी अक्सर वहाँ जाकर बैठा करती थी अकेले. उसके पति के मरने के बाद किसी ने हवेली के उस हिस्से की तरफ ध्यान नही दिया और बगीचा सूख कर ख़त्मियों में तब्दील हो गया.

"हां याद है." दामिनी ने कहा

"उस बगीचे में कयि फूल ऐसे थे जो विदेश से मँगवाए गये थे. उनको पानी की ज़रूरत ज़्यादा होती थी. हर 2 घंटे में पानी डालना होता था तो मैं अक्सर रात को उठकर उस तरफ जाया करता था पानी डालने के लिए." कहकर दामूकाका चुप हो गया जैसे आगे की बात कहना ना चाह रहा हो

"आगे बोलिए काका" दामिनी ने कहा

दामूकाका रुक रुक कर फिर बोला, जैसे शब्द ढूँढ रहा हो

"हवेली में रात को कोई आया करता था बेटी. उस बगीचे में मैने कई बार महसूस किया के जैसे मैने एक साया देखा हो जो मेरा आने पे च्छूप गया. मैने काई बार कोशिश की पर मिला नही कोई पर मुझे महसूस होता रहता था के जो कोई भी है, वो मुझे च्छूप कर देख रहा है. मेरे वापिस जाने का इंतेज़ार कर रहा है"

दामूकाका बोलकर चुप हो गया और दामिनी एक पल के लिए उसके चेहरे को देखती रही. थोड़ी देर खामोश रहने के बाद वो बोली

"मैं कुछ समझी नही काका"

"हवेली में रात को कोई चुपके से दाखिल होता था. मैं नही जानता के वो कौन था और क्या करने आता था पर फूलों के बगीचे के आस पास ही मुझे ऐसा लगता था के कोई मेरे अलावा भी मौजूद है वहाँ" दामूकाका ने कहा

"पर कोई हवेली में कैसे आ सकता था? बाहर दरवाज़े पे उन दीनो 3 गार्ड्स होते थे, घर के कुत्ते खुले होते थे और हवेली के चारो तरफ ऊँची दीवार है जिसे चढ़ा नही जा सकता" दामिनी एक साँस में बोल गयी

"मैं नही जनता बेटी के वो कैसे आता था पर आता ज़रूर था. शायद हर रात" दामूकाका की आवाज़ में यकीन साफ झलक रहा था

"आप इतने यकीन से कैसे कह सकते हैं काका? अभी तो आपने कहा के आपको बस ऐसा महसूस होता था. आपका भरम भी तो हो सकता है. इतने यकीन क्यूँ है आपको?" दामिनी ने पूछा तो दामूकाका ने जवाब नही दिया. दामिनी ने उसकी आँखों में देखा तो अगले ही पल अपने सवाल का जवाब आप मिल गया

"आपने देखा था उसे है ना काका? कौन था?" दामिनी ने कहा. अचानक उसकी आवाज़ तेज़ हो चली थी. उतावलापन आवाज़ में भर गया था.

"मैं ये नही जनता के वो कौन था बेटी" दामूकाका ने अपनी बात फिर दोहराई"और ना ही मैने उसे देखा था. मुझे बस उसकी भागती हुई एक झलक मिली थी वो भी पिछे से"

"मैं सुन रही हूं" कहकर दामिनी खामोश हो गयी

"उस रात मैने अपने दिल में ठान रखी थी की इस खेल को ख़तम करके रहूँगा. मैं अपने कमरे में आने के बजाय शाम को ही बगीचे की तरफ चला गया और वहीं च्छूप कर बैठ गया. जाने कब तक मैं यूँ ही बैठा रहा और फिर मुझे धीरे से आहट महसूस हुई. मुझे लगा के आज मैं

राज़ से परदा हटा दूँगा पर तभी कुछ ऐसा हुआ के मेरा सारा खेल बिगड़ गया"

"क्या हुआ?" दामिनी ने पूछा

"उपेर हवेली के एक कमरे में अचानक किसी ने लाइट ऑन कर दी. मैं हिफ़ाज़त के लिए अपने साथ एक कुत्ते को लिए बैठा था. लाइट ऑन होते ही उस कुत्ते ने भौकना शुरू कर दिया और शायद वो इंसान समझ गया के उसके अलावा भी यहाँ कोई और है. मैं फ़ौरन अपने च्चिपने की जगह से बाहर आया और उस शक्श को भागकर अंधेरे हिस्से की तरफ जाते देखा. बस पिछे से हल्की सी एक झलक मिली जो मेरे साथ खड़े कुत्ते ने भी देख ली. कुत्ता उस साए के पिछे भागा और कुत्ते के पिछे पिछे मैं भी" दामूकाका ने कहा

"फिर?" दामिनी ने पूछा

"पर वो साया तो जैसे हवा हो गया था. ना मुझे उसका कोई निशान मिला और ना ही कुत्ते को. मैं 3 घंटे तक पूरी हवेली के आस पास चक्कर लगाता रहा पर कहीं कोई निशान नही मिला. हवेली और दीवार के बीच में काफ़ी फासला है. अब तो जैसे पूरा जंगल उग गया है पर उस वक़्त साफ सुथरा हुआ करता था फिर भी ना तो मैं कुछ ढूँढ सका और ना ही मेरे साथ के कुत्ते"

दामूकाका बोलकर चुप हो गया तो दामिनी भी थोड़ी देर तक नही बोली. आख़िर में दामूकाका ने ही बात आगे बढ़ाई.

इसके बाद एक हफ्ते तक मैने एक दो बार और कोशिश की पर शायद उस आदमी को भी पता लग गया था के उसका आना अब च्छूपा नही है इसलिए उसके बाद वो नही आया. और उसके ठीक एक हफ्ते बाद आपके पति वीरभद्र की हत्या कर दी गयी थी. फिर क्या हुआ ये तो आप जानती ही हो"

दामिनी ये सुनकर हैरत से दामूकाका की और देखने लगी

"कितने वक़्त तक चला ये किस्सा? मेरा मतलब काब्से आपको ऐसा लगता था के कोई है जो आता जाता है रात को?" दामिनी ने पूछा

"आपके पति के मरने से एक साल पहले से. एक साल तक तकरीबन हर रात यही किस्सा दोहराया जाता था" दामूकाका अलमारी से प्लेट्स निकालते हुए बोला

"आपने किसी से कहा क्यूँ नही काका?" दामिनी उसकी कोई मदद नही कर रही थी. वो तो बस खड़ी हुई आँखें फाडे दामूकाका की बातें सुन रही थी

"मैं क्या कहता बेटी? सब कहते के मेरा भरम है और मज़ाक उड़ाते. आखरी हवेली में रात को

घुसने की हिम्मत कर भी कौन सकता था वो भी गार्ड्स और कुत्तो के रहते" दामूकाका प्लेट्स कपड़े से साफ करने लगा

"पर मेरे पति के मरने के बाद तो कह सकते थे. आप जानते हैं के आपने क्या च्छूपा रखा था? हो सकता है मेरे पति की जान उसी आदमी ने ली हो"दामिनी लगभग चीख पड़ी

"मैं अपना मुँह कैसे खोल सकता था बेटी?" दामूकाका ने नज़र झुका ली " मैं तो एक मामूली नौकर था. किसी से क्या कहता के मैने क्या देखा है जबकि ..... " दामूकाका ने बात अधूरी छोड़ दी.

"जबकि क्या?" दामिनी से दामूकाका की खामोशी बर्दाश्त नही हो रही थी.

जब दामूकाका ने जवाब नही दिया तो दामिनी ने फिर वही सवाल दोहराया

"उस रात ये सब मैने अकेले नही देखा था. कोई और भी था जो ये सब देख रहा था" दामूकाका अटकते हुए बोला

"कौन?" दामिनी ने पूछा

"आपकी सास" दामूकाका ने नज़र उठाकर कहा " घर की मालकिन श्रीमती शकुंतला देवी"

दामिनी का मुँह फिर खुला रह गया . दामूकाका उसकी मर चुकी सास की बात कर रहा था

"क्या कह रहे हो काका?" उसे दामूकाका से कहा

"सही कह रहा हूँ बेटी. उस रात उनके कमरे की ही लाइट ऑन हुई थी जिसे देखकर कुत्ता भौंका था. जब वो शख्स भागा तो मैने एक नज़र उपेर कमरे की तरफ उठाई तो देखा के मालकिन खिड़की पर खड़ी थी. पता नही वो क्या देख रही थी पर उनकी नज़र मेरी तरफ नही थी. मैं उस आदमी के पिछे भगा और थोड़ी देर बाद जब नज़र उठाकर देखा तो कमरे की खिड़की बंद हो चुकी थी और लाइट ऑफ कर दी गयी थी"

दामिनी की समझ नही आया के वो क्या करे और क्या कहे. उसके दिमाग़ में काफ़ी सारी बातें एक साथ चल रही थी.

"भागते हुए वो आदमी कुछ गिरा गया था जो एक कुत्ता सूंघटा सूंघटा उठा लाया था" दामूकाका ने कहा

"क्या?" दामिनी ने अपनी खामोशी तोड़ी

"एक चाबी" दामूकाका ने जवाब दिया

"चाबी?" दामिनी ने फिर हैरत से पूछा

"हां. वो आज भी मेरे ही पास है"

दामूकाका के बात सुनकर दामिनी दीवार के साथ टेक लगाकर खड़ी हो गयी.

"आपको कैसे पता के ये चाबी उसी आदमी ने गिराई थी?" उसने दामूकाका से पूछा

"यकीन से तो नही कह सकता पर वो चाबी वही कुत्ता उठाके लाया था जो उस आदमी के पिछे भगा था. कुत्ता ऐसी किसी चीज़ को उठाके क्यूँ लाएगा? सिर्फ़ इसलिए क्यूंकी उस चाबी में उस आदमी की खुश्बू थी जिसके पिछे कुत्ता भाग रहा था"

"वो चाबी कहाँ है काका?" दामिनी ने कहा

"मेरे कमरे में है" बात करते करते दामूकाका खाना लगाने की पूरी तैय्यारि कर चुका था

"काका आपको ये सब बातें ससुर जी से अगले ही दिन बता देनी चाहिए थी. शायद मेरे पति की जान बच जाती" दामिनी की आवाज़ भारी हो चली थी

"चाहता तो मैं भी यही था बेटी" दामूकाका उसके करीब आता हुआ बोला"मैं तो अपने दिल में इरादा कर भी चुका था. मैने सोचा के बड़ी मालकिन अगले दिन इस बात का ज़िक्र तो करेंगी ही पर उन्होने किसी से कुछ नही कहा. ना तो इस बात का कोई ज़िक्र किया और ना ही कुछ ऐसा किया जिससे किसी को लगता के वो कुछ च्छूपा रही हैं. मैं उनकी इसी बात से परेशानी में पड़ गया. समझ नही आया के किसी से कहूँ या ना कहूँ और कहूँ तो क्या कहूँ और इससे पहले की मैं कोई फ़ैसला कर पता तब तक बहुत देर हो चुकी थी."

दामिनी की आँख भर आई थी. उसे दामूकाका पे गुस्सा भी आ रहा था और दिल से एक आवाज़ ये भी आ रही थी के इसमें इस बेचारे बुड्ढे आदमी का क्या कसूर. अचानक उसके ससुर ने उसका नाम पुकारा तो उसने जल्दी से अपने आँसू पोन्छे.

"आई पिताजी" उसने ऊँची आवाज़ में जवाब दिया और दामूकाका की और पलटके बोली " आअप खाना निकालो."

जाते जाते दामिनी फिर दामूकाका की और पलटी.

"क्या पिताजी को इस बात की खबर है?" उसने पूछा

दामूकाका ने इनकार में सर हिला दिया

"होनी भी नही चाहिए" कहते हुए दामिनी चली गयी.

तेज़ कदमो से चलती वो ठाकुर के कमरे तक पहुँची. ठाकुर उठकर खड़े हुए थे

"अरे पिताजी क्या कर रहे हैं" वो भागती हुई ठाकुर के करीब पहुँची "आप लेट जाइए वरना दर्द बढ़ जाएगा पावं में"

"नही अब काफ़ी ठीक लग रहा है. लगता है मामूली मोच थी" ठाकुर ने एक कदम आगे बढ़ने की कोशिश की तो आगे की और गिरने लगे. दामिनी ने भागकर सहारा दिया

"मामूली नही थी. अब आअप लेट जाइए" दामिनी ने हस्ते हुए कहा

ठाकुर का एक हाथ दामिनी के कंधे पे था और दूसरा हाथ आधा उसकी कमर पर और आधा उसकी नितंब पर.

दामिनी ने सहारा देकर ठाकुर को फिर लेटा दिया और अपनी सारी का पल्लू ठीक करते हुए बोली

"आप यहीं लेट जाइए. मैं खाना यहीं लगा देती हूं. आपको उठने की ज़रूरत नही"

कमरे से बाहर आकर वो किचन की तरफ आई. दामूकाका टेबल पे खाना लगा रहा था

"टेबल पे नही. पिताजी आज अपने कमरे में ही खाएँगे." दामिनी ने उसकी और आते हुए कहा

उसकी बात सुनकर दामूकाका प्लेट्स फिर उठाने लगा, ठाकुर के कमरे में ले जाने के लिए

"आप रहने दीजिए."दामिनी ने उसे रोकते हुए कहा"मैं कर लूँगी. आप अपने में जाके आराम कीजिए. कल सुबह मिलेंगे"

दामिनी ने उसकी आँखों में देखते हुए प्लेट्स उसके हाथ से ले ली. दामूकाका हैरत से उसकी तरफ देख रहा था. अब तक दामिनी और उसके बीच उस रात के बारे में कोई ज़िक्र नही हुआ था जब ठाकुर ने दामिनी को ठोका था. वो दोनो जानते थे के दोनो ने उस रात एक दूसरे को देख लिया था और शायद इसी वजह से उस बारे में बात करने से क़तरा रहे थे. दामूकाका पलटकर जाने लगा तो दामिनी ने उसे पिछे से कहा

"अब रात को हवेली में आपकी ज़रूरत नही होगी काका. आप आराम कर लीजिएगा. पिताजी

का ख्याल मैं रख लूँगी, हर रात"

दामिनी की बात सुनकर दामूकाका फिर पलटकर उसे देखने लगा. दामिनी ने जैसी उसकी आँखें पढ़ ली.

"आप ठीक सोच रहे हैं काका. ठीक उसी रात की तरह जब आपने मुझे पिताजी के बिस्तर पे देखा था. बस ध्यान रहे के उस रात आपने जो किया वो फिर ना करें."

दामूकाका के जाने के बाद दामिनी ने ठाकुर को खाना खिलाया और खुद ही किचन साफ किया. सारे काम जब तक उसने निपटाए तब तक बाहर रात गहरा चुकी थी. गर्मी पुर जोश पे थी. दामिनी को हल्का हल्का सा पसीना भी आ रहा था. किचन बंद कर वो सारी के पल्लू से अपना सर पोन्छते ठाकुर के कमरे में पहुँची.

"तुम क्यूँ काम कर रही हो?" उसे देखकर ठाकुर ने पूछा

"अपने घर में मैं नही तो और कौन काम करेगा पिताजी?" दामिनी हस्ते हुए बोली और ठाकुर के पास आकर उनके पावं को देखने लगी

"अब बेहतर लग रहा है सुबह से." दामिनी ने अपने ससुर से कहा " आप आराम कीजिए. मैं थोड़ा नहा लूँ"

दामिनी जाने ही लगी थी के ठाकुर ने उसका एक हाथ पकड़ा और खींच कर बिस्तर पे गिरा दिया.

"क्या कर रहे हैं? नहा तो लेने दीजिए. जल्दी क्या है?" दामिनी ने एक ही बात में अपने ससुर के सामने साफ ज़ाहिर कर दिया के आज रात उसे कोई एतराज़ नही.

बदले में ठाकुर ने कुछ नही कहा और सिर्फ़ उसकी आँखों में खामोशी से देखते रहे.उन्होने दामिनी को खींच कर पूरी तरह से बिस्तर पे लिटा लिया था और अपने करीब कर लिया था. कमरे में एसी ऑन था इसलिए दामिनी के बदन से पसीना सूखने लगा था.

"मुझे पसीना आ रहा है. एक बार नाहकार आ जाऊं?" दामिनी ने अपने माथे पे आखरी बची कुछ पसीने की बूँदों की तरफ इशारा किया.

हर बार की तरह इस बार भी ठाकुर ने कुछ नही कहा और बस प्यार से उसके सर पे हाथ फिरते रहे. फिर हाथ माथे पे लाए और पसीना साफ कर दिया. दामिनी ने महसूस किया था के बिस्तर पर ठाकुर कुछ बोलते नही थे. बस चुप चाप सारे काम करते रहते थे.

दोनो करवट लिए एक दूसरे की तरफ चेहरा किए लेटे हुए था. नज़र अब भी एक दूसरे की नज़र से मिली हुई थी. बस एक दूसरे को देखे जा रहे थे. ठाकुर का एक हाथ धीरे धीरे दामिनी का सर सहला रहा था. नीचे टांगे एक दूसरे से मिल रही थी. दामिनी की सारी थोड़ी सी उठकर उपेर घुटनो तक आ पहुँची थी. धीरे धीरे ठाकुर ने उसके चेहरे को सहलाना शुरू किया और एक उंगली उसके होंठ पर फिराई तो दामिनी की साँस अटकने लगी. अगले ही पल ठाकुर ने आगे बढ़कर अपने होंठ दामिनी के होंठो पर रख दिया

दामिनी के मुँह से आह निकल पड़ी और दोनो के होंठ एक दूसरे से मिल गये. ठाकुर ने उसके होंठो का रस चूसना शुरू किया तो दामिनी भी जवाब देने लगी. दोनो एक होंठ जैसे एक दूसरे में घुसे जा रहे थे और ज़ुबान आपस में टकराने लगी थी. दामिनी आगे को खिसक कर अपने ससुर से चिपक गयी थी और चुंबन में उनका पूरा साथ दे रही थी. बड़ी देर तक दोनो एक दूसरे के होंठ चूस्ते रहे. दामिनी ने अपने दोनो हाथों से ठाकुर का सर पकड़ रखा था और अपने ससुर के अंदर जैसे घुसी जा रही थी. ठाकुर का एक हाथ पिछे से उसकी सारी के अंदर ब्लाउस के नीचे उसकी नग्न कमर को सहला रहा था जिससे दामिनी के जिस्म की गर्मी और बढ़ती जा रही थी.

चुंबन चलता रहा और ठाकुर का हाथ सरक कर पिछे से दामिनी के ब्लाउस के अंदर चला गया. और उसकी नग्न कमर को सहलाने लगा. दामिनी जैसे हवा में उड़ रही थी. उसकी आँखें बंद हो चली थी. वो तो बस अपने ससुर के होंठ और अपने नंगे जिस्म पे उनके हाथ का मज़ा ले रही थी. ठाकुर का हाथ थोड़ी देर बाद सरक कर आगे आया और सारी के उपेर से दामिनी की स्तनों के उपेर आ गया. दामिनी से रहा ना गया और जैसे ही ठाकुर ने हाथ का दबाव उसकी स्तनों पे डाला वो सूखे पत्ते की तरह काँप उठी. ठाकुर धीरे धीरे सारी और ब्लाउस के उपेर से उसकी दोनो स्तनों को दबाने लगे. दोनो एक दूसरे से बुरी तरह चिपक गये थे और ठाकुर का खड़ा लिंग दामिनी को अपने पेट पे महसूस हो रहा था. वो भी धीरे से आगे सारा कर अपने पेट से लिंग को घिस रही थी.

ठाकुर ने हाथ दामिनी की छाती से हटाकर एक हाथ से उसका हाथ पकड़ा और अपने लिंग की तरफ खींचने लगे. शरम से दामिनी ने अपना हाथ वापिस लेना चाहा पर ठाकुर ने हाथ फिर भी खींचकर अपने लिंग पे रख दिया. धोती के उपेर से लिंग हाथ में आते ही दामिनी के हाथ वापिस लेना बंद कर दिया और लिंग हाथ में पकड़ लिया. ठाकुर ने अब उसके पुर चेहरे को चूमना शुरू कर दिया और उसके गले तक आ पहुँचे थे. दामिनी को अब किसी बात की परवाह नही थी. उसे तो बस अब ठुक जाना था. वो भी उतने ही जोश के साथ अपने ससुर का साथ दे रही थी. धीरे से ठाकुर ने उसे अपने नीचे लिया और उसके उपेर चढ़ गये. होंठ फिर दामिनी के होंठो पे आ गये, हाथ से उसकी कमर पकड़ी और लिंग का दबाव सारी के उपेर से सीधा उसकी योनि पे डाला. दामिनी ने कुछ जोश में और कुछ शरम से अपनी टांगे बंद करने की कोशिश की पर ठाकुर ने अपने घुटनो से उसकी दोनो टांगे फेला दी और लिंग धीरे धीरे उसकी योनि पे बड़ाने लगे.

दामिनी अब ज़ोर ज़ोर से आहें भर रही थी. एसी में भी पसीना दोबारा उसके माथे पे आ गया

था. ठाकुर उसे पागलों की तरह चूम रहे थे और नीचे से सारी के उपेर से ही उसकी योनि पे धक्के मार रहे थे. हाथ उसके नंगे पेट पे घूम रहा था. थोड़ी देर बाद वो उठ कर सीधे हुए, अपना कुर्ता निकाला और फिर दामिनी के उपेर लेट गये. चुंबन फिर शुरू हो गया पर इस बार हाथ सीधा दामिनी की स्तनों पे आ गये थे.

थोड़ी देर ऐसे ही स्तन दबाने के बाद उन्होने उसकी सारी का पल्लू हटाया और उसके ब्लाउस के बटन्स खोलने लगे. दामिनी को फिर शरम महसूस हुई. वो अपनी दोनो स्तन ठाकुर को पहले भी दिखा चुकी थी, दबवा चुकी थी पर फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे पहली बार कर रही हो. वो कुछ समझ पाती उससे पहले ही उसका ब्लाउस खुल चुका था और दोनो स्तन सफेद ब्रा में बंद ठाकुर के सामने थी. ठाकुर ने अपने होंठ उसके क्लीवेज पर रख दिए और नीचे से ब्रा उपेर को उठाने लगे. दामिनी ने रोकने की कोशिश की जो किसी काम ना आई और उसका ब्रा उपेर कर दिया गया. दोनो स्तन छलक कर ठाकुर के सामने थी.

ठाकुर ने उसकी दोनो स्तनों को अपने हाथों में थामा और दबाते हुए नीचे झुक कर चूसने लगे. एक एक करके दामिनी के दोनो निपल ठाकुर के मुँह में जाने लगे. हाथ से दबाने का काम अब भी चल रहा था और नीचे से सारी के उपेर से ही योनि पे धक्के पड़ रहे थे. दामिनी अपने आपे से बिल्कुल बाहर जा चुकी थी. उसे अब कोई परवाह नही थी के उसपर चढ़ा हुआ मर्द उसका अपना ससुर था. उसे तो बस अब एक लिंग की ज़रूरत थी.

उसने महसूस किया के ठाकुर उसके उपेर से उतर कर थोड़ा एक तरफ को हो गये. लिंग योनि से हट गया तो दामिनी एक ठंडी आह भर कर रह गयी. स्तन अब भी ठाकुर के हाथों में थी. उसने आँखें बंद किए कुछ समझने की कोशिश की के क्या हो रहा है और जल्दी ही पता चल गया. ठाकुर का एक हाथ अब उसके पेट से होके सारी के उपेर से उसकी योनि पे आ गया था और धीरे से उसकी टाँगो के बीच घुस गया था. दामिनी तड़प उठी और उसने फ़ौरन अपने टांगे बंद करके ठाकुर के हाथ को हटाने की कोशिश की पर फिर नाकाम रही. हाथ वहीं रहा और उसकी योनि को घिसता रहा. थोड़ी देर बाद उसे ठाकुर का हाथ अपनी योनि से हटकर फिर अपने पेट पे आता हुआ महसूस हुआ और अगले ही पल उसकी सारी सामने की तरफ से बाहर खींच दी गयी.

दामिनी के पुर जिस्म ने एक झटका लिए और उसने दोनो हाथों से अपनी सारी से अपना जिस्म ढकने की कोशिश की. ठाकुर ने उसके दोनो हाथों को अपने एक हाथ से पकड़ा और उसके सर के उपेर ले जाकर पकड़ लिया. दामिनी ने लाख कोशिश की पर अपने हाथ च्छुडा नही पाई. दिल ही दिल में वो ठाकुर की ताक़त की क़ायल हो गयी. इस उमर में भी सिर्फ़ एक हाथ से उन्होने उसे काबू कर लिया. वो सोच ही रही थी के उसे अपने पेटीकोट का नाडा खुलता हुआ महसूस हुआ. उसके मुँह से फिर एक आह निकल पड़ी जो आधी मज़े में डूबी हुई थी और आधी एक इनकार में जो ठाकुर को रोकने के लिए थे. दूसरे ही पल नाडा खुल गया, पेटीकोट ढीला हुआ और ठाकुर का हाथ उसके पेटीकोट में घुसकर पँटी से होता सीधा उसकी योनि पे जा पहुँचा.

दामिनी के जिस्म में करेंट दौड़ने लगा. जिस्म झटके मारने लगा और उसने अपनी टांगे ज़ोर से बंद कर ली. ठाकुर ने उसकी योनि को उपेर से रगड़ना शुरू कर दिया और अपनी एक टाँग उसके उपेर ले जाकर फिर दामिनी की दोनो टाँगो को फेला दिया. वो अब भी एक हाथ से उसके दोनो हाथों को पकड़े हुए थे. ठाकुर का हाथ एक बार फिर उसकी टाँगो के बीचे गया और धीरे से एक अंगुली दामिनी की योनि में दाखिल हो गयी और अंदर बाहर होने लगी.

अब दामिनी की टांगे खुद ही खुल चुकी थी. उसने अपने हाथ छुड़ाने की कोशिश भी बंद कर दी थी. ठाकुर एक उंगली से उसकी योनि मारने लगे और बारी बारी दोनो निपल्स चूसने लगे. दामिनी से जब बर्दाश्त नही हुआ तो उसके अपने एक हाथ साइड किया और ठाकुर का लिंग धोती के उपेर से पकड़के दबाने लगी. उसने अब ठाकुर को रोकने की सारी कोशिश बिल्कुल बंद कर दी थी. उसका लिंग पकड़ना ठाकुर के लिए जैसे एक इशारा था. वो फ़ौरन उठे और उसका पेटिकोट उतारकर फेंक दिया. दामिनी को एक पल के लिए बिठाया और उसका ब्लाउस और ब्रा भी एक तरफ कमरे में उच्छाल दिया गया.

अब दामिनी अपने ससुर के सामने बिल्कुल नग्न पड़ी थी. उसके हाथ खुद बखुद आगे को आकर उसकी स्तनों की ढकने की नाकाम कोशिश करने लगे. ठाकुर ने उसकी दोनो टांगे फेलाइ और घुटनो मॉड्कर योनि बिल्कुल लिंग के सामने कर ली. दामिनी की आँखों के सामने फिर वही नज़ारा आ गया जब ये लिंग पहली बार उसकी योनि में घुसा था. फिर वही दर्द याद आया तो जोश एक पल में गायब हो गया. जो योनि अब तक गीली और खुली गयी थी फ़ौरन सिकुड गयी. उसने ठाकुर की तरफ देखा जो लिंग उसकी योनि पे रख चुके थे और अंदर डालने की कोशिश कर रहे थे पर एक तो लिंग इतना मोटा और उपेर से दामिनी की योनि जो सूख चुकी थी. लिंग अंदर जा ही नही रहा था.

ठाकुर ने दामिनी की तरफ देखा जैसे कह रहे हों के "तुम अभी तैय्यार नही हो बहू" और उसके उपेर से हटने लगे. दामिनी ने फ़ौरन हाथ आगे करके लिंग पकड़ा और अपनी योनि के मुँह पे रख दिया और अंदर को दबाने लगी. ठाकुर इशारा समझ गये और उन्होने एक तेज़ धक्का मारा. लिंग का अगला हिस्सा दामिनी की योनि के अंदर था.

दामिनी को एक हल्की सी चुभन महसूस हुई और उसके अपने ससुर को अपने उपेर खींच कर उनसे लिपट गयी. ठाकुर ने उसके मुड़े हुए घुटनो को अपने हाथ से पकड़ा और लिंग धीरे धीरे अंदर बाहर करने लगे. हल्के हल्के धक्को के साथ लिंग योनि में और अंदर जाता रहा और दामिनी की आँखें फेल्ती चली गयी. उसे दर्द होना शुरू हो गया था पर ये दर्द पिच्छले दर्द के मुक़ाबले कुछ नही था. इस दर्द में मज़ा ज़्यादा था.लिंग काफ़ी हद तक अंदर जा चुका था. ठाकुर ने एक आखरी बार लिंग थोड़ा सा बार खींचकर ज़ोर से धक्का मारा और लिंग पूरा दामिनी की योनि में घुसता चला गया. ठाकुर की जंघे आकर दामिनी की नितंब से टकरा गये.

दामिनी के मुँह से हल्की सी चीख निकल गयी. आँखें फेल गयी, मुँह खुल गया और माथे पे सिलवटें पड़ गयी. उसकी कमर ने ज़ोर से झटका मारा और टांगे सीधी होकर ठाकुर की गिरफ़्त से आज़ाद हो गयी. दामिनी ने कसकर अपने ससुर को अपने से चिपका लिया और

टांगे मोड़ कर उनकी कमर पर कस दी. लिंग अब योनि में अंदर बाहर होना शुरू हो गया था और दामिनी की ठुकाई शुरू हो गयी थी. ठाकुर उसके उपेर पड़े हुए उसे बराबर ठोके जा रहे थे. धक्को में अब तेज़ी आ गयी थी और दामिनी की योनि फिर से पूरी फेल गयी. उसकी आँखें फिर से बंद हो गयी और रात में भी जैसे दिमाग़ में सूरज की रोशनी सी फेल गयी.

योनि पे पड़ता हर धक्का उसे जन्नत का नज़ारा करा रहा था. जाने कितनी देर वो ऐसे ही पड़ी ठुकवाती रही. उसे अपनी टाँगो पे ठाकुर के हाथ महसूस हुए वो उन्हें सीधी कर रहे थे. ठाकुर उठके सीधे बैठे और दामिनी को करवट से लिटा दिया और खुद उसके पिछे की तरफ लेट गये. लिंग अब भी योनि में ही था. दामिनी ने करवट लेकर पास रखे तकिये को ज़ोर से पकड़ लिया. अब वो करवट से लेटी हुई थी. ठाकुर उसके पिछे से करवट लेकर उससे चिपक कर लेटे हुए थे. उनका चौड़ा सीना उसकी पीठ पे लग रहा था और एक हाथ दामिनी की स्तनों की बेरहमी से मसल रहा था. लिंग पिछे से योनि में अंदर बाहर रहा था और ठाकुर के लिंग के पास का अगला हिस्सा दामिनी के नितंब से टकरा रहा था.

दामिनी की आहें अब तेज़ होकर कमरे में गूंजने लगी थी. एक बार ठाकुर ने ज़ोर से धक्का मारकर लिंग बाहर की तरफ खींचा तो लिंग पूरा ही बाहर निकल गया. दामिनी को लगा जैसे उसके जिस्म का ही एक हिस्सा बाहर चला गया हो और वो फिर से लिंग लेने को तड़प उठी. उसने जल्दी से हाथ पिछे ले जाकर लिंग पकड़कर योनि में घुसाने की कोशिश की पर ठाकुर तब तक ऑलरेडी लिंग घुसाने की कोशिश कर रहे थे.दोनो करवट से लेटे हुए थे.

ठाकुर उसके पिछे थे और दामिनी की भारी भारी उठी हुई नितंब होने के कारण लिंग को योनि का मुँह नही मिल रहा था. दामिनी ने भी हाथ नीचे करके लिंग पकड़ना चाहा ताकि योनि का रास्ता दिखा सके. ऐसे ही एक कोशिश में लिंग फिसल कर दामिनी के नितंब पे आ गया और ठाकुर ने आगे घुसने की कोशिश को तो दामिनी को लिंग अपनी नितंब में घुसता महसूस हुआ. वो चिहुनक कर आगे की तरफ हो गयी ताकि लिंग नितंब में ना घुसे. ठाकुर को उसकी इस हरकत से पता चल गया के वो ग़लती से लिंग कहाँ घुसा रहे थे और उनके दिल में दामिनी की नितंब मारने की ख्वाहिश उठी.

उसने दामिनी का चेहरा अपनी तरफ किया और उससे नज़र मिलाई जैसे दामिनी की पर्मिशन माँग रहे हों उसकी नितंब मारने के लिए. दामिनी एक पल को रुकी और वासना के कारण अपने पलक झपका कर अपनी मंज़ूर दे दी. वो फिर अपने करवट पे हो गयी और तकिया ज़ोर से पकड़ लिया ताकि नितंब पे होने वाले हमले को झेल सके. ठाकुर ने पिच्छ से लिंग फिर उसकी नितंब पे रखा और घुसने की कोशिश की पर लिंग मोटा होने की वजह से नाकाम रहे. थोड़ी देर ऐसे ही कोशिश करने के बाद वो उठ बैठे. दामिनी का पेट पकड़ा और उसे उठाकर बिस्तर पे घुटनो के बल झुका दिया. अब दामिनी एक कुतिया की तरह अपने ससुर के सामने झुकी हुई थी. स्तन सामने लटक रही थी. सर उसने सामने तकिये पे रख दिया और टांगे फेला दी. आज वो बिस्तर पे पहली बार किसी मर्द के सामने झुकी थी और वो भी अपने ससुर के सामने. ये तो उसने तब भी नही किया था जब उसके पति ने उसे झुकने को कहा था.

ठाकुर ने पीछे से उसकी नितंब पे हाथ रखे और थोडा फेलाया. लिंग अब भी दामिनी की योनि के रस से भीगा हुआ था. उन्होने फिर से लिंग को दामिनी की नितंब पे टीकाया और आगे को दबाने लगे. लिंग का दबाव नितंब पे पड़ा तो दामिनी को अपनी नितंब खुलती हुई महसूस हुई और दर्द की एक तेज़ ल़हेर उसके जिस्म में दौड़ गयी. वो अगले ही पल बिस्तर पे बैठ गयी और ठाकुर की तरफ देखकर सर इनकार में हिलाया जैसे नितंब मारने के लिए मना कर रही हो.

ठाकुर ने मुस्कुरा कर उसके इनकार को क़बूल कर लिया और फिर झुकने को कहा. दामिनी समझ गयी के अब ठाकुर उसे झुकाके योनि मारना चाहते हैं. वो फिर झुक गयी. टांगे फेला दी और योनि अपने ससुर के सामने पेश कर दी. अगले ही पल लिंग फिर से उसकी योनि में था और धक्के फिर शुरू हो गये. दामिनी के मज़े का ठिकाना ना रहा. आज वो पहली बार इस पोज़िशन में ठुक रही थी. ठाकुर का धक्का जैसे ही उसकी योनि पे पड़ता लिंग योनि की गहराई तक उतर जाता, उसका सर तकिये में धस जाता और दोनो स्तन हिलने लगती. दामिनी ने अपने एक हाथ से खुद ही अपनी स्तन दबानी शुरू कर दी. ठाकुर के धक्को में अब तेज़ी आ गयी. वो किसी पागल सांड़ की तरह उसकी योनि पे धक्के मार रहे थे. हाथों से उसकी कमर को मज़बूती से पकड़ रखा था और लिंग योनि में पेले जा रहे थे.

दामिनी को महसूस हुआ के अब तक उसके ससुर ने एक शब्द भी मुँह से नही कहा है. उसने झुके झुके ही अपनी आहह आहह के बीच ठाकुर से पूछा

"आप क्या कर रहे हैं पिताजी?"

जवाब ना आया पर हां योनि पे धक्के और ज़ोर से पड़ने लगे. लिंग और बेरहमी से योनि में अंदर बाहर होने लगा. दामिनी का अब गला सूखने लगा था. उसने फिर सवाल दोहराया.

"आप क्या कर रहे हैं पिताजी?"

इस बार भी कोई जवाब नही आया. योनि पे धक्के बराबर पड़ते रहे. ठाकुर का एक हाथ अब दामिनी एक स्तन पे आ चुका था. दामिनी ने फिर पूछा

"आप क्या कर रहे हैं पिताजी?"

इस बार ठाकुर धीरे से बोले, जैसे शर्मा रहे हों.

"हम आपसे प्यार कर रहे हैं बेटी"

"नही पिताजी" दामिनी की आह आह अब कमरे में गूँज रही थी " बताइए ना आप क्या कर रहे हैं"

"हम आपको अपना बना रहे हैं बेटी" ठाकुर ने कहा तो दामिनी को हल्की सी झल्लाहट हुई

"नही पिताजी. आप ठोक रहे हैं हमें. आप अपनी बहू की योनि मार रहे हैं."

और जैसे दामिनी की बात ने कमाल कर दिया. ठाकुर . अंदर एक नयी ताक़त से आ गयी. हाथों से उसकी नितंब को ज़ोर से पकड़ा और ऐसे धक्के मारने लगे जैसे दामिनी की योनि फाड़ देना चाहते हों.

"आप अपनी बहू को ठोक रहे हैं पिताजी" मज़ा अचानक बढ़ जाने के करें दामिनी इस बार लगभग चिल्लाते हुए बोली " अपनी बहू की योनि में लिंग घुसा रखा है आपने"

अपने मुँह से निकलती बातें सुनकर दामिनी को खुद भी हैरत हो रही थी. ये सब उसका पति उससे बुलवाना चाहता था पर वो कभी नही बोलती थी और आज खुद ही बोले जा रही थी. हैरत की बात ये थी के अपने मुँह से इन शब्दों का इस्तेमाल सुनकर वो खुद भी और गरम होती जा रही थी

"हां हम आपको ठोक रहे हैं बेटी. आपकी योनि में अपना लिंग पेल रहे हैं" कहते हुए ठाकुर जैसे पागल हो उठे

"ठोको पिताजी, और ज़ोर से ठोको" दामिनी भी साथ साथ चिल्ला उठी.

बेड के हिलने की आवाज़ शायद पूरी हवेली में गूँज रही थी. कमरे में वासना का एक तूफान आया हुआ था. दामिनी अपने ही ससुर के सामने कुतिया बनी हुई थी और वो पिछे से उसकी योनि पे पागलों की तरह धक्के मारने लगे. अचानक धक्के इतने ज़ोर से पड़ने लगे की दामिनी का दिल उसके मुँह को आने लगा. उसका सर सामने बेड के किनारे से जाके लगने लगा और फिर एक धक्का इतनी ज़ोर से पड़ा के उसे लगा के वो अब मर जाएगी.

लिंग पूरा योनि में धस्ता चला गया और एक गरम सा पानी उसकी योनि को भरने लगा. उस गरम सी चीज़ के योनि में भरते ही दामिनी की योनि ने भी पानी छोड़ दिया. उसकी आँखों के आगे तारे नाचने लगी. उसे लगा वो बेहोश होने वाली है. अब झुके रहने की हिम्मत उसमें नही थी. वो बिस्तर पे उल्टी लेट गयी और ठाकुर उसके उपेर लेट गये. लिंग अब भी योनि में पिचकारी मार रहा था और दामिनी की योनि किसी नदी में बदल गयी थी जो पानी छोड़े जा रही थी. इतना मज़ा उसे कभी नही आया था. उसके पलके भारी हो चली थी और बंद होने लगी. उसने बंद होती पलकों से सामने शीशे की और देखा तो उसमें फिर से दरवाज़ा हल्का सा खोलकर बाहर से सब नज़ारा देखता दामूकाका नज़र आया.

भाग - 5

सुबह कुछ शोर सुनकर दामिनी की आँख खुली तो देखा के वो अब भी अपने ससुर के बिस्तर पर ही थी. उठकर बैठी तो एहसास हुआ के वो पूरी तरह से नग्न पड़ी, थी. जिस्म पर कोई कपड़ा नही था और ना ही चादर भी ओढ़ रखी थी. कमरे के बीचो बीच रखे बड़े से बिस्तर पे पूरी तरह से खुली हुई नग्न सो रही थी. रात की सारी कहानी एक झटके में उसके ज़हेन में दौड़ गयी और उसने जल्दी से चादर खींचकर अपने चारो तरफ लपेट ली.उसे कपड़े बिस्तर के पास नीचे पड़े हुए थे. दामिनी बिस्तर पे बैठे बैठे ही झुकी और अपने कपड़े उठाए तो टाँगो में हल्का सा दर्द महसूस हुआ.

ठाकुर ने उसे कल रात 3 बार ठोका था. जब भी बीच में उनकी आँख खुलती वो दामिनी पे चढ़कर योनि में लिंग घुसा देते. दामिनी की आँख भी योनि में लिंग के घुसने से ही खुलती थी. उसकी योनि में अभी भी हल्का हल्का सा दर्द हो रहा था. स्तन अभी भी हल्की हल्की सी लाल थी और गले पे ठाकुर के दांतो के हल्के से निशान बने हुए थे. वो शरम से दोहरी हो गयी पर ये भी सच था के कल रात उसे अपने औरत होने का पहली बार एहसास हुआ था.

जिस्म से जो आनंद मिलता है उसका पता उसे कल रात चला था. अपने पति से ठुकवाते वक़्त तो उसे बस इस बात का इंतेज़ार होता था के कब वो ख़तम करके उसके उपर से उतर पर अपने ससुर के साथ उसने जवानी के मज़े पूरी तरह लूटे. पहली बार सिर्फ़ टांगे खोलकर ठुकवाया नही बल्कि कई पोज़िशन्स में अपनी योनि ठाकुर के सामने पेश करी. पहली बार नितंब मरवाने की भी कोशिश की. उसे खुशी भी हुई और गम भी के ये सुख उसने अपने पति को कभी नही दिया.

बाहर अब भी कोई ऊँची आवाज़ में बोल रहा था. दामिनी जल्दी से उठकर खड़ी हुई और अपने जिस्म पे कपड़े डालकर बाहर आने को हुई थी के दरवाज़े पे रुक गयी. बाहर जो कोई भी था अगर दामिनी को ठाकुर के कमरे से सुबह सुबह इस हालत में बाहर आता देखता तो सब समझ जाता. वो दरवाज़े के पास ही कान लगाकर सुनने लगी और जल्दी ही समझ आ गया के आवाज़ किसकी थी. वो ठाकुर का अपना भतीजा राजवर्धन सिंग था जो ठाकुर साहब से किसी बात पे बहेस कर रहा था.

"चाचा जी आप सोच लीजिए. मैं आपको जीतने पैसे आप चाहें देने को तैय्यार हूँ पर ये हवेली मुझको चाहिए" राजवर्धन सिंग कह रहा था

"कौन से पैसो की बात कर रहे हो राजवर्धन सिंग" ठाकुर की आवाज़ आई " वो पैसे जो मेरे ही हैं और जो तुमने मुझसे चुराए हैं?"

"वो सब अब मेरा है चाचा जी. और क्या चुराया मैने? आप और मेरे पिताजी इस राजवर्धन सिंगदाद में बराबर के हिस्सेदार थे पर आपने उनको क्या दिया? मैने वही वापिस लिया है जो मेरा अपना था और अब इस हवेली को हासिल करके रहूँगा" राजवर्धन सिंग चिल्ला रहा था और दामिनी को यकीन नही हो रहा था के ठाकुर उसकी बात सुन रहे हैं. एक वक़्त था के अपने सामने आवाज़ ऊँची करने वाले की वो गर्दन काट दिया करते थे.

बहेस कुछ देर और चलती रही थोड़ी देर बाद राजवर्धन सिंग धमकी देकर चला गया. दामिनी बाहर निकालने की सोच ही रही थी के दरवाज़ा खुला और ठाकुर अंदर आए. उसे देखकर रुक गये और मुस्कुराते हुए बोले

"तुम कब उठी बेटी?"

"बस अभी थोड़ी देर पहले. ये आदमी कौन था पिताजी?" दामिनी ने पुछा जबकि वो अच्छी तरह से जानती थी के बाहर कौन आया था. ये कहानी वो दामूकाका से सुन चुकी थी.

"कोई नही. तुम छोड़ो इस बात को. दामूकाका अपने कमरे में गया हुआ है. इससे पहले के वो वापिस आए तुम अपने कमरे में चली जाओ."

दामिनी ने ठाकुर से इस वक़्त कुछ पुच्छना मुनासिब नही समझा. उसने अपनी सारी का पल्लू ठीक किया और अपने कमरे में आ गयी. कमरे में आकर उसने कपड़े उतारे और बात टब में जाके बैठ गयी. कल रात की सारी कहानी फिर उसके दिमाग़ में चलने लगी और वो सोचने लगी के आगे क्या करे. ठाकुर में आया बदलाव वो देख चुकी थी. ठाकुर ने शराब को हाथ भी नही लगाया था और अब ज़िंदगी की और लौट रहे थे. शायद उनके अंदर वही मर्द लौट आया था जो पहली कहीं सो गया था. दामिनी को अपना ये मकसद तो पूरा होता दिख रहा था पर दूसरा मक़सद अभी भी अधूरा था. वो अब तक ऐसी कोई जानकारी हासिल नही कर सकी थी जिससे ये पता चल सके के उसके पति के खून की वजह क्या थी.

उसका ध्यान राजवर्धन सिंग पे गया. अगर वीरभद्र ज़िंदा होता तो कभी राजवर्धन सिंग को वो ना करना देता जो उसके मरने के बाद राजवर्धन सिंग ने किया. सारे ज़मीन जायदाद वीरभद्र ही देखता था और हर चीज़ पे उसकी पकड़ थी. उसकी मौत का सबसे ज़्यादा फयडा राजवर्धन सिंग को हुआ जिसने उसके जाते ही ठाकुर की पूरी जायदाद हड़प ली. वही एक शख्स था जो वीरभद्र के मरने का एक कारण अपने पास रखता था. उसने मॅन ही मॅन राजवर्धन सिंग से मिलने का इरादा कर लिया पर मुसीबत ये थी के उससे मिले कैसे? ठाकुर अपने घर की बहू को इस बात की इजाज़त कभी नही देंगे. और वो राजवर्धन सिंग से मिलके क्या करे? कैसे इस बात का पता लगाए के राजवर्धन सिंग ने उसके पति को क्यूँ मारा?

यही सोचती दामिनी बाथरूम से बाहर निकली. कपड़े पहनकर नीचे आई तो ठाकुर कहीं बाहर जा चुके थे. दामूकाका घर की सफाई में लगा हुआ था.

वो नीचे आई तो दामूकाका ने उसपे एक नज़र डाली और फिर काम में लग गया. दामूकाका को देखते ही दामिनी को चाभी वाली बात याद आई.

"वो चाबी कहाँ है काका?" उसने दामूकाका से पूछा

"कौन सी चाभी?" दामूकाका उसकी तरफ देखने लगा

"बनो मत काका. वही चाबी जो आपने बगीचे से उठाई थी. वही चाभी जो आपको लगता है के उस आदमी ने गिराई थी जो रात को हवेली में आया था" दामिनी ने आवाज़ थोड़ी ऊँची करते हुए कहा

"वो मेरे कमरे में है" दामूकाका उसकी और देखते हुए बोला. दामिनी ने महसूस किया के वो उसके गले पे बने हुए निशान की तरफ देख रहा था

"लेकर आइए. मैं देखना चाहती हूँ" दामिनी ने निशान को ढकने की कोई कोशिश नही की.

"अभी लता हूँ" दामूकाका बाहर चला गया.

उसके जाने के बाद दामिनी वहीं सोफे पे बैठ गयी. उसके दिमाग़ में दो बातें आई. एक तो ये के एक दामूकाका ही था जो राजवर्धन सिंग से मिलने में उसकी मदद कर सकता था और दूसरे ये के उसने अब तक सिर्फ़ श्यामला का कमरा देखा था. घर के बाकी कमरो में तलाशी अभी बाकी थी. उसका ध्यान शकुंतला देवी यानी अपनी सास की तरफ गया. बीमारी के वक़्त उनका कमरा अलग कर दिया था. वो अपने पति के साथ नही सोती थी. दामूकाका ने कहा था के हवेली में आने वाले अजनबी को उन्होने भी देखा था तो किसी से कुछ कहा क्यूँ नही? दामिनी ने उनके कमरे की तलाशी लेने का इरादा किया.

तभी दामूकाका वापिस हवेली में आता दिखाई दिया.

दामूकाका ने लाकर चाबी दामिनी के हाथ में थमा दी. दामिनी ने गौर से देखा तो चाभी किसी आम से ताले में लगने वाली चाभी थी.

"ये चाभी बनवाई गयी है बेटी" दामूकाका ने कहा

"क्या मतलब?" दामिनी ने पूछा

"मतलब ये के जिस ताले को ये खोलती होगी, ये उसकी असली चाभी नही है. ये किसी ने असली चाभी की नकल बनवाई है. ये देखो घिसने के निशान" दामूकाका ने चाभी के आगे की तरफ इशारा किया

दामिनी ने ध्यान दिया. दामूकाका सच कह रहा था. चाभी बनवाई गयी थी. सामने के तरफ घिसने के निशान साफ देखे जा सकते थे

"हवेली में कहीं इस तरह का कोई ताला नही है" दामूकाका ने कहा " तो ज़ाहिर के ये चाभी इस हवेली की नही है"

"ये चाभी मैं रख रही हूँ काका" कहते हुए दामिनी ने चाभी अपनी मुट्ठी में बंद कर ली

"तुम इसका क्या करोगी?" दामूकाका ने पूछा

"वही जो आपने नही किया" कहते हुए दामिनी अपने कमरे की तरफ बढ़ गयी. पीछे हैरान परेशान खड़े दामूकाका को छोड़कर

"जाने ये क्या करना चाहती है पर वो जो भी है, अच्छा नही है" सोचते हुए दामूकाका भी हवेली के बाहर अपने कमरे की तरफ बढ़ गया

अपने कमरे में आकर दामिनी ने कपड़े बदलकर शलवार कमीज़ पहन ली और अपने बिस्तर पर गिर पड़ी. उसके दिमाग़ में चल रहे सवालो में से एक का भी जवाब उसे नही मिला था बल्कि और काई सवाल खड़े हो गये थे. कौन था जो हवेली में रात को आता जाता था? श्यामला के पास सिगरेट कहाँ से आती थी? चाबी की तरफ उसका कोई ख़ास ध्यान नही था पर फिर भी उसने रख ली थी. ये कोई आम सी चाभी भी हो सकती थी. जो आदमी रात को हवेली में आता था उसके घर या अलमारी की चाबी. बस एक ही बात थी चाभी के बारे में जो सोचने लायक थी और वो ये के ये असली चाभी नही थी. जो भी ताला था ये उसकी एक नकल थी. और सबसे ज़्यादा बात जो दामिनी को परेशान कर रही थी वो ये थी के रात को कोई हवेली में आया था इस बात का ज़िक्र उसकी सास ने किसी से क्यूँ नही किया? कौन सी बात थी जिसे वो च्छूपा रही थी?

शकुंतला देवी की तरफ ध्यान गया तो दामिनी को उनके कमरे की तलाशी लेने का ख्याल आया. हवेली की चाबियाँ अब भी उसके पास ही थी. शकुंतला देवी का कमरा बीमारी के वक़्त अलग कर दिया गया था डॉक्टर के कहने पे. डॉक्टर ने कहा था के जब तक शकुंतला देवी ठीक हों उनका ठाकुर से दूर रहना बेहतर होगा. पर शकुंतला देवी कभी ठीक नही हुई. लंबी बीमारी के बाद चल बसी.

दामिनी शकुंतला देवी के कमरे के आगे पहुँची और ताला खोलकर अंदर दाखिल हुई. अंदर कमरे में घुसकर ही इस बात का अंदाज़ा लगाया जा सकता था के यहाँ किसी की मौत हुई थी. अजीब मनहूसियत सी थी कमरे के अंदर. दवाई की महेक कमरे में अब भी मौजूद थी. दामिनी कमरे में आकर थोड़ी देर खड़ी यही सोचती रही के कहाँ से शुरू करे.कमरे में ज़्यादा समान नही था. बस एक अलमारी जिसमें शकुंतला देवी के कुछ कपड़े रखे थे और एक टेबल जिसपे उनकी दवाइयाँ रखी होती थी. दामिनी कमरे में टहलती खिड़की तक पहुँची और

खोलकर बाहर देखने लगी. सामने ख़त्मियों का एक जंगल उगा हुआ था. कभी यहाँ पर फूलों का एक खूबसूरत बगीचा होता था. दामिनी को फ़ौरन एहसास हुआ के इस जगग पे खड़े होकर पुर बगीचे का नज़ारा उपेर से मिलता था. अगर कोई बगीचे में था तो रात के अंधेरे में भी साफ नज़र आता तो अगर दामूकाका जो कह रहा है वो सच है, तो शकुंतला देवी ने उस रात उस आदमी को ज़रूर देखा होगा पर किसी से कुछ कहा नही.

दामिनी पलटकर फिर कमरे में आई और शकुंतला देवी के कपड़े उठाकर बिस्तर पर रखने लगी. अलमारी पूरी खाली कर दी पर कुछ हाथ ना आया. उसने कमरे में रखे सोफे के गद्दे हटाए पर वहाँ भी कुछ ना मिला. बिस्तर की चादर हटाकर एक तरफ कर दी. थोड़ी देर में पूरा कमरा उथल पुथल हो चुका था पर दामिनी के हाथ सिर्फ़ निराशा ही लगी.

तक कर दामिनी वहीं सोफे पे बैठ गयी और दरवाज़े की तरफ नज़र की तो उसके होश उड़ गये. वहाँ खड़ा दामूकाका आँखें फाडे उसे देख रहा था. वो समझ चुका था के दामिनी कमरे की तलाशी ले रही है दामिनी झटके से उठकर खड़ी हो गयी और दामूकाका की तरफ देखने लगी. उसका दिल काँप उठा था. अगर दामूकाका ने जाकर ठाकुर को बता दिया तो दामिनी क्या कहेगी के वो क्या कर रही थी और क्यूँ कर रही थी? उसका सारा प्लान बिगड़ जाएगा.

उसने दिल ही दिल में कुछ फ़ैसला किया और तेज़ कदमो से दामूकाका की तरफ बढ़ी. दामूकाका ने उसे पास आता देखा तो दो कदम पिछे हटा. दामिनी एक ही पल में उसके करीब पहुँची और उसे धक्का देकर दीवार से लगा दिया. इससे पहले के दामूकाका कुछ समझ पता दामिनी उससे सॅट गयी और अगले ही पल दोनो के होंठ मिल चुके थी. दामिनी ने भूखी शेरनी की तरफ दामूकाका के होंठो को चूसना शुरू कर दिया, अपनी स्तन दामूकाका की छचाटी से चिपका दी और नीचे अपने हाथ से दामूकाका का लिंग पकड़ लिया. उसे साफ महसूस हो रहा था के दामूकाका का पूरा जिस्म काँपने लगा था. आख़िर 70 साल का बुद्धा था बेचारा. दामिनी ने एक हाथ से दामूकाका का पाजामा खोला और उसे नीचे सरका दिया. अगले ही पल दामूकाका के लिंग उसके हाथ में था जिसने उसे हिलाना शुरू कर दिया. दामूकाका काँप ज़रूर रहा था पर पिछे हटने की कोई कोशिश नही कर रहा था. उल्टे उसका एक हाथ दामिनी की कमर से घूमकर उसकी नितंब पे आ गया था. दामिनी अब भी उसे होंठ चूस रही थी और उसके लिंग पे मूठ मार रही थी. वो इस कोशिश में थी के शायद बुढहा लिंग खड़ा हो जाए पर ऐसा हुआ नही. थोड़ी देर ऐसे ही लिंग हिलाके भी जब उसे कुछ होता नज़र ना आया तो उसने दामूकाका के लिंग से हाथ हटाया और अपनी शलवार का नाडा खोल दिया. सलवार एक पल में सरक कर नीचे जा गिरी.पॅंटी दामिनी ने अंदर पहन नही रखी थी. दामूकाका ने फिर से हाथ उसकी नितंब पे रख दिया पर अब शलवार बीच में नही थी. कमीज़ के अंदर से होता हाथ सीधा दामिनी की नग्न नितंब पे आ लगा.

दामिनी ने दामूकाका का हाथ अपनी नितंब से हटाया और थोड़ा पिछे होकर मुस्कुराइ. दामूकाका ने उसे सवालिया नज़र से देखा. दामिनी चलकर कमरे में रखी टेबल तक पहुँची. शलवार अब भी उसके पैरों में फसि हुई थी. टेबल के नज़दीक पहुँचकर दामिनी ने अपनी दोनो हाथ अपनी टाँगो पे फेरते हुए उपेर अपनी नितंब पे लाई और अपनी कमीज़ को उपेर उठा लिया. एक हाथ से कमीज़ को पकड़े हुए उसने दूसरा हाथ टेबल पे रखा और आगे को झुक

गयी. टांगे उसने अपने फेला दी. अब उसकी नितंब दामूकाका के सामने दी. आगे को झुकी होने के कारण पिछे से उसे दामिनी की योनि भी साफ नज़र आ रही थी. दामिनी ने पलटकर दामूकाका की तरफ देखा. वो दामिनी की नितंब को ऐसे देख रहा था जैसे को भूखा कुत्ता गोश्त की बोटी को देख रहा हो. दामिनी दामूकाका की तरफ देखकर मुस्कुराइ और अपनी कमीज़ को छोड़कर वो हाथ अपनी नितंब पे फेरने लगी. कमीज़ उसके पेट पे सिकुड गयी. दामिनी नितंब पे हाथ फेरते हुए अपनी टाँगो के बीच हाथ ले गयी. एक बार अपनी योनि को धीरे से सहलाया और दामूकाका की तरफ देखते हुए बोली

"आ जाओ काका. देखते ही रहोगे क्या?"

दामूकाका आखें फाडे उसकी तरफ देख रहा जैसे उसे यकीन सा ना हो रहा हो. दामिनी ने दोबारा उसे आँख के इशारे से अपनी तरफ आने का इशारा किया तो वो धीरे धीरे दामिनी की तरफ बढ़ा. वो सीधा दामिनी के पिछे जा खड़ा हुआ और उसकी मोटी नितंब को आँखें फाडे देखने लगा. उसकी साँस ऐसे चल रही थी जैसे कोई दमे का मरीज़ हो, जैसे अभी अस्थमा का अटॅक आया हो. जब दामूकाका ने कुछ ना किया तो दामिनी ने थोड़ा पिछे होकर उसका एक हाथ पकड़ा और अपनी नितंब पे रख दिया.

"क्या हुआ काका? अभी थोड़ी देर पहले शलवार के उपेर से तो बड़ा नितंब सहला रहे थे. अब मैं खोलके खड़ी हूँ तो बस देखे जा रहे हो?"

दामूकाका ने अपने हाथ से फिर उसकी नितंब को सहलाना शुरू कर दिया. दामिनी ने देखा के दूसरे हाथ से वो अपना लिंग हिला रहा था, शायद खड़ा करने की नाकाम कोशिश कर रहा था. दामूकाका ने अपने हाथ दामिनी की नितंब के बीचे में रखा और उसकी नितंब के छेद से योनि तक अपनी उंगली फिरने लगा. दामिनी का जिस्म भी अब गरम होने लगा था और योनि गीली हो रही थी. थोड़ी देर तक ऐसे ही सहलाने के बाद दामूकाका ने अपना दूसरा हाथ भी दामिनी के नितंब पर रख दिया और उसकी नितंब को मज़बूती से पकड़ लिया. दामिनी कद में उससे ऊँची थी, उससे कहीं ज़्यादा लंबी इसलिए उसके योनि दामूकाका के पेट तक आ रही थी. दामिनी पलटी तो देखा के दामूकाका अपने पंजो पे खड़ा होकर अपना लिंग उसकी योनि तक पहुँचने की कोशिश कर रहा है पर कर नही पा रहा था. वो किसी मरियल कुत्ते की तरह अपना लिंग हवा में ही हिला रहा था.

दामिनी की हसी छूटने लगी पर उसपे कभी करते हुए उसने अपने घुटने मोड़ लिया. शलवार अब भी टाँगो में फासी हुई थी इसलिए वो अपने पेर और ज़्यादा नही फेला सकी पर घुटने काफ़ी हाढ़ तक मोड़ लेने की वजह से उसकी योनि नीचे हो गयी. अब दामूकाका का लिंग उसकी योनि से आ लगा पर दामूकाका अब भी उसे ठोकने में कामयाब नही हो पाया. उसका लिंग ज़रा भी खड़ा नही हुआ था. एक तो छोटा सा लिंग, उपेर से 70 साल के आदमी का और वो भी बैठा हुआ, दामूकाका बस लिंग योनि पे रगड़ता ही रह गया.

अपने नंगे जिस्म पे दामूकाका के हाथों के स्पर्श से दामिनी पूरी तरह गरम हो चुकी थी और

जब दामूकाका लिंग योनि में घुसा नही पाया तो वो झल्ला उठी. उसने दामूकाका का हाथ अपनी नितंब से हटाया और सीधी होकर खड़ी हो गयी. दामूकाका की तरफ पलटी और दामूकाका को खींचकर लगभग धक्का सा देकर उसे अपनी सास के बिस्तर पे गिरा दिया. उसके बाद उसने झुक कर अपने पैरों में फासी शलवार को निकालर एक तरफ उच्छाल दिया और दामूकाका के साथ बिस्तर पे चढ़ गयी. दामूकाका अब भी हैरान परेशान सा उसे देख रहा था.

उसके हालत सचमुच एक कुत्ते जैसे हो गयी थी. दामिनी ने अपने दोनो हाथ उसकी छाती पे रखे और अपनो दोनो टाँगें दामूकाका के दोनो तरफ रखकर उसपे चढ़ बैठी. उसने नीचे से एक हाथ में दामूकाका का लिंग पकड़ा और अपनी छूट में घुसने की कोशिश करने लगी पर नतीजा वही. लिंग 1 इंच भी अंदर नही जा पा रहा था. दामिनी का दिल किया के दामूकाका को वहीं कमरे से नीचे फेंक दे, उसने अंदर लिंग घुसने की कोशिश छोड़ अपने अपनी नितंब नीचे की और योनि को दामूकाका के लिंग पे उपेर से ही रगड़ने लगी. दामूकाका ने दोनो हाथ से बेड को पकड़ रखा था और अपने उपेर बैठी दामिनी को योनि लिंग पे रगड़ते देख रहा था. उसका लिंग दामिनी की योनि के नीचे दबा हुआ था.

दामिनी तो जैसे हवा में उड़ रही थी. ये पहली बार था के वो किसी मर्द के उपेर बैठी थी. आज तक सिर्फ़ वो ठुकी थी, कभी खुद नही ठुकवाया था. लिंग योनि में ना होने के बावजूद उसके शरीर में वासना पुर जोश पे आ चुकी थी. योनि उसने ज़ोर ज़ोर से दामूकाका के लिंग पे रगड़नी चालू कर दी थी. पूरा बिस्तर हिल रहा था. दामिनी कभी खुद कमीज़ के उपेर से ही अपनी स्तन दबाती, कभी खुद अपनी नितंब पे हाथ फिराती और कभी झुक कर बिस्तर पे अपने दोनो हाथ रख दामूकाका के उपेर लेट सी जाती. बिस्तर पे रखी उसकी सास के कपड़े इधर उधर फेल चुके थे. दामिनी की एक नज़र उनपे पड़ी तो उसके दिमाग़ में घंटियाँ सी बजने लगी.

सामने शकुंतला देवी की सारी रखी हुई थी और खुलकर आधी बिस्तर से नीचे लटक रही थी और उस सारी के पल्लू में बँधी हुई थी एक चाभी. दामिनी ने दामूकाका के लिंग पे योनि रगड़ते हुए गौर से देखा तो ये चाभी उस चाभी से मिलती लगी जो दामूकाका ने उसे दी थी. उसने हाथ बढ़कर चाभी उठाने की कोशिश की ही थी के हवेली के बाहर एक कार के रुकने की आवाज़ आई.

दामूकाका और दामिनी एक झटके में एक दूसरे से अलग हो गये और अपने कपड़े ठीक करने लगे.

"शायद पिताजी आ गये. आप नीचे चलिए मैं कमरा ठीक करके आती हूँ" दामिनी ने शलवार का नाडा बाँधते हुए दामूकाका से कहा.

दामूकाका ने अपना पाजामा उपेर खींचा और उसे ठीक से पहनता हुआ कमरे से बाहर चला गया. दामिनी ने उसके जाते ही अपना हुलिया ठीक किया और सारी में बँधी चाभी को

निकालकर अपने ब्रा में घुसा लिया. वो कमरा ठीक करने को हुई ही थी के नीचे से दामूकाका की उसे बुलाने की आवाज़ आई

"बहू ज़रा नीचे आइए. कोई आया है"

दामिनी हैरत में पड़ गयी. आज सालो बाद शायद कोई अजनबी इस हवेली में आया है. उसे अपना दुपट्टा ठीक किया और सीढ़ियाँ उतारकर नीचे आई. नीचे बड़े कमरे में एक आदमी सफेद कमीज़ और खाकी पेंट पहने खड़ा हवेली को देख रहा था, जैसे जायज़ा ले रहा हो. दामिनी को आता देखा तो वो उसकी तरफ पलटा और अपनी जेब में हाथ डाला.

"सलाम अर्ज़ करता हूँ मेडम." उसने अपनी जेब से कुछ निकाला और दामिनी की तरफ बढ़ाया

"बंदे को पठाण कहते हैं, इंस्पेक्टर पठाण" वो अपना आइ कार्ड दामिनी को दिखाते हुए बोला ". मेरा पूरा नाम रमीज पठाण है.

"कहिए" दामिनी सीढ़ियों से उतरती हुई बोली

"ख़ास कुछ नही है" पठाण उसे उपेर से नीचे तक देखते हुए बोला" इस इलाक़े में नया आया हूँ तो सोचा ठाकुर साहब से मिल लूँ एक बार"

"वो तो इस वक़्त घर पर नही हैं" दामिनी सोफे की तरफ इशारा करते हुए बोली " आप बैठिए. कुछ लेंगे"

"इस वक़्त तो ठंडा ही ले लेते हैं" पठाण सोफे पर बैठते हुए बोला. दामिनी ने दामूकाका को ठंडा लाने का इशारा किया

"अगर मैं ग़लत नही हूँ तो आप ठाकुर साहब की बड़ी बहू दामिनी जी हैं ? " पठाण ने दामिनी से पूछा

"बड़ी बहू नही, उनकी एकलौती बहू" दामिनी ने कहा

"ओह " पठाण ने तभी आए दामूकाका के हाथ से ग्लास पकड़ते हुए बोला

तभी बाहर से कार रुकने की आवाज़ आई

"लगता है ठाकुर साहब आ गये" पठाण ग्लास नीचे रखकर खड़ा होता हुआ बोला

कुछ पल बाद ही ठाकुर दरवाज़े से अंदर दाखिल हुए. पठाण फ़ौरन हाथ जोड़कर आगे बढ़ा

"सलाम अर्ज़ करते हूँ ठाकुर साहब"

ठाकुर ने पठाण की तरफ अजीब सी नज़र से देखा.

"जी मेरा नाम इनस्पेक्टर रमीज पठाण है. इस इलाक़े में नया ट्रान्स्फर हुआ हूँ" पठाण ने फिर ई कार्ड निकालकर दिखाया " वैसे लोग मुझे प्यार से मुन्ना भी कहते हैं"

ठाकुर ने सोफे पे बैठे हुए पठाण को बैठने का इशारा किया और दामिनी की तरफ देखकर उसे वहाँ से जाने का इशारा किया. दामिनी बड़े कमरे से निकलकर सीढ़ियों के पास आकर रुक गयी और दीवार की ओट में बातें सुनने लगी.

"सालुंखे का क्या हुआ?" ठाकुर ने पठाण से पहले उस इलाक़े में पोस्टेड इनस्पेक्टर के बारे में पूछा

"रिटाइर हो गये." पठाण ने जवाब दिया

"ह्म्म्म्म" ठाकुर ने इतना ही कहा

"मैं नया आया था तो सोचा के आपसे मुलाक़ात हो जाए" पठाण ने अपनी बात जारी रखी " और आपसे कुछ बात भी करनी थी तो सोचा के वो भी कर लूँ"

"किस बारे में " ठाकुर ने पूछा

"आपके बेटे के मौत के बारे में" पठाण ने सीधा जवाब दिया.

थोड़ी देर यूँ ही खामोशी बनी रही. ना ठाकुर ने कुछ कहा ना पठाण ने. थोड़ी देर बाद फिर ठाकुर के आवाज़ आई.

"मेरे बेटे को मरे हुए 10 साल हो चुके हैं .....ह्म्म्मम क्या नाम बताया तुमने अपना?

"पठाण, दानिश पठाण. वैसे लोग मुझे मुन्ना भी कहते हैं" पठाण की आवाज़ आई" 10 साल बीत तो चुके हैं ठाकुर साहब पर केस तो हमारी फाइल्स में आज भी ओपन है. देखा जाए तो शर्मा ने इस बारे में कुछ नही किया"

"उसे ज़रूरत भी नही थी कुछ करने की" ठाकुर की आवाज़ थोड़ी तेज़ हो गयी "हमारे मामले हम खुद निपटाते हैं. पोलीस धखल नही देती हमारी बातों में"

"जानता हूँ" पठाण ने ठहरी हुई आवाज़ में जवाब दिया " आप अपने मामले खुद निपटाते हैं शायद इसी लिए आपने आस पास के इलाक़े में ना जाने कितनी लाशें गिरा दी अपने बेटे के क़ातिल की तलाश में, है ना ठाकुर साहब"

थोड़ी देर के लिए हवेली में सन्नाटा छा गया. कोई कुछ नही बोला. दामिनी की साँस भी अटक गयी. ठाकुर के सामने इस तरह से बात करने की किसी ने जुर्रत नही की थी. उनका रुबब अब इलाक़े में ख़तम हो चुका था शायद इसी लिए एक मामूली पोलीस वाला उनके सामने बैठकर इस अंदाज़ में बात कर रहा था.

"हवेली के बाहर जाने का रास्ता तुम्हें मालूम है या मैं बताऊं?" ठाकुर की आवाज़ आई

"मालूम है ठाकुर साहब" पठाण ने जवाब दिया.

थोड़ी देर बाद पठाण के हवेली से बाहर जाते कदमों की आवाज़ आई.

उस रात दामिनी फिर अपने ससुर के बिस्तर पे नग्न पड़ी हुई थी. ठाकुर उसे ठोक्कर नींद के आगोश में जा चुके थे पर दामिनी की आँखों से नींद कोसो दूर थी. उसे पठाण का यूँ हवेली में आना और 10 साल पुरानी हत्या के बारे में बात करना कुछ ठीक नही लग रहा था. आम तौर पर पुलिस वाले हवेली के अंदर आने की हिम्मत नही करते थे पर आज वक़्त बदल गया था. ठाकुर का रौब ख़तम हो चुका था. आज एक पुलिस वाला उनकी ही हवेली में उनपर इस बात का इल्ज़ाम लगा गया था के उन्होने अपने बेटे के बदले में खुद कई लोगों की हत्या की है. वो अब भी जवाबों से कोसों दूर थी.

पठाण के जाने के बाद वो सीधा अपने कमरे में पहुँची थी और अपनी सास के कमरे से मिली चाभी को दामूकाका की दी चाभी से मिलाने लगी. दोनो चाबियाँ एक जैसी थी और सबसे गौर तलब बात ये थी के दोनो में से एक भी चाभी असली नही थी. दोनो ही नकल थी असली चाभी की. जो बात दामिनी को परेशान कर रही थी वो ये थी के क्या उसकी सास उस आदमी को जानती थी जिसे दामूकाका ने रात में हवेली में देखा था. शायद जानती थी इसलिए किसी से उसके बारे में कुछ कहा नही और अगर नही जानती थी तो ये चाभी उनके पास क्या कर रही है?

दामिनी को दो बातें और परेशान कर रही थी. एक तो ये के उसकी शादी से पहले इस हवेली में क्या कुछ हुआ था वो कुछ नही जानती थी. इस हवेली के इतिहास के बारे में कभी उसके पति ने भी उससे ज़िक्र नही किया था. और जो दूसरी बात थी वो राजवर्धन सिंग की कही हुई थी. के उसने ठाकुर से वही सब लिया जो उसका अपना था. और इन दोनो बातों के सही जवाब जो आदमी उसे दे सकता था वो खुद राजवर्धन सिंग था. आख़िर वो इसी घर का हिस्सा था. इसी हवेली में पला बढ़ा था. पर उससे दामिनी मिले कैसे. और अगर मिले भी तो अपने सवालों के जवाब कैसे हासिल करे. ठाकुर से वो इस बारे में सीधी बात नही कर सकती थी क्यूंकी वो जानती थे के ठाकुर या तो बताएँगे नही और अगर बताएँगे तो पूरी बात नही. और

फिर ये सवाल भी उठेगा के दामिनी क्यूँ ये सब सवाल कर रही है.

दामिनी ने दरवाज़े की तरफ देखा. आज रात दरवाज़ा बंद ही रहा. आज दामूकाका ने पिच्छली 2 बार की तरह उसे ठुकवाते हुए नही देखा था और ना ही दामिनी ने दामूकाका से आज इस बारे में बात की थी. और इसी चक्कर में वो ये भी पुच्छना भूल गयी थी के क्या दामूकाका श्यामला को सिगरेट लाकर देता था और अगर लाता था तो काब्से?

यही सब सोचते दामिनी ने आपे ससुर की तरफ नज़र उठाई जो दुनिया से बेख़बर सो रहे थे. दामिनी के दिल में अब उनके लिए प्यार उठने लगा था. जो आदमी दामिनी के पास नंगा सोया पड़ा था वो उसका ससुर नही उसका प्रेमी था. दामिनी ने करवट ली और ठाकुर के सोए हुए लिंग को हाथ में पकड़ा. लिंग बैठा होने के बावजूद पूरा उसके हाथ में नही आ रहा था. दामिनी ने मुट्ठी बंद की और लिंग को धीरे धीरे हिलाने लगी. उसकी इस हरकत से ठाकुर की आँख खुल गयी और उन्होने मुस्कुराते हुए उसकी तरफ करवट ली. दामिनी ने लिंग हिलना जारी रखा. लिंग जब पूरा खड़ा हो गया तो ठाकुर ने उसे सीधा लिटाया, उसके उपेर चढ़े और उसकी टांगे खोलकर लिंग अंदर घुसा दिया

अगले दिन सुबह दामिनी फिर देर से उठी. वो ठाकुर के बिस्तर पे नग्न पड़ी थी और ठाकुर उठ चुके थे. पिच्छले कुछ दीनो से दामिनी का रोज़ाना देर से उठना जैसे उसकी एक आदत बन गया था. कहाँ तो वो रोज़ाना सुबह 4 बजे उठकर नहा धोकर पूजा पाठ में लग जाती थी और कहाँ अब उसे होश ही नही रहता के कितने बजे उठना है.

"आप कुछ हवेली की सफाई की बात कर रही थी. कुछ होता दिख नही रहा" नाश्ता करते हुए ठाकुर ने उससे पूछा

दामिनी से जवाब ना सूझा. कैसे बताती के उसने चाबियाँ सिर्फ़ हवेली की तलाशी लेने के लिए ली थी, सफाई तो सिर्फ़ एक बहाना था.

"कई बार हिम्मत की के शुरू करूँ पर इतनी बड़ी हवेली और अकेली मैं, सोचकर ही हिम्मत हार जाती थी" दामिनी हस्ते हुए बोली

"मैं कुछ आदमियों का इंतजाम कर देता हूँ" ठकुए ने भी हस्ते हुए जवाब दिया

"नही उसकी ज़रूरत नही. मैं खुद ही कर लूँगी. कल से शुरू कर दूँगी" दामिनी ने कहा

"कल से?" ठाकुर ने पूछा " क्यूँ आज कोई ख़ास प्लान है क्या?

"हां" दामिनी ने सावधानी से अपने शब्द चुनते हुए कहा " मैं सोच रही थी के....."

"क्या?" ठाकुर ने चाइ का ग्लास उठाते हुए कहा

"मैं कुछ नही जानती हमारी ज़मीन जायदाद के बारे में. जबसे शादी करके आई हूँ तबसे बस घर की छिप्कलि बनी बैठी रही." दामिनी ने नज़र झुकाए हुए बोला

"तो?" ठाकुर ने चाइ पीते हुए उससे पूछा

"तो मैं सोच रही थी के आज ज़मीन का एक चक्कर लगा आउ. अगर आप इजाज़त दें तो" दामिनी ने नज़र अब भी झुकाए रखी

"अरे इसमें मेरी इजाज़त की क्या ज़रूरत है? आपका घर हैं, आपकी ज़मीन है. आप जब चाहे देखिए" ठाकुर ने नाश्ते की टेबल से उठते हुए कहा.

दामिनी भी उनके साथ साथ उठ खड़ी हुई

"मुझे आज वक़ील से मिलने जाना है और कुछ और काम भी है. आप दामूकाका को साथ ले जाइए"ठाकुर ने कहा

उनके चले जाने के बाद दामिनी तैय्यार हुई. अब सवाल ये था के अगर वो दामूकाका को साथ लेके गयी तो हवेली खाली हो जाएगी. उसने फ़ैसला किया के वो खुद जाएगी. दामूकाका को जब उसने बताया तो पहले तो उसने मना किया पर फिर दामिनी के ज़ोर डालने पर मान गया और उसे जो ज़मीन अब भी ठाकुर के पास बची थी उसका रास्ता बता दिया.

दामिनी गाड़ी लेकर अकेली ही निकल गयी. कार चलाना उसे अच्छी तरह आता था पर उसे याद नही था के आखरी बार वो ड्राइविंग सीट पे कब बैठी थी इसलिए धीरे धीरे कार चलते हुए गाओं पार कर जिस तरफ दामूकाका ने बताया था उस तरफ निकल गयी.

ज़मीन का वो टुकड़ा जिसकी बात दामूकाका कर रहा था उसे ढूँढने में दामिनी को ज़्यादा तकलीफ़ नही हुई. वजह ये थी के गाओं के आस पास के ज़्यादातर ज़मीन ठाकुर इंद्रदेव सिंग की ही थी, या यूँ कहा जाए के हुआ करती थी और अब राजवर्धन सिंग ने अपने नाम पे कर ली थी. जिस हिस्से को दामूकाका ने ज़मीन का एक टुकड़ा बताया था वो एक बहुत लंबा चौड़ा खेत था. दामिनी ने कार कच्चे रास्ते पर उतार दी और ज़मीन के चारो तरफ एक चक्कर लगाने की सोची. वो काफ़ी देर तक ड्राइव करती रही और आस पास निगाह दौड़ती रही. चारो तरफ सूखी पड़ी ज़मीन थी. कहीं खेती का कोई नामो निशान नही था. दामिनी ये देखकर खुद हैरत में थी. ठाकुर की ज़मीन हर साल गाओं वाले या तो किराए पर लेकर उसमें खेती करते थे या फिर ठाकुर के लिए ही काम करते थे. दामिनी की याददास्त के मुताबिक तो ऐसा ही होता था पर ज़मीन की जो अब हालत थी उसे देखके तो लगता था के इसपर बरसो से खेती

नही हुई.

दामिनी ने एक पेड़ देखकर उसके नीचे गाड़ी रोकी और खड़ी होकर चारो तरफ देखने लगी. दोपहर का सूरज सर पर आ चुका था. गर्मी की वजह से जैसे ज़मीन आग उगल रही थी. थोड़ी देर यूँ ही खड़े रहकर दामिनी ने वापिस लौटने का इरादा किया ही था के पिछे से किसी ने उसका नाम पुकारा.

"मालकिन"

आवाज़ सुनकर दामिनी पलटी तो पिछे एक गाओं की एक औरत खड़ी थी

"आप ठाकुर साहब की बहू दामिनी हैं ना?" उस औरत ने दामिनी से पूछा

"हां" दामिनी ने उसकी तरफ देखते हुए जवाब दिया. औरत ने फ़ौरन अपने हाथ जोड़ दिए

"आज पहली बार आपको देख रही हूँ मालकिन. लोगों से सुना था के आप बहुत सुंदर हैं पर आज देखा पहली बार है"

अपनी तारीफ सुन दामिनी मुस्कुरा उठी

"तुम कौन हो?" उसने उस औरत से पूछा

"जी मैं यहीं ठाकुर साहब की ज़मीन की देख रेख करती हूँ. असल में काम तो ये मेरे मर्द का था पर उसके मरने के बाद अब मैं और मेरी बेटी करते हैं" उस औरत ने बताया

दामिनी ने उस औरत को गौर से देखा. वो कोई 40 साल के करीब लग रही थी या उससे एक दो साल उपेर ही. एक गंदी से सारी उसने लपेट रखी थी. जिस बात ने दामिनी का ध्यान अपनी तरफ खींचा वो ये थी के इस उमर में भी उस औरत का बदन एकदम गठा हुआ था. कहीं फालतू चरबी या मोटापा नही आया था. शायद सारा दिन खेतो में काम करती है इस वजह से.

"तुम्हारे पास पानी होगा? मुझे प्यास लगी है" दामिनी ने उस औरत से कहा

"मेरा मकान यहीं पास में ही है. अगर मालकिन को ऐतराज़ ना हो तो आप आ जाइए. थोड़ी देर आराम भी कर लीजिएगा"

दामिनी ने देखा के जिस तरफ वो औरत इशारा कर रही थी वहाँ एक झोपड़ी बनी हुई. थोड़ी सी दूरी पर थी पर कार वहाँ तक नही जा सकती थी. दामिनी ने कार वही पेड़ के नीचे छोड़ी

और उस औरत के साथ चल पड़ी.

"काब्से काम कर रही हो यहाँ पर" चलते चलते दामिनी ने उस औरत से पूछा " और तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम कजरी है मालकिन. मेरा मर्द पहले ठाकुर साहब की ज़मीन की देखभाल करता था इसलिए मैने तो जबसे उससे शादी की तबसे यही काम कर रही हूँ" उस औरत ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया

"तुम यहाँ अकेली रही हो? गाओं से बाहर?" दामिनी ने पूछा

"मैं और मेरी बेटी यहाँ रहते हैं. अब हमारे पास अपना घर या ज़मीन तो है नही मालकिन इसलिए यहीं ठाकुर साहब की ज़मीन पे गुज़ारा करते हैं. गाओं में रहें गे कहाँ" कजरी ने बताया

चलते चलते वो दोनो झोपड़ी तक पहुँचे. दामिनी ने देखा के कजरी ने अपनी ज़मीन के आस पास थोड़ी सब्ज़ियाँ और कुछ फूल उगा रखे थे. झोपड़ी के बाहर कोई 20 साल की एक लड़की बैठी हुई कपड़े धो रही थी.

"ये मेरी सरला है" कजरी ने उस लड़की की तरफ इशारा किया

दामिनी ने उस लड़की की तरफ देखा. उसकी शकल देखके साफ मालूम होता था के वो अभी 20 -21 साल से ज़्यादा की नही है पर सर के नीचे जिस्म किसी पूरी तरह जवान औरत का था. उसने जो कपड़े पहेन रखे थे उसे देखके मालूम पड़ता था के उसने काफ़ी वक़्त से कपड़े नही सिलवाए. पुराने वही कपड़े बचपन से पहेन रही है जो अब उसके जिस्म पे छहोटे पड़ रहे हैं. चोली इतनी तंग हो चुकी थी के सरला की बड़ी बड़ी स्तन उसमें समा नही रही थी, आधी से ज़्यादा स्तन उपेर से बाहर की तरफ निकल रही थी. उसका घाघरा सिर्फ़ घुटनो तक आ रहा था और बैठे होने की वजह से दामिनी को उसकी जांघें साफ नज़र आ रही थी.

दामिनी को देख वो लड़की हाथ जोड़कर उठ कही हुई

"नमस्ते मालकिन"

दामिनी ने अंदाज़ा लगाया के बेटी का जिस्म भी अपनी मान की तरह एकदम गठा हुआ था.

कजरी ने वहीं पास पड़ी एक चारपाई पर चादर डाल दी. सरला भागकर एक ग्लास पानी ले आई.

"आज इस तरफ कैसे आना हुआ मालकिन" कजरी ने नीचे ज़मीन पर बैठे हुए कहा. सरला जाकर अपने धोए हुए कुछ कपड़े बाल्टी में डालने लगी.

"हवेली में कुछ करने को था नही" दामिनी ने जवाब दिया " इसलिए सोचा के ज़मीन का ही एक चक्कर लगा आऊँ"

कहते हुए उसने सरला की तरफ देखा जो झुकी हुई कपड़े बाल्टी में डाल रही थी. झुकी होने की वजह से उसकी स्तन ब्लाउस में से बाहर निकलकर गिरने को तैय्यार थी. दामिनी ने अंदाज़ा लगाया के उसकी स्तन कम से कम उसकी साइज़ की होंगी उसके बावजूद उसने ब्रा नही पहेन रखी थी

"बेचारी के पास पहेन्ने को कपड़े तो हैं नही ढंग के. ब्रा कहाँ से लाएगी" दामिनी ने मन ही मन सोचा

"अब यहाँ क्या बचा है देखने को मालकिन" कजरी उसके सामने बैठी उसे बता रही थी " कुछ साल पहले तक यहाँ लहराते हुए हारे भरे खेत होते थे पर अब तो सिर्फ़ ये बंजर ज़मीन है"

"तुम यहाँ खेती क्यूँ नही करती?" दामिनी ने कजरी से पूछा

"हमारी ऐसी औकात कहाँ के इतनी बड़ी ज़मीन पर खेती करें" कजरी ने जवाब दिया " पहले ठाकुर साहब के इशारे पर ही यहाँ फसल उगा करती थी. हर तरफ हरियाली होती थी पर अब तो सब ख़तम हो गया"

"कितनी बड़ी है ये ज़मीन?" दामिनी ने पूछा

"गाओं के इस तरफ की सारी ज़मीन ठाकुर साहब की है" कजरी ने ठंडी आह भरते हुए कहा" जहाँ तक आपकी नज़र जा रही है ये सब ज़मीन आपकी ही है. कभी गाओं के दूसरी तरफ की ज़मीन भी ठाकुर साहब की ही थी पर अब वो आपका देवर राजवर्धन सिंग देखता है. वहाँ अब भी खेती होती है पर गाओं के इस तरफ तो सब बंजर हुआ पड़ा है. अब ठाकुर साहब को तो जैसे होश ही नही रहा अपनी जायदाद का"

दामिनी से बेहतर इस बात को कौन जान सकता था के क्यूँ होश नही रहा इसलिए वो कुछ नही बोली

"तुम माँ और बेटी अपना गुज़ारा कैसे चलाते हो?" दामिनी ने पूछा

"गुज़ारा कहाँ चलता है मालकिन" कजरी बोली " बस जैसे तैसे वक़्त गुज़ार रहे हैं. मेरे मर्द के मरने के बाद तो सब तबाह हो गया हमारे लिए. वो होता था तो ज़मीन भी देखता था और हमें भी. अब बस मैं ही हूँ जो थोड़ा बहुत हाथ पेर मारकर हम दोनो को ज़िंदा रखे हुए हों"

सरला तब तक कपड़े सुखाकर अपनी माँ के पास आ बैठी थी. नीचे बैठे होने के कारण उसका घाघरा उपेर चढ़ गया था और दामिनी को उसकी जांघें काफ़ी अंदर तक दिखाई दे रही थी.

गर्मी बढ़ती जा रही थी. दामिनी को अपने बदन में जलन महसूस होने लगी थी. वो उठ खड़ी हुई

"एक काम करो कजरी. कल तुम अपनी बेटी को लेकर हवेली आ जाओ. वहाँ कुछ काम है वो कर लिया करना. मैं पैसे दे दूँगी तुम्हें"

"जी बहुत अच्छा" कजरी ने कहा " पर ठाकुर साहब से बिना पुच्छे ..... "

"उसकी तुम चिंता मत करो. बस कल सुबह तक वहाँ पहुँच जाना" कहते हुए दामिनी अपनी कार की तरफ बढ़ गयी. कजरी और सरला उसे कार तक छोड़ने उसके पिछे पिछे आ रहे थे.

दामिनी वापिस हवेली पहुँची. आज उसने काफ़ी अरसे बाद कार चलाई थी इसलिए उसे ड्राइव करना अच्छा भी लग रहा. गाड़ी बाहर छोड़ वो अंदर हवेली में पहुँची.

"पिताजी नही आए?" उसने सामने खड़े दामूकाका से पूछा

"नही अभी तक तो नही आए. आप कुछ खावगी?" दामूकाका ने कहा

"नही मुझे कोई ख़ास भूख नही. थोड़ी देर आराम करूँगी. पिताजी आएँ तो मुझे आवाज़ दे दीजिएगा" दामिनी ने पानी पीते हुए कहा

वो उपेर अपने कमरे में आई और कपड़े बदलने लगी. ब्लाउस खोलकर ब्रा निकाला तो उसकी नज़र अपनी स्तनों पर पड़ी. फ़ौरन उसके ध्यान में सरला की स्तन आ गयी. दामिनी 30 साल के करीब थी और सरला मुश्किल से 18 फिर भी सरला की स्तन तकरीबन दामिनी के बराबर ही थी. थोड़ी देर अपनी स्तनों को देखकर दामिनी को खुद पे हैरत होने लगी. उसने कभी सोचा भी ना था के एक लड़की का जिस्म देखकर ही उसे ऐसा महसूस होगा. उसकी नज़र में अब भी सरला की स्तन घूम रही थी. इस ख्याल को अपने दिमाग़ से झटक कर दामिनी बाथरूम में नहाने के लिए घुस गयी.

नहाकर दामिनी थोड़ी देर लेटी ही थे के उसके ध्यान में घर के बाकी कमरों पर एक नज़र डालने पा गया. वो उठी और अलमारी से चाबियाँ निकालकर अपने कमरे से बाहर निकली. दामूकाका नीचे किचन में था इसलिए उससे कोई ख़तरा भी नही था. और अगर वो देख भी लेता तो दामिनी को सिर्फ़ अपनी योनि उसके सामने खोलनी थी. दामूकाका का मुँह बंद करना एक बहुत आसान काम था.

दामिनी श्यामला के कमरे के सामने से होती अपने सबसे छहोटे देवर शमशेर के कमरे के

सामने पहुँची. उसके कमरे से दामिनी को कुछ ख़ास मिलने के उम्मीद नही थी फिर भी उसने कमरा खोला.

शमशेर ठाकुर का सबसे छोटा बेटा और घर का सबसे ज़्यादा लाड़ला भी. छोटा होने की वजह से उसका हर कोई बहुत लाड़ किया करता था. दोनो माँ बाप,2 बड़े भाई और एक छहोटी बहेन, साबकी आँखों का तारा था वो. दामिनी की उससे ज़्यादा मुलाक़ात नही हुई थी और ना ही कोई ज़्यादा बात. वजह थी के शमशेर बचपन से ही विदेश में पढ़ा था और बस साल में एक बार कुछ दीनो के लिए छुट्टियों पर आया करता था. वीरभद्र ने एक बार दामिनी को बताया था के यहाँ गाओं में शमशेर का दिल नही लगता था इसलिए वो कम ही आता था. घर के बाकी लोग अक्सर उससे मिलने विदेश जाते रहते थे. इसी बहाने उससे मिल भी लेते थे और घूमना फिरना भी हो जाता था. एक बार वीरभद्र दामिनी को लेकर शमशेर से मिलने जाना चाहता था पर किसी वजह से वो प्लान बन नही पाया था.

जब दामिनी इस घर में आई थी तो शमशेर 17-18 साल का था, दामिनी से सिर्फ़ 2-3 साल छोटा. वो हमेशा से ही बहुत शर्मिला था और इसलिए जब भी जब भी दामिनी उसे अपने पास बुलाती तो वो शर्माके भाग जाता. आखरी बार वो वीरभद्र के मरने से पहले आया था और उसके बाद कभी नही. दामिनी ने उसे पिच्छले 10 साल से नही देखा था. और ना ही घर से किसी ने उसे यहाँ वापिस बुलाने की सोची थी. उल्टा श्यामला भी अपने भाई के पास ही चली गयी थी और दोनो जैसे बस वहीं के होके रह गये थे.

दामिनी ने शमशेर का कमरा खोला और अंदर दाखिल हुई. लाइट ऑन करते ही उसके दिल से वाह निकल गयी. ये कमरा घर के बाकी कमरों से कहीं ज़्यादा साफ सुथरा था. हर चीज़ अपनी जगह पर थी और कहीं भी कुछ इधर उधर नही था. हर छहोटी से छहोटी चीज़ भी सलीके से रखी हुई थी. दामिनी को ध्यान आया के शमशेर भी ऐसा ही था. हमेशा साफ सुथरा रहता. कपड़े पे एक धब्बा भी लग जाए तो फ़ौरन बदल देता. घर में भी वो ऐसे बन ठनके रहता था जैसे बस अभी कहीं बाहर जाने वाला हो. ज़रा सा हाथ भी गंदा हो जाए तो हाथ धोने के बजाय वो नहाने ही चला जाता था. दिन में 10 बार तो वो इस बहाने से नहा ही लेता था.

दामिनी ने कमरे पर नज़र डाली और शमशेर की अलमारी की तरफ बढ़ी. अलमारी खोलने की कोशिश की तो वो लॉक्ड थी. दामिनी ने बाकी चाबियाँ लगाने की कोशिश की पर अलमार खोल नही सकी. जाने से पहले शमशेर ने अपनी अलमारी बंद की थी और चाबियाँ शायद साथ ले गया था. दामिनी को हैरत नही हुई. जिस तरह से शमशेर अपनी चीज़ों को साफ सुथरा रखता था उससे ज़ाहिर था के वो नही चाहता था के उसकी चीज़ों के साथ कोई छेड़ छाड करे. अलमारी की तरह ही उसके कमरे के बाकी सब कबोर्ड्स ताले लॉक थे और चाबियों का कहीं पता नही था. शमशेर के कमरे में कहीं एक काग़ज़ भी इधर उधर नही था. दामिनी ने उसके बेड के उपेर नीचे तलाशी लेनी चाही पर वहाँ भी कुछ हासिल नही हुआ. तक कर दामिनी वापिस शमशेर के कमरे से बाहर आ गयी. कमरे का दरवाज़ा उसने बंद किया ही था के उसकी नज़र में कुछ ऐसा आया के उसने दरवाज़ा वापिस खोल दिया और फिर शमशेर की

अलमारी की तरफ आई.

अलमारी यूँ तो बंद थी पर साइड से कपड़े का एक टुकड़ा हल्का सा बाहर निकला रह गया था जिसपर दामिनी की कमरा बंद करते वक़्त नज़र पड़ गयी थी. दामिनी नीचे बैठी और कपड़े को बाहर पकड़कर खींचे की कोशिश की पर अलमारी बंद होने के कारण वो किवाड़ के बीच में फसा हुआ था. दामिनी ने गौर से देखा तो वो एक ब्रा की स्ट्रॅप थी जो हल्की सी शायद अलमारी बंद करते हुए बाहर रह गयी और शमशेर ने ध्यान नही दिया. दामिनी को बहुत हैरानी हुई. शमशेर के कमरे में एक ब्रा क्या कर रही थी? वो ये कहाँ से लाया और क्यूँ लाया? दामिनी ने ब्रा की स्ट्रॅप को देखकर अंदाज़ा लगाया के ये प्लैइन ब्रा नही थी.

काफ़ी सारे रंग थे उसपर. शायद कलर स्ट्रिपेस थी या कई रंग के फूल बने हुए था या रंग के छीटे थे. दामिनी का सर चकराने लगा. इस घर में उस वक़्त 3 ही औरतें थी जिस वक़्त शमशेर यहाँ आया था. दामिनी ने अपनी कपड़ो की तरफ ध्यान दिया तो उसके पास इस तरह की कोई ब्रा नही थी. उसकी सारी ब्रा या तो सफेद रंग की थी या काले और यही हाल उसकी सास शकुंतला देवी का भी था. उनके आखरी वक़्त में दामिनी ही उनका ध्यान रखती थी और उनके कपड़े वगेरह धुलवाती थी. तब उसने अपनी सास के कपड़े देखे थे और शकुंतला देवी या तो प्लैइन वाइट या ब्लॅक ब्रा ही पेहेन्ति थी. बची श्यामला? क्या ये श्यामला की ब्रा हो सकती है? पर अगर है भी तो शमशेर की अलमारी में क्या कर रही है?

दामिनी फ़ौरन शमशेर के कमरे से निकली और बंद करके श्यामला के कमरे में पहुँची. उसने श्यामला के कपड़े इधर उधर किए और उसकी ब्रा देखने लगी. श्यामला की अलमारी में उसे कुछ ब्रा दिखाई दी और उसने राहत की साँस ली. श्यामला की कुछ ब्रा कोलोरेड थी पर सब प्लैइन कोलोरेड थी. कोई भी ऐसे नही थी जिसपे कई सारे रंग हो. पूरी ब्रा एक ही रंग की थी. श्यामला की ब्रा के स्ट्रॅप्स देखकर दामिनी ने अंदाज़ा लगाया के शमशेर की अलमारी में रखी ब्रा श्यामला की ब्रा से काफ़ी अलग थी.

दामिनी शमशेर को अपने छोटे देवर और उसके खामोश और सुलझे हुए नेचर की वजह से काफ़ी पसंद करती थी. जब उसे लगा के ये ब्रा श्यामला की है तो वो परेशान हो गयी थी ये सोचकर के क्या शमशेर अंदर अंदर अपनी ही बहेन की ब्रा चुरा ले गया था? पर जब उसने श्यामला की ब्रा देखी तो उसे अच्छा लगा. शमशेर अपनी खुद की बहेन पर नज़र नही रखता था. वो मानसिक तौर पर भी ठीक था फिर भी सवाल ये था के उसके कमरे में एक ब्रा क्या कर रही थी?

दामिनी ने श्यामला के कपड़े वापिस रखे और अलमारी बंद करने लगी. फिर कुछ सोचकर उसने श्यामला के कुछ कपड़े उठा लिए और कुछ ब्रा और पॅंटीस भी और उन्हें लेकर अपने कमरे में आ गयी.

रात को दामिनी फिर अपने ससुर के बिस्तर पे नग्न पड़ी हुई थी. उनके लिंग उसके हाथ में जिसे वो ज़ोर ज़ोर से हिला रही थी. ठाकुर उसके साइड में लेते हुए थे. दामिनी का एक निपल

उनके मुँह में था जिसे वो चूस रहे थे और 2 उंगलियाँ दामिनी की योनि में अंदर बाहर हो रही थी.

"पिताजी" दामिनी ने ज़ोर ज़ोर से साँस लेते हुए कहा

"ह्म्म्म्म" ठाकुर ने जवाब दिया और दामिनी की योनि से उंगलियाँ निकल कर उसके उपेर चढ़ गये. अब दामिनी की दोनो स्तन उनके हाथों में थी जिन्हें वो बारी बारी चूसने लगे.

दामिनी से सबर करना मुश्किल हो रहा था अगर राज शर्मा होता तो कबका ठोक चुका होता ठाकुर के लिंग पे उसकी गिरफ़्त मज़बूत हो गयी थी और हाथ तेज़ी के साथ उपेर नीचे हो रहा था

"आअज मैं ज़मीन देखने गयी थी" उसने अपनी भारी हो रही साँसों के बीच बोला

"ह्म" ठाकुर ने फिर इतना ही कहा और दामिनी की स्तन छोड़ थोड़ा नीचे होकर उसके पेट को चूमने लगे. हाथ अभी भी दोनो स्तन मसल रहे थे.

"मैं वहाँ काम करने वाली एक औरत से मिली. वो कह रही थी के उसके आदमी को आपने ज़मीन के देख भाल करने के लिए रखा था पर उसके मरने के बाद अब वो और उसकी बेटी ये काम करती हैं" दामिनी बड़ी मुश्किल से बोल सकी. उसकी धड़कन तेज़ हो चली थी. ठाकुर उसके पेट को चूम रहे थे. दामिनी की दोनो टांगे खुली हुई थी और योनि गीली हो रही थी. उसका दिल कर रहा था के ठाकुर सब छोड़कर लिंग उसके अंदर घुसा दें.

"हमने काम के लिए काफ़ी लोग रखे हुए थे. धीरे धीरे सब चले गये क्यूंकी ज़मीन पे कुछ काम ही नही था. फसल लगवानी हमने बंद कर दी थी.बस एक कालू ही रह गया था. शायद तुम उसकी बीवी से ही मिली होंगी. वो कुछ दिन पहले मर गया था. उसकी बीवी को हम अभी भी कुछ पैसे भेजते हैं. वैसे तो ज़मीन में देखभाल करने को कुछ बचा नही पर फिर भी तरस खाकर हमने उसे हटाया नही." कहते हुए ठाकुर ने दामिनी की दोनो टाँगें खोलकर अपने कंधे पे रख ली और थोड़ा और नीचे हो गये. दामिनी की योनि अब उनके चेहरे के सामने थी.

"नाम तो नही बताया उसने अपनी पति का पर हां शायद वो ही थी. उसकी बेटी भी है" दामिनी ने कहा. उसकी समझ नही आ रहा था के ठाकुर क्या कर रहे हैं. वो लिंग के लिए मरी जा रही थी और ठाकुर इतनी देर से लिंग घुसाने का नाम नही ले रहे थे. वो अब उसके टाँगो को अपने कंधे पे रखकर उसकी जाँघो को चूम रहे थे.

"हां वही होगी. कजरी नाम है शायद उस औरत का" ठाकुर उसकी जाँघो को चूमते हुए धीरे धीरे उसकी योनि की तरफ आ रहे थे.

" हां कजरी ही था" दामिनी ने कहा और इससे पहले के वो कुछ समझ पाती ठाकुर ने अपने

होंठ उसकी योनि पे रख दिए

"आआआआआआआह पिताजी" दामिनी की जैसे चीख निकल पड़ी. उसके जिस्म में बढ़ती गर्मी एक ज्वालामुखी बनकर फॅट पड़ी. उसकी योनि पे आज तक किसी ने मुँह नही लगाया था. ठाकुर ने जैसे ही अपने होंठ उसकी योनि पे रखकर जीभ उसकी योनि पे फिराई, दामिनी की योनि ने पानी छोड़ दिया.

दामिनी ने कसकर ठाकुर के सर को पकड़ लिया और अपनी योनि में और ज़ोर से घुसाने लगी. उसने अपने टाँगो को अपने ससुर के कंधो पर लपेट दिया जैसे अपनी टाँगो में उन्हें दबाकर मारना चाहती हो. ठाकुर की जीभ उसकी योनि पे उपेर से नीचे तक जा रही थी. दामिनी के पति ने कभी ये ना तो किया था और ना ही करने की कोशिश की थी. दामिनी को तो पता भी नही था के योनि में इस तरह भी मज़ा लिया जा सकता है. ठाकुर की एक उंगली अब उसकी योनि में घुस चुकी थी और अंदर बाहर हो रही थी. साथ साथ वो उसकी योनि की चाट भी रहे थे.

"मैने कल उसे यहाँ हवेली में बुलाया है" दामिनी ने कहा. उसने ठाकुर के बाल पकड़ रखे थे और योनि में उनका मुँह दबा रही थी. उसके कमर मूड गयी थी. स्तन उपेर छत की तरफ हो गयी थी, सर पिछे झटक दिया था और नीचे से नितंब अपने आप हिलने लगी थी. वो खुद ही ठाकुर के मुँह पे अपनी योनि रगड़ रही थी.

"क्यूँ" कहते हुए ठाकुर दामिनी की टाँगें खोलते हुए सीधे हुए और घूमकर उसके उपेर आ गये. अब उनका मुँह दामिनी की योनि पर था और दामिनी का सर उनकी टाँगो के बीच. लिंग सीधा दामिनी के मुँह के उपेर लटक रहा था.

"इसे कहते हैं 69 पोज़" ठाकुर नीचे से दामिनी की तरफ देखकर मुस्कुराए और फिर उसकी योनि चाटने लगे. दामिनी का जिस्म फिर गरम हुआ जा रहा था. उसने एक लंभी साँस छोड़ी और ठाकुर का लिंग अपने मुँह में ले लिया.

"क्यूँ बुलाया है" ठाकुर ने उसकी योनि पे जीभ फिरते हुए कहा

"हवेली की सफाई करनी है. मैने सोचा के उसकी बेटी मेरा हाथ बटा देगी." दामिनी ने लिंग मुँह से निकाल कर कहा और फिर लिंग मुँह में ले लिया

"वो मान गयी?" ठाकुर ने कहा और दामिनी की योनि से मुँह हटाकर साइड बैठ गये. दोनो हाथों से दामिनी के सर को पकड़ा और लिंग उसके मुँह में अंदर बाहर करने लगे. दीपाली भी ठाकुर का लिंग ऐसे पी रही थी जैसे अपने राज शर्मा का पी रही हो

"म्म्म्म" लिंग मुँह में होने के कारण दामिनी इतना ही कह सकी.उसके ससुर उसके मुँह को ठोक रहे थे.

थोड़ी देर लिंग मुँह में हिलने के बाद ठाकुर बिस्तर से उतर गये और दामिनी को भी नीचे आने का इशारा किया. सवालिया नज़र से ठाकुर को देखती दामिनी बिस्तर से नीचे उतर खड़ी हुई जैसे पुच्छ रही हो के क्या हुआ?

ठाकुर ने उसे बिस्तर पे हाथ रखने को कहा और धीरे से उसे झुका दिया. दामिनी समझ गयी. उसने अपनी टांगे फेला दी, हाथ बिस्तर पे रहे और नितंब पिछे को निकालकर खड़ी हो गयी, ठुकने के लिए तैय्यार. ठाकुर उसके पिछे आए, दोनो हाथो से उसकी नितंब को पकड़ा और एक ही झटके में लिंग उसकी योनि के अंदर पूरा घुसा दिया.

"इसी बहाने सोच रही थी के हवेली के बाहर भी कुछ सफाई हो गयी. बाहर से देखने से तो लगता ही नही के अब हवेली में कोई रहता भी है" दामिनी ने कहा. उसकी योनि पे ठाकुर धक्के मार रहे थे. उसकी दोनो स्तन लटकी हुई उसके नीचे झूल रही थी. हर धक्के पे दामिनी थोड़ा आगे को सरक्ति और उसकी दोनो स्तन बिस्तर के कोने से टकराती.

"जैसा आप ठीक समझें" ठाकुर ने कहा और धक्को की रफ़्तार बढ़ाकर पूरे ज़ोर से दामिनी को ठोकने लगे.

भाग - 6

अगले ही दिन सुबह सुबह सरला हवेली आ पहुँची. वो अकेली ही थी.

"तेरी माँ कहाँ है?" दामिनी ने उसे देखते हुए पूछा

"माँ को कुछ काम पड़ गया था मालकिन" सरला ने जवाब दिया"इसलिए मुझे अकेले ही भेज दिया. कह रही थी के वो शाम को आएगी"

"ठीक है"कहते हुए दामिनी ने सरला को उपेर से नीचे तक देखा.

शकल सूरत से सरला भले ही बहुत ज़्यादा नही पर सुंदर ज़रूर थी. उसने एक चोली पहनी हुई थी जो छहोटी होने से उसके जिस्म पे बहुत ज़्यादा फसि हुई थी. पीछे खींचकर बँधे जाने की वजह से सरला की दोनो स्तन बुरी तरह से दब रही थी और लग रहा था के या तो चोली फाड़कर बाहर आ जाएँगी या उपेर से उच्छालकर बाहर आ गीरेंगी. दामिनी को हैरत हुई के ये लड़की साँस भी कैसे ले रही है. चोली ठीक सरला की दोनो स्तनों के नीचे ही ख़तम हो रही थी. उसका पूरा पेट खुला हुआ था. ल़हेंगा योनि से बस ज़रा सा ही उपेर बँधा हुआ था और मुश्किल से घुटनो तक आ रहा था. एक तरह से देखा जाए तो सरला जैसे आधी नग्न ही थी.

"वा री ग़रीबी" दामिनी ने सोचा

"तेरा समान कहाँ है?" उसे सरला से पूछा

"समान?" सरला ने सवालिया नज़रों से दामिनी को देखा. उसके इस तरह देखने से ही दामिनी समझ गयी के उस बेचारी के पास समान कुछ है ही नही.

"आजा अंदर आजा" उसने सरला को इशारा किया

सरला दामिनी के पिछे पिछे हवेली में दाखिल हुई. हवेली में घुसते ही वो आँखे फाडे चारो तरफ देखने लगी

"क्या हुआ" दामिनी ने पूछा

"इतना बड़ा घर" सरला घूमकर हवेली देखते हुए बोली " इतना आलीशान. यहाँ तो बहुत सारे लोग रहते होंगे ना मालकिन?"

"नही" दामिनी हस्ते हुए बोली " बहुत कम लोग रहते हैं"

सरला हवेली और अंदर हर चीज़ को ऐसे देख रही थी जैसे कहीं जादू की नगरी में आ गयी हो

"ऐसा तो मैने कभी सपने में भी नही देखा था मालकिन" उसे सरला के पिछे पिछे सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कहा

"अब रोज़ देखती रहना. यहीं रहेगी तू" कहते हुए दामिनी उसे लेकर अपने कमरे तक बढ़ी.

दामिनी के कमरे से लगता हुआ एक छोटा कमरा था. वो कमरा ज़्यादातर समान रखने के काम ही आता था, किसी स्टोर रूम की तरह. उस कमरे का एक दरवाज़ा दामिनी के कमरे में भी खुलता था. कमरा बनवाया इसलिए गया था के अगर दामिनी वाले कमरे में समान ज़्यादा होने लगे तो छहोटे कमरे में रख दो और अंदर से दरवाज़ा होने की वजह से जब चाहो उठा लाओ. दामिनी सरला को लेकर कमरे के अंदर पहुँची.

"ये आज से तेरा कमरा होगा" दामिनी ने सरला से कहा

कमरे में हर तरफ समान बिखरा पड़ा था. सरला कभी कमरे को देखती तो कभी दामिनी को

"ऐसे क्या देख रही है?" दामिनी ने कहा "ये सारा समान हट जाएगा यहाँ से. अपना कमरा साफ कर लेना. जो समान तुझे चाहिए रख लेना बाकी निकालकर स्टोर रूम में पहुँचा देना"

"नही मालकिन वो....." सरला ने कहने की कोशिश की

"क्या?"दामिनी ने पूछा

"नही वो आपने कहा के मेरा कमरा. मतलब मैं यहीं रहूंगी? हवेली में?" सरला बोली

"हां और नही तो क्या" दामिनी वहीं दीवार से टेक लगते हुए बोली " तू यहीं रहकर मेरे काम में हाथ बटाएगी"

"पर माँ?" सरला फिर अटकते हुए बोली

"तेरी माँ की चिंता मत कर. उसे मैं कह दूँगी. और फिर यहाँ काम करने के हर महीने पैसे भी तो दूँगी मैं तुझे" दामिनी ने ऐसे कहा जैसे फ़ैसला सुना रही हो

"जी ठीक है" सरला ने रज़ामंदी में सर हिलाया

"अगर तुझे बाथरूम वगेरह जाना हो तो सामने गेस्ट रूम है वहाँ चली जाना. इस कमरे में बाथरूम नही है. और ये दरवाज़े के इस तरफ मेरा कमरा है" दामिनी ने अंदर वाले दरवाज़े की तरफ इशारा करते हुए कहा

सरला ने फिर रज़ामंदी में सर हिला दिया

"चल अब तू नहा ले. कितनी गंदी लग रही है. मैं तुझे कुछ कपड़े ला देती हूँ." दामिनी ने कहा

"कपड़े?" सरला ने ऐसे पूछा के जैसे पुच्छ रही हो के कपड़े क्या होते हैं

"हां कपड़े?" दामिनी ने कहा " तेरे पास इस चोली और ल़हेंगे के साइवा पहेन्ने को कुछ नही है ना?"

सरला ने इनकार में सर हिला दिया.

दामिनी उसे लेकर गेस्ट रूम में पहुँची और बाथरूम का दरवाज़ा खोला.

"तू नहा ले. मैं तुझे कुछ और कपड़े ला देती हूँ" सरला को गेस्ट रूम में छोड़कर दामिनी कमरे से बाहर निकल गयी

दामिनी श्यामला के कमरे में पहुँची और उसकी अलमारी से 3 जोड़ी सलवार कमीज़ निकल लिया. उसने जान भूझकर वही कपड़े निकाले थे जिन्हें पुराना हो जाने की वजह से श्यामला ने अलमारी में नीचे की तरफ फेंका हुआ था और कभी उन्हें पेहेन्ति नही थी. कपड़े लेकर वो वापिस गेस्ट रूम में पहुँची तो सरला वैसी की वैसी ही खड़ी थी.

"क्या हुआ? अंदर जाकर नहा ले ना" उसने सरला से कहा

"पर यहाँ पानी कहाँ है?" सरला ने जवाब दिया

दामिनी की जैसे हसी छहोट पड़ी.

"अरे पगली यहाँ कोई कुआँ नही है जहाँ से तूने पानी निकालके नहाना है"दामिनी बाथरूम में दाखिल हुई " ये देख इसे शोवेर घूमाते हैं. इसे इस तरफ घुमाएगी तो उपेर यहाँ से पानी गिरेगा और ऐसे उल्टा घुमाएगी तो बंद हो जाएगा. समझी"

सरला ने हैरत से शवर की तरफ देखता हुआ फिर गर्दन हिला दी.

"ये यहाँ साबुन रखा हुआ है. नाहकार बाहर आजा" कहते हुए दामिनी बाथरूम से निकल गयी.

वो वापिस नीचे बड़े कमरे में पहुँची. ठाकुर सुबह सवेरे ही कहीं बाहर चले गये थे. किचन में दामूकाका दोपहर के खाने की तैय्यारि कर रहा था. दामिनी को आता देख उसकी तरफ मुस्कुराया

"एक काम कीजिए काका" दामिनी ने दामूकाका से कहा "ये लड़की अबसे यहीं हवेली में रहेगी और काम में हाथ बटाएगी. इसके साथ मिलकर हवेली की पूरी सफाई कर दीजिएगा"

"कौन है ये लड़की?" दामूकाका ने पूछा

"गाओं की ही है" दामिनी ने जवाब दिया " और एक काम और करना. ये हवेली के बाहर जितना भी जंगल उगा पड़ा है इसे कटवाकर बाहर फिर से लॉन और गार्डेन लगवाना है"

"जैसा आप कहो" दामूकाका ने कहा " पर हवेली के आस पास इतनी जगह है के सफाई करने में एक हफ़्ता निकल जाएगा"

"कोई बात नही" दामिनी ने कहा

:और इसलिए लिए गाओं से आदमी बुलाने पड़ेंगे." दामूकाका ने बाहर खिड़की से बाहर देखते हुए कहा. एक वक़्त था जब हवेली के आस पास घास का कालीन सा बिच्छा हुआ था और अब सिर्फ़ ख़त्मियाँ

"ठीक है आप आदमी बुला लेना" कहते हुए दामिनी बड़े कमरे में आई और सोफे पे बैठ कर टीवी देखने लगी

थोड़ी देर बाद वो वापिस गेस्ट रूम में पहुँची तो सरला नाहकार बाहर निकली ही थी. उसने फिर अपना चोली और ल़हेंगा पहेन लिया था. उसे देखते ही दामिनी को ध्यान आया के वो श्यामला के कपड़े सरला के लिए ले तो आई थी पर उसे बताना भूल गयी थी.

"अरी पगली. ये दोबारा क्यूँ पहेन लिया" उसने सरला से कहा " ये नही अब ये कपड़े पहना कर"

दामिनी ने श्यामला के कपड़े सरला की तरफ बढ़ाए.

सरला पूरी भीगी खड़ी थी. नाहकार उसने बिना बदन पोन्छे ही कपड़े पहेन लिए थे जिसकी वजह से कपड़े गीले होकर उसके बदन से चिपक गये थे. चोली स्तनों से जा लगी थी और निपल्स कपड़े के उपेर उभर गये थे. नीचे ल़हेंगा जो वैसे ही सिर्फ़ घुटनो तक आता था भीगने के कारण उसकी टाँगो से चिपक गया था और उपेर टाँगो के बीच योनि का उभार साफ नज़र आने लगा था. सरला की घाघरे के उपेर से ही योनि का उभार देखकर दामिनी ने अंदाज़ा लगाया के उसने अंदर पॅंटी भी नही पहेन रखी थी. सरला के दोनो हाथ पीठ के पिछे थे

"क्या हुआ?" दामिनी ने पूछा

"जी वो ये चोली बँध नही रही" सरला ने शरमाते हुए कहा

दामिनी फ़ौरन समझ गयी. सरला की स्तन काफ़ी बड़ी बड़ी थी और उसकी चोली इतनी छहोटी के वो खुद उसे पिछे बाँध ही नही सकती थी. ज़रूर उसकी माँ ही खींचकर बाँधती होगी

"उसे छोड़ दे. ये कमीज़ सलवार पहेन ले" दामिनी ने श्यामला के कपड़े सरला की तरफ बढ़ाए

सरला एक सलवार कमीज़ लेकर वापिस बाथरूम की तरफ बढ़ी. उसकी पीठ पर चोली खुली हुई थी जिससे उसकी कमर बिल्कुल नग्न थी.

"सुन" दामिनी ने उसकी नग्न कमर की तरफ देखते हुए कहा जहाँ ब्रा के स्ट्रॅप्स ना देखकर उसे कुछ याद आया था " तू ब्रा नही पेहेन्ति ना?"

"ब्रा?" पायन ने घूमते हुए ऐसे कहा जैसे किसी अजीब सी चीज़ का ज़िक्र हो रहा हो

"अरे वो जो औरतें स्तनों पे पेहेन्ति हैं. तेरी माँ नही पेहेन्ति?" दामिनी ने पूछा

सरला ने इनकार में गर्दन हिल्याई

"तेरे पास नही है?" दामिनी ने पूछा तो सरला ने फिर इनकार में गर्दन हिला दी.

दामिनी ने ठंडी साँस ली

"अब इसे ब्रा कहाँ से दूं?" उसने दिल में सोचा फिर ख्याल आया के अपनी कोई पुरानी ब्रा दे दे.

"पर मेरी ब्रा आएगी इसे?" उसने दिल में सोचा और सरला की तरफ देखा

"इधर आ" उसने सरला को नज़दीक आने का इशारा किया " साइज़ कितना है तेरा?"

"जी?" सरला ने फिर हैरा से पूछा

"अरे साइज़ पगली. तेरी स्तनों का. कितनी बड़ी हैं तेरी?" दामिनी ने थोड़ा गुस्से में पूछा

सरला सहम गयी. हाथ में पकड़े कपड़े ऐसे अपने सामने की तरफ कर लिए जैसे दामिनी से अपनी स्तनों को च्छूपा रही हो

"ओफहो" दामिनी झुंझला गयी पर अगले ही पल ख्याल आया के ये बेचारी गाओं की एक ग़रीब सीधी सादी लड़की है.इसे क्या पता होगा ये सब

"चल कोई नही. मैं दे दूँगी ब्रा. इसे सामने से हटा ज़रा." दामिनी ने सरला के हाथ में पकड़े हुए कपड़ों की तरफ इशारा किया

सरला ने शरमाते हुए कमीज़ हटा दी. दामिनी गौर से उसकी स्तनों को देखने लगी. सरला की दोनो स्तन काफ़ी बड़ी थी, बल्कि बहुत बड़ी. दामिनी ने थोड़ा और गौर से देखा तो महसूस हुआ के 18 साल की उमर में ही सरला की स्तन खुद उसके बराबर ही थी. मतलब के सरला को उसका ब्रा आ जाना चाहिए

"ज़रा घूम" कहते हुए दामिनी ने सरला को घुमाया और उसकी नग्न कमर को देखते हुए पिछे से ब्रा का अंदाज़ा लेने लगी. उसने नज़र नीचे की तरफ गयी तो देखा के गीला होने की वजह से सरला का ल़हेंगा उसकी नितंब से चिपक गया था. नितंब का पूरा शेप ल़हेंगे के उपेर से नज़र आ रहा था.

"यहीं रुक" कहती हुई सरला कमरे से बाहर निकली और अपने कमरे से 2 ब्रा और अपनी 2 पॅंटीस उठा लाई

"ये पहना कर कपड़े के नीचे" उसे ब्रा और पॅंटीस सरला को दी " अब ये पहेन, फिर सलवार कमीज़ पहन कर नीचे आ"

सरला ब्रा को हाथ में पकड़े देखने लगी और फिर दामिनी को देखा

"अब क्या हुआ" दामिनी ने पूछा

"इसे पेहेन्ते कैसे हैं?" उसने एक बेवकूफ़ की तरफ दामिनी से पूछा

"हे भगवान" कहते हुए दामिनी करीब आई " चल मैं बताती हूँ. अपनी चोली उतार"

"जी?" सरला ने सुना तो शर्माके 2 कदम पिछे हट गयी

"अरे" दामिनी ने गुस्से से उसकी तरफ देखा" शर्मा क्या रही है. जो तेरे पास है वही मेरे पास भी है. जो मेरी ब्लाउस में च्छूपा हुआ है वही है तेरी चोली में भी. चल उतार."

दामिनी सरला के पास आई और उसके दोनो हाथ पकड़कर सीधे किया. फिर उसने खींचकर चोली को उतार दिया. सरला ने रोकने की कोशिश की तो दामिनी ने घूरकर उसकी तरफ देखा और चोली को जिस्म से अलग करके बिस्तर पे फेंक दिया

चोली उतरते ही सरला की दोनो स्तन दामिनी की आँखो के सामने थी. खुद एक औरत होते हुए भी सरला की स्तनों को देखकर दामिनी की धड़कन जैसे तेज़ हो गयी हो. सरला की स्तन इतनी बड़ी हैं इसका अंदाज़ा उसे चोली के उपेर से हो गया था पर चोली उतरते ही तो जैसे दो पहाड़ सामने आ गये हो. हल्के सावली रंग की 2 स्तन और उनपर काले रंग के निपल्स. और इतनी बड़ी बड़ी होने की वजह से अपने ही वज़न से हल्का सा निच्चे को झुक गयी थी. सरला ने दामिनी को अपनी स्तनों को घूरते देखा तो हाथ आगे करके अपनी छाती ढक ली. दामिनी मुस्कुरा दी

"कितनी उमर है तेरी?" दामिनी ने पूछा

"जी 20 साल" सरला ने शरमाते हुए जवाब दिया

"और अभी से इतनी बड़ी बड़ी लेके घूम रही है?" दामिनी ने हस्ते हुए कहा तो सरला पे जैसे घड़ो पानी गिर गया.

"अच्छा शर्मा मत. हाथ आगे कर" कहते हुए दामिनी ने ब्रा आगे की और सरला को ब्रा कैसे पेहेन्ते हैं बताने लगी. ब्रा को फिर करते हुए उसी बारी बारी सरला की दोनो स्तनों को हाथ से पकड़ना पड़ा ताकि ब्रा ढंग से पहना सके. उसने पहली बार किसी और औरत की स्तनों को हाथ लगाया. खुद दामिनी को समझ नही आया के उसे मज़ा आया या कैसा लगा पर जो भी था, अजीब सा था. उसकी धड़कन अब भी जैसे तेज़ होने चली थी

"हो गया" पीछे से ब्रा के हुक्स लगते हुए दामिनी बोली " अब तो खुद पहेन लेगी ना या रोज़ाना सुबह सवेरे मुझे तेरी स्तन देखना पड़ा करेंगी?" दामिनी पिछे से हटे हुए बोली.

"नही मुझे आ गया. अबसे खुद पहेन लिया करूँगी" जवाब में सरला भी मुस्कुराते हुए बोली

"वैसे एक बात तो है. काफ़ी बड़ी बड़ी और मुलायम सी हैं तेरी" कहते हुए दामिनी ने सरला की दोनो स्तनों पे हाथ फेरा और ज़ोर से हस्ने लगी

"क्या मालकिन आप भी" सरला शरमाते हुए आगे को बढ़ी

"अरे सुन" पीछे से दामिनी ने उसका हाथ पकड़ा" वो सामने पॅंटी पड़ी है. ये तो खुद पहेन लेगी ना या मैं ही पहनाके दिखाऊँ?"

"नही आप रहने दीजिए" दामिनी ने फ़ौरन अपने ल़हेंगे को ऐसे पकड़ा जैसे दामिनी उसे खींचकर उतार देगी" मैं खुद पहेन लूँगी"

"हाँ पहना कर. वरना ल़हेंगे के उपेर से तेरा पूरा पिछवाड़ा नज़र आता है" कहते हुए दामिनी ने पिछे से सरला की नितंब पे पिंच किया

शाम को सरला अपनी माँ का इंतेज़ार करती रही पर वो नही आई. रात को खाने की टेबल पर दामिनी ने सरला को ठाकुर से मिलवाया.

"इसे मैने रख लिया है काम में मेरा हाथ बटाने के लिए. खाना वगेरह बनाना इसे आता नही पर धीरे धीरे सीख जाएगी" दामिनी ने कहा

ठाकुर ने सिर्फ़ सहमति में सर हिलाया, एक नज़र सरला पर डाली और खाना खाने लगे. दामिनी ठाकुर के साइड में ही बैठी खा रही थी. एक मौका ऐसा आया जब सरला ठाकुर के सामने रखे ग्लास में पानी डालने लगी. वो दामिनी के सामने टेबल के दूसरी और खड़ी थी इसलिए पानी डालने के लिए उसे थोड़ा झुकना पड़ा. झुकने से उसके ब्रा में बंद दोनो स्तन साफ दिखने लगी. दामिनी और ठाकुर दोनो की नज़र एक साथ सरला के क्लीवेज पर पड़ी. ठाकुर ने एक नज़र डाली और दूसरे ही पल नज़र हटाकर खाना खाने लगे, जैसे कुछ देखा ही ना हो. ये बात भले ही छहोटी सी थी पर दामिनी ने ये देखा तो उसके दिल में खुशी की एक ल़हेर दौड़ गयी. जिसे वो चाहती थी वो सिर्फ़ उसे ही देखता था.

खाना खाने के बाद दामिनी के सामने मुसीबत ये थी के सरला उसके अगले कमरे में ही थी और दामिनी रात तो अपने ससुर के बिस्तर पर ठुक रही होती थी. अगर सरला रात को उठकर उसके कमरे पर आई तो हक़ीक़त खुलने का डर था. दामिनी की समझ में कुछ ना आया था उसने ठाकुर को धीरे से कह दिया के वो रात को सरला के सोने के बाद उनके कमरे में आ जाएगी.

धीरे धीरे काम ख़तम करने के बाद सब अपने अपने कमरे में चले गये. दामिनी अपने कमरे में बैठी बेसब्री से वक़्त गुज़रने का इंतेज़ार कर रही थी ताकि सरला नींद में चली जाए और वो उठकर अपने ससुर के कमरे में जा सके. उसकी टाँगो के बीच आग लगी हुई थी और उसकी नज़र के सामने रह रहकर ठाकुर का लंबा मोटा लिंग घूम रहा था. अचानक कमरे के बीच के दरवाज़े पर दस्तक हुई. दस्तक सरला के कमरे की तरफ से थी.

"हां क्या हुआ?" दामिनी ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा

"आज तक मैं कभी अकेली सोई नही मालकिन. डर सा लग रहा है इतने बड़े घर में" सरला ने कहा

"अरे इसमें डरने की क्या बात है. इस कमरे में मैं हूँ ना" दामिनी ने कहा तो सरला सर हिलाती हुई फिर अपने बिस्तर की तरफ बढ़ गयी. दामिनी ने दरवाज़ा बंद किया और आकर अपने बिस्तर पर लेट गयी.

करीब एक घंटा गुज़र जाने के बाद दामिनी उठी और दरवाज़ा खोलकर सरला के कमरे में पहुँची. सरला बेख़बर सोई पड़ी थी. उसके कमरे में एक पंखा चल रहा था पर फिर भी कमरे में गर्मी थी. शायद इसी वजह से सरला ने अपनी कमीज़ उतार दी थी और सिर्फ़ ब्रा पहने सो

रही थी. उसकी बड़ी बड़ी स्तन ब्रा में उसकी साँस के साथ उपेर नीचे हो रही थी. दामिनी ने एक नज़र उसे देखा तो उसका दिल किया के एक बार सरला की स्तनों पर हाथ लगाके देखे पर इस इरादे को उसने अपने दिल में ही रखा. वो चुपचाप वापिस अपने कमरे में आई, सरला के कमरे से लगे दरवाज़े को अपनी तरफ से बंद किया और अपने कमरे से निकालकर नीचे ठाकुर के कमरे में पहुँची. दरवाज़ा खोलकर अंदर दाखिल हुई तो कमरे में हल्की रोशनी थी.

"हम आप ही का इंतेज़ार कर रहे थे" उसे देखते हुए ठाकुर ने कहा

दामिनी अपने ससुर के बिस्तर के पास पहुँची तो देखा के वो पहले से ही पुर नंगे पड़े अपना लिंग हिला रहे थे. लिंग टंकार पूरी तरह खड़ा हुआ था. दामिनी मुस्कुराइ और अपने कपड़े उतारने लगी. पूरी तरह से नग्न होकर वो भी बिस्तर पर ठाकुर के पास आकर लेट गयी.

सुबह 4 बजे का अलार्म बजा तो दामिनी की आँख खुली. वो नग्न अपने ससुर की बाहों में पड़ी हुई थी जो बेख़बर सो रहे थे. रात ठुक्कने के बात सोने से पहले ही दामिनी ने ठाकुर को बता दिया था के वो सुबह सुबह ही अपने कमरे में लौट जाएगी ताकि सरला को शक ना हो. इसलिए वो सुबह 4 बजे का अलार्म लगाके सोई थी. धीरे से वो बिस्तर से उठी और अपने कपड़े उठाकर पहेन्ने लगी. कपड़े पहेंकर दामिनी ने झुक कर ठाकुर के होंठ एक बार धीरे से चूमे और हल्के कदमों से चलती हुई दरवाज़े की तरफ बढ़ी ताकि ठाकुर की नींद खराब ना हो. दरवाज़ा खोलकर दामिनी पानी पीने के लिए किचन की तरफ बढ़ी. बाहर के कमरे में एक ऐसी खिड़की भी थी जहाँ से हवेली के बड़ा दरवाज़ा सीधा नज़र आता था. हवेली से लेकर बड़े दरवाज़े तक तकरीबन 200 मीटर्स का फासला था जिसमें बीचे में कभी घास बिछि होती थी पर अब सिर्फ़ सूखी ज़मीन थी. हवेली के चारो तरफ तकरीबन 10 फुट की दीवार थी और उतना ही बड़ा लोहे का बड़ा दरवाज़ा भी था. कभी यहाँ 24 घंटे 2 आदमी पहरे पर रहते थे पर अब कोई नही होता था. कभी कभी तो रात को दरवाज़ा बंद तक नही होता था.

दामिनी खिड़की के सामने से निकली तो उसके पावं जैसे वहीं जम गये. नज़र खिड़की से होती हुई बड़े दरवाज़े से चिपक गयी. एक पल के लिए उसे लगा के उसने किसी को दरवाज़े से बाहर जाते देखा है. पर दरवाज़ा काफ़ी दूर होने के कारण वो साफ तौर पर कुछ देख नही पाई. दरवाज़े के पास एक ट्यूबलाइज्ट जल रही थी और उसकी की रोशनी में एक पल को यूँ लगा जैसे कोई चादर सी लपेटे अभी दरवाज़े से बाहर निकला है. दामिनी वहीं सहम कर खिड़की के साइड में छिप कर खड़ी सी हो गयी और खिड़की के बाहर देखने लगी. सुबह के 4 बज रहे थे. बाहर अब भी घुप अंधेरा था. बड़े दरवाजे के पास जल रही ट्यूबलाइज्ट की रोशनी और खिड़की के बीचे में कुछ नज़र नही आ रहा. बस दूर लोहे का वो दरवाज़ा दिखाई दे रहा था जो अब भी हल्का सा खुला हुआ था. दामिनी चारो तरफ अंधेरे में नज़र घूमती रही. 15 मिनट यूँ ही गुज़र गये. उसे समझ नही आ रहा था के ये उसका ख्याल था या उसने सच में किसी को देखा था. अचानक उसके दिल में एक ख्याल आया और वो भागती हुई से हवेली के दरवाज़े पर पहुँची. दरवाज़ा अंदर से बंद था. यानी के जो कोई भी था, वो बड़े दरवाज़े से अंदर आया पर हवेली के अंदर दाखिल नही हो पाया. बस हवेली के कॉपाउंड तक ही आ पाया होगा. पर इस वक़्त चोरों की तरह कौन हो सकता है. सोचती हुई दामिनी फिर खिड़की तक पहुँची और

थोड़ी देर तक फिर बाहर झाँकति रही. जब और कुछ दिखाई नही दिया तो वो किचन में पहुँची और पानी पीकर अपने कमरे में आ गयी.

कमरे में आकर दामिनी कपड़े बिस्तर पर लेटकर फिर उस आदमी के बारे में सोचने लगी. क्या उसे सच में किसी को देखा था या बस अंधेरे में यूँ ही वहाँ हुआ था. उसने खुद को समझने की कोशिश की के ये उसका भ्रम था. हवेली में यूँ रात को कोई क्यूँ आएगा. अब तो हवेली को मनहूस कहते हुए लोग हवेली के पास को भी नही आते अंदर आने की हिम्मत कौन करेगा? पर फिर भी उसका दिल जाने क्यूँ इस बात को समझने को तैय्यार नही था. उसका दिल बार बार यही कह रहा था के उसने किसी को देखा है. खुद दामिनी को भी इस बात पे हैरत थी के वो इस बात को लेके इतना घबरा क्यूँ रही थी? इतना डर क्यूँ गयी थी.

वो यूँ ही अपनी सोच में खोई हुई थी के अचानक उसके दिल में सरला का ख्याल आया. अपनी तसल्ली करने के लिए के सरला अब भी सो रही है वो बीच का दरवाज़ा खोलकर सरला के कमरे में आई.

सरला अब भी वैसे ही बेख़बर घोड़े बेचकर सोई पड़ी थी. फ़र्क सिर्फ़ ये था के अब उसने ब्रा भी एक तरफ उतारकर रख दी थी. वो उल्टी सोई हुई थी और उसकी दोनो स्तन खुली हुई उसके नीचे दबकर साइड से बाहर को निकल रही थी. दामिनी धीमे कदमों से चलती उसके पास पहुँची और सरला की नग्न कमर को देखने लगी. दुबली पतली सावली सी कमर देखकर उसे अपने शादी से पहले के दिन याद आए. कभी वो भी ऐसी ही थी. दुबली पतली, उठी हुई नितंब और बड़ी बड़ी स्तन. अब जिस्म थोड़ा भर गया था. जाने किस ख्याल में वो वही सरला के बिस्तर पर बैठ गयी और एक हाथ उसकी कमर पर रखकर सहलाने लगी. सरला की नग्न कमर पर उसने धीरे से हाथ फिराया और साइड से उसकी एक स्तन को च्छुआ. छाती पर हाथ लगते ही सरला नींद में थोड़ा हिली और दामिनी फ़ौरन उठकर बिस्तर से खड़ी हो गयी. उसने अपने सर को एक हल्का सा झटका दिया और सरला के कमरे से वापिस अपने कमरे में आ गयी. अब उसके दिमाग़ में दो ख्याल चल रहे थे. एक तो दरवाज़े पे दिखे आदमी का और दूसरा ये के क्या वो खुद ठीक है जो एक औरत के जिस्म को यूँ देखती है?वापिस अपने कमरे में आकर दामिनी सो गयी.

भाग - 7

आँख खुली तो सुबह के 9 बज चुके थे और सरला बाहर दरवाज़े पर चाइ लिए खड़ी थी. फ्रेश होकर दामिनी नीचे आई तो बड़े कमरे में ठाकुर बैठे कुछ काग़ज़ देख रहे थे. दामिनी को आता देख वो उसकी तरफ मुस्कुराए.

"आँख खुल गयी आपकी?"

"पता नही क्यूँ आजकल इतनी नींद आने लगी है" दामिनी पास बैठते हुए मुस्कुराइ.

"क्यूंकी हमेशा बचपन से सुबह 5 बजे उठ जाती थी ना इसलिए. अब वो नींद पूरी कर रही हैं आप" कहकर ठाकुर हँसने लगे.

दामिनी ने मुस्कुराते हुए सामने रखे पेपर्स की तरफ देखा

"ये क्या है?" उसने ठाकुर से पूछा

"कुछ नही. बॅंक स्टेट्मेंट्स और कुछ जायदाद के पेपर्स." ठाकुर थोड़ा सीरीयस होते हुए बोले "अंदाज़ा लगा रहे हैं के पिच्छले 10 साल में अपने बेटे और अपनी इज़्ज़त के सिवा और हमने कितना कुछ खोया है"

कमरे में थोड़ी देर खामोशी सी छा गयी. ना दामिनी कुछ बोली और ना ही ठाकुर. खामोशी टूटी सरला की आवाज़ से

"मैं आज क्या करूँ मालकिन?" उसने दामिनी से पूछा

"बताती हूँ. किचन में चल" दामिनी ने सरला को किचन की तरफ जाने का इशारा किया. सरला के जाने के बाद वो ठाकुर की तरफ पलटी

"आप आज कहीं जा रहे हैं?"

"नही क्यूँ?" ठाकुर ने पूछा

"नही मैं सोच रही थी के ज़मीन की तरफ आज एक फिर चक्कर लगा आऊँ. और फिर ये भी सोच रही थी के दामूकाका को बोलकर कुछ आदमी गाओं से बुलवा लूँ और हवेली के आस पास थोड़ी सफाई करा दूं" दामिनी ने कहा

"ज़मीन का चक्कर? क्यूँ?" ठाकुर ने पूछा

"बंजर पड़ी ज़मीन किस काम की पिताजी?" मैं वहाँ दोबारा खेती शुरू करना चाहती हूँ

"तो वो हम पर छोड़ दीजिए. आपको वैसे भी इस बारे में क्या पता?" ठाकुर ने कहा

"नही पिताजी. इस बार मुझे करने दीजिए. मैं हवेली को दोबारा पहले जैसा देखना चाहती हूँ और ये काम मैं खुद करना चाहती हूँ" दामिनी ने ऐसा कहा जैसे कोई फ़ैसला सुना रही हो

"ठीक है जैसा आप ठीक समझें" ठाकुर ने सामने खड़ी बला की खूबसूरत लग रही दामिनी के सामने हथ्यार से डाल दिए

"मैं दामूकाका को बोल देती हूँ के कुछ आदमी गाओं से बुलवा ले. आप देख लीजिएगा" दामिनी ने ठाकुर से कहा और किचन की तरफ बढ़ी.

सरला को उसने हवेली के कुछ हिस्सो में सफाई करने के बारे में बता दिया. सरला किसी समझदार बच्ची की तरह उसके पिछे गर्दन हिलती घूमती रही और समझती रही के उसे आज क्या करना है.

सरला को सब समझाकर दामिनी गाड़ी लेकर हवेली से बाहर निकल गयी. उसने फिर ज़मीन को उस हिस्से की तरफ गाड़ी घुमा दी जहाँ सरला और उसकी माँ कजरी का घर था. कजरी ने उसे कहा था के वो हमेशा से यहीं काम करती थी और उसका मर्द उससे पहले से. यानी कजरी उसे काफ़ी कुछ बता सकती है जो दामिनी को पता नही था. दामिनी की शादी से पहले के बारे में. उन दीनो के बारे में जब उसका पति वीरभद्र सब काम देखा करता था. दामिनी का इरादा ये था का कहीं से उसे कुछ ऐसा पता चल जाअए जिससे उसे अपने पति की मौत की वजह का कोई सुराग मिले. इसलिए उसने ठाकुर को भी साथ आने से मना कर दिया था. क्यूंकी वो कजरी से अकेले में बात करना चाहती थी.

गाड़ी चलती दामिनी उसी जगह पहुँची जहाँ कजरी उसे पहले मिली थी. गाड़ी को उसी पेड़ के नीचे छोड़कर दामिनी पैदल कजरी की झोपड़ी की तरफ बढ़ी. झोपड़ी का दरवाज़ा खुला हुआ था. दरवाज़े पर पहुँचकर दामिनी ने कजरी के नाम से उसे आवाज़ लगाई पर कोई हलचल नही हुई. दरवाज़े पर खड़ली दामिनी ने अंदर देखा तो कोई नज़र नही आया. दामिनी दरवाज़े से हटकर घूमकर झोपड़ी के पिछे आई ये सोचकर के शायद कजरी पिछे हो. सामने का नज़ारा देखकर उसके कदम वही जम गये और वो दो कदम पिछे हटकर फिर झोपड़ी की आड़ में चली गयी. एक पल को झोपड़ी के दीवार के सहारे खड़े रहकर उसने धीरे से थोड़ा आगे बढ़ी और दम साधे देखने लगी.

सामने एक नीम का पेड़ था जिसके नीचे एक चादर बिछी थी. चादर पर दो नंगे जिस्म एक दूसरे से उलझे हुए थे, एक मर्दाना और एक ज़नाना. मर्दाना जिस्म जिस किसी का भी था वो

नीचे लेटा हुआ था और औरत उपेर बैठी हुई थी. हाथ आगे आदमी के सीने पर रखकर वो औरत आगे को झुकी हुई थी. दामिनी जहाँ खड़ी थी वहाँ से उसे उस औरत की कमर और आदमी की औरत की नितंब के नीचे से निकलती हुई टांगे नज़र आ रही थी. औरत का मुँह दामिनी से दूसरी तरफ था और क्यूंकी वो आदमी के उपेर बैठी हुई थी इसलिए दामिनी को आदमी का चेहरा नज़र नही आ रहा था.

औरत आदमी के उपेर घुटने टांगे मोदकर बैठी हुई थी. उसकी दोनो टांगे आदमी के पेट के दोनो तरफ थी और घुटनो ज़मीन पर टीके हुए थे. वो हाथ सामने आदमी के सीने पर रखकर अपनी नितंब को उपेर नीचे कर रही थी और पिछे से दामिनी को लिंग उस औरत की योनि में अंदर बाहर होता नज़र आ रहा था. देखने से ही अंदाज़ा होता था के आदमी कोई छोटी कद काठी का था और औरत उससे लंबी और चौड़ी थी. दामिनी दम साधे देखती रही. उस औरत की मोटी नितंब लिंग पर तेज़ी के साथ उपेर नीचे हो रही थी और दामिनी की नज़र योनि में अंदर बाहर होते लिंग पर जम गयी.उस आदमी का लिंग भी इतना बड़ा नही था. शायद उसके छहोटे जिस्म के हिसाब से लिंग भी छोटा था. कई बार वो औरत उपेर को जाती तो लिंग योनि से बाहर फिसल जाता जिसे वो फिर हाथ में पकड़कर लिंग के अंदर घुसाती और उपेर नीचे होने लगती.

थोड़ी देर तक यही माजरा चलता रहा. अचानक वो औरत उस आदमी के उपेर से उठकर खड़ी हो गयी और तब दामिनी को उसका चेहरा नज़र आया. वो कजरी थी और इस वक़्त पूरी तरह से नग्न खड़ी हुई थी. दामिनी उसके जिस्म को देखकर दिल ही दिल में वा किए बिना ना रह सकी. इस औरत की 18 साल की एक बेटी थी पर जिस्म अब भी खुद किसी 18-19 साल की लड़की से कम नही था. कहीं भी जिस्म के किसी हिस्से में ढीला पन नही था. बड़ी बड़ी तनी हुई स्तन, पतली कमर, सपाट पेट,मोटी उठी हुई नितंब, खूबसूरत टाँगें. कहीं कोई फालतू मोटापा नही. नितंब भी ना ज़्यादा फेली हुई और ना ही छहोटी. तभी दामिनी की नज़र उस आदमी पर पड़ी और उसे समझ आया के वो क्यूँ छहोटी सी कद काठी का लग रहा था. वो मुस्किल से 18-19 साल का एक लड़का था और कद में अपनी उमर के लड़को से कुछ छोटा ही था. दामिनी चुपचाप खड़ी देखती रही.

कजरी ने खड़ी होकर उस लड़के को उठने को कहा. वो चुपचाप उसकी बात मानकर खड़ा हो गया. कजरी उसके सामने घुटनो पे बैठ गयी और उसका लिंग मुँह में लेकर चूसने लगी. लड़के का लिंग पूरा खड़ा हुआ था पर फिर भी कजरी उसे पूरा मुँह में ले गयी. कभी वो उसके लिंग को मुँह में अंदर बाहर करती तो कभी जीभ से उसे चाटने लगती, तो कभी लड़के के अंडे अपने मुँह में लेके चूस्ति. लड़का आँखें बंद किए खड़ा था और अपने दोनो हाथों से कजरी का सर पकड़ रखा था. थोड़ी देर लिंग चूसने के बाद कजरी अपने घुटनो पे किसी कुतिया के तरह झुक गयी. घुटने फैलाकर उसके अपनी नितंब उपेर को उठा दी ताकि उसकी योनि खुलकर लड़के के सामने आ जाए. उसकी दोनो स्तन सामने से नीचे चादर पे रगड़ रही थी.

लड़का इशारा समझ गया और कजरी के पिछे आ गया. जहाँ दामिनी खड़ी थी वहाँ से उसे दोनो साइड से नज़र आ रहे थे. घुटनो पे झुकी हुई कजरी और उसके पिछे उसकी नितंब पे

हाथ रखे वो लड़का.

"रुक ज़रा वरना तू पिच्छली बार की तरह ग़लती से फिर नितंब में डाल देगा" कहते हुए कजरी ने एक हाथ पिछे ले जाकर उस लड़के का लिंग पकड़ा और उसे अपनी योनि का रास्ता दिखाया. एक बार लिंग अंदर हुआ तो लड़के ने योनि पे धक्के मारने शुरू कर दिए. पीछे से उसकी टाँगो की कजरी की नितंब पे ठप ठप टकराने की आवाज़ और सामने से कजरी के मुँह से आ आ की आवाज़ ने अजीब सा महॉल बना दिया था. थोड़ी देर बाद शायद कजरी झड़ने के करीब आ गयी थी. वो खुद भी अपनी नितंब हिलाने लगी और लड़के को और ज़ोर से ठोकने को कहने लगी. लड़का भी पूरा जोश में था. वो अपना लिंग उसकी योनि में ऐसे पेल रहा था जैसे आज योनि फाड़ के ही दम लेगा. उसके हर धक्के से कजरी का सर नीचे ज़मीन से टकराता और वो उसे और ज़ोर से धक्का मारने को कहती.

अचानक कजरी ज़ोर से चीखी और उसने सामने से चादर को अपने दोनो हाथों में कासके पकड़ लिया. उसने अपना सर नीचे ज़मीन पे टीकाया और उसका पूरा जिस्म कापने लगा. उसकी आ आ और तेज़ हो गयी. चादर खींचकर उसने अपने मुँह में भींच ली और ज़ोर ज़ोर से ज़मीन पे हाथ मारते हुए आआआआअहह आआआआआअहह चीखने लगी. पीछे से लड़का भी पूरी जान लगाकर उसकी योनि पे धक्के मारने लगा. थोड़ी देर ऐसे ही चीखने के बाद कजरी ठंडी पड़ी तो दामिनी समझ गयी के वो ख़तम हो चुकी है. लड़का भी अब पूरी तेज़ी से उसकी योनि में लिंग पेल रहा था.

"योनि में मत निकल देना" कजरी ने लड़के से कहा

लड़के ने हां में सर हिलाया और 3-4 और ज़ोर के झटके मारकर लिंग कजरी की योनि से बाहर खींचा और उसकी नितंब पे रख दिया. लिंग ने पिचकारी छोड़ी और कुछ कजरी की नितंब पर गिरा, कुछ कमर पर और कुछ उसके बालों पर.

दामिनी धीरे से पिछे हुई और झोपड़ी के सामने रखी चारपाई पर आकर बैठ गयी.

थोड़ी ही देर बाद माथे से पसीना पोंचछति कजरी भी झोपड़ी के पिछे से निकली. उसके पिछे पिछे वो लड़का भी था. दोनो ने अपने अपने कपड़े पहेन लिए थे. दामिनी को बैठा देखकर दोनो ठिठक गये.

"अरे मालकिन आप? आप कब आई?" कजरी ने दामिनी से पूछा

"बस अभी आई एक मिनट पहले" दामिनी ने झूठ बोला " तुम नही दिखी तो सोचा के इंतेज़ार कर लूँ"

"हां वो मैं ज़रा थोड़ा कुछ काम से गयी थी. ये बबलू है." कजरी ने कहा

लड़के ने हाथ जोड़कर दामिनी के सामने सर हल्का सा झुकाया और चला गया.

"आअप पानी लेंगी?" उसके जाने के बाद कजरी ने दामिनी से पूछा

"हां" दामिनी ने कहा

कजरी झोपड़ी में जाकर एक ग्लास में पानी ले आई और दामिनी को दिया

"मालकिन वो मैं ..... " झिझकते हुए कजरी बोली

"ठीक है कजरी" दामिनी ने ग्लास एक तरफ रखते हुए कहा "तुम जो कर रही थी वो दुनिया की हर औरत करती है. शरमाने की ज़रूरत नही"

दामिनी ने कजरी के सामने साफ ज़ाहिर कर दिया के उसने सब देख लिया था. कजरी ने फिर भी कुछ नही कहा और सर झुकाए ज़मीन की और देखती रही.

"बाकी सब तो ठीक है पर थोड़ा छोटा नही था? इतने से काम चल जाता है तुम्हारा?" दामिनी ने हस्ते हुए कहा तो कजरी की भी हसी छूट पड़ी.

"नही मेरा मतलब था के लड़का थोड़ा छोटा नही है? तुम्हारी बेटी की उमर का लगता है" दामिनी ने कहा

"नही मेरी बेटी से 2 साल छोटा है" कजरी वहीं ज़मीन पर बैठते हुए बोली "पर काम चल जाता है. इसके माँ बाप नही हैं. इसलिए मैं ही खाने वगेरह को दे देती हूँ"

"और बदले में थोड़ा काम निकल लेती हो?" दामिनी मुस्कुराते हुए बोली

कजरी हँसने लगी

"नही ये तो पता नही कैसे हो गया वरना ये तो बहुत छोटा था जब मैं इसके माँ बाप मर गये थे. गाओं से मैं इसे लाई और यूँ समझिए के अपनी बेटी के साथ इसे भी बड़ा किया"कजरी ने कहा. दामिनी ने ग्लास से पानी का आखरी घूंठ लिया और ग्लास कजरी को दिया.

"तुम कल आई नही सरला के साथ?" दामिनी ने कजरी से पूछा

"नही कल बबलू की तबीयत थोड़ी खराब थी. सुबह से ही हल्का बुखार था इसे तो मैं यहीं रुक गयी और सरला को भेज दिया. वो काम ठीक से कर तो रही है ना मालकिन?" कजरी ने पूछा

"हां सब ठीक है." दामिनी ने कहा और फिर थोड़ा रुकते हुए बोली " मैं असल मैं तुमसे थोड़ा बात करने आई थी. अकेले में इसलिए किसी को साथ नही लाई"

"हां कहिए" कजरी बोली. तभी बबलू आया और हाथ के इशारे से कजरी को कुछ बताने लगा.

"हां ठीक है जा पर शाम तक आ जाना. आते हुए गाओं से थोड़ा दूध लेता आना. पैसे हैं ना तेरे पास?" कजरी बबलू से बोली. बबलू ने हां में सर हिलाया और चला गया

"बोल नही सकता बेचारा. गूंगा है" कजरी दामिनी की तरफ देखती हुई बोली

"काब्से?" दामिनी ने पूछा

"बचपन से ऐसा ही है. इसके माँ बाप के मरने के बाद जब मैं इसे लाई तो बहुत वक़्त लग गया मुझे इसे बातें समझाने में. इसके इशारे समझ ही नही आते थे पहले तो" कजरी बोली

"माँ बाप कैसे मारे थे इसके?" दामिनी ने पूछा तो कजरी बगले झाँकने लगी. थोड़ी देर तक वो यूँ ही चुप बैठी रही.

"क्या हुआ. बताओ ना" दामिनी ने दोबारा पूछा

"छोड़िए मालकिन. आपको अच्छा नही लगेगा" कजरी ने कहा

"क्यूँ?" दामिनी हैरत में बोली

"क्यूंकी इसके माँ बाप ठाकुर साहब की गोली के शिकार हुए थे. ठाकुर साहब ने ही एक रात दोनो को मौत की नींद सुलाया था."

"पर क्यूँ?"दामिनी के मुँह से अपने आप ही निकल गया

"जब आपकी पति छहोटे ठाकुर की हत्या हुई तो उसके पिछे आस पास के इलाक़े में बहुत सारे लोग मौत की नींद सोए थे मालकिन. ठाकुर साहब और आपके देवर ठाकुर तेजवीर सिंग ने आपके पति की मौत का बदला लेने के लिए आस पास के इलाक़े में दहशत फेला दी थी."

"जानती हूँ" दामिनी ने ठंडी आवाज़ में कहा " आगे बोलो"

"गाओं में एक बनिया हुआ करता था. जाने क्यूँ ठाकुर साहब को लगा के उस बानिए का कुछ हाथ है आपके पति की हत्या में. बस एक रात ठाकुर साहब और उनकी आदमियों ने बानिए के घर पर हल्ला बोल दिया"

कजरी ने बात जारी रखते हुए कहा

"ह्म्म्म्म फिर?" दामिनी गौर से उसकी बात सुन रही थी

"बबलू के माँ बाप उसी बानिए के घर पर काम करते थे. उनकी किस्मत खराब के उस रात बानिए के घर पर कोई पूजा चल रही थी जिसमें हाथ बटाने के लिए उसने बबलू के माँ बाप को रात भर के लिए रोक लिया था. आधी रात के करीब ठाकुर साहब अपने आदमियों के साथ बानिए के घर पहुँचे और घर में जो कोई भी था उसे मौत के घाट उतार दिया. उन लोगों में इस बेचारे बबलू के माँ बाप भी थे" कजरी ने साँस छोड़ते हुए कहा और थोड़ी देर के लिए चुप हो गयी.

"ये आज से करीब 9 साल पहले की बात है. तब ये बबलू मुश्किल से 7-8 साल का था. गाओं में यूँ ही कुछ दिन अनाथ बेचारा यहाँ वहाँ घूमता रहा. एक दिन मेरे घर खाना माँगने आया तो मैने यहीं रख लिया" कजरी ने बात पूरी करते हुए कहा

दामिनी को समझ नही आया के क्या कहे. कजरी भी अपनी बात कहकर चुप हो गयी थी. दोनो औरतें खामोश बैठी यहाँ वहाँ देखती रही. दामिनी को ठाकुर के बारे में ये सुनना अच्छा नही लगा. पहले तो वो उसके ससुर थे और अब तो रिश्ता भी बदलकर मोहब्बत का हो गया था. उसका दिल ठाकुर को ग़लत मानने को तैय्यार नही था और ना ही उनके खिलाफ कुछ सुनने को तैय्यार था. उसके लिए ठाकुर वही आदमी था जिनकी बाहों में वो रात भर सोती थी और जो उसे इतना चाहते थे, वो आदमी नही जो किसी के घर में घुसकर लोगों को मारना शुरू कर दे. दामिनी ने बात बदलने की सोची

"एक बात कहूँ कजरी?" दामिनी ने कहा

"हां मालकिन" कजरी ने फ़ौरन उसकी तरफ देखा

"तुम्हारी उमर कितनी होगी?"

"सही तो नही पता पर 40 के आस पास तो होगी ही. क्यूँ?" कजरी ने सवालिया अंदाज़ में कहा

"क्यूंकी तुम्हारा नंगा जिस्म देखकर एक पल के लिए तो मुझे लगा के कोई 20 साल की लड़की है. लगा ही नही के तुम हो, एक 18 साल की लड़की की माँ" दामिनी ने मुस्कुराते हुए कहा

"मालकिन" कजरी शरम से पानी पानी हो गयी

"हां सब देखा था मैने. जब मैं यहाँ आई तो तुम उस लकड़े के उपेर चढ़ि हुई थी इसलिए मैने

पिछे से देखा. तुम्हारा जिस्म तो कमाल का है कजरी. मैं एक पल के लिए तो पिछे हटी पर फिर देखने लगी. खुद एक औरत होते हुए भी मैं तुम्हारे जिस्म को देखकर वहीं रुक ही गयी" सरला बोली

कजरी शरम से आँखें नीचे किए बैठी थी. उसपर तो लग रहा था जैसे किसी ने पानी फेंक दिया हो.

"मालकिन आपने सब ,,,,,,,,,,? मुझे तो लगा था के आपने इस बात से अंदाज़ा लगाया के मैं और बबलू एक साथ कपड़े ठीक करते हुए आए थे" कजरी अटकते हुए बोली

"नही तुम्हारा पूरा कार्यक्रम देखा था मैने. तुम लड़के के उपेर और फिर तुम झुकी हुई. अच्छा एक बात बताओ. तुम क्या आख़िर में हमेशा ऐसे ही शोर मचाती हो?" सरला ने अपनी बात जारी रखी. उसे कजरी का यूँ शरमाना अच्छा लग रहा था.

कजरी के मुँह से बोल नही फूट रहा था. वो नज़रें नीची किए ज़मीन की तरफ देख रही थी. दामिनी को ये मौका ठीक लगा. अगर उसे कजरी से और बातें पता करनी हैं तो उसके लिए ज़रूरी है के कजरी उसके साथ पूरी तरह खुल जाए और उस काम के लिए ये ठीक मौका था.

"अच्छा अब शरमाना छोड़. मुझसे क्या शर्मा रही है?" दामिनी ने कजरी के सर पर हाथ मारते हुए कहा "मुझे अपनी दोस्त समझ, मालकिन नही."

कजरी ने दामिनी की तरफ देखा और मुस्कुराइ. दामिनी को अपना काम बनता लगा

"भूख लग रही है बहुत. कुछ खाने को है तेरे यहाँ?" उसने कजरी से पूछा

कजरी घर में जो कुछ मिला खाने के लिए ले आई

"मालकिन ज़्यादा तो कुछ नही है मुझ ग़रीब के घर में. जो है बस यही है" उसने चारपाई पर खाना परोसते हुए दामिनी से कहा

"अरे पगली 2 वक़्त की रोटी मिल जाए, यही काफ़ी है इंसान के लिए" दामिनी ने हसते हुए जवाब दिए

दामिनी ने खामोशी से खाना खाया और कजरी वहीं नीचे बैठी उसे देखती रही. दामिनी ने उसे साथ खाने को कहा पर वो नही मानी. खाना ख़तम करके दामिनी ने हाथ धोए और घूमकर झोपड़ी के पिछे वहीं आ गयी जहाँ थोड़ी देर पहले कजरी चुड़वा रही थी. वो वही एक पेड़ की छाँव में आकर खड़ी हो गयी.

"क्या हुआ मालकिन" पीछे से आते हुए कजरी ने पूछा

"कितनी शांति है यहाँ" दामिनी ने जवाब दिया"कितना सुकून"

"शांति नही मालकिन" कजरी ने कहा"सन्नाटा कहिए. एक बंजर पड़ी ज़मीन पे मौत का सा सन्नाटा"

"मौत का सन्नाटा?" दामिनी हस्ते हुए बोली "और इस मौत के सन्नाटे में तुम बबलू के साथ कबड्डी खेल रही थी?"

सुनते ही कजरी फिर से लाल हो गयी. वो दोनो चलते हुए फिर झोपड़ी के अंदर आ गयी.

"अच्छा ये सब शुरू कैसे हुआ ये तो बता?दामिनी फिर से बैठते हुए बोली

"क्या?"कजरी ने कहा

"यही. बबलू के साथ कबड्डी कबड्डी का खेल" दामिनी ने जवाब दिया

"क्या मालकिन आप भी. कोई और बात कीजिए ना" कजरी ने बात टालने की कोशिश की

"अरे बता ना. क्या बचपन से इसे लाते ही शुरू कर दिया था?" दामिनी बोली

"नही नही. ये तो अभी साल भर पहले ही शुरू हुआ था." कजरी बोली

"कैसे? बता ना" दामिनी ने ऐसे पूछा जैसे कोई बहुत मज़े की बात सुनना शुरू कर रही हो

"छोड़िए ना मालकिन" कजरी ने एक और बार बात बदलने की कोशिश की

"बता ना" दामिनी ज़िद पर आदि रही

"ठीक है." कजरी ने हथ्यार डालते हुए कहा "जब बबलू को मैं यहाँ लाई थी तो ये मुश्किल से 7-8 साल का था. पाल पोस्के बड़ा किया. ये धीरे धीरे जवान होता चला गया पर शायद मैं इसे हमेशा एक बच्चे की तरह ही देखती रही. मेरे लिए तो ये वही बच्चा था जिसे अनाथ देखकर मैं अपने घर ले आई थी."

"ह्म्म्म्म" दामिनी ना हामी भारी

"मेरे इस कंधे में काफ़ी चोट लग गयी थी जिसकी वजह से ये हाथ ज़्यादा पिछे की तरफ मूड

नही पाता" कजरी ने अपने लेफ्ट कंधे पर हाथ रखते हुए कहा. " इसी वजह से नहाते वक़्त मैं अपने हाथ से कमर पर साबुन नही लगा पाती. नहाते वक़्त या तो मैं अपने मर्द को बुला लेती थी या अपनी बेटी सरला को. जब मेरा मर्द मर गया तो ये काम सरला ही करती थी. एक दिन सरला घर पर नही तो तो मैने बबलू को कह दिया. तब वो बच्चा ही था. और फिर यह सिलसिला चल निकला. कभी सरला मेरी कमर पर साबुन लगा देती और जब वो ना होती तो मैं बबलू से लगवा लेती."

"तू नग्न हो जाती थी उसके सामने? बच्चा था तो क्या हुआ?" दामिनी ने हैरत से पूछा

"अरे नही मालकिन. घाघरा उपेर खींच लेती थी सीने तक. बस कमर थोड़ा सा खोल देती थी ताकि वो साबुन आराम से लगा सके" कजरी बोली

"हम्म्म्म. फिर?" दामिनी ने आगे की बात बताने के लिए कहा

"फिर मेरा मर्द मर गया. कई साल तक मैं यूँ ही अकेले रही. एक बार जिस्म की आग इस कदर बढ़ गयी के अपने आप को रोक नही पाई और बबलू के साथ जिस्मानी रिश्ता बन गया. बस तबसे ऐसा ही चल रहा है" कजरी ने बात ख़तम करते बोला

"ये क्या बात हुई. अरे मैं वो किस्सा सुनना चाहती हूँ जब तुम दोनो ने पहली बार किया. वो कहानी बता. हर बात को बता के उसने क्या किया ओर तूने क्या किया" दामिनी जैसे हुकुम देते हुए बोली

"मालकिन" कजरी को जैसे यकीन नही हुआ

"क्या मालकिन?" दामिनी बनावटी गुस्सा दिखाते हुए बोली"जैसे तूने कभी किसी औरत के साथ ऐसी बात नही की. औरतें तो अक्सर ऐसी बातें करती हैं आपस में"

"वो तो ठीक है मालकिन पर फिर भी" कजरी अब भी हिचकिचा रही थी

"पर वार कुछ नही अब बता. मैने कहा ने मुझे अपनी दोस्त ही समझ. अब जल्दी से बता. बताआआआआ नाआआआआ" दामिनी किसी बच्चे की तरह ज़िद करते हुए बोली

ठीक है आप सुनना ही चाहती हैं तो सुनिए" कजरी ने आह भरते हुए कहा

"बात आज से कोई एक साल पहले की है. सरला घर पर नही थी. मैं यहीं झोपड़ी में नहाती थी. रोज़ की तरह नहाने लगी और बबलू को आवाज़ देकर अपनी कमर पर साबुन लगाने को कहा. सच कहिए तो उस दिन मुझे अंदाज़ा हुआ था के वो अब बच्चा नही रहा, एक मर्द बन चुका है"

"ह्म्म्म्म" दामिनी हामी भरते बोली

"रोज़ की तरह मैने अपना घाघरा उपेर खींच रखा था. मेरे सीने से मेरे घुटने तक. बबलू आया और मेरी कमर पर साबुन लगाने लगा. पर उस दिन जो ग़लती मुझसे हुई वो ये थी के मैने सफेद रंग का घाघरा पहेन रखा था और अंदर कुछ भी नही था" कजरी बोली

"मतलब पानी गिरते ही घाघरा बदन से चिपक गया और तेरा सारा समान बबलू के सामने?" दामिनी हस्ते हुए बोली

"हां" कजरी ने भी हसके ही जवाब दिया"मुझे इस बात का अंदाज़ा ही नही था के मैं एक तरह से उसके सामने नग्न ही हूँ. वो चुपचाप मेरे पिछे खड़ा साबुन लगा रखा था. कमर तो मैने खोल ही रखी थी पर सफेद घाघरा जिस्म से चिपक जाने के कारण मेरे पिच्छला नीचे का हिस्सा भी एक तरह से उसे नज़र ही आ रहा था."

"मतलब तेरा पिछवाड़ा?" दामिनी ने सीधी चोट की

कजरी पर जैसे घड़ो पानी गिर गया. दामिनी उसके लिए उसकी मालकिन थी, एक अच्छे घर की सीधी शरीफ बहू. उससे इस तरह की भाषा की कजरी को बिल्कुल उम्मीद नही थी. वो दामिनी का मुँह देखने लगी.

"ऐसे क्या देख रही है. पिछवाड़ा को पिछवाड़ा नही तो क्या गोल गप्पा कहूँ? अगर तू ऐसे शरमाएगी मेरे सामने तो तेरी मेरी दोस्ती यहीं ख़तम. मैं जा रही हूँ और फिर कभी नही आने वाली"दामिनी चारपाई से उठने को हुई

"अरे नही मालकिन" कजरी ने फ़ौरन से रोका "आप ग़लत समझ रही हैं. गाओं की सब औरतें ऐसी ही ज़ुबान में बात करती हैं. मैं खुद भी करती हूँ ऐसे ही बातें जब सब औरतें आपस में बैठी होती हैं तो. बस आपके मुँह से सुनके थोडा अजीब सा लगा"

"अजीब छोड़. मेरे से वैसे ही बात कर जैसे तू बाकी औरतों से करती है. मैं भी तो एक औरत ही हूँ. अब आगे बता" दामिनी ने वापिस आराम से बैठते हुए कहा

"थोड़ी देर यूँ ही गुज़र गयी. वो साबुन रगड़ रहा था. अचानक मेरी नज़र सामने मेरी च्यातियों पर पड़ी तो मैने फ़ौरन अपने हाथ आगे किए. मेरा घाघरा मेरे सीने से चिपक गया था और मेरी दोनो स्तन साफ दिखाई दे रही थी. मैने फ़ौरन अपने हाथों से अपने सीने को ढका और दिल ही दिल में सोचा के अच्छा हुआ बबलू आगे की तरफ नही खड़ा."

"ह्म्म्म्म" दामिनी ने फिर हामी भारी. उसका प्लान कामयाब हो रहा था. कजरी उससे खुल रही थी. आराम से सब बातें कर रही थी. ठुकाई के ये कहानी तो बस एक ज़रिया थी. असल बात जो दामिनी मालूम करना चाहती थी वो तो हवेली के बारे में थी. पर अब इस कहानी में

उसे खुद भी थोड़ा मज़ा आने लगा था. वो कान लगाकर गौर से सुन रही थी.

"तभी मुझे ध्यान आया के जो हाल आगे हैं वो पिछे भी होगा" कजरी ने बात जारी रखी"मैं और बबलू दोनो ही खड़े हुए थे और मैं फ़ौरन समझ गयी के पिछे से मेरी पिछवाड़ा भी साफ दिखाई दे रही होगी कपड़े के उपेर से. मैने फ़ौरन अपने दोनो हाथो से अपने घाघरे को झटका ताकि वो मेरे जिस्म से अलग हो जाए, चिपका ना रहे और थोड़ा आगे को होकर बबलू की तरफ पलटी. वो अजीब सी नज़र से मुझे देख रहा था. तब मुझे एहसास हुआ के मैं एक बच्चे की नही, एक जवान लड़के की आँखों में देख रही हूँ जो थोड़ी देर पहली मेरी पिछवाड़ा का नज़ारा कर रहा था."

"फिर?" दामिनी थोड़ा आगे को होते हुए बोली

"कुछ पल के लिए ना बबलू कुछ बोला और ना मैं. दोनो एक दूसरे की आँखों में आँखें डाले देख रहे थे. मुझे समझ नही आ रहा था के क्या करूँ. फिर मुझे एहसास हुआ के बबलू की नज़र नीचे को झूल गयी है. मुझे लगा के वो शर्मा रहा है पर फिर एहसास हुआ के वो असल में मेरी टाँगो के बीच की जगह की तरफ देख रहा था. मैने अपने हाथ आगे को कर रखे थे इसलिए स्तन तो ढाकी हुई थी पर नीचे घाघरा फिर बदन से चिपक गया था. टाँगो के बीचे की जगह हल्की हल्की दिखाई दे रही थी"

"मतलब तेरी योनि?"दामिनी ने फिर सीधी चोट की

"नही योनि नही"कजरी फिर हस्ते हुए बोली"वो कैसे दिखेगी. मेरे पेट पे थोड़े ही लगी है मेरी योनि. वो तो टाँगो के बीचे में है, नीचे की तरफ."

"फिर?"दामिनी भी उसके साथ हस्ने लगी

"सामने से उसे मेरी योनि के उपेर के बाल नज़र आने लगे थे. मेरे मर्द के मरने के बाद मैं बाल साफ नही किए थे इसलिए काफ़ी ज़्यादा उग गये थे. बबलू की नज़र वहीं जमी हुई थी. मैं शरम से ज़मीन में गड़ गयी. उसे फ़ौरन बाहर जाने को कहा और उसकी तरफ फिर अपनी पीठ करके खड़ी हो गयी. घाघरे को मैने फिर झटका ताकि पिछे से वो फिर मेरी पिछवाड़ा से चिपक ना जाए"

"वो गया बाहर?"दामिनी ने पूछा

"नही बल्कि वो मेरे और करीब आ गया. मेरे पिछे खड़ा होकर फिर मेरी कमर पर हाथ लगाया. मैं सिहर उठी और उसे फिर बाहर जाने को कहा पर वो नही गया. वो धीरे धीरे मेरी पीठ सहलाने लगा. मुझे समझ नही आए के क्या करूँ इसलिए दो कदम आगे को बढ़ गयी पर वो फिर भी नही माना. वो भी आगे को आ गया. ऐसा मैने एक दो बार किया तो बिल्कुल दीवार के पास आ गयी. अब मैं और आगे नही बढ़ सकती थी और बबलू मान नही रहा था. बार बार

आगे आकर मेरी पीठ सहला रहा था. मुझे कुछ सूझ नही रहा था. मैं बस उसे बाहर जाने को कह रही थी और वो नही मान रहा था. तभी उसने धीरे से मेरी पीठ सहलाते सहलाते अपना हाथ आगे की और बढ़के मेरी एक स्तन पकड़ने की कोशिश की और बस. मेरा गुस्सा सातवे आसमान पर पहुँच गया और मैने पलटके उसे एक थप्पड़ मार दिया पर उसपर तो जैसे असर ही नही पड़ा. जैसे ही मैं पलटी और थप्पड़ मारा उसने आगे बढ़कर अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए"

"वा" दामिनी बोली " लड़का बड़ा तेज़ है. फिर?"

"मैने मुश्किल से अपने आपको उससे अलग किया और फिर उसके मुँह पर एक थप्पड़ जड़ दिया और फिर उसकी तरफ पीठ करके खड़ी हो गयी और रोते हुए उसे बाहर जाने को कहा" कजरी बोली

"तू रोने लगी?" दामिनी ने फिर हैरत से पूछा

"हां ना जाने क्यूँ मेरा रोना छूट पड़ा पर उसे मेरे रोने से जैसे कुछ लेना देना ही नही था. इधर मैने रोना शुरू किया और उधर वो आगे बढ़कर पिछे से मेरे साथ सटकार खड़ा हो गया. उसका पूरा जिस्म मेरे जिस्म से लगा हुआ था और उसने मेरे गले को चूमना शुरू कर दिया. सच मानिए मालकिन, मुझे लग रहा था जैसे मेरा बलात्कार हो रहा हो. ज़रा भी मज़ा नही आ रहा था"

"ह्म. फिर?"दामिनी ने पूछा

"फिर उसने अपना वो धीरे धीरे मेरे जिस्म से रगड़ना शुरू कर दिया" कजरी बोली

"वो?" दामिनी ने उसे देखते हुए कहा" तेरा मतलब उसका लिंग?"

"हन मालकिन" कजरी फिर मुस्कुराइ"वो मेरे से लंबा है इसलिए उसका लिंग मेरी कमर पर लग रहा था जिसे वो रग़ाद रहा था धीरे धीरे. मुझे कुछ समझ नही आ रहा था के क्या करूँ और ना ही मैं कुछ कर रही थी. बस दीवार की तरफ मुँह किए रो रही थी और वो पिच्छ से लगा हुआ था. थोड़ी देर बाद उसने धीरे से अपने घुटने मोड और अपना लिंग कपड़ो के उपेर से ठीक मेरी पिछवाड़ा पे सटा दिया और वो पहला मौका था जब मेरे जिस्म में एक अजीब सी लहर उठी"

"तुझे मज़ा आया?" दामिनी ने पूछा

"ऐसा ही समझ लो. मैं सालो बाद एक लिंग को अपने जिस्म पर महसूस कर रही थी वो भी उसके लिंग को जिसे मैने अपने बेटे की तरह पाला था" कजरी बोली "धीरे धीरे उसका रगड़ना और तेज़ हो गया और मेरा रोना भी बंद हो गया. मुझे अब भी कुछ समझ नही आ रहा था

और मैं चुपचाप खड़ी अपने जिस्म में उठती हरारत को महसूस कर रही थी. तभी उसका लिंग एक पल के लिए मेरी पिछवाड़ा से हटा और उसने अपने हाथ भी मेरी कमर से हटा लिए. पीछे कुछ हरकत हुई और इससे पहले के मैं कुछ समझ पाती वो फिर मेरे जिस्म से आ लगा. हाथ फिर कमर पर रख दिए और लिंग फिर पिछवाड़ा से सटा दिया पर इस बार एक फरक था"

"क्या?"दामिनी ने पूछा

"इस बार उसका पाजामा उसके लिंग पर नही था" कजरी धीरे से मुस्कुराते बोली

"पाजामा उतार दिया उसने?" दामिनी ने पूछा

"नही बस नीचे सरका दिया था" कजरी बोली

"हां एक ही बात है. लिंग तो बाहर आ गया था ना. फिर?" दामिनी को अब सच में कहानी सुनने में मज़ा आने लगा था

"अब उसके लिंग और मेरी पिछवाड़ा के बीचे सिर्फ़ मेरा घाघरा ही था. वो पूरे ज़ोर से अपना लिंग मेरी पिछवाड़ा पर दबा रहा था और मेरे गले और कमर को चूम रहा था. मैं बस खड़ी ही थी. ना कुछ कर रही थी और जा उसे कुछ कह रही थी. जो मेरे साथ हो रहा था उसमें मज़ा भी आने लगा था और दुख भी हो रहा था के मेरे साथ ये क्या हो रहा है. मैं जैसे एक नींद सी में चली गयी थी. बस अपने जिस्म पे उसका जिस्म महसूस हो रहा था. ना वो कुछ कह रहा था और ना मैं. तभी मुझे अपना घाघरा उपेर को होता महसूस हुआ. वो मेरे घाघरे को पकड़के नीचे से उपेर को खींच रहा था ताकि मैं नीचे से नग्न हो जाऊ. मैं दीवार के साथ सटी खड़ी थी इसलिए उपेर से वो उसे उतार नही सकता था. कोशिश करता तो मैं रोक देती इसलिए उसने नीचे से उपेर को उठना शुरू कर दिया" कजरी कहती रही

"फिर? तूने रोका उसे?" दामिनी साँस रोके सुने जा रही थी

"चाहती तो बहुत थी पर ना जाने मुझे: क्या हो गया था. उसने मेरा घाघरा उपेर उठाकर मेरी कमर तक कर दिया और मैने कुछ ना कहा. मेरी योनि और पिछवाड़ा खुल गयी थी और मैं बस वैसे ही खड़ी थी. अब उसका लिंग सीधा मेरी पिछवाड़ा को च्छू रहा था और उसने फिर वही रगड़ना शुरू कर दिया. दोस्तो ये कहानी राज शर्मा की है यानी मेरी है अगर कोई ओर अपने नाम से इसे पोस्ट कर रहा है तो समझ लो की वो कौन होगा मेरी पिछवाड़ा के बीचो बीच अपना लिंग उपेर नीचे को कर रहा था और मेरी टाँगो पर हाथ फेर रहा था, उसकी साँस भारी हो चली थी और खुद मुझ पर भी एक नशा सा चढ़ गया था. शायद इतने दिन बाद एक मर्द के इतने करीब होने से."

"ह्म्म्म्म" दामिनी सुनती रही

"फिर उसने वो हरकत की जिसके लिए मैं शायद तैय्यार नही थी. उसने खड़े खड़े मेरी दोनो टांगे फेलाइ और थोडा नीचे को होके खड़े खड़े ही मेरी योनि में लिंग डालने की कोशिश करने लगा. मैने फ़ौरन हटने की कोशिश की पर उसने मुझे मज़बूती से पकड़ रखा था इसलिए हिल भी नही पाई. पर इसका नतीजा ये हुआ के वो योनि लिंग नही डाल पा रहा था क्यूंकी मैं बहुत हिल डुल रही थी. तभी उसने ज़ोर से मेरी कमर को पकड़ा और मुझे दीवार के साथ दबा दिया ताकि मैं एक इंच भी ना हिल सकूँ और फिर योनि में लिंग डालने की कोशिश करने लगा," कजरी बोली

"अंदर डाला उसने?" दामिनी ने पूछा

"इतनी आसानी से कहाँ मालकिन. नया लड़का था. पहली बार किसी औरत के इतना करीब था और उपेर से हम खड़े थे, बिस्तर पे लेते हुए नही थे और उसपे मैं उसका बिल्कुल साथ नही दे रही थी. काई बार कोशिश के बावजूद भी वो लिंग छूट में नही घुसा पाया और शायद इसपर खुद भी झल्ला रहा था. उसने अभी थोड़ी देर पहले ही मेरी कमर पर साबुन लगाया था जो अब भी लगा हुआ था. जब उसका लिंग मेरी कमर और नितंब पर रगड़ा तो उसके लिंग पर भी साबुन लग गया था. ऐसे ही कोशिश करते करते उसने झल्लाके एक बार ज़ोर से धक्का मारा और इस बार लिंग को घुसने की जगह मिल गयी." कजरी मुस्कुराते हुए बोली

"तेरी योनि में डाल दिया?"दामिनी ने ऐसा पूछा जैसे बहुत राज़ की बात कर रही हो

"नही मालकिन. लिंग घुसा तो पर योनि में नही पिछवाड़ा में" कजरी बोली

"क्या?" दामिनी जैसे लगभज् चिल्ला उठी "लिंग पिछवाड़ा में घुस भी गया?"

"अरे साबुन से पूरा लिंग चिकना हो रखा था मालकिन. उसने एक ज़ोर का धक्का मारा तो पूरा लिंग पिछवाड़ा में अंदर तक घुसता चला गया" कजरी बोली

"पूरा का पूरा? दर्द नही हुआ तुझे?" दामिनी ने पूछा

"हुआ ना" कजरी हलकसे से हस्ते बोली "मेरी चीख निकल गयी. मेरी पूरी ज़िंदगी में मेरे मर्द ने भी कभी मेरी पिछवाड़ा नही मारी थी. ज़िंदगी में पहली बार लिंग पिछवाड़ा में लिया तो जैसे मुझे चक्कर आने लगा. इतनी तकलीफ़ तो तब भी नही हुई थी जब पहली बार ठुकी थी"

"फिर?"दामिनी अब भी हैरानी से सुन रही थी

"फिर क्या. उसने धक्के मारने शुरू कर दिए. उसे शायद पता भी नही था के उसने लिंग कहाँ डाल रखा है. उसे तो बस इस बात से मतलब था के उसका लिंग मेरे अंदर आ चुका है. नया लड़का था. पता हो भी नही सकता था. लिंग अंदर जाते ही उसने जल्दी से मेरी पिछवाड़ा पे धक्के मारने शुरू कर दिए. लिंग पिछवाड़ा में तेज़ी से अंदर बाहर होने लगा. मेरे घुटने कमज़ोर

होने लगा था और मुझे लग रहा था के मैं चक्कर खाकर गिर जाऊंगी पर उसने मुझे ऐसे पकड़ रखा था के मैं हिल भी नही पा रही थी. दोनो स्तन दीवार के साथ दबी हुई थी और वो मेरी कमर पकड़े मेरी पिछवाड़ा मार रहा था" कजरी एक साँस में बोली

"तुझे मज़ा आया?" दामिनी बोली

"बिल्कुल भी नही. अभी तो दर्द का दौर भी ख़तम नही हुआ था के वो ख़तम होने लगा" कजरी ने जवाब दिया

"इतनी जल्दी? कितनी देर पिछवाड़ा मारी तेरी उसने?"दामिनी ने फिर सवाल किया

"मुश्किल से एक मिनट." कजरी ने कहा "वो ज़िंदगी में पहली बार किसी औरत को भोग रहा था. मुझे तो हैरत थी के लिंग घुसते वक़्त उसका खड़ा था वरना पहली बार तो मर्द का जोश की वजह से ढंग से खड़ा भी नही होता और ज़्यादातर तो अंदर डालने से पहले ही ख़त्म जाता है पर उसके साथ ऐसा नही हुआ. उसका लिंग खड़ा भी हुआ और मेरी नितंब में भी गया पर नया है इस बात का सबूत जल्दी ही मिल गया. उसने पागलों की तरह एक मिनट मेरी पिछवाड़ा मारी और थोड़ी देर बाद ही अपना पानी मेरी पिछवाड़ा में छोड़ दिया"

"फिर" दामिनी को हैरानी हो रही थी के कोई औरत पिछवाड़ा भी मरा सकती है

"जब उसका निकल गया तो वो यूँ ही थोड़ी देर मेरे साथ लगा खड़ा रहा. उसका चेहरा मेरे गले पर था और वो दोनो हाथों से मेरी पिछवाड़ा सहला रहा था. लिंग बैठने लगा तो पिछवाड़ा में से अपने आप बाहर निकल गया. लिंग निकलते ही वो पलटा और मुझे यूँ ही नग्न खड़ी छोड़कर कमरे से बाहर निकल गया"

"मैं कुछ ऐसे ही दीवार के साथ लगी नग्न ही खड़ी रही" कजरी ने अपनी बात जारी रखी " मुझे यकीन नही हो रहा था के जिसे मैं एक छोटा बच्चा समझती थी वो अभी अभी मेरी पिछवाड़ा मारके गया है. समझ नही आ रहा था के मेरा बलात्कार हुआ है या मैने अपनी मर्ज़ी से अपनी पिछवाड़ा मराई है. तभी मुझे सरला के आने की आवाज़ सुनाई दी तो मैने जल्दी से कपड़े पहने"

"बबलू ने इस बारे में क्या कहा?" दामिनी ने पूछा

"वही तो बात है ना मालकिन. आज तक मेरी बबलू से उस दिन के बारे में कोई बात नही हुई है. बस जब उसका दिल करता है तो वो मेरे पास आके इशारे से समझा देता है और अगर मेरा दिल करता है तो मैं उसे इशारा कर देती हूँ. हम में से कोई भी इस बारे में ठुकाई हो जाने के बाद बात नही करता. बाकी वक़्त हमारा रिश्ता वही रहता है जो हमेशा से था." कजरी ने जवाब दिया

"हम्म्म्म" दामिनी ने हामी भारी

"उस दिन वो पूरा दिन गायब रहा और रात 9 बजे से पहले घर नही आया. जब वो आया तो सरला सो चुकी थी पर मैं जाग रही थी. वो अपनी चारपाई पर जाकर चुपचाप लेट गया. खाना भी नही माँगा और सो गया. पर मेरी आँखों से नींद गायब थी. दोपहर को मेरी पिछवाड़ा मारके उसने मेरे अंदर एक आग लगा दी थी. मैं कई साल से नही ठुकी थी और उस दिन मेरा दिल बेकाबू हो रहा था. समझ नही आ रहा था के क्या करूँ पर सो ना सकी. आधी रात के करीब हुलचूल महसूस हुई तो मैने चादर हटाके देखा तो वो मेरे बिस्तर के पास खड़ा था. अंधेरे में हम एक दूसरे को देख नही सके पर समझ गया था के मैं जाग चुकी हूँ. मैं थोड़ी देर ऐसे ही लेटी रही और वो यूँ ही खड़ा हुआ मुझे देखता रहा. मुझे आज तक नही पता के मैने कैसे किया पर कुछ देर बाद मैं अपनी चारपाई पर एक तरफ को हो गयी. वो इशारा समझ गया के मैं उसे अपनी पास आके लेटने के लिए कह रही हूँ. वो फ़ौरन चारपाई पर चढ़ गया और मेरे पास आके लेट गया.

"मैं उसकी तरफ पीठ करके लेटी थी और वो मेरा चेहरा दूसरी तरफ था. वो सीधा लेटा हुआ था. कुछ पल यूँ ही गुज़र गये. जब उसने देखा के मैं बस चुपचाप लेती हूँ तो उसने मेरी तरफ करवट ली और मेरे कंधे पर हाथ रखा. मुझे लगा के वो मुझे अपनी तरफ घुमाएगा पर उसने धीरे धीरे मेरे कंधे को सहलाना शुरू कर दिया और उसका हाथ धीरे धीरे मेरी पीठ से होता हुआ फिर मेरी पिछवाड़ा तक आ पहुँचा. उसने थोड़ी देर पकड़कर मेरी पिछवाड़ा को दबाया और पिछे से ही हाथ मेरी टाँगो के बीच घुसकर मेरी योनि टटोलने लगा. इस वक़्त उसे मेरी तरफ से किसी इनकार का सामना करना नही पड़ रहा था. उसने मेरी टाँगो में हाथ घुसाया और मैने उसे रोका नही. उसने मेरी योनि पर हाथ फेरना शुरू किया और तब भी मैं कुछ नही बोली. पर हां उसकी इस हरकत ने मेरे जिस्म में जैसे आग लगा दी. मेरी साँस भारी हो गयी और मेरे मुँह से एक आह निकल गयी. वो समझ गया के मैं भी उसके साथ हूँ और मेरे साथ सॅट गया. उसका लिंग फिर मेरी पिछवाड़ा पर आ लगा और तब मुझे महसूस हुआ के वो अपना पाजामा उतार चुका था. उसके लिंग और मेरी पिछवाड़ा के बीच फिर से सिर्फ़ मेरा घाघरा ही था जिसे उसने फिर एक बार उपेर को खींचना शुरू कर दिया. मुझे उसकी इस हरकत से फ़ौरन दिन की कहानी याद आ गयी और मेरा दिल सहम गया के वो कहीं से फिर से लिंग पिछवाड़ा में ना घुसा दे. ये ख्याल आते ही मैं फ़ौरन सीधी होकर लेट गयी जैसे अपनी पिछवाड़ा को अपने नीचे करके उसे बचा रही हूँ. मेरा घाघरा वो काफ़ी उपेर उठा चुका था और मेरे यूँ अचानक सीधा होने से और भी उपेर हो गया. मैं जाँघो तक नग्न हो चुकी थी. मेरी दोनो आँखें बंद थी और मैं खामोशी से उसकी अगली हरकत का इंतेज़ार कर रही थी. दिल ही दिल में मुझे अपने उपेर हैरानी हो रही थी के मैं उसे रोक क्यूँ नही रही. वो मेरे बेटे जैसा था और उसे अपनी योनि देना एक पाप था पर दूसरी तरफ दिल से ये आवाज़ आ रही थी के बेटे जैसा ही तो है. मेरा अपना बेटा तो नही तो पाप कैसा. मैं इसी सोच में थी के मुझे अपने उपेर वज़न महसूस हुआ. आँखें खोली तो देखा के वो मेरे उपेर आ चुका था. मेरा घाघरा उसने और उपेर खिच दिया था और मेरी योनि खुल चुकी थी. वो मेरे उपेर आया और हाथ में लिंग पकड़कर योनि में डालने की कोशिश करने लगा" कजरी बोले जा रही थी. अब उसे भी अपनी ठुकाई की दास्तान सुनने में मज़ा आ रहा था.

"सीधे योनि में लिंग? उससे पहले कुछ नही?" दामिनी ने पूछा

"पहली बार ज़िंदगी में किसी औरत के नज़दीक आया था मालकिन और वो भी सिर्फ़ 18-19 साल का लड़का. उसे तो बस योनि मारने की जल्दी थी. उसे क्या पता था के एक औरत को कैसे गरम तैय्यार करते हैं. उसे तो ये तक नही पता था के योनि में लिंग कैसे डालते हैं. मेरी दोनो टांगे बंद थी और वो उपेर मेरे बालों पे लिंग रगदकर घुसने की जगह ढूँढ रहा था. मेरी दोनो टाँगें उसकी इस हरकत से अपने आप खुल गयी और वो ठीक मेरी टाँगो के बीच आ गया. लिंग को उसने फिर योनि पर रगड़ा तो मेरे मुँह से फिर आह निकल गयी. योनि पूरी तरह गीली हो चुकी थी पर वो अब भी लिंग घुसाने में कामयाब नही हो पा रहा था. लिंग को योनि पर रखकर धक्का मारता तो लिंग फिसलकर इधर उधर हो जाता. जब खुद मुझसे भी बर्दाश्त नही हुए तो मैने अपने घुटने मॉड्कर टांगे उपेर हवा में कर ली. पिछवाड़ा मेरी उपेर उठ चुकी थी और योनि लिंग के बिल्कुल सामने हो गयी. नतीजा ये हुआ के उसके अगले ही धक्के में लिंग पूरा योनि में उतरता चला गया. बहुत दिन बार चुड रही थी इसलिए मेरे मुँह से आह निकल गयी और जैसी की मुझे उम्मीद थी, लिंग योनि में घुसते ही उसके पागलों की तरह धक्के शुरू हो गये. उसने कुछ नही किया था. ना मुझे चूमा, ना मेरे जिस्म में कोई रूचि दिखाई. बस लिंग योनि में डाला और धक्के मारने शुरू. 10-12 धक्को में ही उसके लिंग ने पानी छोड़ दिया और उसने मेरी योनि को भर दिया. मैं झल्ला उठी. मुझे अभी मज़ा आना शुरू ही हुआ था के वो ख़तम हो गया. मुझे लगा के शायद वो रुकेगा पर उसने लिंग योनि में से निकाला, मेरे उपेर से उठा और पाजामा उठाकर अपने बिस्तर पर जाकर लेट गया"

"और तू अभी तक गरम थी?" दामिनी ने पूछा

"हां और क्या. मेरे जिस्म से तो जैसे अँगारे उठ रहे थे. मैं यूँ ही पड़ी रही. घाघरा उपेर पेट तक चढ़ा हुआ और योनि खुली हुई. मुझे ये तक फिकर नही रही के अगले ही बिस्तर पर मेरी जवान बेटी सो रही है जो किसी भी पल जाग सकती थी.बबलू मुझे ऐसी हालत में छोड़के गया था के मेरा दिल कर रहा था उसे एक थप्पड़ जड़ दूं. मेरे हाथ मेरी योनि तक पहुँच गये और मैं खुद ही अपनी योनि को टटोलने लगी. उसका पानी अब तक योनि में से बाहर बह रहा था. मैं अपनी योनि मसलनी शुरू की पर दी पर जो मज़ा लिंग में था वो अपने हाथ में कहा. जब मुझसे बर्दाश्त ना हुआ तो मैं बिस्तर से उठी और खुद बबलू की चारपाई के पास जा पहुँची. वो सीधा लेटा हुआ था और उसने अब तक पाजामा नही पहना था. मुझे हैरत हुई के मेरी तरह उसे भी सरला के जाग जाने की कोई परवाह नही थी. उसने गर्दन घूमकर मुझे देखा और मैने उसकी तरफ. अंधेरा था इसलिए एक दूसरे के चेहरे को साफ देख नही सकी. मैने अपना घाघरा खोला और नीचे गिरा दिया. नीचे से पूरी तरह नग्न होकर मैं उसकी चारपाई पर चढ़ि. उसने हिलकर साइड होने की कोशिश की पर मैने उसका हाथ पकड़कर उसे वहीं लेट रहने का इशारा किया और अपनी टाँगें उसके दोनो तरफ रखकर उसके उपेर चढ़ गयी. उसका लिंग अभी भी बैठा हुआ था. मैने उसे अपने हाथ से पकड़ा और पिछवाड़ा थोड़ी उपेर उठाकर नीचे से लिंग योनि पर रगड़ने लगी. वो वैसे ही लेटा रहा और मैने लिंग रगड़ना जारी रखा. मेरी योनि पूरी तरह गीली और गरम थी और लिंग रगड़ने से और भी ज़्यादा शोले भड़क रहे थे. थोड़ी देर लिंग यूँ ही रगड़ने का अंजाम सामने आया और उसका लिंग फिर खड़ा हो गया. मैने अपनी पिछवाड़ा नीचे की और लिंग पूरा योनि में ले लिया." कजरी ने जैसे बात ख़तम करते

हुए कहा

"तो तूने भी उसे बता दिया के तू भी वही चाहती है?" दामिनी ने पूछा

"और क्या करती मालकिन. जिस्म में मेरे भी आग लगी हुई थी. वो बच्चा था इसलिए बार बार जल्दी से ख़त्म जाता. उस पूरी रात मैं उससे चुड़वति रही. तब तक जब तक की मेरी योनि की आग ठंडी नही हो गयी. उस रात हम दोनो का रिश्ता पूरा बदल गया पर हमने कभी इस बारे में बात नही की. तबसे अब तक वो हर रोज़ मुझे ठोक्ता है. दिन में कम से कम 3 बार तो ठोक ही लेता है और कम्बख़्त ने पिछवाड़ा भी नही बख़्शी. कभी योनि मारता है तो कभी पिछवाड़ा." कजरी हस्ते हुए बोली

"और तू मरवा लेती है? दर्द नही होता?" दामिनी ने फिर हैरत से पूछा

"होता है पर जब लिंग घुसता है तब. बाद में मज़ा आने लगता है. अरे मालकिन औरत को लिंग घुसने से मज़ा ही आता है. अब वो लिंग चाहे उसके मुँह में घुसे, या योनि में या पिछवाड़ा में" कजरी ऐसी बोली जैसे सेक्स पर कोई ग्यान दे रही ही दामिनी को

"पर उसके लिंग से काम चल जाता है तेरा?" दामिनी ने पूछा

"मतलब" कजरी आँखें सिकोडती बोली

"अरे देखा था आज मैने दिन में जब तू उसके लिंग पर कूद रही थी. थोडा छोटा ही लगा मुझे तो" दामिनी ने जवाब दिया

"बच्चा है वो अभी मालकिन. इस उमर में एक आम आदमी का जितना होता है उतना ही है उसका भी. पर ये कमी वो दूसरी जगह पूरी कर देता है. शुरू शुरू में जल्दी ख़त्म जाता था पर अब तो आधे घंटे से पहले पानी छोड़ने का नाम नही लेता. और योनि मारे या पिछवाड़ा, धक्के ऐसे मारता है के मेरा पूरा जिस्म हिला देता है. दिन में 3-4 बार ठोक्के भी दोबारा ठोकने को तैय्यार रहता है" कजरी बोली

"कभी सरला को शक नही हुआ?" दामिनी ने फिर सवाल किया

"पता नही. शायद हुआ हो. हम अक्सर ऐसे वक़्त ही ठोक्ते थे जब वो कहीं बाहर गयी होती थी पर कह नही सकती." कजरी ने जवाब दिया

दामिनी और कजरी अब ऐसे बात कर रहे थे जैसे बरसो की दोस्ती थी. दामिनी जानती थी के उसका तीर निशाने पर लगा है. कजरी बॉटल में उतार चुकी है. वो दामिनी को वो सब बता देगी जो वो मालूम करना चाहती है और इस बात का किसी से ज़िक्र भी नही करेगी. दामिनी अच्छी तरह जानती थी के अगर ठाकुर को ये पता चला के वो उनके खानदान के बारे में

नौकरों से पुछती फिर रही है तो ये दामिनी के लिए ठीक ना रहता. और उपेर से वो ठाकुर को दुख भी नही पहुँचना चाहती थी इसलिए इस बात को गुप्त रखना चाहती थी.

बातों बातों में दिल धंले को आ गया था इसलिए दामिनी जानती थी के अब उसे वापिस जाना पड़ेगा. उसने कजरी को अगले दिन पक्का हवेली आने को कहा और अपनी कार की तरफ बढ़ चली. वो चाहती थी के अगले दिन कजरी हवेली आए और वो उससे वो सब मालूम कर सके जो वो करना चाहती थी.

कार चलाती दामिनी हवेली पहुँची तो हैरान रह गयी. हवेली के कॉंपाउंड में पोलीस की जीप खड़ी थी और कुछ आदमी एक तरफ खड़े नीची आवाज़ में कुछ बात कर रहे थे. दामिनी कार से उतरी और आगे बढ़ी ही थी के एक तरफ से आवाज़ आई

"सलाम अर्ज़ करता हूँ मोहतार्मा"

वो पलटी तो देखा के इनस्पेक्टर दानिश पठाण खड़ा हुआ था

"क्या हो रहा है ये सब?" दामिनी ने पूछा

"लाश मिली है एक." इनस्पेक्टर ने जवाब दिया "यहीं हवेली के कॉंपाउंड से"

"कैसी लाश?" दामिनी ने चौंकते हुए पूछा

"ओजी लाश तो लाश होती है" पठाण सिगरेट का काश लेता हुआ बोला "ऐसी लाश वैसी लाश मैं कैसे बताऊं. लाश तो सब एक जैसी ही होती हैं"

"पिताजी कहाँ है?" दामिनी ने पठाण की बात सुनकर झुंझलाते हुए पूछा

"दामिनी" ठाकुर की आवाज़ आई. दामिनी ने फ़ौरन अपने सर पर सारी का पल्लू डाल लिया. औरों के सामने तो उसे यही दिखना था के वो अब भी ठाकुर से परदा करती है. भले अकेले में शरम के सारे पर्दे उठा देती हो.

"आप अंदर जाइए. हम आपको बाद में बताते हैं" ठाकुर ने उससे कहा और खुद पठाण से बात करने लगे

दामिनी धीमे कदमो से हवेली के अंदर आ गयी. उसने आते हुए चारों तरफ नज़र दौड़ाई पर लाश जैसा कुछ दिखाई नही दिया. हां बाहर खड़े आदमी उसे देखकर नीची आवाज़ में कुछ बात कर रहे थे. अपने कमरे में आकर दामिनी फ़ौरन खिड़की के पास आई पर जिस तरफ उसके कमरे की खिड़की खुलती थी वहाँ से कुछ नज़र नही आ रहा था. थोड़ी देर बाद पोलीस

की जीप हवेली के दरवाज़े से बाहर निकल गयी. उसमें बेता पठाण अब भी सिगरेट के कश लगा रहा था.

कपड़े बदलकर दामिनी नीचे आई.

"वो पठाण क्या कह रहा था. लाश?" उसने बड़े कमरे में परेशान बैठे ठाकुर से पूछा

"हां. हवेली के पिच्चे के दीवार के पास मिली है. लाश क्या अब तो सिर्फ़ हड्डियाँ बची थी. सिर्फ़ एक कंकाल" ठाकुर ने परेशान आवाज़ में कहा

"हवेली में लाश?" दामिनी को जैसे यकीन नही हो रहा था "किसकी थी?"

"क्या पता" ठाकुर ने उसी सोच भारी आवाज़ में कहा "अब तो सिर्फ़ हड्डियाँ ही बाकी थी."

"पर यहाँ तो कोई आता जाता भी नही. बरसो से हवेली में कोई आया गया नही" दामिनी परेशान सी बोली

"यही बात तो हमें परेशान कर रही है. हमारी ही हवेली में एक लाश गाड़ी हुई थी और हमें ही कोई अंदाज़ा नही? ऐसा कैसे हो सकता है?" ठाकुर की आवाज़ में गुस्से झलक रहा था

"पठाण क्या कह रहा था? उसे किसने खबर की?" दामिनी सामने सोफे पर बैठते हुए बोली

"आपके कहने पर हमने कुछ आदमी सुबह बुलवाए थे. हवेली के कॉंपाउंड में सफाई करने के लिए. ये लोग पिछे उगी हुई ख़त्मियाँ काट रहे थे तब इनको वो लाश दिखाई दी. इन्हें में से कोई एक पोलीस को खबर कर आया. और वो पठाण क्या कहेगा? एक मामूली पोलीस वाला है." ठाकुर ने कहा

दामिनी दिल ही दिल में ठाकुर की इस बात से सहमत नही थी. दामिनी को पठाण उन आदमियों में से लगता था जो बाल की खाल निकालने में यकीन रखते थे. वो शकल से ही एक खड़ूस पोलीस वाला लगता था जो हर चीज़ को अपने बाप का माल समझके हड़पने की कोशिश करते हैं

"मालकिन आपकी चाय" सुनकर दामिनी पलटी तो पिछे सरला चाय की ट्रे लिए खड़ी थी. दामिनी भूल ही गयी थी के आते हुए उसने सरला को चाय के लिए बोला था. सरला ने उसे बताया था के वो खाना तो नही पर चाय वगेरह बना सकती थी.

दामिनी ने चाय लेकर सरला को जाने का इशारा किया और फिट बात करने के लिए ठाकुर की तरफ पलटी ही थी के हवेली के कॉंपाउंड से कार की आवाज़ आई. कॉंपाउंड बड़ा होने के कारण कार से भी हवेली के बाहर के दरवाज़े से हवेली तक आने में तकरीबन 3 मिनट लगते

थे. ठाकुर और दामिनी खामोशी से धीरे धीरे पास आती कार की आवाज़ सुनते रहे. कार हवेली के बाहर आकर रुकी और ठाकुर का वकील लक्ष्मण प्रसाद एक बाग उठाए हवेली में दाखिल हुआ. ठाकुर के हाव भाव से दामिनी समझ गयी के उन्होने ही उसे फोन करके बुलाया था. लक्ष्मण प्रसाद के आते ही दामिनी उठी और अपने कमरे की तरफ बढ़ गयी. वो जानती थी के ठाकुर उसके सामने वकील से बात नही करना चाहेंगे इसलिए खुद ही उठ गयी.

लक्ष्मण प्रसाद के बारे में सोचती दामिनी अपने कमरे में पहुँची. लक्ष्मण प्रसाद को उसने अपनी शादी में पहली बार देखा था. वो उसके पति वीरभद्र का बहुत करीबी दोस्त था. ठाकुर के सारे बिज़्नेस के क़ानूनी पहलू वो ही संभलता था. सब कहते थे के वो वीरभद्र का दोस्त कम चमचा ज़्यादा था पर दामिनी को वो हमेशा आस्तीन का साँप लगा. ऐसे साँप जो आपके ही घर में पलता है और वक़्त आने पर आपको भी डॅस सकता है. इन 10 सालों में वही एक था जो अब भी ठाकुर से रिश्ता रखे हुए था. बाकी तो अपने भी रिश्ता छोड़ गये थे. ठाकुर उसकी इस हरकत को उसकी हवेली के साथ वफ़ादारी समझते थे पर दामिनी जानती थी के लक्ष्मण प्रसाद सिर्फ़ इसलिए आता है क्यूंकी उसे भी ठाकुर से हर महीने के लगे बँधे पैसे मिलते थे. भले ही उसने सालों से ठाकुर के लिए क़ानूनी काम कोई ना किया हो. बल्कि उसके सामने ही ठाकुर का भतीजा ठाकुर की सारी राजवर्धन सिंगदाद उनकी नाक के नीचे से ले गया था और लक्ष्मण प्रसाद ने कुछ ना किया था. जो बात दामिनी को खटक रही थी वो ये थी के मरने से कुछ दिन पहले वीरभद्र ने उसे बताया था के लक्ष्मण प्रसाद ने उससे 25 लाख उधर माँगे थे. किसलये वो नही जानती थी. क्या उसके पति ने लक्ष्मण प्रसाद को वो पैसे दिए थे ये भी वो नही जानती थी. और अगर दिए थे तो क्या लक्ष्मण प्रसाद ने अब तक ठाकुर को वो पैसे वापिस किए? दामिनी ने दिल में सोच लिया के वो आज रात ठाकुर से ये बात पुछेगि.

दामिनी अपनी ही सोच में थी के उसे अचानक सरला का ध्यान आया. उस बेचारी का आज हवेली में दूसरा ही दिन था और आज ही उसने ये सब देख लिया. जाने उसपे क्या गुज़री होगी सोचते हुए दामिनी ने अपने कमरे के बीच का दरवाज़ा खोला और सरला के कमरे में दाखिल हुई. सरला वहाँ नही थी. दामिनी दरवाज़ा खोलकर उस कमरे में पहुँची जहाँ उसने सरला को बाथरूम इस्तेमाल करने के लिए कहा था. बाथरूम से शवर की आवाज़ आ रही थी मतलब के सरला यहीं है. दामिनी वहीं कोने में रखी एक कुर्सी पर बैठ गयी और सरला के बाहर निकलने का इंतेज़ार करने लगी.

थोड़ी देर बाद बाथरूम का दरवाज़ा खुला और उसके साथ ही दामिनी की आँखें भी खुली रह गयी. सरला नाहकार बाथरूम से बिल्कुल नग्न बाहर निकल आई थी. उसकी नज़र कमरे में बैठी सरला पर नही पड़ी और वो सीधी कमरे में शीशे के सामने जाकर खड़ी हो गयी. उसने सर पर तोलिया लपेटा हुआ था जिससे वो अपने बाल सूखा रही थी. दामिनी पिछे से उसके नंगे जिस्म को देखने लगी. हल्का सावला रंग, पति कमर. सरला की उठी हुई पिछवाड़ा देखकर दामिनी को उसकी माँ कजरी की पिछवाड़ा ध्यान में आ गयी. सरला की पिछवाड़ा भी उसकी माँ की तरह बड़ी और भरी हुई थी. सरला अब भी उससे बेख़बर अपने सर पर तोलिया रगड़ रही थी.

"यूँ नग्न बाहर ना आया कर. कमरे में कोई भी हो सकता है" दामिनी ने कहा

उसकी आवाज़ सुनते ही सरला फ़ौरन पलटी और कमरे में उसे देखकर उसके मुँह से हल्की चीख निकल पड़ी. उसने फ़ौरन हाथ में पकड़ा हुआ तोलिया अपने आगे करके अपनी स्तन और योनि को धक लिया. सरला के मुँह से हल्की हसी छूट पड़ी

"अरे तेरा सब देख लिया मैने. अब क्या छुपा रही है" वो मुस्कुराते हुए बोली

"आप कब आई मालकिन?" सरला ने पूछा

"अभी जब तू नहा रही थी. यूँ नग्न ना निकल आया कर कमरे से. समझी?" दामिनी ने उससे कहा. सरला ने रज़ामंदी में सर हिलाया. वो अभी भी शरम से सर झुकाए खड़ी थी.

"कपड़े पहेन कर नीचे आ जा. राते के खाने का वक़्त हो रहा है. खाना बनाना सीख ले जल्दी से तू" कहते हुए दामिनी कमरे से बाहर निकल गयी. उसने ये सोच कर राहत की साँस ली के हवेली में लाश मिलने की खबर से सरला परेशान नही दिख रही थी.

दामिनी नीचे आई तो ठाकुर और लक्ष्मण प्रसाद अब भी कुछ बात कर रहे थे. वो वहीं दीवार की ओट में खड़ी होकर सुनने लगी

"तो अब पठाण का क्या करना है?" ठाकुर इंद्रदेव सिंग कह रहे थे

"उसकी आप फिकर मत कीजिए. उसे मैं संभाल लूँगा. आपको फिकर करने की कोई ज़रूरत नही." लक्ष्मण प्रसाद ने जवाब दिया

"और उसे ये भी समझा देना के हमारे सामने दोबारा ऐसे बात की जैसे आज कर रहा था तो उसकी लाश भी कहीं ऐसे ही गढ़ी हुई मिलेगी" ठाकुर गुस्से में बोले

"आप चिंता ना कीजिए. मुझपे छोड़ दीजिए. आप बस अगले हफ्ते केस के दिन टाइम पे कोर्ट पहुँच जाइएएगा." लक्ष्मण प्रसाद कह रहा था

लक्ष्मण प्रसाद और ठाकुर उठ कर खड़े हो चुके थे. लक्ष्मण प्रसाद अपने सारे काग़ज़ समेट कर अपने बॅग में रख रहा था. तभी दामिनी को उपेर से सरला के सीढ़ियाँ उतरने की आवाज़ आई. वो दीवार की ओट से निकली और सर पर घूँघट डालकर किचन की तरफ बढ़ चली. उसके बड़े कमरे में आते ही ठाकुर और लक्ष्मण प्रसाद दोनो चुप हो गये.

रात को सरला के सोने के बाद दामिनी फिर उठकर अपने ससुर के कमरे में पहुँची. ठाकुर अब भी बड़े कमरे में ही बैठे हुए थे, चेहरे पर परेशानी के भाव लिए.

"क्या हुआ पिताजी? अब तक सोए नही आप?" दामिनी ने पूछा. उसने देख लिया था के दामूकाका भी अब तक हवेली में ही था.

"नही नींद नही आ रही" ठाकुर ने जवाब दिया

दामिनी ठाकुर को पिछे जा खड़ी हुई और उनके सर पर हाथ फेरने लगी

"चलिए आपको हम सुला देते हैं" उसने प्यार से कहा

ठाकुर ने उसका हाथ पकड़ा और प्यार से घूमाकर अपने सामने बैठाया

"आप जाकर सो जाइए. आज हवेली में जो कुछ हुआ उसे लेकर हम थोड़ा परेशन हैं"

दामिनी ठाकुर का इशारा समझ गयी. मतलब आज रात वो ठुकाई के मूड में नही थे और उसे अपने कमरे में जाकर सोने के लिए कह रहे थे. उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था के सामने से दामूकाका चाय की ट्रे लिए आता दिखाई दिया. दामिनी चुप हो गयी और उठकर खड़ी हो गयी.

"आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो हमें आवाज़ दे दीजिएगा" उसने ठाकुर से कहा

"नही आप आराम कीजिए. आप इस हवेली की मालकिन हैं, नौकर नही जो आपको हम यूँ परेशान करें. आप जाकर सो जाइए" ठाकुर ने प्यार से कहा

दामिनी अपने कमरे की तरफ चल दी. दामूकाका की बगल से निकलते हुए दोनो की आँखें एक पल के लिए मिली और दामिनी सीढ़ियाँ चढ़कर अपने कमरे में पहुँच गयी.

बिस्तर पर दामिनी को जैसे अपने उपेर हैरत हो रही थी. हवेली में एक लाश मिली थी जिसकी परेशानी ठाकुर के चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी. दामूकाका भी बोखलाया हुआ था. ऐसे महॉल में खुद दामिनी को भी परेशान होना चाहिए था पर हो इसका बिल्कुल उल्टा रहा था. वो परेशान होने के बजाय जैसे अपने अंदर एक ताक़त सी महसूस कर रही थी. हवेली में लाश मिलने की बात ने इस बात को साफ कर दिया था के हवेली में बहुत कुछ ऐसा है जो वो नही जानती. जो उसे मालूम करना था. और सबसे ज़्यादा हैरानी उसे अपने जिस्म में उठ रही आग पे था. वो पिच्छले कुछ दीनो से हर रात ठुक रही थी और आज रात भी उसका जिस्म फिर किसी मर्द के जिस्म की तलब कर रहा था. दामिनी ने अपने दिमाग़ से ये ख्याल झटकने की कोशिश की पर बार बार उसका ध्यान अपनी टाँगो के बीच उठ रही हलचल पर जा रहा था. दिन में कजरी के मुँह से ठुकाई की दास्तान सुनकर दोपहर से ही उसके दिल में वासना पूरे ज़ोर पर थी.

वो अपने ही ख्यालों में खोई हुई थी के बीच के दरवाज़े पर हल्की सी दस्तक हुई. सरला अपने

कमरे की तरफ से दरवाज़ा खटखटा रही थी. दामिनी ने उठकर दरवाज़ा खोला

"क्या हुआ?" उसने सामने खड़ी सरला से पूछा. सरला अब भी आधी नींद में थी. बाल बिखरे हुए.

"मालकिन मैं आपके कमरे में सो जाऊं? डर लग रहा है" सरला ने छहोटी बच्ची की तरह पूछा

"कैसा डर?" दामिनी ने पूछा

" जी वो जो आज हवेली में लाश मिली थी. बुरे बुरे सपने आ रहे हैं. मैं यहीं नीचे सो जाऊंगी" सरला जैसे रोने को तैय्यार थी.

दामिनी को उसपर तरस आ गया. आख़िर अभी बच्ची ही तो थी. और हमेशा अपनी मा के साथ सोती थी.

"आजा सो जा" दामिनी ने इशारा किया. सरला कमरे में आई तो दामिनी ने दोबारा दरवाज़ा बंद कर दिया.

सरला वहीं दामिनी के बिस्तर के पास नीचे बिछि कालीन पर आकर सो गयी. दामिनी फिर अपने बिस्तर पर जा गिरी.

आधी रात गुज़र गयी पर दामिनी की आँखों में नींद का कोई निशान नही था. उसके जिस्म में लगी आग उसे अब भी पागल किए जा रही थी. नीचे सरला जैसे दुनिया से बेख़बर सोई पड़ी थी. दामिनी ने बिस्तर पर आगे को सरक कर सरला पर नज़र डाली तो देखती रह गयी.

सरला उल्टी सोई हुई थी. उसकी कमर साँस के साथ उपेर नीचे हो रही थी. घाघरा चढ़ कर जाँघो तक आ चुका था और उसकी आधी से ज़्यादा टांगे नग्न थी. दामिनी ने उसके जिस्म को देखा तो उसकी साँसें और तेज़ हो गयी. सरला ग़रीब सही पर उसका जिस्म भगवान ने बिल्कुल उसकी माँ जैसा बनाया था. एकदम गाथा हुआ. जिस्म का हर हिस्सा जैसे तराशा हुआ था. जहाँ जितना माँस होना चाहिए उतना ही. ना कम ना ज़्यादा. उसकी पिछवाड़ा देखकर दामिनी समझ गयी के सरला ने अंदर पॅंटी नही पहेन रखी थी. शायद ज़िंदगी में कभी नही पहनी इसलिए उतारकर सोती है. कमर पर भी चोली के नीचे ब्रा के स्ट्रॅप्स नही थे. शायद वो भी उतारकर आई थी. दामिनी को वो पल याद आया जब उसने सरला को नाहकार नग्न निकलते देखा था. उसका हाथ जैसे अपने आप आगे पड़ा और बिस्तर के साइड में लेटी सरला के घाघरे को पकड़कर उपेर सरकाने लगा. घाघरा सरला के नीचे दबा हुआ था इसलिए दामिनी को उसे थोड़ा खींचना पड़ा. उसके दिल में ज़रा भी ये डर नही था के सरला जाग गयी तो क्या सोचेगी.

थोडा ज़ोर लगाकर खींचा तो घाघरा सरला की पिछवाड़ा से उठकर उसकी कमर तक आ

गया. सरला नींद में थोड़ा हिली. शायद पिछवाड़ा पर एसी की ठंडी हवा महसूस होने से या फिर घाघरा उपेर सरकने की हुलचूल से पर फिर दोबारा नींद में चली गयी. दामिनी एकटक उसकी खुली हुई पिछवाड़ा को देखती रही. उसकी पिछवाड़ा की गोलाई जैसे कमाल थी. दामिनी ने अपना एक हाथ आगे बढ़ाया और धीरे से सरला की पिछवाड़ा पर फिराया. ऐसा करते ही उसके मुँह से आ निकल पड़ी. टाँगो के बीचे की आग और तेज़ हो गयी और फिर उसे बर्दाश्त ना हुआ. उसने जल्दी से अपनी नाइटी उपेर खींची और पैंटी उतारकर एक तरफ फेंक दी.

अपनी टांगे फेला दी और एक हाथ से अपनी योनि मसल्ने लगी. दूसरा हाथ उसने फिर सरला की पिछवाड़ा पर रखा धीरे धीरे सहलाने लगी. दामिनी को जैसे अपने उपेर यकीन नही हो रहा था. वो एक लड़की की पिछवाड़ा देखकर उसे सहलाते हुए गरम हो रही थी और अपनी योनि मसल रही थी. एक दूसरी औरत का जिस्म उसके जिस्म में आग लगा रहा था, उसे मज़ा दे रहा था. दामिनी के दिमाग़ में फिर ख्याल आया के क्या वो ठीक है जो औरत को देखकर भी गरम हो जाती है या ये बरसो से दभी हुई वासना है जो औरत और मर्द दोनो का स्पर्श पाकर बाहर आ जाती है. एक पल के लिए आए इस ख्याल को दामिनी ने अपने दिमाग़ से निकाला और सरला की पिछवाड़ा सहलाते हुए अपनी योनि में उंगली करने लगी.

भाग - 8

अगले दिन सुबह दामिनी की आँख खुली तो सरला उठकर जा चुकी थी. वो अपने बिस्तर से उठी और नीचे आई तो ठाकुर कहीं बाहर जा रहे थे.

"हम दोपहर तक लौट आएँगे. लक्ष्मण प्रसाद का फोन आया था. कह रहा थे के इंस्पेक्टर पठाण से हमें भी उसके साथ मिल लेना चाहिए" उन्होने दामिनी को देखते हुए कहा

"जी ठीक है." दामिनी ने जवाब दिया

"आपको कहीं जाना तो नही है आज?" ठाकुर ने पूछा

"नही कहीं नही जाना" दामिनी ने जवाब दिया

"वैसे कल कहाँ थी आप सारा दिन?" ठाकुर कार की चाबियाँ उठाते हुए बोले

"जी ऐसे ही अपनी ज़मीन के चक्कर लगा रही थी. देख रही थी के कहाँ से दोबारा शुरुआत किया जाए." दामिनी बोली

"तो कुछ पता चला के कहाँ से दोबारा शुरू करने वाली हैं आप?" ठाकुर ने मुस्कुराते हुए सवाल किया

दामिनी ने हां में सर हिला दिया. ठाकुर उसकी और देखकर हसे और हवेली से बाहर निकल गये.

ठाकुर के जाने के बाद दामिनी वहीं बड़े कमरे में बैठ गयी. पूरी रात सोने के बावजूद उसका पूरा जिस्म जैसे टूट रहा था. उसे समझ नही आ रहा थे के ऐसा इसलिए है क्यूंकी कल रात वो हवेली में लाश मिलने की बात से परेशान थी या इसलिए के कल रात वो ठुकी नही थी. जो भी था, दामिनी का दिल कर रहा था के वो फिर बिस्तर पर जा गिरे. उसने घूमकर सरला को आवाज़ दी. उसकी आवाज़ सुनकर सरला और दामूकाका दोनो किचन से बाहर आए

"एक कप चाय ले आ ज़रा" दामिनी ने कहा और दामूकाका की तरफ पलटी "इसे खाना बनाते वक़्त अपने साथ रखिए और खाना बनाना सीखा दीजिए ज़रा"

"जी वही कर रहा हूँ" दामूकाका ने जवाब दिया. वो दोनो पलटकर फिर किचन की तरफ बढ़ गये.

दामिनी का ध्यान फिर हवेली में मिली लाश की तरफ चला गया. किसकी हो सकती थी? कब से वहाँ थी? हवेली में कोई खून हुआ हो ऐसा उसने कही सुना तो नही था फिर अचानक? वो अपने ख्यालों में ही के के तभी फोन की घंटी बज उठी. दामिनी ने आगे बढ़कर फोन उठाया

"कैसी हैं दीदी?" दूसरी तरफ से एक जानी पहचानी आवाज़ आई. ये उसके छहोटे भाई मनीष की आवाज़ थी.

मनीष दामिनी का लाड़ला छोटा भाई था. वो दामिनी से 5 साल छोटा था और दामिनी के बचपन का खिलोना था. वो उसे बड़े लाड से रखती थी, उसकी हर बात मानती और हमेशा उसे अपने माँ बाप की डाँट से बचाती. मनीष यूँ तो दिमाग़ से बड़ा तेज़ था पर किताबें शायद उसके लिए नही बनी थी. वो बहुत ही छहोटी उमर में स्कूल से निकल गया था और अपने बाप का काम काज में हाथ बटाया करता था. दामिनी के पिता का कपड़ों का बहुत बड़ा कारोबार था अब मनीष ही उसकी देख रेख करता था.

"ठीक हूँ. तू कैसा है?" दामिनी ने पूछा

"मैं भी ठीक हूँ. आप तो अब याद ही नही करती. मैने पहले भी 2-3 बार फोन किया था पर किसी ने उठाया ही नही. मम्मी पापा भी आपके लिए काफ़ी परेशान थे." मनीष बोला

"हां शायद मैं इधर उधर कहीं होगी इसलिए फोन नही उठाया" दामिनी बोली

"कभी खुद फोन कर लेती दीदी. आप तो हमें भूल ही गयी" मनीष शिकायत बोला तो दामिनी को ध्यान आया के उसने महीनो से अपने माँ बाप से बात नही की थी

"वो सब छोड़" दामिनी ने बात टालते हुए कहा "काम कैसा चल रहा है?"

"सब ठीक है दीदी." मनीष ने जवाब दिया "आप कुछ दिन के लिए घर क्यूँ नही आ जाती. उस मनहूस हवेली में आख़िर तब तक अकेली रहेंगी आप?"

दामिनी बस हलकसे इतना ही निकाल पाई

"आऊँगी. ज़रूर आऊँगी."

"अच्छा एक काम कीजिए. मैं आपसे मिलने आ जाऊं?" मनीष बोला

"नही तू मत आ मैं ही घर आ जाऊंगी" दामिनी ने फ़ौरन मना किया. उसे डर था के अगर मनीष यहाँ आ गया तो शायद उसके रास्ते में रुकावट बन सकता है

"कब?" मनीष ने पूछा

"जल्दी ही" दामिनी प्यार से बोली

"अच्छा एक काम कीजिए. घर फोन करके मम्मी से बात कर लीजिए. मैं अभी रखता हूँ. बाद में फोन करूँगा" मनीष ने कहा

"ठीक है" दामिनी ने अपनी भाई को प्यार से अपना ध्यान रखने के लिए कहा और फोन रख दिया. ज़िंदगी में अगर कोई एक इंसान जिसे दामिनी ने सबसे ज़्यादा चाहा था तो शायद वो उसका अपना भाई था. वो अपने भाई के लिए जान तक दे सकती थी, बिना सोचे. पर वक़्त ने कितना कुछ बदल दिया था उसके लिए. अब एक वक़्त ये भी आया था के उसी भाई से बात किए उसे महीनो गुज़र गये थे.

फोन रखकर दामिनी उठी जे तभी सरला चाय लेकर आ गयी. दामिनी को रात का वो नज़ारा याद आया जब उसने सरला की पिछवाड़ा पर हाथ फेरते हुए अपने जिस्म की आग ठंडी की थी. वो एकटूक सरला को देखने लगी, उसकी अल्हड़ जवानी को निहारने लगी.

"क्या हुआ मालकिन?" सरला ने पूछा "ऐसे क्या देख रही हैं?"

"कुछ नही" दामिनी ने कहा और अपने कमरे की तरफ बढ़ गयी.

अगला कुछ वक़्त दामिनी ने यूँ ही बिस्तर पर पड़े पड़े ही गुज़ार दिया. उसका पूरा बदन टूट रहा था. लग रहा था जैसे बरसो की बीमार हो. उसे बहुत सारे काम करने थे पर हिम्मत ही नही हो रही थी के उठे. थोड़ी देर बाद दरवाज़े पर नॉक हुआ. दामिनी ने उठकर दरवाज़ा खोला. सामने सरला खड़ी थी.

"माँ आई हैं. कह रही थी के आपने बुलाया था" सरला ने कहा तो दामिनी को ध्यान आया के उसने आज कजरी को आने के लिए कहा था

"हां उसे यहीं उपेर मेरे कमरे में ले आ" उसने सरला को कहा और फिर बिस्तर पर आकर बैठ गयी. थोड़ी ही देर बाद सरला अपनी माँ के साथ वापिस आई

"नमस्ते मालकिन" दामिनी को देखते ही कजरी ने हाथ जोड़े

"नमस्ते" दामिनी ने जवाब दिया "आ अंदर आजा"

कजरी वहीं कमरे में आकर खड़ी हो गयी. सरला बाहर दरवाज़े पर ही खड़ी थी.

"अपनी माँ को चाय पानी के लिए नही पुछेगि?" दामिनी ने कहा तो सरला मुस्कुरकर नीचे

चली गयी.

"कैसी है?" दामिनी ने कजरी की तरफ देखकर कहा "बैठ ना"

"ठीक हूँ" कहती हुई कजरी वहीं नीचे ज़मीन पर बिछि कालीन पर बैठ गयी

"घर जाने की कोई जल्दी तो नही है ना?" दामिनी ने मुस्कुराते हुए पूछा

"नही तो." कजरी हैरानी से बोली "क्यूँ?"

"नही मैं सोच रही थी के तेरा और बबलू का तो रोज़ का प्लान होता है ना वो भी दिन में 3-4 बार. इसलिए मैने सोचा के ....." दामिनी ने बात अधूरी छोड़ दी.

कजरी की हसी छूट पड़ी.

"नही अभी आज को कोटा पूरा करके आई हूँ" उसने हस्ते हुए कहा

"आगे से पूरा करवाके आई है या पिछे से?" दामिनी ने भी उसी अंदाज़ में पूछा

दोनो ज़ोर ज़ोर से हासणे लगी. तभी सरला पानी लेकर आ गयी

"चाय पिएगी माँ?"उसने कजरी से पूछा

"नही रहने दे" कजरी ने पानी का ग्लास लिया और पानी पीने लगी

"सरला तू नीचे जाके दामूकाका का हाथ में काम बटा. मुझे तेरी माँ से एक ज़रूरी बात करनी है" दामिनी ने सरला को जाने का इशारा किया. सरला सहमति में गर्दन हिलती नीचे चली गयी.

कजरी ने पानी ख़तम करके ग्लास एक तरफ रखा और दामिनी की तरफ देखकर बोली

"मुझसे ज़रूरी बात करनी है?"

"हां" दामिनी हल्के से हस्ते हुए बोली "तुझसे ये सीखना है के तू लिंग पिछवाड़ा में भी कैसे ले लेती है?"

दोनो फिर ज़ोर ज़ोर से हासणे लगी. दामिनी ने कह तो दिया पर अगले ही पल अपनी ग़लती का एहसास हुआ. कजरी के नज़र में वो विधवा थी तो उसे ये क्यूँ पता करना था, उसे

किसका लिंग लेना था अब. पति तो उसका मर चुका था.

"तुझसे कुछ बातें मालूम करनी थी" उसे हसी रोक कर पूछा

"हां पुच्छिए" कजरी ने कहा

"पर एक बात है. जो बातें यहाँ बंद कमरे में मेरे और तेरे बीच हो रही हैं कहीं और बाहर ना जाएँ" उसने ऐसे कहा जैसे कजरी से एक आश्वासन माँग रही हो

"आप फिकर ना करें मालकिन" कजरी ने कहा "ज़ुबान खुले तो कटवा दीजिएगा"

"देख मुझे वैसे तो हवेली में आए 10 साल से उपेर हो चुके हैं" सरला उठकर कमरे में चहल कदमी करने लगी "पर मेरे आने के कुछ वक़्त तक ही ये हवेली एक घर थी. उसके बाद तो जैसे एक वीरान खंडहर हो गयी जहाँ मैं और पिताजी भूत की तरह बसे हुए हैं"

कजरी ने सहमति में सर हिलाया

"मेरे पति का मरना मेरी सबसे बड़ी बदक़िस्मती थी. पर उससे भी ज़्यादा बुरा हवेली का यूँ बर्बाद हो जाना है. मैं जानती हूँ के हवेली और पिताजी के घर खानदान के बारे में काफ़ी कुछ ऐसा है जो मैं नही जानती पर मालूम करना चाहती हूँ" दामिनी ये सब कहते हुए जैसे अंधेरे में तीर चला रही थी. उसे भुसन की कही हुई वो बात आज भी याद थी के उसके पति की हत्या की वजह यहीं हवेली में दफ़न है कहीं, जिसे उसको पता करना है.

"आप क्या कह रही हैं मालकिन?" कजरी ने पूछा

"मैं ये कह रही हूँ के तेरा मर्द तो हमेशा से ठाकुर साहब के लिए काम करता था और तू भी बड़े वक़्त से यहीं हमारी ज़मीनो पर काम कर रही है. क्या तू मुझे कुछ ऐसा बता सकती हैं जो मैं नही जानती पर जिस बात की खबर मुझे होनी चाहिए?"

"आप करना क्या चाहती हैं मालकिन?" कजरी ने थोड़ी फिकर भारी आवाज़ में पूछा

"मैं इस हवेली को दोबारा घर बनाना चाहती हूँ. यहाँ दोबारा खुशियाँ देखना चाहती हूँ. फिर से इसे वैसे ही देखना चाहती हूँ जैसी के ये पहली थी और इसके लिए ज़रूरी है के मुझे पहले सब कुछ पता हो ताकि मैं बर्बादी की हर वजह को मिटा सकूँ. समझी?" दामिनी एक साँस में बोली

कजरी ने हां में सर हिलाया

"तो अब बता" दामिनी उसके सामने बिस्तर पर बैठते हुए बोली "तू जानती है ऐसा कुछ?"

"छोटा मुँह बड़ी बात हो जाएगी मालकिन" कजरी ने हिचकिचाते हुए बोला

"तू फिकर ना कर. "दामिनी ने कहा "बस कुछ जानती है है तो बता मुझे"

"मैं नही जानती मालकिन के आपके लिए क्या ज़रूरी है क्या नही या आप क्या जानती हैं क्या नही. मैं बस अपने हिसाब से आपको कुछ बातें बता देती हूँ जो मुझे लगता है के आपसे च्छुपाई गयी होंगी. इस घर की नयी बहू से जो की आप आज से 10 साल पहले थी." कजरी ने कहा तो दामिनी ने हां में सर हिलाया

"आपको क्या लगता है के ठाकुर साहब की बर्बादी का सबसे बड़ा ज़िम्मेदार कौन है?" कजरी ने पूछा तो दामिनी ने अपने कंधे हिलाए जैसे कह रही हो के पता नही

"आप अपने देवर राजवर्धन सिंग के बारे में जानती हैं ना?" कजरी ने पूछा "ठाकुर साहब के छहोटे भाई का बेटा"

दामिनी ने हां में सर हिलाया

"वो हैं आस्तीन का असली साँप जो आपके पति ने पाल रखा था. आपके पति के मरते ही उसने ठाकुर साहब का सब कुछ ऐसे हड़प लिया जैसे कबे मौके की ताक में बैठा हो" कजरी ने आवाज़ यूँ नीची की जैसे बहुत बड़े राज़ की बात बता रही हो

"मालूम है मुझे" दामिनी ने कहा

"आप जानती हैं उसने ऐसा क्यूँ किया जबकि ठाकुर साहब ने अपने तीन बेटों के साथ उसे भी अपने चौथे बेटे की तरह पाला था" कजरी ने पूछा

दामिनी ने फिर इनकार में सर हिलाया

"क्यूंकी गाओं में हर कोई ये कहता है के ठाकुर साहब ने पूरी जायदाद के लिए खुद अपने भाई का खून किया था" कजरी ने कहा

दामिनी पर जैसे कोई बॉम्ब गिरा हो

"मैं नही मानती. बकवास है ये" उसने कजरी से कहा

"मैं भी नही मानती मालकिन पर गाओं और आस पास के सारे इलाक़े में हर कोई यही कहता

है. और जहाँ तक मेरा ख्याल है राजवर्धन सिंग के कानो में भी यही बात पड़ गयी इसलिए तो खुद अपने चाचा के खिलाफ दिल में ज़हेर पालता रहा" कजरी ने जवाब दिया

"पर पिताजी ऐसा क्यूँ करेंगे?" दामिनी बोली

"वही तो." कजरी ने कहा "आपके ससुर और उनके भाई में बहुत बनती थी. भाई कम दोनो दोस्त ज़्यादा थे इसलिए तो ठाकुर साहब ने अपने भाई के बेटे को अपने बेटे की तरह पाला"

"राजवर्धन सिंग के माता पिता की मौत कैसे हुई थी?" दामिनी ने पूछा

"कार आक्सिडेंट था. गाड़ी खाई में जा गिरी थी. सब कहते हैं के ठाकुर साहब ने ही गाड़ी में कुछ खराबी की थी जिसकी वजह से आक्सिडेंट हुआ था." कजरी बोली

"कोरी बकवास है ये" दामिनी थोड़ा गुस्से में बोली "मैं जानती हूँ पिताजी को. वो ऐसा कुछ कर ही नही सकते"

"मैं जानती हूँ नही कर सकते मालकिन" कजरी ने भी हां में हां मिलाई "मैं तो बस आपको बता रही हूँ के गाओं के लोग क्या कहते हैं. मुझसे पुच्छिए तो मैं तो खुद ये कहती हूँ के ठाकुर साहब जैसा भला आदमी हो ही नही सकता"

उसकी बात सुन दामिनी मुस्कुराइ. जैसे अपने प्रेमी की तारीफ सुनकर खुश हुई हो

"और कोई बात?" उसने कजरी से पूछा

"हां एक बात है तो पर पता नही के कितनी सच्ची है" कजरी ने कहा

"बता मुझे" दामिनी बोली

"मेरे मर्द की और मेरी एक अजीब आदत थी" कजरी ने कहा "बिस्तर पर हम चुप नही रहते थे. बातें करते करते ठुकाई करते थे"

"कैसी बातें?" दामिनी हैरत से बोली "वो कोई बातें करने का टाइम होता है भला?"

"जानती हूँ बातें करने का वक़्त नही होता पर ठुकाई की बातें करने का वक़्त वही होता है मालकिन. सच बड़ा मज़ा आता था" कजरी मुस्कुराते बोली

"मैं कुछ समझी नही" दामिनी बोली

"जब वो मुझे ठोक्ता था तो हम गंदी गंदी बातें करते थे. जैसे मैं उसे कहती थी के योनि मारो, पिछवाड़ा मारो और वो कहता था के लिंग चूस मेरा, पिछवाड़ा में ले, घोड़ी बन, उपेर आ. कभी कभी हम दोनो सोचते थे के हम बिस्तर पर नही कहीं और ठुकाई कर रहे हैं जैसे खेत में या नदी किनारे और फिर हम दोनो बातों बातों में ठुकाई करते थे. असल में वो मुझे उस वक़्त ठोका करता था और बातों में कहीं और ठुकाई चल रही होती थी. वो मुझे कहता के अब मैं तुम्हें झुका कर ठोक रहा हूँ और मैं कहती के मेरी स्तन तुम्हारे हर धक्के के साथ हिल रही हैं. समझ रही हैं आप?" कजरी ने कहा

"कुछ कुछ" दामिनी बोली

"ऐसी ही एक ठुकाई के वक़्त उसने मुझे बताया था के उसने आज एक लड़की को ठुकते हुए देखा और बताया के उसने क्या देखा. मुझे ठोक्ते हुए उसने पूरी कहानी बताई के उसने क्या देखा था. हम दोनो को बहुत मज़ा आया. ठुकाई के बाद जब मैने उससे पूछा के वो लड़की कौन थी तो वो बात टाल गया. और फिर अक्सर ऐसा ही करता. मुझे ठोक्ता तो उस लड़की की कहानी दोहराता. उसकी स्तन कैसी थी बताता. वो कैसे ठुक्व रही थी ये पूरा अच्छे से मुझे बताता पर हमेशा उस लड़की का नाम टाल जाता. फिर एक दिन मैने उसे योनि देने से इनकार कर दिया. शर्त ये रखी के मैं योनि तब तक नही दूँगी जब तक के वो मुझे ये नही बताता के वो लड़की कौन थी. तब जाके उसने मुझे उसका नाम बताया." कजरी ने कहा और चुप हो गयी

"कौन थी लड़की?" दामिनी ने पूछा. कजरी ने जवाब ना दिया

"बता ना" दामिनी ने फिर कहा

"आपकी ननद, श्यामला" कजरी ने जैसे धमाका किया "ठाकुर साहब के एकलौती बेटी"

"तू जानती है तू क्या बकवास कर रही है?" दामिनी लगभग चीखते हुए बोली

"मैं नही मालकिन ऐसा मेरा मर्द कहता था" कजरी ज़रा सहमी से आवाज़ में बोली

"ठाकुर साहब के कानो में अगर ये बात पड़ गयी तो जानती है ना के तेरा क्या अंजाम होगा" दामिनी ने कहा

"जानती हूँ मालकिन और यही बात मैने अपने मर्द से कही थी." कजरी ने कहा तो दामिनी ने अपने चेहरे से गुस्से के भाव हटाए

"क्या बताया था तेरे मर्द ने?" उसने कजरी ने पूछा पर कजरी ने डर से कुछ ना कहा

"अच्छा डर मत ये बात कहीं नही जाएगी. अब बता" दामिनी ने ज़रा मुस्कुराते हुए कहा

"जी मेरे घर से थोड़ी दूर पहले आपकी ज़मीन पर एक ट्यूबिवेल होता था. तब वहाँ पर हर भर खेत थे जिनकी देखभाल मेरा मर्द करता था" कजरी ने बताना शुरू किया

"वो कहता था के एक दिन उसे श्यामला की गाड़ी खेतों के बाहर सड़क पर खड़ी दिखाई दी. गाड़ी इस अंदाज़ में खड़ी की थी के सड़क से किसी को ना दिखे पर अगर कोई खेत की तरफ से आए तो उसे साफ नज़र आती थी. वो हैरत में पड़ गया के श्यामला के गाड़ी यहाँ क्या कर रही है. वो उसे ढूंढता हुआ ट्यूबिवेल की तरफ निकला क्यूंकी वहीं पर ठाकुर साहब ने थोड़ी जगह साफ करवाके एक छोटा सा कमरा बनवा रखा था. उसी के आगे वो अक्सर आके बेता करते थे और उसी कमरे में एक कुआँ था जिसमें ट्यूबिवेल लगा हुआ था. मेरे मर्द को लगा के श्यामला भी शायद उधर ही गयी होगी. वो उसे ढूंढता हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा के कमरे का ताला खुला हुआ था पर दरवाज़ा अंदर से बंद था और अंदर से किसी के धीमी आवाज़ में बात करने की आवाज़ आ रही थी. टुबेवेल्ल की मोटर कमरे के अंदर थी और ट्यूबिवेल का पाइप कमरे में एक जगह से बाहर निकलता था. मेरे मर्द ने वहीं से अंदर झाँक कर देखा तो....."

"तो क्या?" दामिनी ने पूछा "बता मुझे"

"वो कहता था के उसने देखा के श्यामला नीचे ज़मीन पर झुकी हुई थी, बिल्कुल नग्न. वो जहाँ से देख रहा था वहाँ से उसे श्यामला के आगे का हिस्सा नज़र आ रहा था, मतलब के उसकी कमर से उपेर का हिस्सा. उसकी स्तन नीचे को लटकी हुई थी और वो आगे पिछे हो रही थी जिससे के ज़ाहिर था के पिछे से कोई उसे ठोक रहा था. उसके बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे और उसने मज़े में आँखें बंद की हुई थी" कजरी बोली

"कौन ठोक रहा था?" दामिनी ने जल्दी से पूछा

"ये मेरा मर्द नही देख पाया क्यूंकी श्यामला की कमर से नीचे का हिस्सा उसे नज़र नही आ रहा था. उसने बस किसी के हाथों को देखा था जो श्यामला की कमर और उसकी स्तनों को सहला रहे थे, हाथ किसके थे ये वो नही देख पाया.'"कजरी बोली

"फिर?" दामिनी ने सवाल किया

"फिर वो कहता था के ठुक्ते ठुक्ते श्यामला ने अपनी गर्दन घुमाई और ठीक उस तरफ देखा जहाँ से मेरा मर्द झाँक रहा था. उसे लगा के श्यामला ने उसे देख लिया है और वो वहाँ से सर पर पावं रखकर भागा." कजरी ने बोला

"उसने वहाँ रुक कर ये देखने की कोशिश नही की के श्यामला के साथ वो आदमी कौन था?" दामिनी ने पूछा

"मज़ाक कर रही हैं? उसे तो लगा था के वो अब गया जान से. उसने सोचा श्यामला ठाकुर साहब से कहके उसकी गर्दन कटवा देगी. 2-3 दिन तक बोखलाया सा रहा और फिर जब उसे

लगा के कुछ नही हुआ तो तब उसने मुझे ये बात बताई." कजरी ने जवाब दिया

"हर रात यही बात करता था?" दामिनी ने कहा

"हां. मर्द था ना. ठोक मुझे रहा होता था और याद उसे नग्न श्यामला आती थी" कजरी ने ऐसे कहा जैसे अपने मरे हुए मर्द को ताना मार रही हो

"फिर क्या हुआ? उसने दोबारा कभी देखा श्यामला को वहाँ?" दामिनी ने सवाल किया

"कहाँ मालकिन. महीने भर बाद ही मर गया था वो."

"कैसे?"

"वहीं उसी कमरे में. जो कुआँ बना हुआ है ना अंदर, उसी में लाश मिली थी उसकी. टुबेवेल्ल ठीक करने गया था और पता नही कैसे अंदर गिर पड़ा. उसका सर नीचे जा रहे ट्यूबिवेल के पाइप पे लगा और वो मर गया. पता नही चोट लगने से या डूबके मरने से." कजरी ने आह लेते हुए कहा

"बुरा ना माने तो एक बात कहूँ मालकिन?" कजरी बोली

"हां बोल" दामिनी ने कहा

"श्यामला के बारे में लोग अच्छा नही कहते. जो नौकर उस वक़्त यहाँ काम करते थे वो कहते थे के उसका चल चलन ठीक नही है. पता नही क्यूँ कहते थे पर हर कोई कहता था के सीधी सी दिखने वाली चुप चुप रहने वाली श्यामला ऐसी नही थी जैसी वो दिखती थी"

"हां कुछ ऐसा सुना था मैने भी. पर आज से पहले किसी ने ऐसी किसी घटना का ज़िक्र नही किया था." दामिनी ने जवाब दिया

"नौकरों से ध्यान आया मालकिन" कजरी बोली "अब तो घर में कोई नौकर बचा नही, इतनी बड़ी हवेली का ध्यान कैसे रखती हैं?"

"दामूकाका है ना. और फिर हम हवेली में 2 ही लोग हैं. मैं और पिताजी. चल जाता है" दामिनी ने कहा

"हां यही एक बेचारा रह गया जो हमेशा आपका वफ़ादार रहा."कजरी बोली "और वैसे भी इस उमर में जाता कहाँ. कोई है ही नही आगे पिछे. एक बीवी थी वो छोड़के भाग गयी"

"भाग गयी?" दामिनी ने हैरानी से पूछा "मुझे लगा था के वो मर गयी थी"

"अरे नही मालकिन" कजरी ने कहा "इतनी जल्दी कहाँ. अपनी भारी जवानी में थी वो"

"मतलब?" दामिनी ने पूछा

"जब इसने शादी की थी तो ये लगभग 40 का था और वो लड़की मुश्किल से 20 की. कोई 15 साल इसके साथ रही और फिर भाग गयी किसी और के साथ" कजरी बोली

दामिनी को इस बात से काफ़ी हैरानी हुई. वो पुच्छना चाहती थी के वो लड़की क्यूँ भागी पर फिर जवाब खुद अपने दिल ने ही दे दिया. जब दामूकाका 40 का था तो बिस्तर पे उसे खुश रखता होगा. 15 साल में उमर ढली तो इसकी जवानी गयी और जवानी के साथ ही बीवी भी किसी और के साथ गयी.

दामिनी और कजरी थोड़ी देर और इधर उधर की बातें करते रहे. कजरी ने उसे गाओं और ठाकुर साहब की जायदाद के बारे में काफ़ी कुछ बताया पर कुछ भी ऐसा नही जो दामिनी पहले से ना जानती हो. कुछ देर बाद कजरी ने उठते हुए कहा के अब उसको चलना चाहिए.

"क्यूँ फिर टाँगो के बीच आग लग रही है क्या?" दामिनी ने कहा तो कजरी भी उसके साथ हस पड़ी

"वैसे मानना होगा तुझे कजरी. कोई देखके कह नही सकता के एक जवान बेटी की माँ है तू. साथ खड़ा कर दो तो सरला की बड़ी बहेन लगेगी, माँ नही" दामिनी बोली

"छोड़िए मालकिन" हस्ते हुए कजरी ने कहा और कमरे से बाहर चली गयी.

दामिनी वहीं बिस्तर पर बैठी थोड़ी देर तक उसकी बातों पर गौर करती रही. अगर जो कजरी ने कहा था वो सच था तो श्यामला के बारे में जो घर के नौकर कहते थे वो भी ठीक ही था. मतलब कोई प्रेमी था उसका जिससे मिलने वो उस दिन खेतों की तरफ गयी थी और बहुत हद ये भी मुमकिन था के वहीं आदमी उससे मिलने हवेली में आता था. और ये भी मुमकिन था के उसी ने वीरभद्र का भी खून किया हो. पर अब सवाल ये था के वो आदमी था कौन.

यही सोचती दामिनी अपने कमरे की खिड़की के पास आकर खड़ी हुई और नीचे देखने लगी. सामने से एक कार आकर रुकी और उसका देवर तेज गाड़ी से बाहर निकला. उसके पति का दूसरा भाई.

"आ गये मियाँ अययश" दामिनी ने दिल में सोचा

तभी हवेली के दरवाज़े से कजरी निकली और तेज के सामने हाथ जोड़कर नमस्ते करती हुई उसकी बगल से निकल गयी. जिस बात ने दामिनी का ध्यान अपनी और किया वो था तेज का पलटकर कजरी को देखना. वो कुछ पल के लिए पिछे से कजरी को देखता रहा. जिस अंदाज़ से वो देख रहा था उससे दामिनी ने यही अंदाज़ा लगाया के वो कजरी की पिछवाड़ा देख रहा था. कजरी थोड़ा आगे निकल गयी तो तेज पलटकर हवेली में दाखिल हो गया.दामिनी खिड़की से हटी ही थी के उसके दिमाग़ में एक ख्याल आया और वो मुस्कुरा उठी.

तेज अय्याश था, औरतों का शौकीन और इसी चक्कर में यहाँ वहाँ रंडियों में मुँह मारता फिरता था. दामिनी चाहती थी के वो हवेली में रुके और अपनी ज़मीन जायदाद की देखभाल की तरफ ध्यान दे, अपने पिता का हाथ बताए पर इसके लिए ज़रूरी था उसका हवेली में रुकना. उसे रोकने का एक तरीका ये था के घर में ही उसके लिए योनि का इन्तेजाम कर दिया जाए. दामिनी ने दोबारा खिड़की से बाहर कॉपाउंड में जाती हुई कजरी को देखा, फिर एक पल सरला के बारे में सोचा और खुद ही मुस्कुरा उठी.

दामिनी अपने कमरे से बाहर निकली तो सामने से आता तेज मिल गया

"प्रणाम भाभी माँ" उसने बिल्कुल ठाकुरों के अंदाज़ में हाथ जोड़े और झुक कर दामिनी के पावं च्छुए

एक बात जो दामिनी को हैरत में डालती थी वो ये थी के तेज लाख आय्याश सही पर उसका हमेशा बहुत आदर करता था. हवेली में वो जबसे आई थी तबसे वो हमेशा उसे भाभी माँ कहकर बुलाता था और हमेशा उसके पावं छुता था

"कैसे हो तेज?" दामिनी ने पूछा

"ठीक हूँ भाभी. आप कैसी हैं?" तेज ने जवाब दिया

"ठीक हूँ. घर की याद आ गयी आपको?" दामिनी ने हल्का सा ताना मारते हुए कहा. तेज ने कोई जवाब नही दिया

"दोबारा कब जा रहे हैं?" दामिनी ने फिर सवाल किया

"आप ऐसा क्यूँ कह रही हैं भाभी?" तेज ने कहा

"और कैसा कहूँ तेज?" दामिनी ने हल्का सा गुस्सा दिखाते हुए कहा "एक जवान देवर के होते हुए अगर उसकी भाभी को सार काम करना पड़ा तो और क्या कहूँ मैं?"

"कैसा काम भाभी?" तेज हल्का शर्मिंदा होते हुए बोला "आप मुझे कहिए"

"आप यहाँ हों तो आपको कहूँ ना. आप तो इस घर में मेहमान की तरह आते हैं" दामिनी ना उसी अंदाज़ में दोबारा ताना मारा

तेज फिर चुप खड़ा रहा. दामिनी को हमेशा उसपर हैरत होती थी. ये वही तेज वीर सिंग है जिसने जाने कितनी लाशें गिरा दी थी अपने भाई का बदला लेने के लिए, ये वही तेज है जिसके सामने कोई ज़ुबान नही खोलता था, खुद ठाकुर साहब भी नही पर दामिनी के सामने तेज हमेशा सर झुकाए ही खड़ा रहता था.

"खैर अब आप आए ही हैं तो हम चाहते हैं के आप कुछ दिन रुकें. हवेली में कुछ काम है और हमें अच्छा लगेगा के आप हमारा हाथ बटाये" दामिनी ने कहा

"जैसा आप ठीक समझें" तेज ने कहा और अपने कमरे की तरफ बढ़ गया

दामिनी उसे जाता देखकर मुस्कुराइ. वो जानती थी के उसका प्लान काम कर रहा है.

दामिनी नीचे आकर किचन में पहुँची. सरला और दामूकाका खाना लगभग तैय्यार कर चुके थे.

"खाना तैय्यार है बहू रानी" दामूकाका ने कहा

"मैं अभी नही खाऊंगी" दामिनी ने कहा "पिताजी के आने के बाद ही खाऊंगी."

फिर वो सरला की तरफ पलटी

"जाकर छहोटे मलिक के कमरे में पुच्छ आ कि उन्होने अभी खाना है या नही" वो चाहती थी के तेज सरला को देखे और उसे पता चल जाए के उसके लिए इस घर में ही योनि का इन्तजाम है. एक कच्ची कुँवारी कली का.

दामिनी वापिस अपने कमरे में पहुँची और सोच में पड़ गयी. उसने तेज को यहाँ रुकने को कह तो दिया था पर इससे खुद उसके लिए परेशानी खड़ी हो गयी थी. पहली परेशानी तो ये के इतने आदमियों के रहते वो खुले तौर पर ठाकुर से नही ठुकवा सकती थी. अब जो कुछ भी हो चोरी छुपे ही हो सकता था, बड़ी सावधानी के साथ. दूसरी बात ये के ठाकुर अपने दूसरे बेटे तेज को इतना पसंद नही करते थे और ना ही तेज की अपने पिता के साथ कोई बोलचाल थी. इस वजह से शायद ठाकुर काम में तेज की धखल अंदाज़ी पसंद ना करते. और तीसरा ये के उसने अब तक तेज के कमरे की तलाशी नही ली थी. अब तेज के आ जाने से इस काम में दिक्कत हो सकती थी.

तलाशी के बारे में सोचते ही दामिनी के दिमाग़ में कई ख्याल एक साथ आए. उसने कुछ देर बैठ कर अपनी सोच को एक दूसरे के साथ जोड़ा और जल्दी से उठकर अपनी अलमारी के पास गयी. अलमारी से उसने वो दोनो चाबियाँ निकाली जिनमें से एक तो उसे दामूकाका ने दी

थी ये कहकर के उसे रात को ये हवेली के पिछे के बगीचे से मिली थी और दूसरी जो उसे अपनी सास की सारी के पल्लू से मिली थी. दोनो चाबियों को दामिनी ने एक साथ रखा और मिलाया. यक़ीनन दोनो चाबियाँ एक ही ताले की थी पर सवाल ये था के किस ताले की. और ये दोनो चाबियाँ नकल थी तो असली कहाँ थी. दामिनी ने मन ही मन कुछ फ़ैसला किया और चाबियाँ उठाकर अपने पर्स में रख दी.

कुछ देर बाद दामिनी अपने कमरे से निकलकर तेज के कमरे की और बढ़ी. वो उससे कुछ बात करना चाहती थी. कमरे के दरवाज़े के सामने आती हसी की आवाज़ सुनकर वो वहीं रुक गयी. अंदर सरला और तेज हस हॅस्कर कुछ बात कर रहे थे. दरवाज़ा बंद होने की वजह से वो देख तो नही पाई पर तेज कुछ पुच्छ रहा था और सरला हस हॅस्कर जवाब दे रही थी. दामिनी मुस्कुराइ और पलटकर फिर अपने कमरे में आ गयी.

थोड़ी देर बाद ठाकुर भी वापिस आ गये. दामिनी ने उनके आने के बाद उनके साथ ही खाना खाया.

"तेज घर पर है?" ठाकुर ने पूछा

"जी अभी थोड़ी देर पहले वापिस आए हैं" दामिनी ने जवाब दिया

"कितनी देर के लिए?" ठाकुर ने नफ़रत से पूछा तो दामिनी ने जवाब ना दिया और दोनो खामोशी से खाना खाते रहे.

खाने के बाद ठाकुर अपने कमरे में आराम करने चले गये. दामिनी बड़े कमरे में बैठी टीवी देख रही और सरला भी वहीं उसके सामने ज़मीन पर बैठी हुई थी. तभी तेज नीचे उतरा और हवेली के बाहर जाने लगा

"कहाँ जा रहे हैं?" दामिनी ने पूछा

"जी एक दोस्त के यहाँ" तेज ने जवाब दिया. उसके अंदाज़ से ही साफ मालूम हो गया के उसे दामिनी का यूँ टोकना पसंद नही आया

इससे पहले के दामिनी कुछ कहती, तेज ने खुद ही बता दिया के वो रात में वापिस नही आएगा और बिना दामिनी के जवाब का इंतेज़ार किए घर से निकल गया.

दामिनी अच्छी तरह जानती थी के रात बसर करने तेज फिर किसी वेश्या के यहाँ गया है.

भाग - 9

रात के 10 बज चुके थे. दामिनी अपने बिस्तर पर पड़ी करवट बदल रही थी. आज रात भी सरला वहीं उसके कमरे में सोने आई थी और नीचे ज़मीन पर पड़ी सो रही थी. दामिनी को उसपर गुस्सा आ रहा था क्यूंकी वो ठाकुर के कमरे में जाना चाहती थी पर सरला के डर की वजह से थोड़ी सावधानी बरतनी पड़ रही थी.दामिनी ने अपने ससुर को कहा था के वो थोड़ी देर बाद उनके कमरे में सोने आ जाएगी.

दामिनी बिस्तर से उठने को हुई ही थी के कमरे का दरवाज़ा खुला और ठाकुर खुद उसके कमरे में आ गये. पास आकर वो चुप चाप दामिनी के बिस्तर पर आ गये

"आप यहाँ?"दामिनी ने धीरे से पूछा

"हां हमने सोचा के के आप उठकर हमारे कमरे में आएँगी तो सरला और दामूकाका को शक हो सकता है इसलिए हम ही आ गये" ठाकुर ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया

दामिनी ने बिस्तर पर खिसक कर ठाकुर के लिए जगह बनाई

"पर यहाँ सरला....." उसने कहने के लिए मुँह खोला ही था के ठाकुर ने अपने होंठ उसके होंठो पर रख दिए. उनका एक हाथ निघट्य के उपेर से ठीक दामिनी की योनि पर आ गया. इसके बाद दामिनी कुछ ना कह सकी. एक एक करके उसके सारे कपड़े उतरते चले गये. वो पूरी तरह से नग्न होकर ठाकुर के नीचे आ गयी. उसके ससुर का लिंग पहले उसके मुँह में और फिर उसकी योनि में आ गया. उसके टांगे हवा में फेल गयी और टाँगो के बीच ठाकुर ने उसकी योनि में लिंग अंदर बाहर करना शुरू कर दिया.

ठुकाई बड़ी देर तक चलती रही. ना ठाकुर हार मानने को तैय्यार थे और ना ही दामिनी. दोनो के जिस्म में आग लगी हुई थी और दोनो जैसे पूरी तरह एक दूसरे में घुस जाना चाहते थे. उन्हें इस बात की कोई फिकर नही थी के वहीं बिस्तर के पास नीचे ज़मीन पर सरला सोई हुई थी जो किसी भी पल जाग सकती थी. दामिनी कभी सीधी लेटकर ठुकी, तो कभी ठाकुर के उपेर आकर तो कभी घोड़ी बनकर. झुका कर ठोक्ते हुए ठाकुर ने उसकी योनि पर ऐसे धक्के मारे के दामिनी से संभाला ना गया और वो बिस्तर उल्टी लेट गयी. ठाकुर उसकी उपेर लेट गये और पिछे से उसकी योनि मारने लगे.

पिछवाड़ा पर धक्के अब भी उतनी ही ज़ोर से पड़ रहे थे और लिंग दामिनी की योनि की गहराई पूरी तरह से नाप रहा था. दामिनी उस वक़्त बिस्तर पर टेढ़ी लेती हुई थी. उसका सर बिस्तर के किनारे पर रखा हुआ था. उसका योनि अच्छी तरह से मारी जा रही थी और ठाकुर ने अपना सर उसकी गर्दन के पास रखा हुआ था. दामिनी के बाल उनके चेहरे पर बिखरे हुए थे और उनकी आँखें बंद थी. दामिनी ने एक नज़र सरला की तरफ उठाकर देखा तो वो बेख़बर

सोई हुई थी. शायद उसे गहरी नींद में सोने की आदत थी. दामिनी की नज़र उसके जिस्म की तरफ पड़ी. दामिनी ने सरला को पहेन्ने के लिए काई कपड़े दिए थे पर रात को सरला वही अपना ल़हेंगा और चोली पहेनकर सोती थी.

उसका ल़हेंगा फिर उसकी जाँघो तक चढ़ आया था और उसकी आधी टांगे नग्न थी. दामिनी साफ समझ गयी थी के इस वक़्त भी सरला ने कपड़ो के नीचे ब्रा और पॅंटी नही पहेन रखी थी. दामिनी को जाने क्या सूझी के उसे अपना एक हाथ आगे किया और सामने पड़ी सरला का ल़हेंगा खींचकर उसके पेट तक कर दिया. सरला की योनि खुलकर उसके सामने क्या आ गयी. योनि पर घने बाल थे. लगता था के उसने बाल कभी साफ नही किए थे. दामिनी ने एक पल उसकी योनि को देखा और फिर उसे च्छुने के लिए हाथ आगे बढ़ाया ही था के अचानक उसकी योनि पर पड़ते ठाकुर के धक्के बंद हो गये. दामिनी ने पलटकर ठाकुर की तरफ देखा उन्होने आँखें खोल दी थी और वो भी वही देख रहे थे जो दामिनी देख रही थी.

ठाकुर और दामिनी दोनो ही बिस्तर पर टेढ़े लेते हुए थे. दामिनी उल्टी थी और पिछे से ठाकुर ने अपना लिंग उसकी योनि के अंदर उतरा हुआ था. दो पल के लिए दोनो की नज़रें मिली और फिर दोनो सरला को देखके मुस्कुराए. बेख़बर सरला अब भी गहरी नींद में थी. उसे कोई अंदाज़ा नही था के इस वक़्त उसकी योनि दो लोगों के सामने खुली हुई थी. दामिनी ने ठाकुर को देखा तो पाया के उनकी नज़रें सरला की टाँगो के बीच बालों पर अटक गयी थी.

दामिनी दिल से ठाकुर को चाहती थी पर जाने क्यूँ उसे इस बात का ज़रा बुरा नही लगा के वो उसके अलावा किसी और की योनि देख रहे हैं. उल्टा इस बात से उसकी जिस्म की वासना और तेज़ होने लगी. उसने अपना एक हाथ आगे किया और ठाकुर के सामने ही ले जाकर सरला की योनि पर रख दिया और सहलाने लगी.उसकी इस हरकत ने जैसे ठाकुर के अंदर वासना का ज्वार सा उठा दिया और वो फिर बेरहमी से उसकी योनि मारने लगे. दोनो अब भी एकटक सामने पड़ी सरला को देख रहे थे. दामिनी ने थोड़ी देर सरला की योनि और झंघो पर हाथ फेरा और फिर हाथ उपेर करके सरला की स्तन पर रख दिया. ठाकुर जिस तरह उसे ठोक रहे थे उससे इस बात का अंदाज़ा साफ होता था के इस खेल में उन्हें कितना मज़ा आ रहा है.

दामिनी ने धीरे से सरला की चोली का एक बटन खोल दिया. उसके साथ साथ ठाकुर की नज़रें भी अब आकर सरला की बड़ी बड़ी च्चातियो पर अटक गयी. धीरे धीरे दामिनी ने एक एक करके सरला की चोली के सारे बटन खोल दिए और हल्के से उसकी चोली दोनो तरफ से साइड खिसका दी.

सरला की स्तन खुलकर दोनो की नज़रों के सामने आ गयी और दोनो जैसे पागल हो उठे. ठुकाई में और तेज़ी आ गयी. इस बात की दोनो को कोई फिकर नही थी के सरला सिर्फ़ सो रही है, बेहोश नही थी. अगर जो जाग जाती तो खुद को नंगा पाती और ससुर और बहू को ठुकाई करते हुए नंगा देख लेती. दामिनी सरला की स्तनों पर हाथ फेर रही थी. वो इस बात का ख्याल रख रही थी के हल्का सा भी दबाव ना डाले ताकि सरला की नींद ना खुले. ठाकुर आँखें फाडे सरला के जिस्म को देख रहे थे और उसपर हाथ फेरती दामिनी को बेरहमी से ठोक

रहे थे.

दामिनी उल्टी लेटी थी और ठाकुर उसके उपेर. उनके दोनो हाथ दामिनी के नीचे थे जिसमें उन्होने उसकी दोनो स्तन पकड़ रखी थी. दामिनी थोडा सा उपेर हुई और ठाकुर का एक हाथ अपनी स्तन से हटाया. ठाकुर ने उसकी तरफ देखा. दामिनी मुस्कुराइ और उसने ठाकुर का हाथ धीरे से नीचे किया और सरला की योनि पर रख दिया. खुद वो फिर से सरला की स्तन सहलाने लगी. इस हरकत ने जैसे दोनो के उपेर जादू सा कर दिया. ठाकुर सरला की योनि सहलाने लगे और आहें भरते हुए दामिनी की योनि पर ऐसे धक्के मारने लगे जैसे आज के बाद कभी नही मिलेगी.

सुबह सवेरे सरला की आँख खुली. उसने घड़ी की तरफ नज़र डाली तो सुबह के 5 बज रहे थे. वो अभी भी पूरी तरह नग्न थी. जिस्म पर कपड़े के नाम पर कुछ नही था. उसने अपनी पिछवाड़ा पर हाथ फेरा तो वहाँ रात को ठाकुर का गिराया हुआ पानी सूख चुका था. दामिनी ने उठकर अपने कपड़े उठाए और सरला की तरफ नज़र डाली तो उपेर की साँस उपेर और नीचे की नीचे रह गयी. रात ठुकाई के बाद वो ठाकुर के साथ ऐसे ही थोड़ी देर लेटी रही और उनके जाने के बाद वैसे ही सो गयी थी. ना तो उसने अपने कपड़े पहने थे और ना ही सरला के कपड़े ठीक किए थे.

सरला अब भी वैसे ही पड़ी थी. ल़हेंगा खिसक कर थोड़ा नीचे योनि के उपेर हो गया था पर जांघें अब भी खुली हुई थी. उसकी चोली पूरी तरह से खुली हुई थी और बड़ी बड़ी स्तन खुली पड़ी थी. दामिनी जल्दी से बिस्तर से नीचे उतरी और सरला की चोली के बटन धीरे धीरे बंद करने लगी. फिर उसने ल़हेंगा नीचे किया और जब तसल्ली हो गयी के सरला को अपने कपड़े देखकर कुछ शक नही होगा तो उसके बाद दामिनी ने अपने कपड़े पहने. कपड़े क्या पहने बस उपेर से एक नाइटी डाल ली जो उसे सर से लेके पावं तक ढक लेती थी. नाइटी के नीचे कुछ नही पहना. एक पल के लिए उसने सोचा के सरला को जगाए पर फिर इरादा बदलकर नीचे आ गयी.

गर्मी के दिन होने की वजह से सुबह 5 बजे ही बाहर हल्की हल्की रोशनी होनी शुरू हो गयी थी. दामिनी नीचे उतरकर बड़े कमरे में पहुँची. तेज कल का गया रात को घर नही लौटा और ठाकुर साहब अब भी सो रहे थे. दामिनी को दिल ही दिल में डर था के कहीं ऐसा ना हो के तेज वापिस ही ना आए. बड़े कमरे में दामूकाका सफाई में लगे हुए थे.

"बड़ी जल्दी उठ गये काका?" दामिनी ने पूछा

"मैं तो रोज़ाना इस वक़्त तक उठ जाता हूँ बहूरानी" दामूकाका ने जवाब दिया और दामिनी की तरफ पलटा

"हां मैं तो खुद ही इतनी देर से उठती हूँ के पता नही होता के आप कब उठे" कहते हुए दामिनी मुस्कुराइ. उसने ध्यान दिया के दामूकाका उसके गले की और ध्यान से देख रहा था

"क्या हुआ काका?" कहते हुए दामिनी ने अपने गले पर हाथ फिराया तो हल्का दर्द का एहसास हुआ. तभी उसे ध्यान आया के रात ठोक्ते हुए ठाकुर से उसके गले पर अपने दाँत गढ़ा दिए थे

"ओह यह" दामिनी फिर मुस्कुराइ. दामूकाका ने अपनी नज़र फेर ली और फिर काम में लग गया. दामिनी किचन की तरफ बढ़ गयी.

दामिनी अच्छी तरह जानती थी के वो जो कर रही है उसमें दामूकाका का उसके साथ होना बहुत ज़रूरी है. वो पूरे परिवार को दोबारा जोड़ना चाहती थी पर उसके और ठाकुर के रिश्ते की हल्की सी भी भनक अगर किसी को लग जाती तो पूरे परिवार को एक साथ लाना नामुमकिन हो जाता. बदनामी हो जाती सो अलग. इसके लिए बहुत ज़रूरी था के दामूकाका को वो अपने साथ रखे.

किचन में खड़े खड़े दामिनी ने दामूकाका को आवाज़ लगाई. दामूकाका किचन में आया

"काका मेरी कमर पर बहुत दर्द सा हो रहा है. ज़रा देखेंगे के कुछ हुआ है क्या?" दामूकाका एकटूक दामिनी को देखने लगा

दामिनी उसके जवाब की फिकर किए बिना दामूकाका की तरफ अपनी कमर करके खड़ी हो गयी. फिर उसने जो किया वो देखकर दामूकाका के तो जैसे होश उड़ गये. वो नीचे झुकी और अपनी नाइटी को नीचे से उठाकर पूरा गले तक कर लिए. अब वो दामूकाका के सामने जैसे एक तरीके से नँगी ही खड़ी थी. नाइटी उसने अपने दोनो हाथों से उपेर उठाकर अपने गले के पास पकड़ी हुई थी. दामूकाका पिछे खड़ा उसकी गोरी चिकनी और क़यामत ढा रही उसकी पिछवाड़ा को देख रहा था.

"कुछ निशान वगेरह है क्या काका?" उसने वैसे ही खड़े खड़े दामूकाका से पूछा

"नही कुछ नही है." दामूकाका सूखे गले से मुश्किल से जवाब दे सका

"ज़रा मेरी कमर पर धीरे से सहला देंगे. खुजली सी लग रही है. लगता है रात किसी चीज़ ने काट लिया" दामिनी ने कहा पर दामूकाका वैसे ही खड़ा रहा.

जब दामिनी ने देखा के दामूकाका आगे नही बढ़ रहा है तो वो खुद ही पिछे को हो गयी और दामूकाका के नज़दीक आ गयी. अब उसकी कमर दामूकाका के बिल्कुल सामने थी. दोनो के जिस्म में बस कुछ इंच का फासला था.

"थोडा सा हाथ फेर दीजिए ना काका" दामिनी ने कहा तो दामूकाका ने अपना कांपता हुआ हाथ उठाया और उसकी कमर पर फेरने लगा. बुड्ढे नौकर की तेज़ी से चलती साँस से साफ पता चलता के वो भी गरम हो सकता था.

दामिनी थोड़ा सा पिछे को सरकी और अपना जिस्म दामूकाका के जिस्म से मिला दिया पर जो वो चाहती थी वो हो ना सका. क्यूंकी दामूकाका उससे कद में छोटा था इसलिए उसका लिंग दामिनी की नितंब से आ लगा और दामिनी की नितंब दामूकाका के पेट से. ये ना हुआ तो दामिनी ने अपना हाथ घूमकर दामूकाका का हाथ पकड़ा और आगे अपनी छाती पर ले आई

"ज़रा यहाँ भी सहला दीजिए ना काका" कहते हुए वो खुद ही दामूकाका के हाथ को पकड़कर अपनी स्तन पर फेरने लगी.

दामिनी चाहती तो ये थी के इस नाटक को थोड़ी देर और करके दामूकाका को मज़ा दे पर तभी किसी की सीढ़ियाँ उतरने की आवाज़ सुनकर दोनो चौंक गये. दामिनी ने अपनी नाइटी फ़ौरन नीचे गिराई और दामूकाका से थोड़ा अलग होकर खड़ी हो गयी.

आँखें मलती हुई सरला ने किचन में कदम रखा

"उठ गयी तू?" दामिनी ने उसकी और देखते हुए पूछा

केस का आज पहला दिन था. ठाकुर साहब सुबह से ही सब काग़ज़ जोड़ने में लगे हुए थे. उन्हें देखकर पता चलता था के वो थोड़े परेशान से थे

"सब ठीक होगा पिताजी. आप परेशान ना हों" दामिनी ने कहा

"हम जानते हैं"ठाकुर ने जवाब दिया

थोड़ी ही देर बाद ठाकुर कोर्ट के लिए निकल गये. दामिनी जानती थी के वो शाम से पहले ना आ सकेंगे.

वो अपने कमरे में पहुँची और तैय्यार होकर अलमारी में रखी दोनो चाबियाँ उठाई. ये वही चाबियाँ थी जिनमें से एक उसे दामूकाका ने दी थी और दूसरी उसे अपनी सास की साडी से मिली थी. दामिनी के दिमाग़ में एक अंदाज़ा था और वो देखना चाहती थी के उसका अंदाज़ा कितना ठीक है.

उसने सरला और दामूकाका को हवेली के आस पास सफाई शुरू करने को कहा और कार लेकर निकल गयी. हवेली से बाहर निकलते ही उसे सामने से तेज की कार दिखाई दी.

"चलो कम से कम वापिस तो आया" दामिनी ने मन ही मन सोचा और अपनी तरफ का शीशा नीचे किया. अपना हाथ बाहर निकलके उसने सामने से आते तेज को रुकने का इशारा किया

दोनो गाड़ियाँ एक दूसरे के पास आकर रुक गयी. तेज ने अपनी तरफ का शीशा नीचे किया

"पिताजी घर पर नही हैं. कोर्ट गये हैं" दामिनी ने तेज को बताया. तेज ने समझते हुए गर्दन हिलाई

"आज ज़मीन के केस की पहली तारीख है. अच्छा होता के आप भी उनके साथ चले जाते." दामिनी बोली

"आज नही" तेज ने जैसे बात टाल दी "अगली तारीख पर चला जाऊँगा. आप मुझे ये बताएँ के ये हवेली में लाश मिलने का क्या किस्सा है?"

"मैं फिलहाल कुछ काम से जा रही हूँ. आकर बताती हूँ." दामिनी ने कहा और अपनी गाड़ी का शीशा उपेर करने लगी.

तभी उसे कुछ याद आया और उसने फिर शीशा नीचे किए

"एक काम कीजिएगा. अगर आप घर पर ही हैं तो गाओं से कुछ आदमी बुलवाकर हवेली की सफाई का काम करवा लीजिए. परसो शुरू हुआ तो था पर कल कुछ नही हुआ"

"ठीक है" तेज ने कहा और गाड़ी आगे बढ़ा दी

दामिनी अपनी कार लेकर फिर कजरी के घर की और चल दी. उसने अपनी गाड़ी फिर वहीं पेड़ के पास छोड़ दी और पैदल कजरी की झोपड़ी की तरफ चल दी. झोपड़ी के पास पहुँच कर वो कजरी को आवाज़ लगाने ही वाली थी के फिर कुछ सोचके मुस्कुराइ और दबे पावं आगे बढ़ती हुई झोपड़ी तक पहुँची.

कजरी की झोपड़ी में दरवाज़ा नही था सिर्फ़ दरवाज़े के नाम पर एक कपड़े को पर्दे की तरह टाँग दिया था. कजरी ने दामिनी को बताया था के उसके घर में ऐसा कुछ नही जो चोरी हो सके इसलिए उसने दरवाज़े के बारे में कभी नही सोचा था. रुपई दरवाज़े के पास पहुँची और परदा धीरे से एक तरफ हटके अंदर झाँका.

उसका शक सही निकला. उसने जो सोचा था झोपड़ी में वही हो रहा था. बबलू अपना पाजामा नीचे किए खड़ा था और कजरी उसके सामने बैठ कर उसका लिंग चूस रही थी. वो उपेर से नग्न थी और नीचे बस अपना घाघरा पहना हुआ था. दामिनी उन दोनो को साइड से देख रही थी. किसी का मुँह दामिनी की तरफ नही था इसलिए किसी का ध्यान दरवाज़े की तरफ नही गया. दामिनी चुप चाप देखने लगी.

कजरी नीचे बैठी पूरे जोश में बबलू के लिंग को मुँह में अंदर बाहर कर रही थी और एक हाथ से उसके अंडे सहला रही थी. उसका दूसरा हाथ अपनी स्तनों पर था जिन्हें वो खुद ही दबाने में लगी हुई थी. तभी बबलू के मुँह से एक आह निकली

"नही" कजरी ने ऐसे कहा जैसे चंदे को रोकना चाहती हो और लिंग मुँह से बाहर निकाला पर तब तक जैसे देर हो चुकी थी. बबलू के लिंग ने पानी छोड़ना शुरू कर दिया जो आधा कजरी के चेहरे पे गिरा और आधा उसके उपेर से नंगे जिस्म पर.

"अभी से पानी निकल दिया?" कजरी गुस्से में बबलू की तरफ देखते बोली "अब तुझे खड़ा करने में फिर आधा घंटा लगेगा और तब तक मैं परेशान होती रहूंगी"

उसने फिर बबलू का लिंग मुँह में ले लिए और फिर खड़ा करने की कोशिश करने लगी.

दामिनी समझ गयी के अभी ठुकाई का प्रोग्राम शुरू ही हुआ है और अभी टाइम लगेगा. दिल ही दिल में उसने फ़ैसला किया के जिस काम से वो आई थी उसके लिए बेहतर है के वो अकेले ही जाए. कजरी से वो जो बात करना चाहती थी वो बाद में आकर कर सकती है.

दामिनी ने एक आखरी नज़र लिंग चूस रही कजरी पर डाली और दरवाज़े से हटकर फिर खेत की तरफ आई. कजरी ने उसे बताया था के जहाँ तक नज़र पड़ती थी वो सब ज़मीन ठाकुर साहब की ही थी पर जिस जगह को दामिनी ढूँढना चाहती थी उसे उसमें कोई मुश्किल नही हुई. खेत में पानी देने के लिए छहोटे नाली जैसी जगह बनी हुई थी जिसमें से बहकर पानी खेत के हर कोने में जाता था. अब वो सूख चुकी थी क्यूंकी बरसो से यहाँ कोई खेती नही हुई थी. ऐसी ही एक नाली के साथ साथ चलती दामिनी वहाँ पहुँची जहाँ उसने आने की कल सोची थी. खेत में लगे ट्यूबिवेल और वहाँ बने कमरे पर.

कजरी ने उसे बताया था के यूँ तो खेत में कोई 50 के उपेर ट्यूबिवेल थे पर जहाँ उसका पति मरा था वो ट्यूबिवेल उसकी झोपड़ी से थोड़ी ही दूर था. और यहीं पर उसके पति ने श्यामला को ठुक्ते हुए भी देखा था.

दामिनी कमरे तक पहुँची. कमरे पर ताला लगा हुआ था. दामिनी ने अपने पर्स से दोनो चाबियाँ निकाली और एक चाभी से ताला खोलने की कोशिश की. पुराना ताला था इसलिए थोड़ा ज़ोर लगाना पड़ा पर ताला फ़ौरन खुल गया.

दामिनी ने ताला खोलकर अपने हाथ में लिए और दूसरी चाभी से कोशिश की. उससे भी वो ताला खुल गया.

दामिनी आँखें खोले कभी कमरे की तरफ देखती तो कभी ताले की तरफ. तो ये चाभी इस कमरे की थी पर सवाल ये उठता था के असली किसके पास थी. इसकी नकल उस आदमी से गिरी थी जो हवेली में रात को चोरी च्छूपे आता था तो कौन था वो? कजरी का मर्द इस कमरे में आता था तो चाबी उसके पास तो ज़रूर होगी. तो क्या रात को वो ही हवेली में आता था पर क्यूँ? दामिनी के दिमाग़ में ऐसे कई सवाल उठ खड़े हुए पर सबसे ज़्यादा उसे एक सवाल परेशान कर रहा था.

कजरी ने बताया था के उसके मर्द ने यहाँ श्यामला को ठुक्ते हुए देखा था तो मुमकिन है के श्यामला के प्रेमी के पास इसकी चाभी थी. तो क्या वो रात को हवेली में आता था? और वो था कौन? और उसके पास चाबी आई कैसे? असली किसके पास थी? और सबसे ज़रूरी सवाल ये था के अगर श्यामला यहाँ आती थी तो इसकी चाभी श्यामला के पास से मिलनी चाहिए थी पर उसे तो चाबी अपनी सास की साडी में बँधी हुई मिली थी. उनके पास ये चाभी क्या कर रही थी और ये चाभी इतनी ज़रूरी क्यूँ थी के वो इसे अपनी साडी से बाँधके हमेशा अपने पास रखा करती थी?

दामिनी ने कमरे के अंदर कदम रखा. कमरे में कुछ नही था. एक खाली कमरे और उसके बीचे बीच एक कुआँ जिसमें ट्यूबिवेल की नाल अंदर तक जा रही थी. दामिनी को याद आया के कजरी ने बताया था के इसी कमरे में उसका पति की मौत हुई थी. दामिनी ने कुछ पल और वहीं गुज़ारे और दरवाज़ा बंद करके बाहर आ गयी.

उसके दिमाग़ में हज़ारों सवाल उठ रहे थे. अपनी ही सोच में खोई हुई वो फिर कजरी की झोपड़ी की तरफ चल पड़ी. उसे कजरी से एक ज़रूरी बात और करनी थी.

कजरी ने उसे दूर से ही आता देख लिया था और झोपड़ी के बाहर खड़ी उसका इंतजार कर रही थी.

"कहाँ से आ रही हैं मालकिन?" उसने दामिनी से पूछा

"ऐसे ही आगे तक का चक्कर लगाके आ रही हूँ. आई तो असल में तुझसे मिलने ही थी" दामिनी ने कमरे पर लगा ताला और अपने पास रखी दोनो चाबियों की बात च्छूपा ली

"जब मैं यहाँ आई तो तू और बबलू दोनो लगे हुए थे. इसलिए मैने सोचा के जब तक तुम अपना काम ख़तम करो मैं ज़रा आगे तक टहल आऊँ" दामिनी ने कहा तो कजरी मुस्करा दी

"तुम्हें और कोई काम नही है क्या? जब देखो लगे रहते हो" दामिनी झोपड़ी के अंदर आई और चारपाई पर बैठ गयी

"नया नया जवान लड़का है मालकिन." कजरी ने उसे पानी का ग्लास देते हुए कहा "लिंग खड़ा होना शुरू ही हुआ था के घुसने के लिए छूट मिल गयी इसलिए खून बार बार गर्मी मरता है उसका. कल तो पूरी रात सोने नही दिया. मुझे तो याद भी नही के कितनी बार छोड़ा होगा उसने मुझे. तका दिया था मुझे और सुबह मेरी आँख भी तब खुली जब उसने फिर सुबह सुबह अपना लिंग मेरी छूट में डाला. पहली सरला थी तो तोड़ा रुका रहता था पर अब वो नही है तो हर वक़्त चढ़ा रहता है मुझपर. उसका बस चले तो मुझे नग्न ही रखे 24 घंटे"

दामिनी ने पानी का ग्लास फिर कजरी को थमाया और उसे गौर से देखने लगी

"मेरे पास ज़्यादा वक़्त नही है. हवेली में कुछ काम करवाना है इसलिए वापिस जाना होगा. तेरे से एक ज़रूरी बात करनी है" उसने कजरी से कहा

"हां कहिए" कजरी ने भी गौर से उसकी बात सुनते हुए कहा

"एक बात बता. सरला अब जवान हो गयी है. कभी उसकी शादी की नही सोची तूने?" दामिनी ने सोच तो कजरी ने एक लंबी आह भारी

"कई बार सोचा है मालकिन पर सर के उपेर एक पक्की छत तो डाल नही सकी आज तक, शादी का खर्चा कैसे उठाऊंगी समझ नही आता. और कौन करना चाहेगा उस ग़रीब की लड़की से शादी"

"मेरे पास एक रास्ता है अगर तू हाँ कह दे तो" दामिनी ने अपना हर लफ्ज़ ध्यान से चुना "अगर तू मेरी बात मान ले तो तेरे सर पर पक्की छत भी आ जाएगी, तेरी बेटी की शादी भी हो जाएगी और अपनी बाकी की ज़िंदगी तू ऐश से रहेगी"

"कैसे?" कजरी ने उतावली होते हुए पूछा

"देख तू तो जानती ही है के ठाकुर साहब का कारोबार और सब ज़मीन किस हाल में है. उनका परिवार भी खुद उनके साथ नही है. मैं चाहती हूँ के सब कुछ पहले के जैसा हो जाए और हमारा परिवार वापिस साथ में आ जाए" दामिनी ने कहा

कजरी ने हां में सर हिलाया

"कभी कभी सही चीज़ को हासिल करने के लिए ग़लत रास्ते पर जाना पड़ता है और ऐसा ही कुछ करना पड़ रहा है फिलहाल मुझको. मैं चाहती हूँ के मेरा दूसरा देवर तेज हवेली वापिस आ जाए. वो कभी कभी महीनो घर से गायब रहता है पर मैं चाहती हूँ के वो वहीं हवेली में रहकर अपने कारोबार पर ध्यान दे, अपने पिता का हाथ बटाये पर इसके लिए ज़रूरी है उसे हवेली में रोकना" दामिनी ने बात जारी रखी

कजरी ने फिर हां में सर हिलाया

"मैं अच्छी तरह से जानती हूँ के तेज इतना पैसा कहाँ उड़ा रहा है और उसकी रातें कहाँ गुज़रती हैं. औरतों का शौकीन है वो" दामिनी ने कहा

"ये बात तो पूरा इलाक़ा जनता है मालकिन" कजरी ने अपनी बात जोड़ी

"हां. इसलिए मैने सोचा के तेज को रोकने का सबसे अच्छा तरीका ये है के जिस चीज़ के

लिए वो बाहर मुँह मारता फिरता है वो उसे घर में ही हासिल हो जाए" दामिनी धीरे धीरे मतलब की बात पर आ रही थी

"मैं समझी नही" कजरी ने कहा

"एक औरत. एक योनि जो उसके लिए हर वक़्त हासिल हो. अगर तू हवेली में आकर रहने को राज़ी हो जाए और बिस्तर पर तेज को खुश रखे तो मैं तुझे हवेली के कॉपाउंड में ही रहने के लिए कमरा दे दूँगी, पैसे दूँगी और तेरी बेटी की शादी का सारा खर्चा मैं उठाऊँगी" दामिनी ने आखरी चोट की

कजरी के चेहरे से जैसा रंग उड़ गया. वो आँखे फाडे दामिनी को देखने लगी.

"आप जानती हैं आप क्या कह रही है?" कजरी ने दामिनी को देखते हुए कहा

"हां मैं जानती हूँ मैं क्या कह रही हूँ....." दामिनी ने कहा ही था के कजरी ने उसकी बात काट दी

"नही आप नही जानती मालकिन. आप मुझे एक वेश्या बनने को कह रही हैं. अपने जिस्म का सौदा करने को कह रही हैं. आपने सोचा के मैं बबलू से ठुकवा लेती हूँ तो किसी से भी ठुकवा लूँगी पर आपने ग़लत सोचा" कजरी गुस्से में बोली

"ठीक है" दामिनी ने कहा " हां मैं तुझे कह रही हूँ के तू अपने जिस्म का सौदा कर. इसे अपने पास रखके आज तक कर भी क्या लिया तूने. एक पुरानी झोपड़ी में रह रही है.एक लड़के से अपने जिस्म की आग को ठंडा कर रही है ना अपने जिस्म पे ढंग के कपड़े डाल सकी ना अपनी जवान होती बेटी के."

कजरी चुप रही

"देख कजरी. मैं ये बात तुझसे इसलिए कह रही हूँ क्यूंकी मेरा तेरा रिश्ता दोस्ती जैसा है. तू मेरे काम आ और मैं तेरे काम आऊँगी. जितना पैसा चाहिए दूँगी. और मैं तुझे कौन सा कहीं कोठे पे जाके बैठने को कह रही हूँ. बस एक तेज का तुझे ध्यान रखना होगा. वो जब कहे बिना इनकार के कपड़े उतारने होंगे. उसके बदले में मैं तेरी ज़िंदगी बदल दूँगी. दो वक़्त का खाना बिना किसी तकलीफ़ के, सर पर छत, मुँहमांगा पैसा और तेरी बेटी की बेहतर ज़िंदगी. सोच ले कजरी. अपने नही तो अपनी बेटी के बारे में सोच." दामिनी ने कजरी को समझाते हुए कहा

"पर मैं ही क्यूँ?" कजरी ने पूछा तो दामिनी समझ गयी के वो धीरे धीरे लाइन पे आ रही है.दोस्तो मैं यानी आपका दोस्त राज शर्मा आपसे पूछता हूँ क्या आपको लगता है दामिनी अपने देवर तेज को इन दो औरतो के सहारे सुधार सकती है

"इसलिए के तू हमारे खानदान की वफ़ादार है. तू खूबसूरत है, तेरा जिस्म तो एक 17 साल के लड़के को भी दीवाना बना सकता है" दामिनी ने कहा तो कजरी समझ गयी के वो बबलू की तरफ इशारा कर रही है और धीरे से मुस्कुरा दी. दामिनी समझ गयी की बात बन चुकी है. उसे अंदाज़ा नही था के कजरी इतनी आसानी से मान जाएगी

"कल जब तू हवेली से निकली तो तेज पलटकर तुझे जाते हुए देख रहा था. नज़र तेरी पिछवाड़ा पर थी. तब मुझे ये तरकीब सूझी थी. बोल क्या कहती है?" दामिनी ने कहा

"पर बबलू?" कजरी ने फिर सवाल किया

"अरे बबलू को भी साथ ले आना. वहीं हवेली में रह लेगा और काम में हाथ बटा देगा. इसे भी कुछ पैसे दे दिया करूँगी मैं." दामिनी बोली "और फिर तेरे भी मज़े हो जाएँगे. सारा दिन कभी बबलू तो कभी तेज"

दामिनी ने हस्ते हुए कहा तो कजरी भी साथ हस्ने लगी

"मुझसे सोचने के लिए कुछ वक़्त चाहिए मालकिन" कजरी ने कहा तो दामिनी ने फ़ौरन हां कर दी

"सोच ले" वो कहती हुई उठी और झोपड़ी से बाहर निकली "तू नही तो मैं और किसी को ले आऊँगी. तू अच्छी तरह से जानती है के गाओं में कोई भी लड़की मेरी इस शर्त पर हवेली में आ जाएगी. पर मैं चाहती हूँ के तू आए"

दामिनी ने बात ख़तम की और बिना कजरी के जवाब का इंतेज़ार किए अपनी कार की तरफ चल पड़ी. अपने दिल में वो जानती थी कजरी का जवाब हां ही है और वो हवेली ज़रूर आएगी.

भाग - 10

हवेली पहुँचकर दामिनी का गुस्सा सातवे आसमान पर पहुँच गया. वो जानते हुए तेज को जो काम कहकर गयी थी वो तो क्या शुरू होता खुद तेज फिर से गायब था. गुस्से में पैर पटकती दामिनी ने हवेली में कदम रखा तो सामने दामूकाका मिला

"तेज कहाँ है?" उसने दामूकाका से पूछा

"पता नही. वो तो आपके जाने के थोड़ी देर बाद आए और फ़ौरन कहीं चले गये" दामूकाका ने जवाब दिया

"ह्म्म्म्म" दामिनी का गुस्से का घूँट पीते हुए कहा "सरला कहाँ है?"

"उपेर अपने कमरे में" दामूकाका ने जवाब दिया. दामिनी का गुस्सा उसे भी साफ नज़र आ रहा था इसलिए काफ़ी धीमी आवाज़ में जवाब दे रहा था

दामिनी उपेर अपने कमरे में पहुँची. साफ ज़ाहिर था के तेज को आवारापन बंद करना उतना आसान नही था जितना वो सोच रही थी. उसे जो भी करना था जल्दी करना था. तेज उसके कहने से हवेली में रुक तो गया था पर कब तक रुकेगा ये बात वो खुद भी नही जानती थी. दामिनी की समझ नही आ रहा था के क्या करे. कजरी से तेज के बारे में बात करने से पहले दामिनी ने लाख बार सोचा था. अगर कजरी ना मानती और इस बात का जिकर किसी और से कर देती के भाभी खुद अपने देवर के लिए योनि ढूँढती फिर रही है तो दामिनी कहीं की ना रहती. ये बात अगर ठाकुर साहब या खुद तेज के कानो में पड़ जाती तो खुद अपने ही घर में दामिनी की इज़्ज़त मिट्टी में मिल सकती थी.इसी सोच में उसने अपने कमरे के बीच का दरवाज़ा खोला और सरला के कमरे में आई. सरला अपने कमरे में बेख़बर सोई पड़ी थी.

दामिनी ने सरला पर एक भरपूर नज़र डाली. उसके प्लान का एक हिस्सा तो कामयाब हो चुका था. कजरी को उसने बॉटल में उतार लिया था पर वो जानती थी के तेज उन मर्दों में से नही जो एक औरत तक सिमटकर रह जाएँ. वो भले कुछ दिन शौक से कजरी को ठोक लेता पर दिल भरते ही फिर चलता बनता. दामिनी अच्छी तरह जानती थी के उसके लिए उसे एक और योनि का इंतज़ाम करना पड़ेगा और वो योनि उसे उस वक़्त सरला में नज़र आ रही थी.

अगर एक ही घर में एक भरी हुई औरत और एक कमसिन कली एक साथ ठोकने को मिले और वो भी दोनो माँ बेटी तो वो ज़रूर तेज को घर पर ही रोक सकती थी और इसी दौरान उसे उसका ध्यान अपने कारोबार की तरफ मोड़ने का वक़्त मिल सकता था. पर उसे जो भी करना था जल्दी करना था. वो ये भी अच्छी तरह जानती है के सरला भले ही जिस्म से एक पूरी

औरत हो गयी थी पर थी वो अभी बच्ची ही. उसे सरला के साथ जो भी करना था बहुत सोच समझकर और पूरे ध्यान से करना था वरना बात बिगड़ सकती थी.

उसने सरला को आवाज़ देकर जगाया. सरला हमेशा की तरह घोड़े बेचकर सो रही थी. दामिनी ने बड़ी मुश्किल से उसे आवाज़ दे देकर जगाया. सरला ने उठकर उसकी तरफ देखा.

"कितना सोती है तू?"दामिनी ने थोड़ा गुस्से से कहा

"माफ़ करना मालकिन" सरला फ़ौरन उठ खड़ी हुई

"हाथ मुँह धो और नीचे पहुँच. मुझे हवेली के नीचे वाले हिस्से की सफाई करवानी है. बरसो से उधर कोई गया भी नही." दामिनी ने कहा और अपने कमरे में आ गयी.

हवेली के नीचे एक बेसमेंट बना हुआ था जिसका दरवाज़ा हवेली के पिछे की तरफ था.वो हिस्सा ज़्यादातर पुराना समान रखने के लिए स्टोर रूम की तरह काम आता था. इस हवेली में जो भी चीज़ एक बार आई थी वो कभी बाहर नही गयी थी. इस्तेमाल हुई और फिर नीचे स्टोर रूम में रख दी गयी. पुराना फर्निचर, कपड़ो से भरे पुराने संदूक बेसमेंट में भरे पड़े थे. दामिनी उस हिस्से की भी तलाशी लेना चाहती थी और क्यूंकी इस वक़्त घर पर कोई नही था, तो ये वक़्त उसे इस काम के लिए बिल्कुल ठीक लगा पर बेसमेंट में अकेले जाते उसे डर लग रहा था. बरसो से वहाँ नीचे किसी ने कदम नही रखा था इसलिए उसने अपने साथ सरला को ले जाने की सोची.

थोड़ी देर बाद दामिनी बेसमेंट की चाभी लिए हवेली के पिच्छले हिस्से में पहुँची. उसके साथ सरला थी जिसके हाथ में टॉर्च थी. दामिनी ने बेसमेंट का दरवाज़ा खोला. सामने नीचे की और जाती सीढ़ियाँ था और घुप अंधेरा होने की वजह से 10-12 सीढ़ियों से आगे कुछ नज़र नही आ रहा था.

"यहाँ तो बहुत अंधेरा है मालकिन" सरला ने कहा

"तो ये टॉर्च क्या तू गिल्ली डंडा खेलने के लिए लाई है?" दामिनी ने चिढ़ते हुए कहा और सरला के हाथ से टॉर्च लेकर आगे बढ़ी.

दामिनी धीरे धीरे सीढ़ियाँ उतरती नीचे पहुँची. उसके पिछे पिछे सरला भी नीचे आई. दामिनी ने नीचे आकर टॉर्च को चारों तरफ घुमाया. हर तरफ पुराना फर्निचर, पुराने बेड्स, कुछ पुराने बॉक्सस और ना जाने क्या क्या भरा हुआ था. हर चीज़ पर बेतहाशा धूल चढ़ि हुई थी. मकड़ियों ने चारो तरफ जाले बना रखे थे. दामिनी ने टॉर्च की लाइट चारो तरफ घुमाई. उसका अंदाज़ा सही निकला. नीचे बेसमेंट में भी लाइट का इंतज़ाम था. स्विच दरवाज़े के पास ही था. ये दामिनी की किस्मत ही थी के बेसमेंट के बीच लगा बल्ब अब भी काम कर रहा था और स्विच ऑन होते ही फ़ौरन जल उठा. हर तरफ रोशनी फेल गयी.

दामिनी आज पहली बार इस बेसमेंट में आई थी. उसने जितना बड़ा सोचा था बस्मेंट उससे कहीं ज़्यादा बड़ा था पर आधा हिस्सा खाली था. सारा पुराना समान हवेली के एक हिस्से में काफ़ी सलीके से लगाया हुआ था.

"यहाँ की सफाई तो बहुत मुश्किल है मालकिन" सरला ने कहा तो दामिनी उसकी तरफ पलटी.

सरला ने एक सफेद रंग की कमीज़ पहेन रखी थी. बहुत ज़्यादा गर्मी होने की वजह से वो दोनो ही पसीने से बुरी तरह भीग गयी थी. सरला की कमीज़ पसीने से भीग जाने के कारण उसके शरीर से चिपक गयी थी और उसके काले रंग के निपल्स कमीज़ के उपेर से नज़र आ रहे थे.

"तुझे मैने वो ब्रा क्या समान तोलने के लिए दे रखी हैं?" उसने सरला से पूछा. "पहेनटी क्यूँ नही?"

सरला ने अपने सीने की तरफ देखा तो समझ गयी के दामिनी क्या कह रही थी. उसने फ़ौरन हाथ से पकड़के कमीज़ को झटका जिससे वो उसके जिस्म से अलग हो गयी

"पहेनटी क्यूँ नही है?" दामिनी ने दोबारा पूछा

"जी वो बहुत फसा फसा सा महसूस होता है" सरला ने कहा

"अब तूने इतनी सी उमर में ये इतनी बड़ी बड़ी लटका ली हैं तो टाइट तो लगेगा ही. बिना उसे पहने घर में घूमेगी तो सबसे पहले नज़र तेरी इन हिलती हुई स्तनों पर जाएगी सबकी. घर में ठाकुर साहब होते हैं, तेज होता है, दामूकाका हैं. शरम नही आती तुझे?" दामिनी सरला को डाँट रही थी और वो बेचारी खड़ी चुप चाप सुन रही थी.

"जी अबसे पहना करूँगी" सरला ने जैसे रोते हुए जवाब दिया

सरला ने फिर चारों तरफ बेसमेंट पर नज़र डाली. उसे समझ नही आ रहा था के कहाँ से सफाई शुरू करवाए.

"चल एक काम कर. वो कपड़ा उठा वहाँ से और इन सब चीज़ों पर से सबसे पहले धूल ख़त्म कर साफ कर. ख़त्मू बाद में लगाते हैं" उसने सरला से कहा

सरला गर्दन हिलाती आगे बढ़ी और झुक कर सामने रखा कपड़ा उठाया

"क्या कर रही है?" दामिनी ने कहा तो वो फिर पलटी और सवालिया नज़र से उसकी तरफ देखने लगी. वो तो वही करने जा रही थी जो दामिनी ने उसे करने को कहा था

"ये जो कपड़े तूने पहेन रखे हैं ना तेरी माँ ने नही दिए तुझे. मैने दिए हैं. मेरी ननद के हैं और बहुत महेंगे हैं. इन्हें पहेंकर सफाई करेगी तो ये फिर पहेन्ने लायक नही बचेंगे" दामिनी ने कहा

सरला बेवकूफ़ की तरह उसकी तरफ देखने लगी. सरला क्या कहना चाह रही थी ये उसकी समझ में नही आ रहा था

"अरे बेवकूफ़ अपनी कमीज़ उतारकर एक तरफ रख और फिर सफाई कर" दामिनी ने कहा

सरला पर जैसे किसी ने पठार मार दिया हो.

"जी?" उसे ऐसे पूछा जैसे अपने कानो पर भरोसा ना हुआ हो

"क्या जी?" दामिनी ने कहा "चल उतार जल्दी और काम शुरू कर"

"पर" सरला हिचकिचाते हुए बोली "मैने अंदर कुछ नही पहेन रखा"

"हां पता है. देखा था मैने अभी" दामिनी ने कहा "तो क्या हुआ? यहाँ कौन आ रहा है तेरी स्तन देखने? यहाँ या तो मैं हूँ या तू है. और रही मेरी बात तो जैसी 2 तेरे पास हैं वैसी ही मेरे पास भी हैं. चल उतार अब"

सरला अब भी दामिनी की तरफ देखे जा रही थी. जब वो थोड़ी देर तक नही हिली तो दामिनी ने गुस्से से उसकी तरफ घूरा

"तू उतार रही है या ये काम मैं करूँ?"

सरला ने जब देखा के दामिनी का कहा उसे मानना पड़ेगा तो उसे कपड़ा एक तरफ रखा और अपनी कमीज़ उतार दी. वो उपेर से बिल्कुल नग्न हो गयी. बड़ी बड़ी पसीने में भीगी उसकी दोनो स्तन आज़ाद हो गयी.

"ला ये मुझे पकड़ा दे" दामिनी ने उसके हाथ से कमीज़ लेते हुए कहा .दोस्तो बाकी कहानी अगले भाग मैं

सरला ने कपड़ा लेकर समान पर धीरे धीरे मारते हुए धूल हटानी शुरू की. बरसो की चढ़ि हुई धूल फ़ौरन हवा में उड़ने लगी और सरला ख़ासने लगी.

"इधर आ" दामिनी ने उसे अपने पास बुलाया

सरला उसके सामने आकर खड़ी हो गयी. दामिनी ने अपने गले से दुपट्टा हटाया और उसके मुँह पर इस तरह बाँध दिया की उसकी नाक और मुँह ढक गये. दुपट्टा बाँधते हुए वो दामिनी के

ठीक सामने खड़ी थी और दामिनी चाहकर भी अपनी नज़रें उसकी स्तनों से नही हटा पर रही थी.

सरला ने दोबारा सफाई करनी शुरू की. दामिनी दो कदम पिछे हटकर खड़ी उसे देख रही थी. पहले तो सरला एक हाथ से सफाई कर रही थी और दूसरा हाथ अपनी स्तनों पर रखा हुआ था पर जब दामिनी ने टोका तो उसने दूसरा हाथ भी हटा लिया और स्तन खुली छोड़ दी.

दामिनी उसके पिछे खड़ी उसे देख रही थी. सरला पसीने में पूरी तरह भीग चुकी थी और उसकी सलवार भी उसके जिस्म से चिपक गयी थी. दामिनी उसे तकरीबन नग्न हालत में देखते हुए उसका जिस्म उसकी माँ कजरी से मिलने लगी. सरला भी अपनी माँ कजरी की तरह अच्छी कद काठी में ढली हुई थी. उसमें देखने लायक बात ये थी के वो भी अपनी माँ की तरह एकदम ढली हुई थी. दोनो का बदन एकदम गठा हुआ था और कहीं भी हल्के से भी मोटापे का निशान नही था. सरला अपनी माँ से भी दुबली पतली थी पर जिस चीज़ में वो अपनी माँ और खुद दामिनी को भी हरा देती थी वो थी उसकी स्तन जो उसकी उमर के हिसाब से कहीं ज़्यादा बड़ी हो गयी थी. दामिनी ने उसकी स्तनों को घूरकर देखा और अंदाज़ा लगाया के सरला की स्तन उससे भी ज़्यादा बड़ी थी. कजरी सरला से थोड़ी लंबी थी और दिन रात ठुकने के कारण उसकी पिछवाड़ा थोड़ी बाहर निकल गयी थी.

काफ़ी देर तक दामिनी इस सोच में डूबी रही और सरला धूल ख़त्मने में. अचानक दामिनी की नज़र कमरे में रखे एक बॉक्स पर पड़ी. बॉक्स पर कोई ताला नही था. उसने सरला को रुकने को कहा और बॉक्स के पास पहुँची और उसे खोला.

बॉक्स में कुछ कपड़े रखे हुए थे. देखने से लग रहा था के काफ़ी अरसे से यहीं पड़े हैं. खुद उसे पता नही था के किसके हैं पर एकदम ठीक हालत में थे. उसने कुछ सोचा और सरला की तरफ मूडी.

"क्या लगता है? तुझे ये कपड़े आ जाएँगे?" उसने सरला से पूछा

"पता नही" सरला ने कंधे उचका दिए. उसने अपना एक हाथ फिर अपनी स्तनों पर रख लिया था. जिस्म पसीने से भीगा होने की वजह से धूल उसके जिस्म से चिपक गयी थी.

"पहेनके देख" उसने सबसे उपेर रखी एक चोली उठाकर सरला की तरफ बधाई. सरला ने हाथ बढाकर चोली ली और देखने लगी के कहाँ से पहने. अचानक दामिनी ने उसे रोक लिया

"तेरे पूरे जिस्म पर धूल लगी हुई है. ऐसे मत पहेन" उसने सरला से कहा तो सरला रुक कर अपने आपको देखने लगी.

दामिनी ने बॉक्स में से एक कपड़ा निकाला जो देखने में एक पुराने दुपट्टे जैसा लगता था.

"इधर आ" उसने सरला को इशारा किया

सरला ने अपनी स्तनों को हाथ से ढक रखा था. दामिनी ने उसका हाथ झटक कर एक तरफ कर दिया और उसके मुँह से अपना दुपट्टा खोलकर एक तरफ रख दिया

"हाथ उपेर कर" उसने सरला के हाथ पकड़कर उसके सर के उपेर कर दिया. सरला के दोनो स्तनों उपेर को खींच गयी और वो हाथ उपेर किए अजीब नज़रों से दामिनी को देखने लगी.

दामिनी ने हाथ में पकड़े कपड़े से उसके बदन पर लगी धूल साफ करनी शुरू कर दी. पहले सरला का चेहरा, फिर उसकी गर्दन, फिर हाथ और फिर वो धीरे से कपड़ा सरला की स्तनों पर फेरने लगी.

"मालकिन मैं कर लूँगी" कहते हुए सरला ने अपने हाथ नीचे किए

"खड़ी रह चुप छाप" सरला ने गुस्से से कहा तो उस बेचारी ने फिर अपने हाथ उपेर कर लिए

दामिनी ने फिर उसकी स्तनों पर कपड़ा फेरना शुरू कर दिया. उसने महसूस किया के सरला की स्तनों बहुत मुलायम थी जबकि उसकी अपनी इतनी ज़्यादा नही थी. उसने एक एक करके दोनो स्तनों पर कपड़ा फेरा तो धूल हट गयी पर दामिनी नही हटी. उसे सरला की स्तनों पर कपड़ा फेरने में बहुत मज़ा आ रहा था. धीरे से उसने अपने दूसरे हाथ को भी स्तन पर लगाया. एक हाथ से उसने स्तन पकड़ी और दूसरे हाथ से साफ करने लगी. सरला की स्तन बहुत बड़ी होने की वजह से अपने ही वज़न से नीचे को ढालकी हुई थी. दामिनी ने अपने हाथ से दोनो स्तनों को बारी बारी उठाया और उनके नीचे कपड़ा फेरने लगी.

साफ करना तो बस अब एक बहाना रह गया था. दामिनी सफाई के बहाने सरला की दोनो स्तनों को लगभग रगड़ रही थी. कपड़े से कम अपने हाथ से ज़्यादा. उसने महसूस किया के सरला की स्तन तो काफ़ी बड़ी थी पर निपल्स नाम भर के लिए ही थे बस. वो उसके निपल्स को अपनी उंगलियों के बीचे में पकड़ कर धीरे धीरे घुमाने लगी. सरला के मुँह से एक आह निकली तो दामिनी ने उसके चेहरे की तरफ देखा. सरला हाथ उपेर किए चुप चाप खड़ी थी और उसने अपनी आँखें बंद कर रखी थी. दामिनी को समझ नही आया के सरला को मज़ा आ रहा था या उसने शरम से आँखें बंद कर ली थी. खुद उसकी हालत तो ये थी के योनि गीली होनी शुरू हो गयी थी. दामिनी को खुद अपने उपेर हैरत हो रही थी के वो एक लड़की के जिस्म को ऐसे सहला रही थी जैसे खुद कोई मर्द हो. उसे सरला का नंगा जिस्म देखने में मज़ा आ रहा था जबकि खुद उसके पास भी वही था जो सरला के पास.

सरला की स्तनों से थोड़ी देर खेलने के बाद उसने नज़र नीचे की और धीरे से उसके पेट पर हाथ फेरा. सरला अब उसे कुछ नही कह रही थी. बस आँखें बंद किए चुप चाप खड़ी थी पर हां उसकी साँस थोड़ी तेज़ हो गयी थी. दामिनी ने हल्का सा पिछे होकर उसकी टाँगो के बीच नज़र डाली. पसीने से भीगी होने की वजह से सरला की सलवार उसकी योनि के उपेर चिपक

गयी थी. दामिनी ने देखा के उसने अंदर पॅंटी भी नही पहनी हुई थी और योनि के बाल सलवार के उपेर से नज़र आ रहे थे. दामिनी के दिल में अचानक सरला को पूरी तरह नग्न देखने के चाह उठी.

इसमें कुछ ल़हेंगे और सलवार भी हैं. तू वो भी पहन के देख सकती है के तुझे आएँगे या नही" दामिनी ने कहा और सरला की तरफ देखा. सरला कुछ ना बोली और ना ही उसने अपनी आँखें खोली.

दामिनी आगे बढ़ी और उसने सरला की सलवार का नाडा खोल दिया

"मालकिन" इस बार सरला पर फ़ौरन असर हुआ. उसने अपने हाथ जल्दी से नीचे किया और घुटनो तक सरक चुकी सलवार को उपेर कमर तक खींचा

"क्या हुआ? ये सलवार क्या इसके उपेर ही पहेनके देखेगी?" दामिनी ने कहा

"मैं बाद में देख लूँगी मालकिन. आप मुझे दे दीजिए" सरला ने जल्दी से कहा

"मेरे सामने ही देख. सारे के सारे तुझे थोड़े दे दूँगी. मुफ़्त का माल है क्या. दो तीन पहनके देख ले और जो सही आते हैं वो रख लेना. कुछ अपनी माँ के लिए भी निकाल लेना" दामिनी ने कहा

"मैं बाद में देख लूँगी" सरला अपनी सलवार छोड़ने को तैय्यार नही थी. उसने खुली हुई सलवार को ऐसे पकड़ रखा था जैसे दामिनी उसके साथ बलात्कार करने वाली हो. दामिनी को गुस्सा आने लगा.

वो आगे बढ़ी, सरला को कंधे से पकड़ा और उसे लगभग धक्का देते हुए दीवार के साथ लगाके खड़ा कर दिया. सरला की कमर पिछे दीवार के साथ जा लगी.

"छोड़ इसे" उसने सरला के हाथ पकड़कर फिर ज़बरदस्ती उसके सर के उपेर कर दिए. सलवार सरक कर सरला के पैरों में जा गिरी. वो हाथ उपेर किए दामिनी के सामने सरलानग्न खड़ी थी.

दामिनी ने बॉक्स में से एक सलवार निकाली और उसे सरला की कमर से लगाकर देखने लगी

"ये ठीक लग रही है" कहते हुए उसने सलवार एक तरफ रखी और ऐसे ही दो तीन कपड़े निकालकर सरला की जिस्म पर लगा लगाकर देखने लगी. सरला ने फिर आँखें बंद कर ली थी.

"अरे आँखें खोल ना" उसने सरला से कहा तो सरला ने इनकार में सर हिला दिया

"हे भगवान" दामिनी ने थोडा सा गुस्से में कहा और सरला के करीब आई "मुझसे क्या शर्मा रही है. मैं एक औरत हूँ मर्द नही. मेरे पास भी वही है जो तेरे पास है"

सरला ने फिर भी आँख नही खोली.

"वैसे एक बात कहूँ सरला" दामिनी इस बार थोड़े नरम लहज़े में बोली "शुक्र माना के मैं औरत हूँ. तू नग्न इतनी सुंदर लगती है ना के मैं अगर मर्द होती तो तेरे साथ यहीं सुहग्रात मना लेती"

कहकर दामिनी हसी तो इस बार उसने देखा के सरला पहली बार मुस्कुराइ

"अब तो आँखें खोल दे" दामिनी ने कहा तो सरला ने धीरे से अपनी आँखें खोली. दामिनी उसके ठीक सामने खड़ी थी. दोनो की नज़रें एक दूसरे से मिली. ना दामिनी कुछ बोली और ना ही सरला. बस दोनो एक दूसरे कुछ पल के लिए देखती रही. फिर ना जाने दामिनी के दिल में क्या आई के वो दो कदम पिछे हटी और सामने खड़ी सरला को सर से पैर तक नग्न देखने लगी. जैसे किसी खरीदी हुई चीज़ को अच्छी तरह से देख रही हो. इस बार सरला भी कुछ नही बोली और ना ही उसने अपनी आँखें बंद की. हाथ तक नीचे नही किए. वैसे ही हाथ उपेर किए नग्न खड़ी रही. दामिनी फिर थोड़ा आगे आई और धीरे से एक हाथ सरला की योनि पर रखा. सरला सिहर उठी पर बोली कुछ नही. ना ही दामिनी का हाथ अपनी योनि से हटाया.

"ये बाल क्यूँ नही हटा ती यहाँ से?"दामिनी ने सरला से पूछा तो सरला उसकी तरफ चुप चाप देखने लगी. उसकी आँखें चढ़ गयी थी जिससे दामिनी को अंदाज़ा हो गया के उसे मज़ा आ रहा है. दामिनी ने धीरे धीरे अपना हाथ योनि पर उपेर नीचे फेरना शुरू किया. उसे यकीन नही हो रहा था के उसके अंदर का एक हिस्सा ऐसा भी है जो एक औरत के साथ भी जिस्म का मज़ा ले सकता है. वो चुपचाप सरला की योनि रगड़ती रही और दूसरा हाथ उसकी स्तनों पर फेरना शुरू कर दिया. अब सरला की आँखें बंद होने लगी थी और उसने ज़ोर ज़ोर से साँस लेनी शुरू कर दी थी. दामिनी ने उसके चेहरे से नज़र हटाकर उसकी छाती पर डाली और सरला के छहोटे छोटे निपल्स को देखा. फिर अगले ही पल उसने दो काम किए. पहला तो ये के नीचे को झुक कर सरला का एक निपल अपने मुँह में ले लिया और दूसरा नीचे से अपनी एक अंगुली सरला की योनि के अंदर घुसा दी.

"मालकिन" योनि में अंगुली घुसते ही सरला इतनी ज़ोर से हिली के दामिनी भी लड़खड़ाके गिरते गिरते बची. वो सरला से थोड़ी दूर होके संभली और खुद को गिरने से रोका.

"दर्द होता है मालकिन" सरला ने दामिनी से कहा पर दामिनी अब उसकी तरफ नही देख रही थी. उसकी नज़र कमरे में एक कोने में रखे एक दूसरे बॉक्स पर थी.

वो बॉक्स बाकी सब समान के बिल्कुल पिछे एक कोने में रखा हुआ था. देखकर ही लगता था

के उसे च्छुपाने की कोशिश की गयी है. बॉक्स रखकर उसके सामने बाकी सब फर्निचर और दूसरा समान खींचा गया है. पर जिस वजह से दामिनी का ध्यान उस बॉक्स की तरफ गया था वो उस बॉक्स पर लगा ताला था. कमरे में और किसी बॉक्स पर ताला नही था. पुराने बेकार पड़े समान पर ताला लगाकर कोई करता भी क्या पर ना जाने क्यूँ उस बॉक्स पर ताला था. और उसे देखके पता चलता था के वो बाकी के बॉक्सस के मुक़ाबले नया था.

"मालकिन" सरला फिर बोली तो दामिनी ने उसकी तरफ देखा. सरला अब भी वैसे ही नग्न खड़ी थी. उसने कपड़े पहेन्ने की कोई कोशिश नही की थी.

"तू एक काम कर. इसमें से कुछ कपड़े उठा ले और कपड़े पहेनकर उपेर जा. मैं आती हूँ" दामिनी ने कहा

"पर बाकी का काम?" सरला ने कमरे पर निगाह घूमाते हुए कहा

"दिन ढलना शुरू हो गया है. पिताजी भी आते होंगे. बाकी कल देखते हैं. तू चल. मैं आती हूँ थोड़ी देर बाद" दामिनी ने सरला को जाने का इशारा किया.

सरला ने बॉक्स से कुछ कपड़े उठाए, अपने कपड़े पहने और सीढ़ियाँ चढ़ती बस्मेंट से निकल गयी.

सरला के जाने के बाद दामिनी ने अपने कपड़े ठीक किए और बाकी रखे समान के बीच से होती बॉक्स तक पहुँची.

वो बॉक्स एक कपड़े रखने का पुराने ज़माने के संदूक जैसा बड़ा सा लड़की का बना हुआ था.काफ़ी वक़्त से रखा होने की वजह से उसपर भी धूल चढ़ गयी थी. उसपर पीतल का कुण्डा और चारो तरफ पीतल की ही बाउंड्री सी हो रखी थी. उस पीतल को देखकर ही मालूम पड़ता था के ये संदूक बाकी सारे बॉक्सस के मुक़ाबले यहाँ कम वक़्त से है. पर जिस बात से दामिनी की नज़र उसपर थी वो ये थी के इस पर ताला क्यूँ था.अगर इसमें भी बाकी के बॉक्सस की तरह पुरानी चीज़ें थी तो ताला लगाने की क्या ज़रूरत थी. घर में अब सिर्फ़ एक तरह से 2 ही लोग थे. वो और ठाकुर. उसका वो बॉक्स था नही और ठाकुर साहब के चीज़ें यहाँ ताले में क्यूँ पड़ी होंगी. एक पल के लिए उसके दिल में ठाकुर से पुच्छने का ख्याल आया पर अगले ही पल उसने वो ख्याल खुद दिल से निकाल दिया. वो पहले खुद उस बॉक्स को खोलकर देखना चाहती थी.

दामिनी ने आस पास नज़र दौड़ाई ताकि कुछ ऐसी चीज़ मिल जाए जिससे वो ताला तोड़ सके. वो अभी ढूँढ ही रही थी के सरला फिर सीढ़ियाँ उतारकर नीचे आई.

"ठाकुर साहब आ गये हैं. आपको याद कर रहे हैं" उसने दामिनी से कहा

दामिनी बॉक्स को बाद में खोलने का इरादा बनके उसके साथ हवेली के अंदर आई. खुद वो भी पूरी धूल में सनी हुई थी. उसे देखकर ठाकुर हस्ने लगे.

"ये क्या हाल बना रखा है?"

"सफाई करने की कोशिश कर रही थी" दामिनी ने उन्हें देखते ही चेहरे पर घूँघट डाल लिया क्यूंकी सरला साथ थी.

"अरे तो ये काम खुद करने की क्या ज़रूरत थी. कल तक रुक जाती. हम नौकर बुलवा देते" ठाकुर ने कहा

"रुक ही गयी हूँ. अब तो कल ही होगा. कोशिश थी के मैं और सरला मिलकर कर लें पर बहुत मुश्किल है" दामिनी ने जवाब दिया

"ह्म्म्म्म " ठाकुर ने जवाब दिया

"हाँ ज़रा कपड़े बदलके आते हैं" दामिनी ने कहा और अपने कमरे की और चली. सरला भी उसके साथ थी.

"मेरे साथ आ ज़रा" दामिनी ने सरला को कहा तो वो उसके साथ अंदर आ गयी

भाग - 11

अंदर आकर दामिनी ने कमरा बंद किया और सरला के सामने ही कपड़े उतारने लगी. सलवार और कमीज़ उतारके वो सिर्फ़ एक ब्रा और पॅंटी में रह गयी.

"ये कपड़े ले जाके धुलने के लिए डाल दे" उसने अपने कमीज़ और सलवार सरला की तरफ बढ़ाए

सरला आँखें खोले उसकी तरफ देख रही थी जैसे यकीन ना हो रहा हो के दामिनी उसके सामने आधी नग्न खड़ी है. दामिनी की पॅंटी सामने से बस उसकी योनि को हल्का सा ढक रही थी. उसने गौर किया के सरला की नज़र उसकी टाँगो के बीच थी.

"ऐसे क्या देख रही है" उसने सरला से पूछा "वही सब है जो तेरे पास है. कुछ नया नही है"

सरला उसकी बात सुनकर थोड़ा झेंप गयी पर अगले ही पल हल्की सी आवाज़ में बोली

"तो आप मुझे नीचे क्यूँ देख रही थी?"

उसने कहा तो दामिनी हास पड़ी पर कुछ जवाब ना दिया. सरला अब भी टेडी नज़रों से उसकी पॅंटी की तरफ देख रही थी

"इतने गौर से क्या देख रही है?" दामिनी ने पूछा

"वो मालकिन आपके .... "सरला ने बात अधूरी छोड़ दी

"क्या?" दामिनी ने उसकी नज़र का पिच्छा करते हुए अपनी योनि की तरफ देखा

"आपके बाल नही है यहाँ पर." सरला ने ऐसे कहा जैसे कोई बहुत राज़ की बात बताई हो

"हां पता है मुझे. साफ करती हूँ. तू भी किया कर" दामिनी ने कहा और पलटकर अपना टॉवेल उठाया

"किससे?" सरला ने पूछा

"बताऊंगी बाद में. अभी तू जा. मुझे नाहकार नीचे जाना है. पिताजी से कुछ बात करनी है"

दामिनी ने कहा तो सरला गर्दन हिलाती चली गयी.

नाहकार दामिनी नीचे पहुँची. ठाकुर बड़े कमरे में बैठे टीवी देख रहे थे.

"कैसा रहा सब?" दामिनी ने पूछा

"जी?" ठाकुर उसकी बात नही समझे

"केस की पहली डेट थी ना" दामिनी ने कहा

"ओह" ठाकुर उसकी बात समझते हुए बोले "कुछ ख़ास नही हुआ. आज पहला दिन था तो बस दोनो तरफ से अपनी दलील पेश की गयी. सुनवाई अभी शुरू नही हुई. एक हफ्ते बाद की तारीख मिली है."

"तो इतना वक़्त कहाँ लग गया ?" दामिनी ने दोबारा पूछा

"आप ही की तरह हम भी ये कोशिश कर रहे हैं के हवेली को फिर पहले की तरह बसा सकें. कुछ लोगों से बात करी है. कल से हमारी ज़मीन पर फिर से काम शुरू हो जाएगा. वहाँ फिर से खेती होगी. और हमने फ़ैसला किया है के खेती के सिवा हम और भी दूसरा कारोबार शुरू करेंगे."

"दूसरा कारोबार?" दामिनी ने उनके सामने बैठते हुए पूछा

"हां सोचा है के एक कपड़े की फॅक्टरी लगाएँ. काफ़ी दिन से सोच रहे थे. आज उस सिलसिले में पहला कदम भी उठाया है. वकील और फॅक्टरी लगाने के लिए एक इंजिनियर से भी मिलके आए हैं" ठाकुर ने जवाब दिया

"ह्म .... "दामिनी मुस्कुराते हुए बोली.उसने अपना घूँघट हटा लिया था क्यूंकी सरला आस पास नही थी "आपको बदलते हुए देखके अच्छा लग रहा है"

"ये आपकी वजह से है" ठाकुर ने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया "और एक और चीज़ करके आए हैं हम आज. वो हमने आपके लिए किया है"

"क्या" दामिनी ने फ़ौरन पूछा

"वो हम आपको कल बताएँगे. और ज़िद मत करिएगा. हमारे सर्प्राइज़ को सर्प्राइज़ रहने दीजिए. कल सुबह आपको पता चल जाएगा"

ठाकुर ने पहले ही ज़िद करने के लिए मना कर दिया था इसलिए दामिनी ने फिर सवाल नही

किया. अचानक उसके दिमाग़ में कुछ आया और वो ठाकुर की तरफ देखती हुई बोली

"उस लाश के बारे में कुछ पता चला?"

लाश की बात सुनकर ठाकुर की थोड़ा संगीन हुए

"नही. हम इंस्पेक्टर पठाण से भी मिले थे. वो कहता है के सही अंदाज़ा तो नही पर काफ़ी पहले दफ़नाया गया था उसे वहाँ." ठाकुर ने कहा

"आपको कौन लगता है?" दामिनी ने पूछा

"पता नही" ठाकुर ने लंबी साँस छोड़ते हुए बोले " हमारे घर से ना तो आज तक कोई लापता हुआ और ना ही ऐसी मौत किसी को आई तो यही लगता है के घर में काम करने वाले किसी नौकर का काम है."

"आपका कोई दूर का रिश्तेदार भी तो हो सकता है" दामिनी ने शंका जताई

"हमारे परदादा ने ये हवेली बनवाई थी. उनकी सिर्फ़ एक औलाद थी, हमारे दादा जी और हमारे दादा की भी एक ही औलाद थी,हमारे पिताजी.तो एक तरह से हमारा पूरा खानदान इसी हवेली में रहा है. इस हवेली से बाहर हमारे कोई परिवार नही रहा." ठाकुर ने जवाब दिया तो सरला को थोड़ी राहत सी महसूस हुई

"हवेली के आस पास बाउंड्री वॉल के अंदर ही इतनी जगह है के ये मुमकिन है के हादसा हुआ और किसी को कानो कान खबर लगी. किसी ने लाश को कोने में ले जाके दफ़ना दिया और वहाँ जबसे हवेली बनी है तबसे हमेशा कुछ ना कुछ उगाया गया है. पहले एक आम का छोटा सा बाग हुआ करता था और फिर फूलों का एक बगीचा. इसलिए कभी किसी के सामने ये हक़ीक़त खुली नही." ठाकुर ने कहते हुए टीवी बंद कर दिया और संगीन आवाज़ में दामिनी से बात करने लगे

"ऐसा भी तो हो सकता है के ये काम किसी बाहर के आदमी का हो जिससे हमारा कोई लेना देना नही" दामिनी बोली

"मतलब?" ठाकुर ने आगे को झुकते हुए कहा

"इस हवेली में पिच्छले 10 साल से सिर्फ़ मैं और आप हैं और एक दामूकाका. यहाँ कोई आता जाता नही बल्कि लोग तो हवेली के नाम से भी ख़ौफ्फ खाते हैं. तो ये भी तो हो सकता है के इसी दौरान कोई रात को हवेली में चुपचाप आया और लाश यहाँ दफ़नाके चला गया. ये सोचकर के क्यूंकी हवेली में कोई आता नही तो लाश का पता किसी को नही चलेगा." दामिनी ने कहा

"हो तो सकता है" ठाकुर ने जवाब दिया "पर उस हालत में हवेली के अंदर लाश क्यूँ? इस काम के लिए तो लाश को कहीं जंगल में भी दफ़ना सकता था"

"हां पर उस हालत में लाश मिलने पर ढूँढा जाता के किसकी लाश है. पर हवेली में लाश मिलने पर सारी कहानी हवेली के आस पास ही घूमके रह जाती जैसा की अब हो रहा है" दामिनी ने कहा तो ठाकुर ने हां में सर हिलाया

कह तो आप सही रही हैं. जो भी है, हम तो ये जानते हैं के हमारी हवेली में कोई बेचारी जान कब्से दफ़न थी. उसके घरवाले पर ना जाने क्या बीती होगी" ठाकुर सोफे पर आराम से बैठते हुए बोले

"बेचारी?" दामिनी ने फ़ौरन पूछा

"हां हमने आपको बताया नही?" ठाकुर ने कहा "वो पठाण कहता है के वो लाश किसी औरत की थी."

सारी शाम दामिनी के दिमाग़ में यही बात चलती रही के हवेली में मिली लाश किसी औरत की थी. वो यही सोचती रही के लाश किसकी हो सकती है. जब कुछ समझ ना आया तो उसने फ़ैसला किया के दामूकाका और कजरी से इस बारे में बात करेगी के गाओं से पिच्छले कुछ सालों में कोई औरत गायब हुई है क्या? पर फिर उसे खुद ही अपना ये सवाल बेफ़िज़ूल लगा. जाने वो लाश कब्से दफ़न है. किसको याद है के गाओं में कौन है और कौन नही.

आख़िर में उसने इस बात को अपने दिमाग़ से निकाला तो बेसमेंट में रखे बॉक्स की बात उसके दिमाग़ में अटक गयी. सोच सोचकर दामिनी को लगने लगा के उसका सर दर्द से फॅट जाएगा.

शाम का खाना खाकर वो अपने कमरे की तरफ बढ़ी. ठाकुर अपने कमरे में पहले ही जा चुके थे. सरला और दामूकाका किचन की सफाई में लगे हुए थे. दामिनी सीढ़ियाँ चढ़ ही रही थी के बाहर एक गाड़ी के रुकने की आवाज़ सुनकर उसके कदम थम गये. थोड़ी ही देर बाद तेज हवेली में दाखिल हुआ.

वो नशे में धुत था. कदम ज़मीन पर पड़ ही नही रहे थे. उसकी हालत देखकर दामिनी को हैरानी हुई के वो कार चलाकर घर तक वापिस कैसे आ गया. वो चलता हुआ चीज़ों से टकरा रहा था. ज़ाहिर था के उसे सामने की चीज़ भी साफ दिखाई नही दे रही थी.

सीढ़ियाँ चढ़कर तेज दामिनी की तरफ आया. उसका कमरे भी दामिनी के कमरे की तरह पहले फ्लोर पर था. दामिनी उसे देखकर ही समझ गयी के वो सीढ़ियाँ चढ़ने लायक हालत में नही है. अगर कोशिश की तो नीचे जा गिरेगा. वो सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आई और तेज को सहारा दिया.

उसने एक हाथ से तेज की कमर को पकड़ा और उसे खड़े होने में मदद की. तेज उसपर झूल सा गया जिस वजह से खुद दामिनी भी गिरते गिरते बची.उसने अपने कदम संभाले और तेज को सहारा देकर सीढ़ियाँ चढ़नी शुरू की. तेज ने उसके कंधे पर हाथ रखा हुआ था. दामिनी जानती थी के उसे इतना भी होश नही के इस वक़्त वो उसे सहारा दे रही है और मुमकिन है के वो सुबह तक सब भूल जाएगा.

मुश्किल से सीढ़ियाँ चढ़ कर दोनो उपेर पहुँचे. दामिनी तेज को लिए उसके कमरे तक पहुँची और दरवाज़ा खोलने की कोशिश की. पर दरवाज़ा लॉक्ड था.

"तेज चाबी कहाँ है?"उसने पूछा पर वो जवाब देने की हालत में नही था.

दामिनी ने तेज को दीवार के सहारे खड़ा किया और उसकी जेबों की तलाशी लेने लगी. तेज उसके सामने खड़ा था और उसका जिस्म सामने खड़ी दामिनी पर झूल सा रहा था. अचानक तेज ने अपने हाथ उठाए और सीधा दामिनी की पिछवाड़ा पर रख दिए.

दामिनी उच्छल पड़ी और तभी उसे तेज की जेब में रखी चाभी मिल गयी. उसने कमरे का दरवाज़ा खोला और सहारा देकर तेज को अंदर लाई.

बिस्तर पर लिटाकर दामिनी तेज के जूते उतारने लगी.उसने उस वक़्त एक नाइटी पहेन रखी और नीचे ना तो ब्रा था ना पॅंटी. तेज के सामने झुकी होने के कारण उसकी नाइटी का गला सामने की और झूल रहा था और उसकी दोनो स्तन झूलती हुई दिख रही थी.

नशे में धुत तेज ने गर्दन उठाकर जूते उतारती दामिनी की तरफ देखा. दामिनी ने भी नज़र उठाकर उसकी और देखा तो पाया तो तेज की नज़र कहीं और है. तभी उसे अपनी झूलती हुई स्तनों का एहसास हुआ और वो समझ गयी के तेज क्या देखा रहा. उसने अपनी नाइटी का गला पकड़कर फ़ौरन उपेर किया पर तब्भी तेज ने ऐसी हरकत की जिसके लिए वो बिल्कुल तैय्यार नही थी.

उसने दामिनी के दोनो हाथ पकड़े और उसे अपने साथ बिस्तर पर खींच लिया. इससे पहले के दामिनी कुछ समझ पाती या कुछ कर पाती वो उसके उपेर चढ़ गया और हाथों से पकड़कर उसकी नाइटी उपेर खींचने लगा

"तेज क्या कर रहे हो?" दामिनी फ़ौरन गुस्से में बोली पर तेज कहाँ सुन रहा था. वो तो बस उसकी नाइटी उपेर खींचने में लगा हुआ.

"खोल ना साली" तेज नशे में बड़बड़ाया

उसकी बात सुनकर दामिनी समझ गयी के वो उसे उन्हीं वेश्या में से एक समझ रहा था जिन्हें वो हर रात ठोका करता था. हर रात वो उसे सहारा देती थी और वो उन्हें ठोक्ता था पर फ़र्क़

सिर्फ़ ये था के आज रात वो घर पे था और सहारा दामिनी दे रही थी.

दामिनी ने पूरी ताक़त से तेज को ज़ोर से धकेल दिया और वो बिस्तर से नीचे जा गिरा. दामिनी बिस्तर से उठकर उसकी तरफ गुस्से से मूडी ताकि उसे सुना सके पर तेज ने एक बार "ह्म्म्म्म" किया और नीचे ज़मीन पर ही करवट लेकर मूड सा गया. दामिनी जानती थी के वो नशे की वजह से नींद के आगोश में जा चुका था. उसने बिस्तर से चादर उठाई और तेज के उपेर डाल दी.

अपने कमरे में जाकर दामिनी बिस्तर पर लुढ़क गयी. बिस्तर पर लेटकर वो अभी जो हुआ था उस बारे में सोचने लगी. उसे 2 बातों की खुशी थी. एक तो ये के आज रात तेज घर लौट आया था. और दूसरा उसकी हरकत से ये बात सही साबित हो गयी थी के उसके लिए अगर यहीं घर में ही योनि का इंतज़ाम हो जाए तो शायद वो अपना ज़्यादा वक़्त घर पे ही गुज़ारने लगे.

हल्की आहट से दामिनी की आँख खुली. उसने कमरे के दरवाज़े की तरफ नज़र की तो देखा के ठाकुर अंदर आ रहे थे. दामिनी ने फ़ौरन नज़र अपने बिस्तर के पास नीचे ज़मीन पर डाली. सरला वहाँ नही थी. आज रात वो अपने कमरे में ही सो गयी थी. दामिनी ने राहत की साँस ली और ठाकुर की तरफ देखकर मुस्कुराइ.

"पता नही कब आँख लग गयी" कहते हुए उसने घड़ी की तरफ नज़र डाली. रात के 11 बज रहे थे.

"आप आई नही तो हमें लगा के सरला आज भी आपके कमरे में ही सो रही है इसलिए हम ही चले आए" ठाकुर ने उसके करीब आते हुए कहा

"सरला का नाम बड़ा ध्यान है आपको" दामिनी ने मुस्कुराते हुए कहा तो जवाब में ठाकुर भी मुस्कुरा दिए.

दामिनी बिस्तर पर अपनी टांगे नीचे लटकाए बैठी थी. ठाकुर उसके सामने आकर खड़े हुए और झुक कर उसके होंठों को चूमा.

"हमें तो सिर्फ़ आपका नाम ध्यान है" ठाकुर ने कहा और हाथ दामिनी की छाती पर रखकर दबाने लगे. दामिनी ने ठाकुर के होंठ से होंठ मिलाए रखे और नीचे उनका पाजामा खोलने लगी. नाडा खुलते ही पाजामा सरक कर नीचे जा गिरा और लिंग उसके हाथों में आ गया.

फिर कमरे में वासना का वो तूफान उठा जो दोनो से संभाला नही गया. कुछ ही देर बाद दामिनी ठाकुर के उपेर बैठी उनके लिंग पर उपेर नीचे कूद रही थी. उसकी स्तन उसके जिस्म के साथ साथ उपेर नीचे उच्छल रही थी जिन्हें ठाकुर लगातार ऐसे दबा रहे थे जैसे आटा गूँध रहे हों.

"क्या बाआआआत है आजज्ज मेरी कककककचातियों से हाआआआथ हट नही रहे आआआपके?" दामिनी ने महसूस किया था के आज ठाकुर का ध्यान उसकी स्तनों पर कुछ ज़्यादा ही था

"कहीं कल रात की देखी सरला की तो याद नही आ रही?" वो लिंग पर उपेर नीचे होना बंद करती हुई बोली और मुस्कुराइ

जवाब में ठाकुर ने उसे फ़ौरन नीचे गिराया और फिर ठुकाई में लग गये. कमरे में फिर वो खेल शुरू हो गया जिसमें आख़िर में दोनो ही खिलाड़ी जीत जाते हैं और दोनो ही हार जाते हैं.

एक घंटे की ठुकाई के बाद ठाकुर और दामिनी बिस्तर पर नंगे पड़े हुए ज़ोर ज़ोर से साँस ले रहे थे.

"हे भगवान" दामिनी अपनी स्तनों पर बने ठाकुर के दांतो के निशान देखते हुए बोली "आज इनपर इतनी मेहरबानी कैसे?"

"ऐसे ही" ठाकुर ने हस्ते हुए कहा

"ऐसे ही या कोई और वजह? कहीं किसी और का जिस्म तो ध्यान नही आ रहा था? जो कल तो यहाँ था पर आज आपको वो दीदार नही हुआ?" दामिनी ने उठकर बैठते हुए कहा

तभी घड़ी में 12 बजे

ठाकुर उठे और उठकर दामिनी के होंठ चूमे

"क्या हुआ?" दामिनी अचानक दिखाए गये इस प्यार पर हैरान होती बोली

"जनमदिन मुबारक हो" ठाकुर ने कहा

दामिनी फ़ौरन दोबारा घड़ी की तरफ देखा और डेट याद करने की कोशिश की. आज यक़ीनन उसका जनमदिन था और वो भूल चुकी थी. एक दिन था जब वो बेसब्री से अपने जमदीन का इंतेज़ार करती थी और पिच्छले कुछ सालों से तो उसे याद तक नही रहता था के कब ये दिन आया और चला गया. उसके पिच्छले जनमदिन पर भी उसे तब याद आया जब उसके माँ बाप और भाई ने फोन करके उसे बधाई दी थी

"मुझे तो पता भी नही था के आपको मालूम है मेरा जनमदिन" दामिनी ने कहा

"मालूम तो हमेशा था" ठाकुर ने जवाब दिया "माफी चाहते हैं के आज से पहले कभी हमने

आपको ना कोई तोहफा दिया और ना ही इस दिन को कोई एहमियत"

तोहफा सुनते ही दामिनी फ़ौरन बोली

"तो इस बार भी कहाँ दिया अब तक?"

"देंगे. ज़रूर देंगे. बस कल सुबह तक का इंतेज़ार कर लीजिए" ठाकुर ने मुस्कुराते हुए कहा

थोड़ी देर बाद वो उठकर अपने कमरे में चले गये और दामिनी नींद के आगोश में .

भाग - 12

अगले दिन सुबह दामिनी उठकर नीचे आई ही थी के उसके भाई का फोन आ गया

"जनमदिन मुबारक हो दीदी" वो दूसरी तरफ फोन से लगभग चिल्लाते हुए बोला "बताओ आपको क्या तोहफा चाहिए?"

"मुझे कुछ नही चाहिए" दामिनी ने भी हासकर जवाब दिया "मम्मी पापा कहाँ हैं?"

उसे थोड़ी देर अपने माँ बाप से बात की. वो लोग खुश थे के दामिनी इस साल अपने जनमदिन पर खुश लग रही थी. वरना पहले तो वो बस हां ना करके फोन रख देती थी. उसके बाद दामिनी ने कुछ देर और अपने भाई मनीष से बात की जिसने उसे बताया के वो उससे कुछ वक़्त के बाद मिलने आएगा.

फोन दामिनी ने रखा ही था के उसके पिछे से तेज की आवाज़ आई

"जनमदिन मुबारक हो भाभी"

वो पलटी तो तेज खड़ा मुस्कुरा रहा था. ज़ाहिर था के उसे अपनी कल रात की हरकत बिल्कुल याद नही थी

"शुक्रिया" दामिनी ने भी उस बात को भूलकर हस्ते हुए जवाब दिया

"तो क्या प्लान है आज का?" तेज वहीं बैठते हुए बोला

"मैं कोई स्कूल जाती बच्ची नही जो अपने जनमदिन पर कोई प्लान बनाऊँगी. कोई प्लान नही है." दामिनी उसके सामने बैठते हुए बोली "वैसे आप क्या कर रहे हैं आज?"

"वो जो आपने मुझे कल करने को कहा था" तेज ने जवाब दिया "माफ़ कीजिएगा कल कहीं काम से चला गया था. पर वाडा करता हूँ के आज से हवेली की सफाई का काम शुरू हो जाएगा"

दामिनी तेज की बात सुनकर दिल ही दिल में बहुत खुश हुई. कोई भी वजह हो पर वो उसकी बात सुनता ज़रूर था.

"चाय लोगे?" दामिनी ने तेज से पूछा. उसने हां में सर हिला दिया

थोड़ी ही देर बाद ठाकुर भी सोकर जाग गये. बाहर आकर उन्होने दामिनी को फिर से जनमदिन की बधाई दी. क्यूंकी घर में तेज और सरला भी थे इसलिए दामिनी ने अब अपना घूँघट निकाल लिया था

"आइए आपको आपका तोहफा दिखाते हैं" ठाकुर ने जवाब दिया

वो उसे बाहर लेकर उस जगह पर पहुँचे जहाँ उनकी गाड़ी खड़ी रहती थी.

कवर में ढाकी हुई अपनी कार की तरफ इशारा करते हुए वो बोले

"आपका तोहफा बेटी"

दामिनी को कुछ समझ नही आया. ठाकुर उसे अपनी 11 साल पुरानी गाड़ी तोहफे में दे रहे हैं. वो हैरानी से ठाकुर की तरफ देखने लगी

"आपकी कार?"

"नही" ठाकुर कार की तरफ बढ़े और कवर खींच कर उतार दिया "आपकी कार"

दामिनी की आँखें खुली रह गयी. कवर के नीचे ठाकुर की पुरानी कार नही बल्कि चमकती हुई एक नयी बीएमडब्ल्यू खड़ी थी

"ये कब लाए आप?" वो कार के पास आते हुए बोली

"कल शाम जब आप नीचे बेसमेंट में थी" ठाकुर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया

"और आपकी कार?"दामिनी ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई

"वो बेच दी. हमने सोचा के आप ये गाड़ी चलाएंगी तो हम आपकी गाड़ी ले लेंगे" ठाकुर ने अपनी जेब से चाबियाँ निकालते हुए कहा "टेस्ट राइड हो जाए?"

दामिनी ने जल्दी से चाभी ठाकुर से ली और एक छहोटे बच्चे की तरह खुश होती कार का दरवाज़ा खोला. उसकी खुशी में ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ सुनकर तेज भी बाहर आ गया था और खड़ा हुआ उन्हें देख रहा था.

दामिनी उसे देखकर बोली

"तेज देखो हमारी नयी कार " वो अब सच में किसी स्कूल जाती बच्ची की तरह खुशी से उच्छल रही थी. उसे ये भी ध्यान नही था के उसका घूँघट हट गया है और वो ठाकुर के सामने बिना पर्दे के थी जो तेज देख रहा था.

तेज ने दामिनी की बात पर सिर्फ़ अपनी गर्दन हिलाई और पलटकर फिर हवेली में चला गया. उसका यूँ चले जाना दामिनी को थोड़ा अजीब सा लगा. जाने क्यूँ उसे लग रहा था के तेज को ठाकुर को यूँ कार लाकर दामिनी को देना पसंद नही आया.

अगले एक घंटे तक दामिनी कार लिए यहाँ से वहाँ अकेले ही भटकती रही. उसने ठाकुर को भी आपे साथ नही आने दिया था. अकेले ही कार लेकर निकल गयी थी.

तकरीबन एक घंटे बाद वो हवेली वापिस आई और ठाकुर के बुलाने पर उनके कमरे में आई.

"ये रहा आपका दूसरा तोहफा" ठाकुर ने एक एन्वेलप उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा

"ये क्या है?" दामिनी ने एन्वेलप की तरफ देखा

"हमारी वसीयत जो हमने बदल दी है. इसमें लिखा है के अगर हमें कुछ हो जाए तो हमारा सब कुछ आपको मिलेगा." ठाकुर ने कहा

"पिताजी" दामिनी वहीं कुर्सी पर बैठ गयी. उसे यकीन सा नही हो रहा था

"क्या हुआ" ठाकुर ने पूछा "ग़लत किया हमने कुछ?"

"हां" दामिनी ने जवाब दिया. "आपको ऐसा नही करना चाहिए था"

"पर क्यूँ?" ठाकुर उसके करीब आते हुए बोले

"क्यूंकी आपकी 3 औलाद और हैं. दोनो बेटे तेज और शमशेर और आपकी एकलौती बेटी श्यामला. उनका हक़ इस जायदाद पर हमसे ज़्यादा है."

वो हम नही जानते" ठाकुर बोले "हमने अपना सब कुछ आपके नाम कर दिया है. अगर आप उन्हें कुछ देना चाहती हैं तो वो आपकी मर्ज़ी है. हम समझते हैं के ये फ़ैसला आपसे बेहतर कोई नही कर सकता"

"नही पिताजी. आपको ये वसीयत बदलनी होगी" दामिनी ने कहा तो ठाकुर इनकार में गर्दन हिलाने लगे

"ये अब नही बदलेगी हमारा जो कुछ है वो अब आपका है. अगर आप बाँटना चाहती हैं तो कर दें. और वैसे भी ....." ठाकुर ने अपनी बात पूरी नही की थी के दामिनी ने हाथ के इशारे से उन्हें चुप करा दिया.

ठाकुर ने हैरानी से उसकी तरफ देखा. दामिनी ने इशारा किया के दरवाज़े के पास खड़ा कोई उनकी बात सुन रहा है. दामिनी चुप चाप उतार दरवाज़े तक आई और हल्का सा बंद दरवाज़ा पूरा खोल दिया. बाहर कोई नही था.

"वहाँ हुआ होगा आपको" ठाकुर ने कहा पर दामिनी को पूरा यकीन था के उसने आवाज़ सुनी है.

"शायद" दामिनी ने कहा और फिर ठाकुर की तरफ पलटी

"आपको हमारे लिए ये वसीयत बदलनी होगी. या फिर अगर आप चाहते हैं के हम जायदाद आगे बराबर बाँट दे तो वकील को बुलवा लीजिए" दामिनी ने कहा

"ठीक है. हम उसे फोन करके बुलवा लेंगे. अब खुश?" ठाकुर ने हाथ जोड़ते हुए कहा

दामिनी धीरे से मुस्कुराइ और हाथ में एन्वेलप लिए कमरे से निकल गयी.

बाकी का दिन हवेली की सफाई में ही गुज़र गया. तेज गाओं से कुछ आदमी लेकर आ गया और वो सारा दिन हवेली के आस पास उगे हुए जंगल को काटकर साफ करने में लगे रहे. पूरा दिन काम चलने के बाद भी हवेली के कॉंपाउंड का सिर्फ़ एक हिस्सा ही साफ हो सका. वजह थी के गाओं से सिर्फ़ 3 आदमी ही हवेली में आकर काम करने को राज़ी हुए थे. बाकियों ने तो हवेली में काम करने के नाम से ही इनकार कर दिया था.

तेज के कहने पर खुद सरला भी उन आदमियों के साथ मिलकर काम करने लगी. दिन ढलने पर वो आदमी काम अगले दिन जारी रखने की बात कहके अपने अपने घर चले गये.

रात को खाने की टेबल पर ठाकुर और दामिनी अकेले ही थे. तेज किसी काम का बहाना करके घर से निकला था और अब तक लौटा नही था और दामिनी ये बात जानती थी के वो रात भर अब घर नही आने वाला था. वो खुद सारा दिन कजरी की राह देखती रही थी पर कजरी नही आई थी. दामिनी ने दिल में फ़ैसला किया के कल और कजरी का इंतेज़ार करेगी और अगर वो नही आई तो उससे एक आखरी बार बात करके किसी और औरत को घर में काम के बहाने रख लेगी जो तेज को बिस्तर पर खुश रखने के बहाने घर पर रोक सके. पर उसके सामने मुसीबत दो थी. एक तो ये के किसी ऐसी खूबसूरत औरत को ढूँढना जिसपर तेज खुद ऐसे ही नज़र डाले जैसे उसने कजरी पर डाली थी और दूसरी मुसीबत थी के अगर कोई ऐसी औरत मिल भी जाए तो उसे तेज का बिस्तर गरम करने के लिए राज़ी कैसे करे.

दामिनी अपनी ही सोच में खाना ख़तम करके उठ ही रही थी के सरला अंदर आई.

"हो गया मालकिन" उसने दामिनी से कहा

हवेली में सारा दिन कॅटाइ और सफाई होने के कारण हवेली के बिल्कुल सामने कॉपाउंड में काफ़ी सूखे पत्ते जमा हो गये थे. हवा तेज़ थी इसलिए दामिनी को डर था के वो उड़कर हवेली के अंदर ना आ जाएँ इसलिए उसने सरला को कहा था के अंधेरा होने से पहले हवेली के दरवाज़े के ठीक सामने से पत्ते हटा दे. उसने सोचा था के काम जल्दी हो जाएगा पर बेचारी सरला को काम ख़तम करते करते अंधेरा हो गया था. वो काफ़ी थॅकी हुई भी लग रही थी. सरला को उसपर तरस आ गया.

"भूख लगी होगी तुझे. जा पहले हाथ धोकर खाना खा ले. नहा बाद में लेना. सारे दिन से कुछ नही खाया तूने." उसने सरला से कहा

सरला हां में सर हिलाती किचन में दाखिल हो गयी. वो वहीं बैठकर खाना खा लेती थी.

खाना ख़तम करके ठाकुर उठकर अपने कमरे में चले गये. जाने से पहले उन्होने एक आखरी नज़र दामिनी पर डाली और उस नज़र में साफ ये इशारा था के वो रात को दामिनी के कमरे में आ जाएँगे.

दामिनी किचन में दाखिल हुई तो सामने नीचे बैठी सरला खाना खा रही थी. उसने सलवार कमीज़ पहेन रखा था. वो नीचे झुकी हुई ज़मीन पर बैठी खाना खा रही थी. सरला उसके करीब जाकर खड़ी हुई तो उपेर से सरला का क्लीवेज साफ नज़र आया. देखते ही सरला के दिमाग़ में ख्याल आया के जब तक कजरी या कोई दूसरी औरत आती है, तब तक क्यूँ ना सरला कोई ही तैय्यार किया जाए. एक कच्ची कली ठोकने को मिले तो तेज भला बाहर कही मुँह मारने को क्यूँ जाएगा. मॅन में ख्याल आते ही वो मुस्कुराइ. सरला को तैय्यार करना कोई मुश्किल काम नही था.

जिस तरह से सरला बेसमेंट में उसके सामने नग्न होकर उसकी बाहों में आ गई थी उससे साफ ज़ाहिर था के जो आग माँ के जिस्म में है वही बेटी कोई भी तोहफे में मिली है. अगर सरला एक औरत के साथ अपना जिस्म मिला सकती है तो मर्द के साथ तो और भी ज़्यादा आसानी होगी. बस एक काम जो करना था वो था उसे तैय्यार करना जो दामिनी ने फ़ौरन सोच लिया के उसे कैसे करना है. वो आगे बढ़ी और किचन में कुछ ढूँढने लगी. उसे एक चीज़ की ज़रूरत थी जो उसके काम में मददगार साबित हो सकती थी और जल्दी ही वो चीज़ उसे मिल भी गयी.

"खाना ख़तम करके मेरे कमरे में आ जाना." उसने सरला से कहा और किचन से बाहर निकली.

दामूकाका भी काम ख़तम करके कॉंपाउंड में बने अपने छहोटे से कमरे की तरफ जा रहा था. दामिनी उसे देखकर मुस्कुराइ और अपने कमरे में चली गयी.

थोड़ी ही देर बाद सरला भी दामिनी के पिछे पिछे उसके कमरे में आ गयी.

"जी मालकिन?" उसने दामिनी से पूछा

"कितनी गंदी हो रखी है तू. ऐसे मत आ. जा पहले नाहके आ" दामिनी ने उसे कहा.

सरला पलटकर जाने लगी तो दामिनी ने उसे रोक लिया

"एक काम कर. यहीं मेरे बाथरूम में नहा ले."

"आपके बाथरूम में?" दामिनी ने पूछा

"हां मेरे बाथरूम में ही नहा ले. और एक बात बता. तू साडी नही पेहेन्ति?"

सरला ने इनकार में सर हिलाया

"मेरे पास है ही नही"

"रुक ज़रा" कहती हुई रुआली अपनी अलमारी की तरफ बढ़ी और अपनी एक पुरानी साडी निकाली. साडी पुरानी ज़रूर थी पर देखने में बहुत सुंदर थी.

"ये तू रख ले" दामिनी ने कहा तो सरला खुशी से उच्छल पड़ी

"सच मालकिन?" सरला झट से साडी पकड़ते हुए बोली

"हां. आज से तेरी हुई" दामिनी ने सारी के साथ का ब्लाउस और पेटीकोट भी सरला को देखते हुए कहा "अब जाके नहा ले. फिर तेरे से एक ज़रूरी बात करनी है"

सरला हां में सर हिलाती हुई बाथरूम की तरफ बढ़ी. दामिनी भी उसके पिछे पिछे बाथरूम में आ गयी और वहाँ रखी हुई चीज़ें दिखाने लगी

"ये शॅमपू है और ये कंडीशनर. और ये बॉडी लोशन है" उसने सरला से कहा

"ये सब क्या है मालकिन? साबुन कहाँ है?" सरला ने बाथरूम में चारों और देखते हुए पूछा

दामिनी हल्के से मुस्कुरा दी.

"तूने ये सब कभी इस्तेमाल नही किया ना? चल मैं बताती हूँ" उसने कहाँ तो सरला उसे देखने लगी. जैसे दामिनी के बात आगे कहने का इनेज़ार कर रही हो

"ऐसे क्या देख रही है?" दामिनी ने कहा "नहाना शुरू कर. मैं बताती रहूंगी के क्या कैसे लगाना है. पहली बार मैं बता दूँगी बाद में तू खुद ही कर लेना."

सरला एकटूक उसे देखने लगी

"आपके सामने?" उसने दामिनी से पूछा

"हां तो क्या हुआ?" दामिनी ने जवाब दिया "तेरे पास ऐसा क्या है जो मैने नही देखा?"

"शरम आती है मालकिन" सरला ने सर झुकाते हुए बोला

"अरे मेरी शर्मीली बन्नो अब टाइम खराब मत कर. चल कपड़े उतार जल्दी से" दामिनी ने थोड़ा आगे बढ़ते हुए कहा

"दरवाज़ा?" सरला ने बाथरूम के खुले हुए दरवाज़े की तरफ इशारा करते हुए कहा

"कमरे के अंदर का दरवाज़ा बंद है. कोई नही आएगा. चल जल्दी कर. सारी रात यहाँ खड़े खड़े गुज़ारनी है क्या?"

दामिनी ने कहा तो सरला ने धीरे से अपनी कमीज़ उतारनी शुरू की.

कुछ ही देर बाद सरला बाथरूम में नग्न खड़ी थी. दामिनी ने उसे सर से पावं तक एक बार देखा

"तू उमर से भले बच्ची हो पर तेरा जिस्म तो पूरी भरी हुई औरत को भी मात दे जाए" दामिनी ने कहा तो सरला शर्माके नीचे देखने लगी

"चल शवर के नीचे खड़ी हो जा" दामिनी ने कहा तो सरला शोवेर के नीचे खड़ी हो गयी और अपने जिस्म को पानी से भिगोने लगी.

बाथरूम में एक तरफ खड़ी दामिनी उसके हसीन जिस्म को देख रही थी. थोड़ी ही देर में सरला सर से लेकर पावं तक पूरी भीग गयी.

"हाथ आगे कर" दामिनी ने कहा तो सरला ने अपना हाथ आगे कर दिया. दामिनी ने उसके हाथ में शॅमपू डाल दिया

"अब इससे अपने बाल धो ताकि वो बाल लगें.तेरे सर पे उगी हुई ख़त्मियाँ नही" उसने सरला से कहा

सरला अपने हाथ उठाकर अपने सर में शॅमपू लगाने लगी. हाथ उपेर होने से उसकी दोनो स्तनों भी उपेर को हो गयी थी और हाथ की हरकत के साथ हिल रही थी. सरला की नज़र भी उसकी स्तनों के साथ ही उपेर नीचे हो रही थी.

जब शॅमपू पूरे बालों पर लग गया तो दामिनी ने उसे धोने को कहा और फिर कंडीशनर लगाने को कहा. वो भी लगकर धुल गया.

"अब ये ले" दामिनी ने बॉडी वॉश की बॉटल आगे करते हुए कहा "इसे भी शॅमपू की तरह अपने हाथ पर निकाल और फिर साबुन की तरह अपने बदन पर लगा"

सरला ने बॉटल हाथ में ली और ढक्कन खोलकर जैसे ही बॉटल को दबाया तो बहुत सारा बॉडी वॉश उसके हाथ पर आ गिरा

"ओफहो बेवकूफ़" दामिनी ने आगे बढ़कर उसके हाथ से बॉटल ले ली "एक साथ इतना सारा नही. थोड़ा थोड़ा लेते हैं. अब जो हाथ में है उसे अपने बदन पर लगा"

दामिनी के कहने पर सरला ने सारा बॉडी वॉश अपने चेहरे पर लगा लिया और अगले ही पल सिसक पड़ी

"मालकिन आँख जल रही है"

"तो तुझे किसने कहा था के सारा मुँह पे रगड़ ले. धो इसे अब और यहाँ आके बैठ" दामिनी ने आगे बढ़कर नाल चालू किया

चेहरे से बॉडी वॉश धोकर सरला ने दामिनी की तरफ देखा

"अब यहाँ आके बैठ. मैं ही लगा देती हूँ" दामिनी ने कहा तो सरला झिझकति हुई वहीं बाथ टब के किनारे पर बैठ गयी. दामिनी आकर उसके पिछे खड़ी हुई और अपने हाथ में बॉडी वॉश लिया.

दामिनी ने सबसे पहले बॉडी वॉश सरला की स्तनों पर ही लगाया और हाथों से उसके स्तन मसल्ने लगी. सरला की दोनो स्तन उसके हाथ के दबाव से हल्के हल्के दब रही थी. फिर इसी

तरह से उसने सरला के पेट पर बॉडी वॉश लगाया और फिर उसकी टाँगो पर. इस सारे काम में दामिनी सरला को नहला कम रही थी उसके जिस्म को सहला ज़्यादा रही थी. उसकी टाँगो के बीच नमी आनी शुरू हो रही थी. सामने बैठी एक नग्न लड़की को देखकर उसके जिस्म में फिर वासना का तूफान ज़ोर मार रहा था. दामिनी के हाथ फिर सरला की स्तनों पर पहुँच गये और वो उसके सामने घुटनो पर बैठ गयी और दोनो हाथों से उसके स्तन दबाने लगी.

"हो गया मालकिन" सरला ने धीमी आवाज़ में कहा पर दामिनी ने जैसे सुना ही नही. वो उसी तरह उसकी स्तनों पर हाथ फेरती रही. अचानक उसने सरला का एक निपल अपने उंगलियों में पकड़ा और धीरे से दबाया.

"आआहह "सरला ने सिसकारी भरी "दर्द होता है मालकिन. अब बस करिए. हो गया. मैं धो लेती हूँ"

दामिनी ने उसकी तरफ देखा और उठ खड़ी हुई. उसने सरला का हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया और शवर के नीचे ले जाकर शवर ऑन कर दिया. पर इस बार सरला के साथ वो खुद भी पानी में भीग रही थी. वो शवर के नीचे से हटी नही. सरला दीवार की तरफ मुँह किए खड़ी थी और दामिनी उसके पिछे खड़ी उसकी कमर से बॉडी वॉश धो रही थी. वो खुद भी पानी में पूरी तरह भीग चुकी थी और कपड़े बदन से चिपक गये थे. उसके हाथ सरला की कमर से सरकते हुए उसकी पिछवाड़ा तक आए और दामिनी ने अपने दोनो हाथों से उसकी पिछवाड़ा को पकड़कर दबाया. दबाने से सरला भी ज़रा आगे को हुई और बिकुल दीवार के साथ जा लगी. दामिनी ने थोड़ा सा आगे होकर उसकी गर्दन को चूम लिया. उसे यकीन नही हो रहा था के वो खुद एक औरत होकर एक नग्न लड़की के जिस्म को चूम रही है पर उसके जिस्म मेंी उठती लहरें उस इस बात का सबूत दे रही थी के उसे मज़ा आ रहा था. गले पर चूमती ही सरला सिहर उठी

"क्या कर रही हैं मालकिन?" उसने दामिनी से पूछा

"ऐसे ही खड़ी रह" कहकर दामिनी थोड़ा पिछे हटी और अपनी सलवार और कमीज़ उतारकर एक तरफ फेंक दी. अगले ही पल उसकी ब्रा और पॅंटी भी उसके बाकी कपड़ो के साथ पड़े थे और दामिनी पूरी तरह नग्न होकर एक बार फिर पिछे से सरला के साथ चिपक गयी.

अपने नंगे जिस्म पर दामिनी का नंगा जिस्म महसूस हुआ तो सरला सिहर उठी

"मालकिन" उसके मुँह से निकला पर वो अपनी जगह से हिली

"घबरा मत" दामिनी अपना मुँह उसके कान के पास ले जाकर धीरे से बोली "अब तेरी तरह मैं भी बिल्कुल नग्न हूँ"

कहकर दामिनी ने एक बार फिर सरला को गर्दन पर चूमा.सरला चुप चाप दीवार से लगी खड़ी

थी और सरला ने उसे पिछे से गर्दन और कमर की उपरी हिस्से पर चूमना शुरू कर दिया. उसके हाथ सरला के पुर जिस्म पर घूम रहे थे, सहला रहे थे. दामिनी खुद वासना के कारण पागल हुई जा रही थी. बिल्कुल किसी मर्द की तरह वो सरला से बिल्कुल चिपक कर खड़ी हो गयी और उसका नंगा जिस्म महसूस करने लगी. सरला दामिनी से कद में थोड़ी छहोटी थी. दामिनी ने अपने घुटने थोड़े मोड और अपनी योनि सरला की पिछवाड़ा पर दबाई जैसे उसके सामने एक लिंग लगा हो जिसे वो सरला की पिछवाड़ा में घुसा रही हो. इस हरकत ने उसके जिस्म पर ऐसा असर किया के उसे अपने घुटने कमज़ोर होते महसूस होने लगे और वो सरला को ज़ोर से पकड़कर उससे चिपक गयी और अपनी योनि को सरला की पिछवाड़ा पर रगड़ने लगी.

"ओह सरला" दामिनी हल्के से सरला के कान में बोली. उसके हाथ सरला की कमर से हटकर आगे आए और सरला की स्तनों को पकड़ लिया. स्तन हाथ में आई ही थी के दामिनी ने उन्होने पूरी ताक़त से दबा दिया और अपनी स्तन सरला की कमर पे रगड़ने लगी. स्तन इतनी ज़ोर से दबी तो सरला फिर सिहर उठी

"मालकिन" वो भी बिल्कुल सरला के अंदाज़ में धीरे से बोली "क्या कर रही हैं आप?"

"मज़ा आ रहा है?" दामिनी ने उसी तरह उसकी स्तन दबाते हुए पूछा. नीचे से उसकी कमर ऐसे हिल रही थी जैसे सरला की पिछवाड़ा मार रही हो

सरला ने जवाब नही दिया

"बोल ना" दामिनी ने उसकी स्तनों पर थोड़ा दबाव और बढ़ाया पर सरला फिर भी नही बोली

दामिनी ने अपना एक हाथ उसकी छाती से हटाया और उसके पेट पर से होते हुए नीचे ले जाने लगी. हाथ जैसे ही टाँगो के बीच पहुँचा तो सरला ने अपनी टांगे कसकर बंद कर ली. दामिनी ने अपना हाथ उसकी योनि के उपेर की तरफ रखा और ज़ोर से रगड़ा.

"मज़ा आ रहा है?" उसने अपना सवाल दोहराया और हाथ ज़बरदस्ती सरला की टाँगो में घुसकर उसकी योनि की मुट्ठी में पकड़ लिया. इस बार सरला से भी बर्दाश्त नही हुआ.

"आआआआआआअहह मालकिन. बहुत अच्छा लग रहा है. क्या कर रही हैं आप?" वो हल्के से चिल्लाई

"तुझे जवान कर रही हूँ" दामिनी ने जवाब दिया और सरला को अपनी तरफ घुमाया "तुझे जवानी के मज़े लेना सीखा रही हूँ"

अब सरला और दामिनी एक दूसरे की तरफ चेहरा किए खड़ी थी. सरला की कमर दीवार से लगी हुई थी. दोनो की आँखें मिली और एक पल के लिए एक दूसरे को देखती रही. दामिनी ने

सरला के चेहरे को गौर से देखा. उसकी आँखों में वासना के डोरे सारे नज़र आ रहे थे. दामिनी आगे बढ़ी और अपने होंठ सरला के होंठों पर रख दिया. उसका एक हाथ सरला की स्तनों पर और दूसरा सरक कर उसकी योनि पर पहुँच गया.

दामिनी ने सरला के होंठ क्या चूमे के सरला उसकी बाहों में आ गिरी. उसने अपनी दोनो बाहें दामिनी के गले में डाली और उससे लिपट गयी. दामिनी समझ गयी के उसका काम बन चुका है. वो सरला के पूरे चेहरे को चूमने लगी और चूमते हुए गले पर और फिर सरला की स्तनों पर आ गयी. एक हाथ अब भी सरला की योनि रगड़ रहा था. पाया की दोनो टाँगें काँप रही थी और उसकी आँखें बंद थी. दोनो हाथों से उसने अब भी दामिनी को पकड़ा हुआ था. दामिनी ने उसका एक निपल अपने मुँह में लिया और चूसने लगी और थोड़ी देर बाद यही दूसरे निपल के साथ किया.

"बहुत मज़ा आ रहा है?" उसने फिर सरला से पूछा

सरला ने सिर्फ़ हां में सर हिलाया.

दामिनी सरला से अलग हुई, उसका हाथ पकड़ा और उसे बाथरूम से लेके बेडरूम में आ गयी.

बेडरूम में लाकर दामिनी ने सरला को धक्का देकर बिस्तर पर गिरा दिया. सरला कमर के बल बिस्तर पर जा गिरी और सामने खड़ी नग्न दामिनी को देखने लगी. सर से पावं तक.

"क्या देख रही है?" दामिनी ने अपना एक हाथ अपनी स्तनों पर और दूसरा अपनी योनि पर फिराया "तेरे जैसा ही है. ये दो बड़ी बड़ी स्तन तेरे पास हैं और मेरे पास भी हैं. जो तेरी टाँगो के बीच है वही मेरी टाँगो के बीच में भी है बस तुझपर से ये बाल हटाने है. फिर तेरी जवानी खुलकर सामने आ जाएगी" दामिनी ने सरला के योनि पर उगे हुए बाल की तरफ इशारा किया. शर्मा कर सरला ने अपने एक हाथ से अपनी योनि को छुपा लिया.

दामिनी मुस्कुरा कर बिस्तर पर चढ़ि और सरला के नज़दीक आई. सरला का हाथ उसकी योनि से हटाकर उसने फिर अपना हाथ रख दिया और योनि सहलाने लगी.

"टांगे खोल. पूरी फेला दे" उसने सरला से कहा और इस बार बिल्कुल उल्टा हुआ. दामिनी को उम्मीद थी के सरला मना कर देगी पर सरला ने फ़ौरन अपनी टांगे खोल दी. उसकी योनि खुलकर दामिनी के सामने आ गयी.

दामिनी उठकर सरला की टाँगो के बीच आ गयी और उसकी योनि देखने लगी. ज़िंदगी में पहली बार वो अपने सिवा किसी और औरत की योनि देख रही थी.

"कोई आया है आज तक तेरी टाँगो के बीच में?" उसने सरला की योनि सहलाते हुए कहा. सरला ने आँखें बंद किए हुए इनकार में सर हिलाया

"कोई बात नही. मैं सीखा दूँगी" दामिनी ने कहा और सरला की योनि को ज़ोर ज़ोर से रगड़ने लगी. सरला जोश में अपना सर इधर उधर करने लगी. दामिनी थोड़ा आगे को झुकी और किसी मर्द की तरह सरला पर पूरी तरह छा गयी. वो सरला के उपेर लेट गयी और उसके होंठ फिर से चूमने लगी. इस बार सरला ने भी जवाब दिया और उसने अपने उपेर लेटी दामिनी को कस्के पकड़ लिया. दोनो एक दूसरे के होंठ चूमने लगी.

"काफ़ी जल्दी सीख रही है" दामिनी ने कहा और नीचे होकर सरला की स्तन चूमने लगी. उसने अपने हाथ से सरला का एक हाथ पकड़ा और लाकर अपनी छाती पर रख दिया

"दबा इसे. जैसे मैं तेरे दबा रही हूँ वैसे ही तू मेरे दबा" उसने सरला से कहा और सरला ने भी फ़ौरन उसकी स्तन दबाने लगी

"किस्में ज़्यादा मज़ा आ रहा है? अपने चुसवाने में या मेरे दबाने में?" उसने सरला की स्तन चूस्ते हुए कहा

"आआआआहह मालकिन. दोनो में" इस बार सरला ने फ़ौरन जवाब दिया

दामिनी थोड़ी देर तक सरला की दोनो स्तनों को एक एक करके चूस्ति रही और नीचे से अपनी योनि सरला की योनि पर रगड़ने की कोशिश करती रही. थोड़ी देर बाद वो उठकर सरला के उपेर बैठ गयी. टांगे सरला की कमर के दोनो तरफ थी जैसे कोई मर्द किसी औरत को बैठकर ठोक रहा हो. वो आगे को झुकी और अपनी स्तन सरला के मुँह से लगा दी

"चूस इन्हें" उसने सरला से कहा. सरला ने भी उसके स्तन ऐसे चूसनी शुरू कर दी जैसे काब्से इसी का इंतेज़ार कर रही हो

"तुझे पता है जब मर्द किसी औरत के साथ सोता है तो क्या करता है?" उसने सरला से पूछा

सरला ने उसकी स्तन चूस्ते हुए हां में सर हिलाया

"क्या करता है?" दामिनी ने अपने दोनो हाथों से सरला का सर पकड़ रखा था और उसे अपनी स्तनों पर दबा रही थी

"यही जो आप कर रही हैं मेरे साथ." सरला ने दामिनी का निपल अपने मुँह से निकालकर कहा और दोबारा अपने मुँह में लेकर चूसने लगी

"आआआहह "दामिनी के मुँह से निकला. उसने अपना एक हाथ सरला की योनि पर रखा "अरे पगली मैं पुच्छ रही हूँ के यहाँ क्या करता है"

"पता है मुझे" सरला ने कहा "माँ ने बताया था एक बार"

"किसी मर्द ने किया है कभी तेरे साथ ऐसा" दामिनी ने पूछा तो सरला ने इनकार में सर हिला दिया

"तेरा दिल नही किया कभी करवाने का?" दामिनी ने पूछा तो सरला ने फिर इनकार में सर हिलाया

"अब तक तो नही किया था कभी"

"अब कर रहा है?" दामिनी ने मुस्कुराते हुए पूछा तो सरला ने भी शर्माकर मुस्कुराते हुए हां में सर हिला दिया

"तो चल आज मैं ही तेरे लिए मर्द बन जाती हूँ" कहते हुए दामिनी सरला के उपेर से हटी.

दामिनी सरला के उपेर से हटी और फिर उसकी टाँगो के बीच में आकर उसकी योनि सहलाने लगी

"यहाँ पर मर्द अपना लिंग घुसाता है" उसने सरला से कहा "लिंग जानती है किसी कहते हैं?"

सरला ने हां में सर हिलाया तो दामिनी मुस्कुराने लगी

"जानती सब है तू" कहते हुए दामिनी ने अपनी एक अंगुली धीरे से सरला की योनि में घुसा दी

"आआअहह मालकिन." सरला फ़ौरन बिस्तर पर उच्छली. कमर पिछे को खींचकर उसने दामिनी की अंगुली योनि में से निकल दी

"दर्द होता है" सरला बोली

"पहले थोडा सा होगा पर फिर नही. अब सीधी लेटी रह. हिलना मत वरना मुझसे बुरा कोई नही होगा" दामिनी ने सरला को हल्के से डांटा और फिर उसकी दोनो टांगे खोल ली.

थोड़ी देर योनि पर हाथ रॅगॅड़कर उसने अपनी बीच की अंगुली सरला की योनि में धीरे धीरे घुसा दी. अपने दूसरे हाथ से वो अपनी योनि रगड़ रही थी

"दर्द होता है मालकिन" सरला फिर बोली

"बस थोड़ी देर. फिर नही होगा" कहते हुए दामिनी ने अपनी अंगुली आगे पिछे करनी शुरू कर

दी. नतीजा थोड़ी ही देर में सामने आ गया. जो सरला पहले दर्द से उच्छल रही थी अब वो ही आअहह आअहह करने लगी.

"मैने कहा था ना के मज़ा आएगा" दामिनी ने कहा "और करूँ या निकल लूँ?"

"और करिए" सरला ने आहह भरते हुए कहा

दामिनी ने तेज़ी से उसकी योनि में अंगुली अंदर बाहर करनी शुरू कर दी और अपना दूसरा हाथ अपनी योनि पर तेज़ी से रगड़ने लगी. अचानक उसकी नज़र सामने घड़ी पर पड़ी और उसने अपनी अंगुली सरला की योनि से निकाल ली. सरला ने अपनी आँखें खोलकर उसकी तरफ देखा

"क्या हुआ मालकिन?" उसने दामिनी से पूछा

"अरे पागल एक मर्द का लिंग मेरी अंगुली जितना थोड़े ही होता है. असली मज़ा लेना है तो या तो लिंग से ले या लिंग जैसी किसी चीज़ से ले" दामिनी बिस्तर से उठते हुए बोली

"मतलब?" सरला ने पूछा. उसने उठने की कोई कोशिश नही की थी. बिस्तर पर वैसे ही टांगे हिलाए पड़ी थी

"मतलब ये" दामिनी ने टेबल पर रखे हुआ एक खीरा उठाया. यही वो चीज़ थी जो वो थोड़ी देर पहले किचन में ढूँढ रही थी.

"आप ये डालेंगी? ये तो बहुत मोटा है" सरला ने आँखें फेलाते हुए कहा. उसकी टांगे भी डर से अपने आप बंद हो गयी

"कोई कोई लिंग इससे भी मोटा होता है. वो कैसे लेगी?" कहते हुए दामिनी ने पास रखे हेर आयिल की बॉटल उठाई और पूरे खीरे पर आयिल लगा दिया. वो फिर बिस्तर पर चढ़कर सरला के नज़दीक आई और उसकी टाँगें खोलने की कोशिश की

"नही मालकिन" सरला ने कहा "बहुत दर्द होगा"

"अरे हर औरत को होता है. मुझे भी हुआ था पहली बार पर फिर मज़ा आता है. चल अब टांगे खोल" कहते हुए दामिनी ने ज़बरदस्ती सरला की टांगे खोल दी

वो फिर सरला की टाँगो के बीच आ बैठी और खीरा उसकी योनि पर रगड़ने लगी. सरला ने फिर अपनी आँखें बंद कर ली थी. थोड़ा देर ऐसे ही रगड़ने के बाद दामिनी ने थोड़ा सा खीरा सरला की योनि में डालने की कोशिश की. सरला फ़ौरन पिछे को हो गयी

"आह" सरला करही "दर्द होता है"

"चुप कर और टांगे खोल और हिलना मत" दामिनी ने उससे कहा और दोबारा खीरा डालने की कोशिश की. थोड़ी देर ऐसे ही कोशिश करने के बाद जब सरला ने खीरा योनि में डालने नही दिया तो दामिनी बिस्तर से उठकर अपनी अलमार तक गयी और अपने 3 स्कार्फ उठा लाई.

"तू ऐसे नही मानेगी" कहते हुए वो फिर सरला के करीब आई और उसे बिस्तर से बाँधने लगी.

कुछ ही देर बाद सरला के हाथ बिस्तर से ऐसे बँधे हुए थे के वो अपना उपरी हिस्सा हिला भी नही सकती थी.

"नही मालकिन" उसने फिर दामिनी से कहा पर दामिनी ने उसकी एक नही सुनी. वो सरला के सर के पास आई और एक स्कार्फ उसकी आँखों पर इस तरह बाँध दिया के सरला को कुछ दिखाई ना दे.

"ये क्यूँ मालकिन?" अंधी हो चुकी सरला ने पूछा

"ताकि तू खीरा देखके इधर उधर उच्छले नही" दामिनी बोली और फिर सरला की टाँगो के पास आके बैठ गयी.

इस बार उसने सरला की टांगे पूरी नही फेलाइ. योनि खोलने के लिए जितनी ज़रूरी थी बस उठी ही खोली और उसकी टाँगो पर आकर बैठ गयी. दामिनी की पिछवाड़ा सरला के घुटनो पर थी. अब सरला चाहे जितनी कोशिश कर ले पर वो हिल नही सकती थी.

दामिनी सरला की तरफ देखकर मुस्कुराइ और खीरा सरला की योनि पर रख दिया. सरला का जिस्म एक बार फिर सिहर उठा. दामिनी ने खीरे का दबाव योनि पर डाला तो वो हल्का सा अंदर घुस गया. सरला के मुँह से अफ निकल गयी पर दामिनी इस बार उसकी सुनने के मूड में नही थी. उसने अपना एक हाथ आगे बढ़कर सरला के मुँह पर रखा ताकि वो कोई आवाज़ ना कर सके और धीरे धीरे खीरा योनि में घुसाने लगी. सरला की आँखें फेल्ती चली गयी. उसकी आँखें देखकर ही अंदाज़ा होता था के वो कितनी तकलीफ़ में थी. आँखों से पानी बह निकला. वो सर इधर उधर झटकने लगी पर दामिनी के हाथ की वजह से उसके मुँह से निकली चीख घुटकर रह गयी. आँखों ही आँखों में वो दामिनी से रहम की भीख माँग रही थी पर दामिनी मुस्कुराती रही और तभी रुकी जब खीरा पूरा योनि के अंदर घुस गया.

थोड़ी देर ऐसे ही रुकने के बाद दामिनी सरला से बोली

"हाथ हटा रही हूँ. शोर मत मचाना. मचाया तो मुझसे बुरा कोई ना होगा"

सरला ने हां में सर हिलाया तो दामिनी ने अपना हाथ उसके मुँह से हटा लिया

"बाहर निकालो मालकिन" सरला फ़ौरन बोली "मेरी दर्द से जान निकल रही है"

"बस ज़रा सी देर. और मुँह बंद रख अपना" दामिनी ने डाँटते हुए सरला से कहा तो सरला दर्द का घूंठ पीकर चुप हो गयी. दामिनी ने खीरे की तरफ देखा जो 80% योनि के अंदर था. हल्का सा खून देख कर वो समझ गयी के आज उसने सरला की योनि खोल दी.

उसने झुक कर सरला के होंठ चूमे और उसके स्तन चूसने लगी. कुछ देर बाद सरला का कराहना बंद हुआ तो उसने पूछा

"अब ठीक है?"

"दर्द अब भी है पर कम है" सरला ने जवाब दिया

"अब तू लड़की से औरत बन गयी. आज खीरा कल लिंग" दामिनी ने हस्ते हुए कहा और योनि में घुसा हुआ खीरा पकड़कर बाहर को खींचा. थोडा सा खीरा अंदर छोड़कर उसने फिर से पूरा अंदर घुसा दिया और धीरे धीरे खीरे से सरला को ठोकने लगी.

"मत करो मालकिन" सरला फिर से कराही "ऐसे दर्द होता है"

"बस थोड़ी देर और" दामिनी ने कहा और ज़ोर से खीरा अंदर बाहर करने लगी. कुछ ही पल बाद सरला का कराहना बंद हुआ और वो आह आह करने लगी

"मज़ा आ रहा है?" दामिनी ने फिर पूछा तो सरला ने हां में सर हिला दिया. उसकी आँखो पर अब भी स्कार्फ बँधा हुआ था और उसे कुछ नज़र नही आ रहा था.

अचानक दामिनी एक आहट से चौंक पड़ी और दरवाज़े की तरफ देखा

"रुक ज़रा" उसने सरला से कहा और खीरा उसकी योनि में ही छोड़कर दबे पावं दरवाज़े तक पहुँची. उसने दरवाज़ा इतने धीरे से खोला के ज़रा भी आवाज़ नही हुई. दरवाज़े के बाहर इंद्रदेव सिंग खड़े थे.

दरवाज़ा खुलते ही ठाकुर सामने नग्न खड़ी दामिनी को हैरत से देखने लगे. उन्होने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था के दामिनी ने एक अंगुली अपने होंठो पर रखकर उन्हें चुप रहने का इशारा किया. ठाकुर चुप हो गये और दामिनी के इशारे पर धीरे से कमरे में आए.

कमरे का नज़ारा देखकर वो और भी चौंक पड़े. बिस्तर पर सरला नग्न बँधी हुई थी और उसकी आँखो पर भी पट्टी थी. उन्होने पलटकर दामिनी की तरफ देखा और जो अभी भी उन्हें चुप रहने का इशारा कर रही थी. इशारा में उन्होने पूछा के ये क्या हो रहा है तो सरला ने

मुस्कुरकर उनका हाथ पकड़ा और बिस्तर के करीब ले आई.

"क्या हुआ मालकिन?" सरला ने पूछा. उसे ज़रा भी अंदाज़ा नही था के इस वक़्त कमरे में उन दोनो के अलावा एक तीसरा आदमी भी मौजूद था.

"कुछ नही" दामिनी ने कहा और फिर बिस्तर पर आकर सरला की स्तनों पर हाथ फेरने लगी. दूसरे हाथ से उसने फिर खीरा अंदर बाहर करना शुरू कर दिया

"मज़ा आ रहा है ना सरला?" उसने ठाकुर की तरफ देखते हुए सरला से पूछा. ठाकुर की अब भी कुछ समझ नही आ रहा था. वो हैरत से अपने सामने बिस्तर पर पड़ी दोनो नग्न औरतों को देख रहे थे.

"हां मालकिन" सरला ने कहा. अब योनि में अंदर बाहर हो रहे खीरे के साथ उसकी कमर भी उपेर नीचे हो रही थी.

दामिनी ने झुक कर सरला का एक निपल अपने मुँह में लिया और ठाकुर को इशारे से बिस्तर पर नंगे होकर धीरे से आने को कहा.

ठाकुर ने चुप चाप अपने सारे कपड़े उतारे और नंगे होकर बिस्तर पर आ गये.

सरला लेटी हुई थी, दामिनी उसके पास बैठी उसकी योनि में खीरा घुमा रही थी और ठाकुर वहीं दामिनी के पास आकर बैठ गये. दामिनी ने धीरे से उन्हें अपने पास किया और उनका लिंग मुँह में लेके चूसने लगी. दूसरे हाथ से खीरा अब भी सरला की योनि में अंदर बाहर हो रहा था. सरला के मुँह से अब ज़ोर ज़ोर से आह आह निकलनी शुरू हो चुकी थी जिससे साफ पता चलता था के उसे कितना मज़ा आ रहा है. उसकी साँस भी अब भारी हो चली थी.

ठाकुर ने लिंग चूस्ति दामिनी की तरफ देखा और अपना एक हाथ सरला की छाती पर रखने की कोशिश की. दामिनी ने फ़ौरन उनका हाथ खींच लिया और इशारे से कहा के मर्द का हाथ लगने से सरला को पता चल जाएगा के उसकी छाती दामिनी नही कोई और दबा रहा है.

थोड़ी देर यही खेल चलता रहा. सरला अब पूरे जोश में आ चुकी थी. दामिनी ने ठाकुर का लिंग मुँह से निकाला और उन्हें सरला की टाँगो के बीच आने का इशारा किया. ठाकुर चुप चाप सरला की टाँगो के बीच आ गये.

"अब मैं तेरी योनि में कुछ और घुसाऊंगी" दामिनी ने सरला से कहा

"अब क्या मालकिन?" सरला ने अपनी भारी हो रही साँस के बीच पुछा

"तू बस मज़े ले" दामिनी ने कहा और खीरा योनि से बाहर निकल लिया. उसने सरला की दोनो टांगे मॉड्कर उसकी स्तनों से लगा दी ताकि उसकी योनि बिल्कुल उपेर हो जाए और उसकी टांगे ठाकुर के शरीर से ना लगें.

"अपनी टांगे ऐसी ही रखना" उसने सरला से कहा. सरला ने हां में सर हिलाया और अपनी टांगे और उपेर को मोड़ ली. उसके घुटने उसकी स्तनों से आ लगे.

ठाकुर सरला की योनि के बिल्कुल सामने आ गये. दामिनी ने एक हाथ से ठाकुर का लिंग पकड़ा और सरला की योनि पर रखकर उन्हें अंदर घुसने का इशारा किया. ठाकुर ने थोडा अंदर दबाया और लिंग अंदर घुसने लगा. योनि पहले से ही खुली हुई थी और खीरे पर लगे आयिल की वजह से चिकनी हो रखी थी. लिंग फ़ौरन आधे से ज़्यादा अंदर घुसता चला गया. ठाकुर ने मज़े से अपनी आँखें बंद की और बिना कोई आवाज़ के मुँह खोलकर आह कहने का इशारा सा किया. दामिनी समझ गयी के नयी कुँवारी योनि का मज़ा ठाकुर के चेहरे पर झलक रहा है. वो मुस्कुराइ. उसने ठाकुर का लिंग अब भी पकड़ रखा था. ठाकुर ने लिंग और घुसाने की कोशिश की तो दामिनी ने हाथ से रोक लिया ताकि ठाकुर के अंडे या और कोई जिस्म का हिस्सा सरला को ना छु जाए. ताकि उसे बस ये लगे के कोई लंबी सी चीज़ उसकी योनि में घुसी हुई है.

"ये क्या है मालकिन" सरला ने पूछा

"है कुछ" दामिनी ने जवाब दिया. "मज़ा आ रहा है?"

"हां" सरला ने कहा और आगे बात जोड़ी "खीरे से भी ज़्यादा"

"तो बस मज़े ले" दामिनी ने कहा और ठाकुर को ठोकने का इशारा किया.

ठाकुर ने लिंग आगे पिछे करना शुरू कर दिया. उनका लिंग काफ़ी लंबा था इसलिए दामिनी का हाथ उनके और सरला की योनि के बीच होने के बावजूद काफ़ी लिंग योनि के अंदर था. वो धीरे धीरे अपना लिंग अंदर बाहर करने लगे. अगर तेज़ी से ठोक्ते तो शायद सरला को शक हो जाता.

थोड़ी देर ठुकाई के बाद अचानक सरला का जिसम अकड़ने लगा. उसकी साँस तेज़ी से चलने लगी और फिर अगले ही पल वो ज़ोर से कराही, जिस्म ज़ोर से हिला और टांगे हवा में सीधी उठ गयी

"मालकिन" वो ज़ोर से बोली. सरला समझ गयी के उसका पानी निकल गया पर उसने ठाकुर को ठुकाई जारी रखने का इशारा किया

"ये तेरा पानी निकला है. जब औरत पूरा मज़ा लेने लगती है तो ऐसा होता है. फिकर मत कर.

अभी ऐसा ही फिर होगा" उसने सरला से कहा पर सरला तो लगता है जैसे अपनी ही दुनिया में थी. उसे कोई होश नही था. बस ज़ोर ज़ोर से साँस ले रही थी. दामिनी ने उसकी टांगे अब भी हवा में पकड़ रखी थी ताकि वो ठाकुर को ना छु जाए.

थोड़ी देर बाद दामिनी ने ठाकुर को देखा जो सरला आँखें बंद किए सरला को ठोकने में लगे हुए थे. उसने ठाकुर को हाथ से हिलाया और अपना हाथ अपनी योनि पर फेरा. ठाकुर समझ गये के वो क्या चाहती है. उन्होने हां में सर हिलाया और सरला की योनि से लिंग निकाल लिया.

"आआह " सरला कराही "निकाल क्यूँ लिया मालकिन?"

"अब फिर से यही ले" दामिनी ने खीरा फिर से उसकी योनि में घुसा दिया

"नही खीरा नही. वो जो पहले था वही" सरला वासना में पागल हो रही थी

"वो अब मेरी योनि में है" दामिनी ने कहा और खीरा सरला की योनि में अंदर बाहर करने लगी. उसने सरला के टांगे छोड़ दी थी और कुतिया की तरह सरला की साइड में झुकी हुई थी. ठाकुर उसके पिछे पहुँचे और उसकी पिछवाड़ा थामकर अपना लिंग दामिनी के योनि में अंदर तक उतार दिया. दामिनी ने एक आह भारी और झुक कर सरला के निपल्स चूसने लगी. पीछे से उसकी योनि में ठाकुर का लिंग अंदर बाहर होने लगा.

कमरे में फिर जो तूफान आया वो तब ही रुका जब तीनो थक कर निढाल हो गये. दामिनी का इशारा पाकर ठाकुर जिस तरह चुप चाप कमरे में आए थे वैसे ही निकल गये. दामिनी ने आकर सरला की आँखों पर से पट्टी हटाई और उसके हाथ खोले. सरला को अंदाज़ा भी नही था के वो अभी अभी एक मर्द से ठुकी थी. बस बिस्तर पर आँखें बंद किए पड़ी रही. दामिनी ने कमरे का दरवाज़ा बंद किया और नग्न ही आकर सरला के पास लेट गयी.

भाग - 13

सुबह नाश्ते की टेबल पर तीनो मिले. सरला बहुत खुश लग रही थी. ठाकुर और दामिनी उसे देखकर आपस में मुस्कुराए.

ठाकुर ने अपनी कपड़े की फॅक्टरी के सिलसिले में किसी से मिलने जाना था इसलिए वो तैय्यार होकर घर से निकलने लगे. जाते जाते उन्होने दामिनी को अपने कमरे में बुलाया.

"वो कल रात क्या था?" उन्होने दामिनी से पुछा

"कुछ नही. बस आपने एक कुँवारी कली को फूल बना दिया" दामिनी ने हस्ते हुए कहा

"पर कैसे?" ठाकुर ने भी हस्ते हुए दामिनी से पूछा

"आपने हमें हमारे जनमदिन पर कार लाकर दी. बस यूँ समझिए के ये हमारी तरफ से बिर्थडे पार्टी थी आपके लिए. कब कैसे मत पुच्छिए अब" दामिनी ने कहा. उसे खुद पर हैरत हो रही थी. वो दिल ही दिल में ठाकुर को अपने ससुर नही बल्कि अपने प्रेमी की तरह चाहती थी. और उसे इस बात कोई कोई अफ़सोस नही था के उसने खुद अपने प्रेमी को एक पराई औरत के साथ सुलाया था.

ठाकुर के जाने के बाद उसकी समझ ना आया के वो क्या करे. तेज कल रात का गया लौटा नही था इसलिए सफाई के लिए अब तक कोई नही आया था. दामिनी अगले एक घंटे तक उनका इंतेज़ार करती रही पर जब कोई नही आया तो उसने नीचे बेसमेंट में रखे बॉक्स की तलाशी लेने की सोची.

वो उठकर बेसमेंट की और चली ही थी के फोन बज उठा. दामिनी ने फोन उठाया. दूसरी तरफ से एक अजनबी आवाज़ आई.

"मेडम मैं डॉक्टर अरोरा बोल रहा हूँ. ठाकुर साहब का आक्सिडेंट हो गया है. काफ़ी चोट आई हैं. सीरीयस हालत में हैं. आप फ़ौरन हॉस्पिटल आ जाइए."

दामिनी कार लेकर हॉस्पिटल पहुँची. साथ में दामूकाका भी आया था. सरला को उसने वहीं हवेली में छोड़ दिया था. हवेली से हॉस्पिटल तक तकरीबन एक घंटे की दूरी थी. जब दामिनी हॉस्पिटल पहुँची तो इंस्पेक्टर पठाण वहाँ पहले से ही मौजूद था.

दामिनी ने उसकी तरफ ऐसे देखा जैसे फिर किसी बात का इंतेज़ार कर रही हो. पठाण जैसे पोलिसेवाले मौके हाथ से नही जाने देते इस बात को वो अच्छे से जानती थी. पर उसकी उम्मीद से बिल्कुल उल्टा हुआ. पठाण ने कुछ नही कहा. बस इशारे से उस कमरे की तरफ सर

हिलाया जहाँ पर ठाकुर अड्मिट थे.

दामिनी कमरे में पहुँची तो उसका रोना छूट पड़ा. पट्टियों में लिपटे ठाकुर बेहोश पड़े थे. उसने डॉक्टर की तरफ देखा.

"सर में चोट आई है" डॉक्टर ने दामिनी का इशारा समझते हुए कहा "बेहोश हैं. कह नही सकता के कब तक होश आएगा."

"कोई ख़तरे की बात तो नही है ना?" दामिनी ने उम्मीद भरी आवाज़ में पूछा

"सिर्फ़ एक" डॉक्टर बेड के करीब आता हुआ बोला "जब तक इन्हें होश नही आ जाता तब तक इनके कोमा में जाने का ख़तरा है"

"इसलिए पिताजी को हमने शहेर भेजने का इंतज़ाम करवा दिया है" तेज की आवाज़ पिच्चे से आई तो सब दरवाज़े की तरफ पलते. दरवाज़े पर तेज खड़ा था.

"कल सुबह ही इन्हें शहेर ट्रान्स्फर कर दिया जाएगा" तेज ने कहा और आकर ठाकुर के बिस्तर के पास आकर खड़ा हो गया. उसने दो पल ठाकुर की तरफ देखा और कमरे से निकल गया.

दामिनी सारा दिन हॉस्पिटल में ही रुकी रही. शाम ढालने लगी तो उसने दामूकाका को हॉस्पिटल में ही रुकने को कहा और खुद हवेली वापिस जाने के लिए निकली. हॉस्पिटल से बाहर निकालकर वो अपनी कार की तरफ बढ़ी ही थी के सामने से पठाण की गाड़ी आकर रुकी.

"मुझे लगा ही था के आप यहीं मिलेंगी" पास आता पठाण बोला

"कहिए" दामिनी ने कहा

"ठाकुर साहब आज आपकी गाड़ी में निकले थे ना?" पठाण बोला

"जी हां" दामिनी ने कहा

"मतलब के उनकी जगह गाड़ी में आप होती तो हॉस्पिटल में बिस्तर पर भी आप ही होती" पठाण मुस्कुराते हुए बोला "समझ नही आता के इसे आपकी खुश किस्मती कहीं या ठाकुर साहब की बदनसीबी"

"आप मुझे ये बताने के लिए यहाँ आए थे?" दामिनी हल्के गुस्से से बोली

"जी नही" पठाण ने कहा "पूछा तो कुछ और था आपसे पर इस वक़्त मुनासिब नही है शायद. क्या आप कल पोलीस स्टेशन आ सकती हैं?

"ठाकूरो के घर की औरतें पोलीस स्टेशन में कदम नही रखा करती. हमारी शान के खिलाफ है ये. पता होना चाहिए आपको" दामिनी को अब पठाण से चिड सी होने लगी थी इसलिए ताना मारते हुए बोली

"चलिए कोई बात नही" पठाण भी उसी अंदाज़ में बोला "हम आपकी शान में गुस्ताख़ी नही करेंगे. कल हम ही हवेली हाज़िर हो जाएँगे."

इससे पहले के दामिनी कुछ कहती पठाण पलटकर अपनी गाड़ी की तरफ बढ़ गया. जाते जाते वो फिर दामिनी की तरफ देखकर बोला

"मैने तो ये भी सुना था के ठाकूरो के घर की औरतें परदा करती हैं. आप तो बेझिझक बिना परदा किए ठाकुर साहब के कमरे में चली आई थी. आपकी कैसे पता के ठाकुर साहब बेहोश थे. होश में भी तो हो सकते थे" पठाण ने कहा और दामिनी को हैरान छोड़कर अपनी गाड़ी में बैठकर निकल गया

हवेली पहुँचते हल्का अंधेरा होने लगा था. दामिनी तेज़ी से कार चलती हवेली पहुन्नची. उसे लग रहा था के सरला हवेली में अकेली होगी पर वहाँ उसका बिल्कुल उल्टा था. हवेली में सरला के साथ कजरी और बबलू भी थे. कजरी को देखते ही दामिनी समझ गयी के उसने बात मान ली है और वो तेज के साथ सोने को तैय्यार है. पर तेज आज रात भी हवेली में नही था.

"नमस्ते मालकिन" कजरी ने हाथ जोड़ते हुए कहा "अब कैसे हैं ठाकुर साहब?"

"अभी भी सीरीयस हैं" दामिनी ने जवाब दिया "तू कब आई?"

"बस अभी थोड़ी देर पहले" कजरी ने कहा और वहीं नीचे बैठ गयी

दामिनी ने सरला को पानी लेने को कहा. वो उठकर गयी तो बबलू भी उसके पिछे पिछे किचन की तरफ चल पड़ा.

"मुझे आपकी बात मंज़ूर हैं मालकिन" अकेले होते ही कजरी बोली

"अभी नही" दामिनी ने आँखें बंद करते हुए कहा "बाद में बात करते हैं

उस रात दामिनी ने अकेले ही खाना खाया. कजरी और बबलू को उसने हवेली के कॉपाउंड में

नौकरों के लिए बने कमरो में से 2 कमरे दे दिए. खाने के बाद वो चाय के कप लिए बड़े कमरे में बैठी थी. तभी कजरी सामने आकर बैठ गयी.

"आक्सिडेंट कैसे हुआ मालकिन?" उसने दामिनी से पूछा

"पता नही" दामिनी ने जवाब दिया "ये तो कल ही पता चलेगा"

दोनो थोड़ी देर खामोश बैठी रही

"तो तुझे मेरी बात से कोई ऐतराज़ नही?" थोड़ी देर बाद दामिनी ने पूछा. कजरी ने इनकार में सर हिला दिया

"तो फिर जितनी जल्दी हो सके तो शुरू हो जा. अब चूँकि ठाकुर साहब बीमार हैं तो मुझे घर के काम काज देखने के लिए तेज का सहारा लेना होगा जिसके लिए ज़रूरी है के वो घर पर ही रुके"

कजरी ने बात समझते हुए हाँ में सर हिलाया

"पर एक बात समझ नही आई. तू एक तो तरफ तो तेज को संभालेगी और दूसरी तरफ बबलू?" दामिनी ने चाय का कप कजरी को थमाते हुए पूछा

"उसकी आप चिंता ना करें" कजरी ने मुस्कुराते हुए कहा

रात को सब अपने अपने कमरे में चले गये. दामिनी अपने कमरे में लेटी सोने की कोशिश कर रही थी. नींद उसकी आँखों से जैसे कोसो दूर थी. तभी बीच का दरवाज़ा खुला और सरला दामिनी के कमरे में दाखिल हुई. हल्की रोशनी में दामिनी देख सकती थी के वो अपने कमरे से ही पूरी तरह नग्न होकर आई थी.

"माँ की तरह बेटी भी उतनी ही गरम है. जिस्म की गर्मी संभाल नही रही" दामिनी ने दिल में सोचा

"आज नही सरला" उसने एक नज़र सरला की तरफ देखते हुए कहा

उसकी बात सुनकर सरला फिर दोबारा अपने कमरे की तरफ लौट गयी.

सुबह दामिनी उठी तो उसका पूरा जिस्म दुख रहा था. हर रात बिस्तर पर रगडे जाने के जैसे उसे आदत पड़ गयी थी. बिना ठुकाई के नींद बड़ी मुश्किल से आई. उसने घड़ी की तरफ नज़र डाली तो सुबह के 6 बज रहे थे. वो बिस्तर से उठी. सरला के कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ

था. उसने कमरे में नज़र डाली तो देखा के सरला बिस्तर पर पूरी तरह से नग्न पड़ी सो रही थी. शायद कल रात दामिनी के मना कर देने की वजह से ऐसे ही जाकर सो गयी थी.

वो उठकर नीचे आई. दामूकाका ठाकुर के पास हॉस्पिटल में ही था इसलिए उसने कजरी को नाश्ता बनाने के लिए कहने की सोची. वो हवेली से बाहर आकर कजरी के कमरे की तरफ चली. दरवाज़े पर पहुँचकर कजरी को आवाज़ देने की सोची तो कमरे में से कजरी के करहने की आवाज़ आई. गौर से सुना तो दामिनी समझ गयी के कमरे के अंदर कजरी और बबलू का खेल जारी था.

"सुबह सुबह 6 बजे" सोचकर दामिनी मुस्कुराइ और वापिस हवेली में आकर खुद किचन में चली गयी.

उसने सुबह सवेरे ही हॉस्पिटल जाने की सोची. पूरी रात ठाकुर के बारे में सोचकर वो अपने आप को कोस्ती रही के क्यूँ उसने अपनी गाड़ी ठाकुर को दे दी थी. आख़िर प्यार करती थी वो ठाकुर से. अंदर ही अंदर उसका दिल चाह रहा था था के जो ठाकुर के साथ हुआ काश वो उसके साथ हो जाता.

सुबह के 10 बजे तक दामिनी तेज के आने का इंतेज़ार करती रही. उसने कहा था के वो ठाकुर को शहेर के हॉस्पिटल में शिफ्ट करने का इंतज़ाम कर रहा है इसलिए दामिनी ने उसके साथ ही हॉस्पिटल जाने की सोची. पर 10 बजे तक तेज नही आया बल्कि अपने कहे के मुताबिक इंस्पेक्टर पठाण आ गया.

"सलाम अर्ज़ करता हूँ ठकुराइन जी" पठाण ने अपनी उसी पोलीस वाले अंदाज़ में कहा. दामिनी ने सिर्फ़ हाँ में सर हिलाते हुए उसे बैठने का इशारा किया. पठाण की कही कल रात की बात उसे अब भी याद थी के वो बिना परदा किए हॉस्पिटल में ठाकुर के कमरे में आ पहुँची थी.

"कहिए" उसने पठाण के बैठते ही पूछा

"एक ग्लास पानी मिल सकता है?" पठाण ने कमरे में नज़र दौड़ते हुए कहा. दामिनी ने सरला को आवाज़ दी और एक ग्लास पानी लाने को कहा.

"इस इलाक़े में मैं जबसे आया हूँ तबसे इस हवेली में मुझे सबसे ज़्यादा इंटेरेस्ट रहा है" पठाण ने कहा. तभी सरला पानी ले आई. पठाण ने पानी का ग्लास लिया और एक भरपूर नज़र से सरला को देखा. जैसे आँखों ही आँखों में उसका X-रे कर रहा हो. दामिनी ने सरला को जाने का इशारा किया

"जान सकती हूँ क्यूँ?" दामिनी ने कहा तो पठाण चौंका

"क्यूँ क्या?" उसने पूछा

"हवेली में इतना इंटेरेस्ट क्यूँ?"दामिनी ने पूछा

"ओह्ह्ह्ह" पठाण को जैसे अपनी ही कही बात याद आई "आपकी पति की वजह से"

"मतलब?"

"मतलब ये मॅम के आपके पति इस इलाक़े के एक प्रभाव शालि आदमी थी और आपके ससुर उसने भी ज़्यादा. इस गाओं के कई घरों में आपके खानदान की वजह से चूल्हा जलता था तो ऐसे कैसे हो गया के आपके पति को मार दिया गया?" पठाण ने आगे को झुकते हुए कहा

"ये बात आपको पता लगानी चाहिए. पोलिसेवाले आप हैं. मैं नही" दामिनी ने भी उसी अंदाज़ में जवाब दिया

"वही तो पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ. काफ़ी सोचा है मैने इस बारे में पर कोई हल नही निकल रहा. वो क्या है के आपके पति की हत्या की वजह है ही नही कोई सिवाय एक के" पठाण ने कहा

"कहते रहिए" दामिनी ने जवाब दिया

"अब देखिए. आपके खानदान का कारोबार सब ज़मीन से लगा हुआ है. जो कुछ है सब इस इलाक़े में जो ज़मीन है उससे जुड़ा हुआ है. और दूसरे आपकी पति एक बहुत सीधे आदमी थे ऐसा हर कोई कहता है. कभी किसी से उनकी अनबन नही रही. तो किसी के पास भी उन्हें मारने की कोई वजह नही थी क्यूंकी ज़मीन तो सारी ठाकुर खानदान की है. झगड़ा उनका किसी से था नही" पठाण बोलता रहा

"आप कहना क्या चाह रहे है हैं?" दामिनी को पठाण की बात समझ नही आ रही थी

"आपको क्या लगता है ये पूरी जायदाद किसकी है?" पठाण ने हवेली में फिर नज़र दौड़ाई

"हमारी" दामिनी ने उलझन भारी आवाज़ में कहा "मेरा मतलब ठाकुर साहब की"

"ग़लत" पठाण ने मुस्कुराते हुए कहा "ये सब आपका है मॅम. इस पूरी जायदाद की मालकिन आप हैं"

"आप होश में है?" दामिनी ने थोड़ा गुस्से में कहा "सुबह सुबह पीकर आए हैं क्या?"

"मैं मुस्लिम हूँ मॅम और हमारे यहाँ शराब हराम है. पूरे होश में हूँ मैं" पठाण सोफे पर बैठते हुए बोला

"ये सब मेरा? आपका दिमाग़ ठीक है?" दामिनी ने उसी गुस्से से भरे अंदाज़ में पूछा

"वो क्या है के हुआ यूँ के ये जायदाद ठाकुर इंद्रदेव सिंग की कभी हुई ही नही" पठाण ने अपनी बात जारी रखी

"उनके बाप ने अपनी ये जायदाद पहले अपने दूसरे बेटे के नाम की थी. क्यूँ ये कोई नही जानता पर जब उनका दूसरा बेटा गुज़र गया तो उन्हें नयी वसीयत बनाई और जायदाद अपनी बहू यानी आपकी सास शकुंतला देवी के नाम कर दी. शकुंतला देवी ने जब देखा के आपके पति वीरभद्र सब काम संभाल रहे हैं और एक भले आदमी हैं तो उन्हें सब कुछ आपके पति के नाम कर दिया"

दामिनी आँखें खोल पठाण को ऐसे देख रही थी जैसे वो कोई अजूबा हो

"अब आपके पति की सबसे करीबी रिश्तेदार हुई आप तो उनके मरने से सब कुछ आपका हो गया" पठाण ने फिर आगे को झुकते हुए कहा

"ज़रूरी तो नही" दामिनी को समझ नही आ रहा था के वो क्या कहे

"हां ज़रूरी तो नही है पर क्या है के आपके पति के मरने से एक हफ्ते पहले उन्होने एक वसीयत बनाई थी के अगर उन्हें कुछ हो जाए तो सब कुछ आपको मिले. तो इस हिसाब से आप हुई इस पूरी जायदाद की मालकिन" पठाण ये बात कहकर चुप हो गया

कमरे में काफ़ी देर तक खामोशी रही. पठाण दामिनी को देखता रहा और दामिनी उसे. उसकी समझ नही आ रहा था के पठाण क्या कह रहा है और वो उसके बदले में क्या कहे

"आपको ये सब कैसे पता?" आख़िर दामिनी ने ही बात शुरू की

"पोलिसेवला हूँ मैं ठकुराइन जी" पठाण फिर मुस्कुराया "सरकार इसी बात के पैसे देती है मुझे"

"ऐसा नही हो सकता" दामिनी अब भी बात मानने को तैय्यार नही थी

"अब शकुंतला देवी नही रही, आपके पति की हत्या हो चुकी है, एक देवर आपका अय्याश है जिसे दुनिया से कोई मतलब नही और दूसरा विदेश में पढ़ रहा है और अभी खुद बच्चा है" पठाण ने दामिनी की बात नज़र अंदाज़ करते हुए कहा

"तो?" दामिनी के सबर का बाँध अब टूट रहा था

"अच्छा एक बात बताइए" पठाण ने फिर उसका सवाल नज़र अंदाज़ कर दिया "आपकी ननद श्यामला कहाँ है?

"विदेश" दामिनी ने जवाब दिया

"मैने पता लगाया है. उसके पासपोर्ट रेकॉर्ड के हिसाब से तो वो कभी हिन्दुस्तान के बाहर गयी ही नही" पठाण ने जैसे एक और बॉम्ब फोड़ा

दामिनी को अब कुछ अब समझ नही आ रहा था. वो बस एकटूक पठाण को देखे जा रही थी

"कब मिली थी आप आखरी बार उससे?" पठाण ने पूछा

"मेरे पति के मरने के बाद. कोई 10 साल पहले" दामिनी ने धीरे से कहा

"मैने लॅब से आई रिपोर्ट देखी है. जो लाश आपकी हवेली से मिली है वो किसी औरत की है और उसे कोई 10 साल पहले वहाँ दफ़नाया गया था" बोलकर पठाण चुप हो गया

दामिनी की कुछ कुछ समझ आ रहा था के पठाण क्या कहना चाह रहा है. हवेली में मिली लाश? श्यामला? नही, ऐसा नही हो सकता, उसने दिल ही दिल में सोचा.

"बकवास कर रहे हैं आप" दामिनी की अब भी समझ नही आ रहा था के क्या कहे

"बकवास नही सच कह रहा हूँ. और अब जबकि ठाकुर भी लगभग मरने वाली हालत में आ चुके हैं तो बस आपके 2 देवर ही रह गये और फिर हवेली आपकी" पठाण बोला

दामिनी का दिल किया के उसे उठकर थप्पड़ लगा दे.

"कहना क्या चाहते हैं आप?" उसकी आँखें गुस्से से लाल हो उठी

"यही के ठाकुर आपकी ही गाड़ी में मरते मरते बचे हैं. आपके पति की हत्या ये जायदाद आपके नाम हो जाने के ठीक एक हफ्ते बाद हो गयी. आपकी ननद का कहीं कुछ आता पता नही. आपका देवर सालों से हिन्दुस्तान नही आया. इतनी बड़ी जायदाद बहुत कुछ करवा सकती है" पठाण ने ऐसे कहा जैसे दामिनी को खून के इल्ज़ाम में सज़ा सुना रहा हो

"अभी इसी वक़्त हवेली से बाहर निकल जाइए" दामिनी चिल्ला उठी.

"मैं तो चला जाऊँगा मॅम" पठाण ने उठने की कोई कोशिश नही की "पर सच तो आख़िर सच ही है ना"

"तो सच पता करने की कोशिश कीजिए" दामिनी उठ खड़ी हुई "और अब दफ़ा हो जाइए यहाँ से"

पठाण ने जब देखा के अब उसे जाना ही पड़ेगा तो वो भी उठ गया और दामिनी की तरफ एक आखरी नज़र डालकर हवेली से निकल गया.

पठाण चला तो गया पर अपने पिछे कई सवाल छोड़ गया था. दामिनी के सामने इस वक़्त 2 सबसे बड़े सवाल थे के जायदाद के बारे में जो पठाण ने बताया था वो आख़िर कभी ठाकुर ने क्यूँ नही कहा? और दूसरा सवाल था श्यामला के बारे में पर इस वक़्त उसने इस बारे में सोचने से बेहतर हॉस्पिटल में कॉल करना समझा क्यूंकी तेज अभी तक नही आया था.

उसने आगे बढ़कर फोन उठाया ही था के सामने से तेज आता हुआ दिखाई दिया

"कहाँ थे अब तक?" दामिनी ने थोड़ा गुस्से में पूछा

"हॉस्पिटल" तेज सोफे पर आकर बैठ गया "रात भर वहीं था"

दामिनी को तेज की बात पर काफ़ी हैरत हुई

"रात भर?" उसने तेज से पूछा

"हाँ" तेज ने आँखें बंद कर ली

"मुझे बता तो देते" दामिनी ने उसके पास बैठते हुए कहा

"सोचा आपको बताऊं फिर सोचा के सुबह घर तो जाऊँगा ही इसलिए आकर ही बता दूँगा" तेज वैसे ही आँखें बंद किए बोला

"शहेर कब शिफ्ट करना है?" दामिनी ने पूछा

"ज़रूरत नही होगी. डॉक्टर का कहना है के अब हालत स्टेबल है. वो अभी भी बेहोश हैं, बात नही कर सकते पर ख़तरे से बाहर हैं" तेज ने कहा तो दामिनी को लगा के उसके सीने से एक बोझ हट गया. वो भी वहीं सोफे पर बैठ गयी.

"मैं शाम को देख आओंगी. अभी तुम जाकर आराम कर लो" उसने तेज से कहा तो वो उठकर

अपने कमरे की तरफ बढ़ गया

तेज के साथ साथ ही दामिनी भी उठकर अपने कमरे की तरफ जाने लगी. तभी उसे सामने हवेली के कॉंपाउंड में बबलू खड़ा हुआ दिखाई दिया. वो बाहर बबलू की तरफ आई

"क्या कर रहे हो?" उसने पूछा तो बबलू फ़ौरन उसकी तरफ पलटा

"जी कुछ नही" उसने सर झुकाते हुए कहा "ऐसे ही खड़ा था"

"एक काम करो" दामिनी ने बबलू से कहा "तुम हवेली की सफाई क्यूँ शुरू नही कर देते. काफ़ी दिन से गाओं से आदमी बुलाकर करवाने की कोशिश कर रही हूँ पर काम कुछ हो नही पा रहा है. तुम अब यहाँ हो तो तुम ही करो"

बबलू ने हां में सर हिला दिया

"जो भी समान तुम्हें चाहिए वो सामने स्टोर रूम में है." दामिनी ने सामने स्टोर रूम की तरफ इशारा किया और वापिस हवेली में आ गयी.

कमरे में आने से पहले उसने कजरी को उपेर आने का इशारा कर दिया था. उसके पिछे पिछे कजरी भी उसके कमरे में आ गयी

"तुझे जिस काम के लिए यहाँ बुलाया है तू आज से ही शुरू कर दे. तेज को इशारा कर दे के तू भी उसे बिस्तर पर चाहती है" उसने कजरी से कहा

"जी ठीक है" कजरी ने हाँ में सर हिला दिया

"और ज़रा बबलू से ठुकवाना कम कर. तेज ने देख लिए तो ठीक नही रहेगा" दामिनी ने कहा

कजरी के जाने के बाद दामिनी वहीं बिस्तर पर बैठ गयी. उसे श्यामला वाली बात परेशान किए जा रही थी. दिल ही दिल में उसने फ़ैसला किया के वो श्यामला से बात करेगी और फोन उठाया.

उसने अपनी डाइयरी से श्यामला का नंबर लिया और डाइयल किया. दूसरी तरफ से आवाज़ आई के ये नंबर अब सर्विस में नही है.दामिनी का दिल बैठने लगा. क्या पठाण की बात सच थी? तभी उसे नीचे बेसमेंट में रखा वो बॉक्स ध्यान आया. जो बात उसके दिमाग़ में आई उससे उसका डर और बढ़ गया. वो उठकर बेसमेंट की और चल दी.

भाग - 14

बेसमेंट में खड़ी दामिनी एकटूक सामने रखे बॉक्स को देखने लगी. उसकी समझ नही आ रहा था के बॉक्स में किस चीज़ के होने की उम्मीद करे. वो अभी अपनी सोच में ही थी के उसे सीढ़ियों से किसी के उतरने की आवाज़ सुनाई दी. पलटकर देखा तो वो सरला थी.

"क्या हुआ?" उसने सरला से पूछा

"छहोटे मलिक आपको ढूँढ रहे हैं" सरला ने तेज की और इशारा करते हुए कहा

दामिनी ने बॉक्स बाद में खोलने का इरादा किया और वापिस हवेली में आई. तेज उपेर अपने कमरे में ही था.

"क्या हुआ तेज?" वो तेज के कमरे में दाखिल होती हुई बोली

"वो हमें कुछ काम से बाहर जाना था पर हमारी गाड़ी स्टार्ट नही हो रही. तो हम सोच रहे थे के क्या हम आपकी कार ले जा सकते हैं? घंटे भर में ही वापिस आ जाएँगे" तेज ने पहली बार दामिनी से कुछ माँगा था

दामिनी जानती थी के वो फिर कहीं शराब पीने या किसी वेश्या के पास ही जाएगा पर फिर भी उसने पूछा

"कहाँ जाना है? पूरी रात के जागे हुए हो तुम. आराम कर लो"

"आकर सो जाऊँगा" तेज ने कहा "कुछ ज़रूरी काम है"

दामिनी ने उससे ज़्यादा सवाल जवाब करना मुनासिब ना समझा. वो नही चाहती थी के तेज उससे चिडने लगे

"मैं कार की चाभी लाती हूँ" कहते हुए वो अपने कमरे की और बढ़ गयी.

अपने कमरे में आकर दामिनी ने चाभी ढूंढी और वापिस तेज के कमरे की और जाने ही लगी थी के उसे पठाण की कही बात याद आई के ये सारी जायदाद अब उसकी है. उसने दिल ही दिल में कुछ फ़ैसला किया और वापिस तेज के कमरे में आई.

तेज तैय्यार खड़ा था. दामिनी ने उसे एक नज़र देखा तो दिल ही दिल में तेज के रंग रूप की तारीफ किए बिना ना रह सकी. उसका नाम उसकी पर्सनॅलिटी के हिसाब से ही था. उसके चेहरे पर हमेशा एक तेज रहता था और वो भी अपने बाप की तरह ही बहुत खूबसूरत था. वो तीनो भाई ही शकल सूरत से बहुत अच्छे थे. बस यही एक फरक था ठाकुर इंद्रदेव सिंग की औलाद में. जहाँ उनके तीनो लड़के शकल से ही ठाकुर लगते थे वहीं उनकी बेटी श्यामला एक मामूली शकल सूरत की लड़की थी. उसे देखकर कोई कह नही सकता था के वो चारों भाई बहेन थे.

दामिनी ने चाभी तेज को दी और बोली"अब पिताजी हॉस्पिटल में है तो मैं सोच रही थी के तुम कारोबार क्यूँ नही संभाल लेते?"

तेज हस्ता हुए उसकी तरफ पलटा"कौन सा कारोबार भाभी? हमारी बंजर पड़ी ज़मीन? और कौन सी हमारी फॅक्ट्री हैं?"

"ज़मीन इसलिए बंजर है क्यूंकी उसकी देखभाल नही की गयी. तुम्हारे भैया होते तो क्या ऐसा होने देते?" दामिनी पूरी कोशिश कर रही थी के तेज को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास हो.

भाई का ज़िक्र आते ही तेज फ़ौरन खामोश हो गया और फिर ठहरी हुई आवाज़ में बोला

"भाय्या हैं नही इसी बात का तो अफ़सोस है भाभी और उससे ज़्यादा अफ़सोस इस बात का है के जिसने उनकी जान ली वो शायद आज भी कहीं ज़िंदा घूम रहा है. और आप तो जानती ही हैं के मुझसे ये सब नही होगा. आप विदेश से शमशेर कोई क्यूँ नही बुलवा लेती? और कितनी पढ़ाई करेगा वो?"

कहते हुए तेज कमरे के दरवाज़े की तरफ बढ़ा और इससे पहले के दामिनी कुछ कहती वो कमरे के बाहर निकल गया. जाते जाते वो कह गया के एक घंटे के अंदर अंदर वापिस आ जाएगा.

दामिनी खामोशी से तेज के कमरे में खड़ी रह गयी. उसकी कुछ समझ नही आ रहा था के क्या करे. दिमाग़ में लाखों सवाल एक साथ चल रहे थे. पठाण की कही बात अब भी दिमाग़ में चल रही थी. वो तेज से बात करके ये भी जानना चाहती थी के क्या उसे इस बात का शक है के ये पूरी जायदाद दामिनी के नाम है पर ऐसा कोई मौका तेज ने उसे नही दिया.

उसने दिल ही दिल में ठाकुर के वकील से बात करने की कोशिश की. उसे जाने क्यूँ यकीन था के पठाण सच बोल रहा था पर फिर भी उसने अपनी तसल्ली के लिए वकील से बात करने की सोची.

उसने तेज के कमरे पर नज़र डाली. वो तेज के कमरे की तलाशी भी लेना चाहती थी. दामूकाका की कही बात के उसके पति की मौत का राज़ हवेली में ही कहीं है उसे याद थी.

एक पल के लिए उसने सोचा के कमरे की तलाशी ले पर फिर उसने अपना दिमाग़ बदल दिया. तेज हवेली में ही था और उसे शक हो सकता था के उसके कमरे की चीज़ें यहाँ वहाँ की गयी हैं. दामिनी चुप चाप कमरे से बाहर निकल आई.

नीचे पहुँचकर वो बड़े कमरे में सोफे पर बैठ गयी. तभी कजरी आई.

"छहोटे मलिक कहीं गये हैं?" उसने दामिनी से पूछा

"हाँ कहीं काम से गये हैं. क्यूँ?" दामिनी ने आँखें बंद किए सवाल पूछा

"नही वो आपने कहा था ना के मैं उनके करीब जाने की कोशिश शुरू कर दूँ. तो मैने सोचा के जाकर उनसे बात करूँ" कजरी थोडा शरमाते हुए बोली

"दिन में नही.दिन में किसी को भी शक हो सकता है. तुझे मेहनत नही करनी पड़ेगी. रात को किसी बहाने से तेज के कमरे में चली जाना." दामिनी ने खुद ही कजरी को रास्ता दिखा दिया। कजरी ने हां में सर हिला दिया

दामिनी की समझ में नही आ रहा था के अब क्या करे. दिमाग़ में चल रही बातें उसे पागल कर रही थी. समझ नही आ रहा था के पहले वकील को फोन करे, या तेज के कमरे की तलाशी ले, या हॉस्पिटल जाकर ठाकुर साहब को देख आए या नीचे रखे बॉक्स की तलाशी ले.

एक पल के लिए उसने फिर बसेमेंट में जाने की सोची पर फिर ख्याल दिमाग़ से निकाल दिया. वो बॉक्स की तलाशी आराम से अकेले में लेना चाहती थी और इस वक़्त ये मुमकिन नही था. और तेज कभी कभी भी वापिस आ सकता था. उसने फ़ैसला किया के वो ये काम रात को करेगी.उसने सामने रखा फोन उठाया और ठाकुर साहब के वकील का नंबर मिलाया. दूसरी तरफ से ठाकुर साहब के वकील लक्ष्मण प्रसाद की आवाज़ आई.

"कहिए दामिनी जी" उसने दामिनी की आवाज़ पहचानते हुए कहा

"जी मैं आपसे मिलना चाहती थी. कुछ ज़रूरी बात करनी थी" दामिनी ने कहा

"जी ज़रूर" लक्ष्मण प्रसाद बोला "मुझे लग ही रहा था के आप फोन करेंगी"

लक्ष्मण प्रसाद की कही इस बात ने अपने आप में ये साबित कर दिया के जो कुछ पठाण ने कहा था वो सच था

"मैं कल ही हाज़िर हो जाऊँगा" लक्ष्मण प्रसाद आयेज बोला

"नही आप नही" दामिनी ने फ़ौरन मना किया "मैं खुद आपसे मिलने आऊँगी"

वो जानती थी के गाओं से शहेर तक जाने में उसे कम से कम 3 घंटे लगेंगे पर जाने क्यूँ वो लक्ष्मण प्रसाद से बाहर अकेले में मिलना चाहती थी.

"जैसा आप बेहतर समझें" लक्ष्मण प्रसाद ने भी हां कह दिया

"अभी कह नही सकती के किस दिन आऊँगी पर आने से एक दिन पहले मैं आपको फोन कर दूँगी" दामिनी ने कहा

लक्ष्मण प्रसाद ने फिर हां कह दी तो उसने फोन नीचे रख दिया.

तेज के लौट आने पर दामिनी उसके साथ हॉस्पिटल पहुँची. डॉक्टर के हिसाब से ठाकुर की हालत में सुधार पर उसे ऐसा कुछ ना लगा. ठाकुर अब भी पूरी तरह बेहोश थे. दामिनी ने थोड़ा वक़्त वहीं हॉस्पिटल में गुज़ारा और लौट आई. दामूकाका अब भी वहीं हॉस्पिटल में ही था.

बबलू ने हवेली के कॉंपौंत में काफ़ी हद तक सफाई कर दी थी. कुछ दिन से चल रहे काम का नतीजा ये था के पहले जंगल की तरह उग चुकी ख़त्मियाँ अब वहाँ नही थी. अब हवेली का लंबा चौड़ा कॉंपाउंड एक बड़े मैदान की तरह लग रहा था जिसे दामिनी पहले की तरह हरा भरा देखना चाहती थी.

हमेशा की तरह ही तेज फिर शाम को गायब हो गया. वो दामिनी की गाड़ी लेकर गया था. उसने जाने से पहले ये कहा तो था के वो रात को लौट आएगा पर दामिनी को भरोसा नही था के वो आएगा.

खाने के बाद दामिनी अपने कमरे में बैठी हुई श्यामला की वो डाइयरी देख रही थी जिसमें उसने काफ़ी शेरो शायरी लिखी हुई थी. साथ ही उसने काग़ज़ का वो टुकड़ा रखा हुआ था जो उसे श्यामला की डाइयरी के अंदर से मिला था और जिसकी हॅंड राइटिंग श्यामला की हॅंडराइटिंग से मॅच नही करती थी. दामिनी दिल ही दिल में इस बात पर यकीन कर चुकी थी की इस सारी उलझन की एक ही कड़ी है और वो है श्यामला. श्यामला की पूरी डाइयरी में शायरी थी जिसमें से ज़्यादातर शायरी दिल टूट जाने पर थी. डाइयरी की आख़िरी एंट्री वीरभद्र के मरने से एक हफ्ते की थी जो कुछ इस तरह थी जिसपर दामिनी का सबसे ज़्यादा ध्यान गया

तू भी किसी का प्यार ना पाए खुदा करे

तुझको तेरा नसीब रुलाए खुदा करे

रातों में तुझको नींद ना आए खुदा करे

तू दर बदर की ठोकरें खाए खुदा करे

आए बाहर तेरे गुलिस्ताँ में बार बार

तुझपर कभी निखार ना आए खुदा करे

मेरी तरह तुझे भी जवानी में घाम मिले

तेरा ना कोई साथ निभाए खुदा करे

मंज़िल कभी भी प्यार की तुझको ना मिल सके

तू भी दुआ में हाथ उठाए खुदा करे

तुझपर शब-ए-विसल की रातें हराम हो

शमा जला जलके बुझाए खुदा करे

हो जाए हर दुआ मेरी मेरे यार ग़लत

बस तुझपर कभी आँच ना आए खुदा करे

दिल ही दिल में दामिनी शायरी की तारीफ किए बिना ना रह सकी. लिखे गये शब्द इस बात की तरफ साफ इशारा करते थे के श्यामला का दिल टूटा या किसी वजह से. उसके प्रेमी ने या तो हवेली के डर से उसका साथ निभाने से इनकार कर दिया था या कोई और वजह थी पर जो भी थी, वो आदमी ही इस पहेली की दूसरी कड़ी था. और शायद वही था जो रात को चोरी से हवेली में आने की हिम्मत करता था. पर डाइयरी में कहीं भी इस बात की तरफ कोई इशारा नही था के वो आदमी आख़िर था तो कौन था. परेशान होकर दामिनी ने डाइयरी बंद करके वापिस अपनी अलमारी में रख दी.वो बिस्तर पर आकर बैठी ही थी के कमरे के दरवाज़ा पर बाहर से नॉक किया गया. दामिनी ने दरवाज़ा खोला तो सामने कजरी खड़ी थी.

"क्या हुआ?" उसने कजरी से पूछा

"ये आज आया था" कहते हुए कजरी ने उसकी तरफ एक एन्वेलप बढ़ा दिया "आप जब हॉस्पिटल गयी थी तब. मैं पहले देना भूल गयी थी"

दामिनी ने हाथ में एन्वेलप लिए. वो एक ग्रीटिंग कार्ड था उसके जनमदिन पर ना पहुँचकर देर से आए थे.

दामिनी ने ग्रीटिंग कार्ड लेकर दरवाज़ा बंद कर दिया और अपने बिस्तर पर बैठकर एन्वेलप खोला. कार्ड उसके छहोटे भाई मनीष ने भेजा था. ये वो हर साल करता था. हर साल एक ग्रीटिंग कार्ड दामिनी को पहुँच जाता था. चाहे कोई और उसे जनमदिन की बधाई भेजे ने भेजे पर मनीष ने हर साल उसे एक कार्ड ज़रूर भेजा था.

दामिनी ने ग्रीटिंग खोलकर देखा. ग्रीटिंग पर फूल बने हुए थे जिसके बीच मनीष और दामिनी के माँ बाप ने बिर्थडे मेसेज लिखा हुआ था. दामिनी बड़ी देर तक कार्ड को देखती रही. इस बात के एहसास से उसकी आँखों में आँसू आ गये के उसके माँ बाप को आज भी उसका उतना ही ख्याल है जितना पहले था. उसने सोचा के अपने घर फोन करके बता दे के उसे कार्ड मिल गया है और अपने माँ बाप से थोड़ी देर बात करके दिल हल्का कर ले. ये सोचकर उसके कार्ड सामने टेबल पर रखा और कमरे से बाहर जाने लगी.

दरवाज़े की तरफ बढ़ते दामिनी के कदम अचानक वहीं के वहीं रुक गये. उसके दिल की धड़कन अचानक तेज होती चली गयी और दिमाग़ सन्न रह गया. उसे समझ नही आया के क्या करे और एक पल के लिए वहीं की वहीं खड़ी रह गयी. दूसरे ही पल वो जल्दी से मूडी और अपनी अलमारी तक जाकर श्यामला की डाइयरी फिर से निकाली. श्यामला की डाइयरी से उसने वो पेज निकाला जिसपर श्यामला के साइवा किसी और की लिखी शायरी थी.

उसने जल्दी से वो पेज खोला और टेबल पर जाकर ग्रीटिंग कार्ड के साथ में रखा. उसने एक नज़र काग़ज़ पर डाली और दूसरी ग्रीटिंग कार्ड पर. काग़ज़ पर लिखी शायरी और ग्रीटिंग कार्ड के एन्वेलप पर लिखा अड्रेस एक ही आदमी का लिखा हुआ था. दोनो हंदवरटिंग्स आपस में पूरी तरह मॅच करती थी. इस बात में कोई शक नही था के श्यामला की डाइयरी में पेपर उसे मिला था, उसपर शायरी किसी और ने नही बल्कि उसके अपने छहोटे भाई मनीष ने लिखी थी.

दामिनी का खड़े खड़े दिमाग़ घूमने लगा और वहीं सामने रखी चेर पर बैठ गयी. जिस आदमी को वो आज तक अपने पति का हत्यारा समझ रही थी वो कोई और नही उसका अपना छोटा भाई था. पर सवाल ये था के कैसे? मनीष हवेली में बहुत ही कम आता जाता था और श्यामला से तो उसने कभी शायद बात ही नही की थी? तो श्यामला और उसके बीच में कुछ कैसे हो सकता था? और दूसरा सवाल था के अगर श्यामला का प्रेमी ही उससे रात को मिलने आता था तो उसका भाई वो आदमी कैसे हो सकता है? दामिनी का घर एक दूसरे गाओं में था जो ठाकुर के गाओं से कई घंटो की दूरी पर था? तो उसका भाई रातों रात ये सफ़र कैसे कर सकता है? कैसे ये बात सबकी और सबसे ज़्यादा दामिनी की नज़र से बच गयी के उसके अपने भाई और ननद के बीच कुछ चल रहा है और क्यूँ मनीष ने ये बात उसे नही बताई?

और सबसे ज़रूरी सवाल जो दामिनी के दिमाग़ में उठा वो ये था के क्या उसके भाई ने ही डर से वीरभद्र का खून किया था?

काफ़ी देर तक दामिनी उस काग़ज़ के टुकड़े और सामने रखे ग्रीटिंग कार्ड को देखती रही. जब कुछ समझ ना आया के क्या करे तो वो उठकर अपने कमरे से बाहर निकली और नीचे बेसमेंट की और बढ़ गयी. बेसमेंट पहुँचकर उसने वहीं कोने में रखा एक भारी सा सरिया उठाया और उस बॉक्स के पास पहुँची जो वो काफ़ी दिन से खोलने की कोशिश में थी. बॉक्स पर लॉक लगा हुआ था जिसपर दामिनी ने सरिया से 2 3 बार वार किया. लॉक तो ना टूट सका पर बॉक्स की कुण्डी उखड़ गयी और लॉक के साथ नीचे की और लटक गयी. दामिनी ने बॉक्स खोला और उसे सामने वही दिखा जिसकी वो उम्मीद कर रही थी.

बॉक्स में किसी लड़की के इस्तेमाल की चीज़ें थी. कुछ कपड़े, परफ्यूम्स, जूते और मेक अप का समान. एक नज़र डालते ही दामिनी समझ गयी के ये सारा समान श्यामला का था क्यूंकी जिस दिन श्यामला हवेली से गयी थी उस दिन दामिनी . उसे ये सारा समान पॅक करते देखा था. दामिनी ने बॉक्स से चीज़ें बाहर निकालनी शुरू की और हर वो चीज़ जो श्यामला के साथ होनी चाहिए थी वो इस बॉक्स में थी. दामिनी एक एक करके सारी चीज़ें निकालती चली गयी और कुछ ही देर मे उसे बॉक्स में रखा श्यामला का पासपोर्ट और वीसा भी मिल गया. दामिनी की दिमाग़ में फ़ौरन ये सवाल उठा के अगर ये सारी चीज़ें यहाँ हैं तो दामिनी विदेश में कैसे हो सकती है और अगर वो विदेश में नही है तो कहाँ है? क्या वो उसके भाई के साथ भाग गयी थी और अब उसके भाई के साथ ही रह रही है?

दामिनी समान निकाल ही रही थी के अचानक उसे फिर हैरानी हुई. श्यामला के समान के ठीक नीचे कुछ और भी कपड़े थे पर उनको देखकर साफ अंदाज़ा हो जाता था के वो श्यामला के नही हैं. कुछ सलवार कमीज़ और सारी थी जो दामिनी के लिए बिल्कुल अंजान थी. वो कपड़े ऐसे थे जैसे के उसने अपने घर के नौकरों के पहने देखा और इसी से उसे पता चला के ये कपड़े श्यामला के नही हो सकते क्यूंकी श्यामला के सारे कपड़े काफ़ी महेंगे थे.अंदर से कुछ ब्रा निकली जिन्हें देखकर अंदाज़ा हो जाता था के ये श्यामला के नही हैं क्यूंकी श्यामला की स्तनों का साइज़ ब्रा के साइज़ से बड़ा था.

दामिनी ने सारा समान बॉक्स से निकालकर ज़मीन पर फैला दिया और वहीं बैठकर समान को देखने लगी. जो 2 सवाल उसे परेशान कर रहे थे वो ये थे के श्यामला कहाँ है और बॉक्स के अंदर रखे बाकी के कपड़े किसके हैं? हवेली में सिर्फ़ 3 औरतें हुआ करती थी. वो खुद, उसकी सास और श्यामला और तीनो में से ये कपड़े किसी के नही हो सकते और ख़ास बात ये थी के इन कपड़ों को श्यामला के कपड़ों के साथ ऐसे च्छुपाकर ताले में क्यूँ रखा गया था? श्यामला अभी अपनी सोच में ही थी के बाहर से कार की आवाज़ आई. तेज वापिस आ चुका था. उसने समान वहीं बिखरा छोड़ा और बेसमेंट में ताला लगाकर बड़े कमरे में पहुँची.

"तूने बबलू से कह दिया था ना के तू रात में हवेली में ही सोया करेगी?" दामिनी ने ड्रॉयिंग रूम में ही बैठी टीवी देख रही कजरी से पूछा

"हां मैने उसे कह दिया था के मैं आपके कमरे में सोया करूँगी क्यूंकी आपको रात को डर सा लगता है" कजरी ने टीवी बंद करते हुए कहा

"ठीक है. तेज आ गया है. मैं अपने कमरे में जा रही हूँ. आयेज का काम तेरा है" कहते हुए दामिनी अपने कमरे की और बढ़ गयी.

अपने कमरे में आकर दामिनी बिस्तर पर निढाल गिर पड़ी. उसकी कुछ समझ नही आ रहा था के क्या सोचे और क्या करे. सोचते सोचते उसे 2 घंटे से ज़्यादा गुज़र गये.पिच्छले कुछ दीनो में उसकी पूरी ज़िंदगी बदल चुकी थी. एक सीधी सादी घरेलू औरत से वो कुछ और ही बन चुकी थी. भगवान का नाम सुबह शाम जपने वाली औरत का अपने ही ससुर से नाजायज़ संबंध बन गया था और वो अपने ससुर से प्यार भी करने लगी थी. उसका वो ससुर जिसकी असलियत खुद उसके लिए सवाल बनकर खड़ी हो गयी थी. एक तरफ उसके पति की मौत का सवाल था और दूसरी तरफ वो इनस्पेक्टर जो उसपर ही शक कर रहा था. कहाँ वो कल तक ठाकुर खानदान की बहू थी और कहाँ वो आज पूरी जायदाद की मालकिन हो गयी थी. कहाँ उसने पिच्छले 10 साल से अपनी ज़िंदगी से समझौता कर रखा था और कहाँ अब वो खुद ही जाने कितने सवालों के जवाब ढूँढने निकल पड़ी थी. हद तो ये थी के कहाँ वो कल तक एक शर्मीली सी औरत थी और कहाँ अब वो मर्द तो मर्द औरतों के साथ भी बिस्तर पर जाने को तैय्यार थी.

ये ख्याल आते ही उसका ध्यान सरला की तरफ गया जो आज उसके कमरे में नही आई थी. बल्कि आज तो पूरा दिन सरला उसे नज़र नही आई थी. दामिनी ने उठकर बीच का दरवाज़ा खोला और सरला के कमरे में आई. सरला अपने उसी बेख़बर अंदाज़ में सोई पड़ी थी. ना खुद का होश और ना अपने कपड़ो का. दामिनी उसे देखकर मुस्कुराइ और वापिस अपने कमरे में आ गयी.

खिड़की पर खड़े खड़े उसकी नज़र सामने कॉंपाउंड में कजरी और बबलू के कमरो की तरफ गयी. दोनो के कमरो की लाइट्स ऑफ थी यानी के आज रात काम नही चल रहा था. तभी दामिनी को ध्यान आया के उसने आज रात कजरी को तेज को इशारा कर देने को कहा था. ये ख्याल आते ही वो फ़ौरन अपने कमरे से निकली और तेज के कमरे की तरफ आई. कमरे अंदर से बंद था. दामिनी ने दरवाज़े पर कान लगाकर ध्यान से सुनने की कोशिश की. गहरी रात थी और हर तरफ सन्नाटा था इसलिए उसे कमरे के अंदर से आती कजरी की आवाज़ सुनने में कोई परेशानी नही हुई. आवाज़ सुनकर ही उसने अंदाज़ा लगा लिया के अंदर कजरी ठुक रही है. दामिनी फिर मुस्कुरा उठी. उसने तो सिर्फ़ कजरी को इशारा करने को कहा था पर वो तो पहली ही रात तेज के बिस्तर में पहुँच गयी थी. दामिनी को लगा जैसे उसने कोई बहुत बड़ी जीत हासिल कर ली हो. उसे यकीन था के अगर हर रात कजरी तेज का बिस्तर गरम करे तो यूँ रातों को तेज का हवेली से बाहर रहना कम हो जाएगा.

वो फिर वापिस अपने कमरे में पहुँची. आधी रात होने को आई थी और नींद उसकी आँखों से कोसो दूर थी. ये बात उसे खाए जा रही थी के उसके अपने भाई का चक्कर श्यामला के साथ था और उसे इस बात का कोई अंदाज़ा नही था. या फिर चक्कर था ही नही. ये भी तो हो सकता है के उन दोनो को शायरी का शौक रहा हो और मनीष ने बस यूँ ही शायरी लिख कर श्यामला को दी हो. दामिनी ने अपनी अलमारी खोलकर फिर से श्यामला की डाइयरी निकली.

डाइयरी उसने कपड़ो के बीच च्छुपाकर रखी थी इसलिए. डाइयरी निकालते ही कुछ कपड़े अलमारी से निकलकर बाहर गिर पड़े. दामिनी कपड़े उठाकर वापिस अलमारी में रखने लगी. उन्ही कपड़ो में एक वो ब्रा भी था जो उसे अपने सबसे छहोटे देवर शमशेर के कमरे से मिला था. जो ना तो उसका था, ना श्यामला का और ना ही उसकी सास शकुंतला देवी का. दामिनी ने एक नज़र ब्रा पर डाली और अलमारी में रखने ही लगी थी के अचानक उसे कुछ ध्यान आया. उसने जल्दी से डाइयरी अलमारी में वापिस रखी, अलमारी बंद करी और ब्रा हाथ में लिए हुए अपने कमरे से बाहर आई.

भाग - 15

सीढ़ियाँ उतरती वो सीधा बेसमेंट में पहुँची. वो अपने साथ कमरे से टॉर्च उठा लाई थी इसलिए लाइट्स ऑन करने के बाजार टॉर्च ऑन कर ली. वो नही चाहती थी के अगर तेज या कोई और बाहर आए तो इस वक़्त उसे बेसमेंट में पाए और सबसे ज़्यादा वो अभी किसी से बॉक्स के बारे बात नही करना चाहती थी. टॉर्च की रोशनी उसने नीचे ज़मीन पर डाली. कपड़े अभी भी ज़मीन पर यूँ ही पड़े थे जैसे वो शाम को छोड़कर गयी थी. दामिनी ने नीचे बैठकर कपड़े इधर उधर करने शुरू किए. श्यामला के साथ जिस दूसरी औरत के कपड़े बॉक्स में थे उसने उन कपड़ो में से उस औरत का ब्रा निकाला और टॉर्च की रोशनी में उस ब्रा से मिलाया जो उसे शमशेर के कमरे से मिला था. एक नज़र डालते ही वो साफ समझ गयी के दोनो ब्रा एक ही औरत के थे. रंग के सिवा दोनो ब्रा बिल्कुल एक जैसे थे. साइज़ के साथ साथ ब्रा का पॅटर्न भी बिल्कुल एक जैसा था. साफ ज़ाहिर था के या तो ये दोनो किसी एक ही औरत के हैं या दो ऐसी औरतों के हैं जिनका कपड़े का अंदाज़ बिल्कुल एक दूसरे की तरह था.

दामिनी अभी अपनी ही सोच में थी के उसे एक हल्की सी आहट आई. कोई बस्मेंट का दरवाज़ा खोल रहा था. उसने फ़ौरन अपनी टॉर्च ऑफ की और हाथ में वो सरिया उठा लिया जिससे उसने बॉक्स का ताला तोड़ा था.

दामिनी साँस रोके चुप खड़ी हो गयी. बेसमेंट में घुप अंधेरा हो गया था. हल्की सी रोशनी बेसमेंट के दरवाज़े से आ रही थी. उसी रोशनी में एक परच्छाई धीरे धीरे सीढ़ियाँ उतरने लगी. दामिनी की कुछ समझ नही आ रहा था के ये कौन हो सकता था. उसने पहले भी एक बार किसी को हवेली के कॉपाउंड में देखा था रात को पर तब उसे लगा था के ये उसका भ्रम है. क्या ये वही शक्श है? उसकी समझ नही आ रहा था के चुप रहे या शोर मचाए?

वो परच्छाई धीरे धीरे बड़ी होती चली गयी और एक साया सीढ़ियाँ उतारकर बेसमेंट के अंदर आ गया. हल्की सी रोशनी में दामिनी ने अंदाज़ा लगाया के वो आदमी बेसमेंट में चारो तरफ देख रहा है. फिर उस शक्श ने धीरे से एक आवाज़ की

"आएयई"और दामिनी समझ गयी के वो बबलू था. गूंगे की आवाज़ में साफ ये सवाल था के जैसे वो किसी से पुच्छ रहा हो के " हो क्या?"

दामिनी हैरत में पड़ गयी. वो इतनी रात को यहाँ क्या कर रहा था और उसे कैसे पता के दामिनी यहाँ है. दामिनी ने धीरे से सरिया नीचे गिरा दिया और कोने से निकलकर आगे को बढ़ी.

सरिया गिरने की आवाज़ से बबलू ने भी उस तरफ देखा जहाँ दामिनी खड़ी थी. उस कोने में बिल्कुल अंधेरा पर दामिनी का साया फिर भी नज़र आ रहा था. दामिनी आगे बढ़ी ही थी के बबलू भी फ़ौरन उसकी तरफ बढ़ा और इससे पहले के वो कुछ समझ पाती उसने दामिनी को

दोनो बाहों से पकड़ लिया. गिरफ़्त बहुत सख़्त थी. दामिनी कुछ कहना चाहती ही थी के बबलू ने उसे पलटके घुमा दिया और सामने रखी एक पुरानी टेबल पर ज़बरदस्ती झुका दिया.

टेबल पर कुछ रखा हुआ जो आंधरे में ना दामिनी को नज़र आया और ना ही बबलू को. जैसे ही दामिनी झुकी वो चीज़ सीधे उसके माथे पर लगी और उसकी आँखों के आगे तारे नाच गये. उसे लगा जैसे उसकी सर में बॉम्ब फॅट रहे हो और उसकी हाथ पावं ढीले पड़ गये. वो टेबल पर गिर सी पड़ी. वो अब भी होश में थी पर लग रहा था जैसे जिस्म से जान निकल चुकी हो.

दामिनी ने आधी बेहोशी में उठकर सीधी खड़ी होने की कोशिश की पर बबलू का हाथ उसकी कमर पर था. उसे कोई अंदाज़ा नही था के इस छहोटे से लड़के में इतनी ताक़त है. उसने दूसरे हाथ से दामिनी की नाइटी उपेर करनी शुरू कर दी और तब दामिनी को समझ आया के वो क्या करने जा रहा था. उसने फिर उठने को कोशिश की पर बबलू ने उसे काफ़ी ज़ोर से पकड़ रखा था. एक ही पल में दामिनी की नाइटी उठकर उसकी कमर तक आ गयी और कमर के नीचे वो बिल्कुल नग्न हो गयी. नाइटी के नीचे उसने पॅंटी नही पहेन रखी थी इसलिए बबलू का हाथ सीधा उसकी नग्न पिछवाड़ा पर पड़ा.

दामिनी की आँखें भारी हो रही थी. सर पर लगी चोट की वजह से उसका सर घूमता हुआ महसूस हो रहा था और वो चाहकर भी इतनी हिम्मत नही जोड़ पा रही थी के उठकर खड़ी हो जाए ये कुछ बोले. उसे बबलू का हाथ अपनी योनि पर महसूस हुआ और फिर कोई चीज़ उसकी योनि में घुसने लगी. दामिनी जानती थी के ये बबलू का लिंग है और वो उसे ठोकने की कोशिश कर रहा है पर वो टेबल पर वैसे ही पड़ी रही. आँखें और भी भारी हो रही थी.

"बबलू" दामिनी के मुँह से बस इतना ही निकला और पिछे से बबलू के धक्के शुरू हो गये. वो दामिनी की पिछवाड़ा पकड़े धक्के मारे जा रहा था और दामिनी आधी बेहोशी में चुप चाप ठुकवा रही थी. पर इस हालत में भी उसे अपने जिस्म में फिर से वही वासना महसूस होने लगी जो वो पिच्छले कुछ दिन से महसूस कर रही थी. बबलू किसी जंगली जानवर की तरह धक्के मार रहा था. उसके हाथ दामिनी की पिछवाड़ा सहला रहे थे और उसके मुँह से आ आ की आवाज़ निकल रही थी.

धीरे धीरे सर पर लगी अचानक चोट का असर कम हुआ और दामिनी को अपने जिस्म में फिर से ताक़त आती महसूस हुई. उसका दिमाग़ कह रहा था के उठकर बबलू को रोके और एक थप्पड़ उसके मुँह पर लगा दे पर दिल कुछ और ही कह रहा था. वो पिच्छली रातों में ठुकी नही थी और उसका जिस्म टूट रहा था. पिच्चे से योनि पर पड़ते बबलू के धक्के जैसे उसके जिस्म में लहरें उठा रहे थे और दामिनी ना चाहते हुए भी वैसे ही झुकी रही. उसकी दोनो स्तनया नीचे टेबल पर रगड़ रही थी और उसके जिस्म में वासना पूरे ज़ोर पर पहुँच चुकी थी. वो यूँ ही झुकी रही और बबलू उसे पिछे से ठोक्ता रहा.

थोड़ी देर बाद बबलू के धक्के एक्दुम तेज़ हो गये और दामिनी समझ गयी के वो झड़ने वाला है. वो अब तक खुद भी 2 बार ख़त्म चुकी और तीसरी बार झड़ने को तैय्यार थी. बबलू ने किसी पागल सांड़ की तरह धक्के मारने शुरू कर दिए. उसका पूरा लिंग दामिनी की योनि से

निकलता और फिर पूरा अंदर समा जाता. बेसमेंट में ठप ठप की आवाज़ें गूँज रही थी.

"आआआहह " की आवाज़ के साथ बबलू ने एक ज़ोर से धक्का मारा और दामिनी की योनि से तीसरी बार पानी बह निकला. ठीक उसी पल बबलू ने अपना लिंग बाहर निकाला और झुकी हुई दामिनी की पिछवाड़ा पर अपना पानी गिरने लगा. दामिनी की आँखें बंद हो चली थी. उसे सिर्फ़ नीचे अपनी योनि से बहता पानी और उपेर पिछवाड़ा पर गिर रहा बबलू का पानी महसूस हो रहा था. उसे लगा जैसे कई दिन के बीमार को दवाई मिल गयी हो. उसका पूरा जिस्म ढीला पड़ चुका था.

जब वासना का ज़ोर थमा और दामिनी का जिस्म शांत पड़ा तो वो टेबल से उठकर सीधी हुई और अपनी नाइटी को ठीक किया. बेसमेंट में नज़र घुमाई तो वहाँ कोई नही था. तभी उसे सीढ़ियाँ चढ़ता बबलू नज़र आया. वो उसे छोड़कर उसी खामोशी से चला गया जैसे आया था

दामिनी वापिस अपने कमरे में पहुँची. सर पर लगी चोट के कारण अब भी उसके सर में दर्द हो रहा था. अभी अभी बस्मेंट में जो हुआ था उसके बारे में कुछ सोचने की हिम्मत उसमें नही थी. कमरे में पहुँचकर वो सीधा बिस्तर पर गिरी और धीरे धीरे नींद के आगोश में चली गयी.

सुबह आँख खुली तो सर अब भी भारी था. उसने उठकर शीशे में अपने आपको देखा तो सर पर जहाँ चोट लगी थी वहाँ एक नीला निशान पड़ गया था. अच्छी बात ये थी के निशान उसके माथे पर उपर की और पड़ा था. अगर दामिनी अपने बाल हल्के से आगे को कर लेती तो किसी को वो निशान नज़र ना आता. दामिनी ने ऐसा ही किया. बाल हल्के से आगे किए और अपने कमरे से उतरकर नीचे आई.

कजरी उसे बड़े कमरे में ही मिली."कैसा रहा?" उसने कजरी से पूछा

"मुश्किल नही था. हल्का सा इशारा किया मैने और वही हुआ जो आपने चाहा था" कजरी मुस्कुराते हुए बोली

"बाद में बताना मुझे" दामिनी ने कहा "एक चाय लाकर दे और तेज कहाँ है?"

"वो तो सुबह सुबह ही कहीं निकल गये" कजरी ने कहा और किचन की तरफ चाय लेने निकल पड़ी.

दामिनी अभी सोच ही रही थी के क्या करे के तभी फोन की घंटी बजी. उसने फोन उठाया तो दूसरी तरफ से पठाण की आवाज़ आई.

"आपको पोलीस स्टेशन आना होगा मॅम" पठाण कह रहा था "मैं जानता हूँ के आपके घर की औरतें पोलीस स्टेशन्स में नही जाया करती पर और कोई चारा नही है मेरे पास. कुछ ज़रूरी काम है"

"ठीक है" दामिनी उससे बहेस करने के मूड में बिल्कुल नही थी. उसने पठाण से कहा के वो अभी पोलीस स्टेशन आ रही है और फोन रख दिया. वैसे भी उसके पास करने को कुछ ख़ास नही था.

तकरीबन 2 घंटे बाद दामिनी पोलीस स्टेशन में दाखिल हुई."कहिए" उसने पठाण के सामने रखी हुई चेर पर बैठते हुए पूछा

पठाण उसे देखकर अपने उसे पोलिसेया अंदाज़ में मुस्कुराया"कैसी हैं आप?" उसने ऐसे पूछा जैसे दामिनी पर बहुत बड़ा एहसान कर रहा हो

"ज़िंदा हू" दामिनी ने लंबी साँस लेते हुए कहा "काम क्या है ये कहिए"

"वो क्या है मॅम के आपकी हवेली से अगर कुछ मिले तो उसकी ज़िम्मेदारी भी तो आपकी ही हुई ना इसलिए याद किया था मैने" पठाण ने कहा

"मतलब? ज़िम्मेदारी?" दामिनी को उसकी बात समझ नही आई

"आपकी हवेली से मिली लाश के बारे में बात कर रहा हूँ. लावारिस पड़ी है बाहर आंब्युलेन्स में. कोई नही है जलाने या दफ़नाने वाला तो मैने सोचा के लावारिस समझके आग देने से पहले मैं आपसे पुच्छ लूँ" पठाण ने सामने रखे पेपरवेट को घूमते हुए कहा

"मुझसे पुच्छना क्यूँ ज़रूरी समझा?" दामिनी को गुस्सा आ रहा था के इस बात पर पठाण ने उसे इतनी दूर बुलाया है

"अब आपकी हवेली से मिली है तो ये भी तो हो सकता है के आपके किसी रिश्तेदार की हो इसलिए" पठाण ने कहा

दामिनी गुस्से में उठ खड़ी हुई"आपको लाश के साथ जो करना है करिए और आइन्दा ऐसी फ़िज़ूल बात के लिए हमें तकलीफ़ ना दीजिएगा"

"लाश कहाँ बची मॅम. कुछ हड्डियाँ हैं बस" दामिनी जाने के लिए मूडी ही थी के पठाण फिर बोला "मुझे जो करना है वो तो मैं कर ही लूँगा पर उसके लिए इस पेपर पर आपके साइन चाहिए क्यूंकी लाश आपकी प्रॉपर्टी से बरामद हुई है"

पठाण ने एक पेपर दामिनी की और सरकाया. दामिनी ने पेन उठाकर पठाण की बताई हुई जगह पर साइन कर दिए

"बैठिए" पठाण ने उसे फिर बैठने को कहा "आपने कुछ पुच्छना भी है"

"क्या पुच्छना है?"दामिनी ने खड़े खड़े ही पूछा

"बैठ तो जाइए" पठाण ने ज़ोर देकर कहा तो दामिनी बैठ गयी

"कुछ रिपोर्ट्स वगेरह कराई थी मैने. डीयेने वगेरह मॅच कराया. आपको जानकार खुशी होगी के लाश श्यामला की नही है" पठाण ने कहा

दामिनी को दिल ही दिल में एक आराम सा मिला. उसे ये डर अंदर अंदर ही खा रहा था के कहीं हवेली में मिली लाश श्यामला की तो नही.

"दो बातें" उसने पठाण से कहा "पहली तो ये के मुझे पता है के वो श्यामला की नही है. और दूसरी ये के आपको ये क्यूँ लगा के वो लाश श्यामला की हो सकती है?

"अब कोई लापता हो जाए तो सारे पहलू सोचने पड़ते हैं ना" पठाण भी अब काफ़ी सीरीयस अंदाज़ में बोल रहा था

"मेरी ननद लापता नही है" दामिनी ने बड़े आराम से कहा

"अच्छा तो कहाँ है वो?" पठाण ने कहा "विदेश नही गयी ये मैं जानता हूँ"

दामिनी ने कोई जवाब नही दिया. कुछ देर तक ना वो बोली और ना पठाण

"अच्छा खेर ये बात छोड़िए. जब आपके पति का खून हुआ था उस वक़्त आप कहाँ थी?" पठाण ने थोड़ी देर बाद दूसरा सवाल किया

"क्या मतलब?" दामिनी ने हैरत से पूछा "हवेली में और कहाँ"

"इस बात का कोई गवाह है आपके पास?" पठाण ने फिर पूछा

"ठाकुर साहब" दामिनी ने कहना शुरू ही किया था के पठाण बीच में बोल पड़ा

"जो की ज़िंदा हैं या मर गये समझ नही आता. जबसे आक्सिडेंट हुआ है वो तो होश में ही नही आए" पठाण ने ताना सा मारते हुए पूछा

"मेरी सास" दामिनी ने अपनी सास का नाम लिया

"जो मर चुकी हैं" पठाण ने फिर ताना सा मारा

"मेरी ननद" दामिनी ने तीसरा नाम लिया

"श्यामला जो कहाँ है ना आपको पता ना मुझे" पठाण ने ये बात भी काट दी

"घर के नौकर" दामिनी के पास ये आखरी नाम था

"बात कर ली मैने उनसे भी. उनमें से किसी ने भी आपकी उस वक़्त हवेली में नही देखा था" पठाण के पास जैसे इस बात का भी जवाब था

"क्यूंकी उस वक़्त मैं अपने कमरे में थी. मैं उन दीनो ज़्यादा वक़्त अपने कमरे के पूजा घर में ही बिताया करती थी" दामिनी जैसे लगभग चीख पड़ी

उसकी ये बात सुनकर पठाण हस्ने लगा. जैसे दामिनी ने कोई जोक सुनाया हो

तभी पोलीस स्टेशन का दरवाज़ा ज़ोर से खुला और थाने में बैठे 3 कॉन्स्टेबल्स और एक हवलदार उठकर खड़े हो गये, जैसे किसी बहुत बड़े आदमी के आने पर नौकर उसकी इज़्ज़त में उठ खड़े होते हैं. दामिनी ने पलटकर देखा. दरवाज़े पर तेज खड़ा था. उसका चेहरा गुस्से में लाल हो रहा था.

"आप बाहर जाइए भाभी" उसने दामिनी से कहा

"एक मिनिट" दामिनी जाने ही लगी थी के पठाण बोल पड़ा "मुझे इनसे कुछ और सवाल पुच्छने हैं"

उसकी ये बात सुनकर तेज उसकी तरफ ऐसे बढ़ा जैसे शेर अपने शिकार पर लपकता है. पठाण भी उसकी इस अचानक हरकत से एक कदम पिछे को हो गया

"तुझे जो बात करनी है मुझसे कर" तेज उसके बिल्कुल सामने आ खड़ा हुआ "साले 2 कौड़ी के पोलिसेवाले, तेरी हिम्मत कैसी हुई हमारे घर की औरत को पोलीस स्टेशन बुलाने की"

"यहाँ किससे क्या पूछना है और किसे बुलाना है ये फ़ैसला मैं करूँगा" पठाण भी अब संभाल चुका था और उसकी आवाज़ भी ऊँची हो गयी थी "ये मेरा इलाक़ा है"

"अपने चारों तरफ देख पठाण" तेज ने खड़े हुए कॉन्स्टेबल्स की तरफ इशारा किया "मेरे कदम रखते ही ये सारे उठ खड़े हुए. ये रुतबा है हमारा. और जब तक मैं ना कह दूँ ये बैठेंगे नही. अब सोच के इलाक़ा किसका है"

दामिनी ने तेज को बहुत दिन बाद इस रूप में देखा था. आज उसे 10 साल पुराना वो तेज

नज़र आ रहा था जिसके सामने बोलने की हिम्मत खुद उसने पिता ठाकुर इंद्रदेव सिंग भी नही करते थे

"बैठ जाओ" पठाण खड़े हुए कॉन्स्टेबल्स और हवलदार पर चिल्लाया पर कोई नही बैठा. उसने दूसरी बार और फिर तीसरी बार हुकुम दिया पर सब ऐसे ही खड़े रहे.

तेज हस पड़ा"चलिए भाभी जी" उसने दामिनी से कहा.दामिनी दरवाज़े से बाहर निकली. तेज उसके पिछे ही था.

"मैं जानता हूँ" पीछे खड़ा पठाण फिर गुस्से में बोला "ये पोलिसेवाले जिन्हें तुमने हवेली का कुत्ता बना रखा था इनके दम पर ही तुमने अपने भाई के खून को ढका है ना? मैं जानता हूँ सालों के ये काम तुम्हारा ही है और तुम्हारी गर्दन दबाके रहूँगा मैं"

तब तक दामिनी और तेज पोलीस स्टेशन से बाहर आ चुके थे. पठाण की ये बात सुन तेज एक बार फिर अंदर जाने को मुड़ा. वो जानती थी के इस बार वो अंदर गया तो पठाण पर हाथ उठाएगा इसलिए उसने फ़ौरन तेज का हाथ पकड़कर रोका और उसे गर्दन हिलाकर मना किया. उसके मना करने पर तेज भी रुक गया और दोनो सामने खड़ी दामिनी की कार की तरफ बढ़े.

"आप आगे चलिए" दामिनी के कार में बैठने पर तेज ने कहा "मैं अपनी कार में पिछे आ रहा हूँ".दामिनी और तेज दोनो ही हवेली पहुँचे.

"आपको क्या ज़रूरत थी यूँ पोलीस स्टेशन जाने की?" तेज ने दामिनी से हवेली में घुसते ही पूछा।दामिनी ने कोई जवाब नही दिया

"वो पोलीस वाला अपने आपको बहुत बड़ा शेर समझता है" तेज अब भी गुस्से में जल रहा था "1 दिन में हेकड़ी निकाल दूँगा. आज तक किसी की हिम्मत नही हुई के इस हवेली की शान में गुस्ताख़ी करे"

बोलकर तेज अपने कमरे की और बढ़ा ही था के दामिनी की आवाज़ सुनकर रुक गया"कौन सी शान की बात कर रहे हो ठाकुर तेजप्रताप सिंग"तेज दामिनी की तरफ पलटा

"इस हवेली में अब उल्लू भी नही बोलते. लोग इस तरफ आने से भी कतराते हैं. वो तो फिर गैर हैं छोड़ो, यहाँ तो अपने भी हवेली में कदम नही रखते. किस शान की बात कर रहे हैं आप?" दामिनी ने पूछा तो इस बार तेज के पास कोई जवाब नही था.

"ज़रा बाहर निकालकर नज़र डालिए तेजप्रताप जी. इस हवेली पर अब मनहूसियत बरसती है. बाहर से देखने से ऐसा लगता है जैसे यहाँ बरसो से कोई नही रहा. इस हवेली की शान में गुस्ताख़ी तो गुज़रते वक़्त ने कर दी है वो पोलीस वाला क्या करेगा." दामिनी बोलती रही और

तेज चुप खड़ा उसकी तरफ देखता रहा

"हमारी ज़मीन हमारा ही अपना कोई हमारी नज़र के सामने से चुरा ले गया. जो रह गयी वो बंजर पड़ी हैं. बची हुई जो दौलत है वो ख़तम हो रही है. इस हवेली के मलिक हॉस्पिटल में पड़े हैं. आपके भाई को बीच सड़क किसी ने गोली मार दी थी. आपने नाम पर लोग हस्ते हैं. और आप हवेली की शान की बात कर रहे हैं?" दामिनी ने जैसे अपने दिल में जमा सारा ज़हेर तेज पर उगल दिया और अपने कमरे की तरफ बढ़ चली.

"और हां" जाते जाते वो फिर पलटी "जब घर के आदमियों का कहीं आता पता ना हो तो घर की औरतों को ही पोलीस स्टेशन जाना पड़ता है"

दामिनी ने एक आखरी ताना सा मारा और अपने कमरे की तरफ बढ़ चली. अपने पिछे उसे तेज गुस्से में पेर पटकता हुआ हवेली के बाहर जाता हुआ दिखाई दिया.

कमरे में पहुँच कर दामिनी के आँसू निकल पड़े. उसने जो कुछ तेज से कहा था वो गुस्से में था पर इन बातों ने उसके खुद के ज़ख़्म हरे कर दिए थे. कुछ देर तक यूँ ही आँसू बहाने के बाद उसने सामने रखा फोन उठाया और लक्ष्मण प्रसाद का नंबर मिलाया

"हां दामिनी जी कहिए" दूसरी तरफ से लक्ष्मण प्रसाद की आवाज़ आई

दामिनी को वो ज़माना याद आ गया जब लक्ष्मण प्रसाद जैसे उसे छहोटी ठकुराइन के नाम से बुलाते थे. आज उसकी इतनी औकात हो गयी थी के उसे नाम से बुला रहा था. वो एक ठंडी आह भरकर रह गयी. दिल में जानती थी के ये ग़लती लक्ष्मण प्रसाद की नही बल्कि ठाकुर खानदान की ही है. जब अपने ही सिक्के खोटे हों तो कोई क्या करे.

"मैने आपसे कहा था ने के आने से एक दिन पहले फोन करूँगी." दामिनी ने जवाब दिया

"तो आप कल आ रही हैं?" लक्ष्मण प्रसाद उसकी बात का मतलब समझ गया

"हां" दामिनी ने जवाब दिया "कल सुबह यहाँ से निकलेंगे तो दोपहर तक आपके पास पहुँच जाएँगे."

"जैसा आप ठीक समझें" लक्ष्मण प्रसाद ने कहा "वैसे आप एक बार बता देती के किस बारे में बात करी है तो मैं पेपर्स वगेरह तैय्यार रखता"

"ये आकर ही बताती हूँ" कहकर दामिनी ने फोन काट दिया. अपनी हालत ठीक की और फिर नीचे आई.

सरला बड़े कमरे में बैठी टीवी देख रही थी."तेरी माँ कहाँ है?" दामिनी ने पूछा

"जी वो नहाने गयी हैं" सरला ने टीवी की आवाज़ धीरे करते हुए कहा

"और बबलू?" दामिनी ने पूछा तो सरला ने कंधे हिला दिए

"पता नही"

दामिनी हवेली से निकलकर कजरी के कमरे की तरफ बढ़ी. वो कमरे की नज़दीक पहुँची ही थी के कजरी के कमरे का दरवाजा खुला और वो माथे से पसीना साफ करती हुई बाहर निकली. पीछे बबलू था. दामिनी फ़ौरन समझ गयी के वो क्या करके आ रहे हैं पर कुछ नही बोली.

"अगर तू नहा ली हो तो मेरे कमरे में आ. कुछ बात करनी है" दामिनी ने कहा तो कजरी ने हां में सर हिला दिया.

दामिनी बबलू की तरफ मूडी"और तुझे मैने कहा था सफाई के लिए. उस तरफ देख" दामिनी ने हवेली के कॉंपाउंड में उस तरफ इशारा किया जहाँ अब भी कुछ ख़त्मियाँ थी. उसके चेहरे पर अब भी हल्के गुस्से के भाव थे. बबलू ने फ़ौरन इशारे से कहा के वो अभी सफाई शुरू कर देगा.

दामिनी अपने कमरे की तरफ बढ़ चली. कल रात के बाद उसने अब पहली बार बबलू को देखा था. जिस अंदाज़ से बबलू ने उसकी तरफ देखा था उससे दामिनी सोचने पर मजबूर हो गयी थी. उसमें ऐसा कोई अंदाज़ नही था जैसा की उसे ठोकने के बाद होना चाहिए था. बबलू ने अब भी उसे उसी इज़्ज़त से देखा था जैसे पहले देखा था और अब भी वैसे ही उसका हुकुम माना था जैसे पहले मानता था.

भाग - 16

थोड़ी देर बाद कजरी और दामिनी दोनो दामिनी के कमरे में बैठे थे और दामिनी गुस्से से कजरी को घूर रही थी.

"अपनी रंग रलियान ज़रा कम कर. दिन में इस वक़्त? वो भी तब जब तेरी बेटी यहीं बैठी थी? अगर तेज देख लेते तो काट देते तुझे और उस बबलू को भी"

माफ़ कर दीजिए मालकिन" कजरी ने सर झुकाए कहा "अब नही होगा"

दामिनी वहीं उसके सामने बिस्तर पर बैठ गयी

"कल रात का बता. क्या लगता है तुझे? खुश था तेज तेरे साथ बिस्तर पर?" दामिनी ने कजरी से पूछा तो वो मुस्कुरा उठी

"खुश? मालकिन कल पूरी रात सोने नही दिया मुझे" कजरी बोली

"तूने मनाया कैसे तेज को?" दामिनी ने पूछा

"ज़रूरत ही कहाँ पड़ी मनाने की. वो तो पहले ही तैय्यार बैठे थे" कजरी ने जब देखा के दामिनी का गुस्सा थोड़ा कम हो रहा है तो वो भी खुलकर बात करने लगी

"मतलब?" दामिनी ने पूछा

"मतलब ये के रात अपने कमरे में जाने से पहले उन्होने मुझसे कहा के एक कप चाय उनके कमरे में ले आओं. मैं उसी वक़्त इस समझ गयी की मुझे कुछ करने की ज़रूरत नही और मुझे कमरे में चाय के बहाने क्यूँ बुलाया जा रहा है. मैने चाय बनाई और लेकर उनके पास जाने से पहले सरला के कमरे में पहुँची. वहाँ जाकर में अपनी चोली उतारी और सरला की पहेन ली"

"सरला की चोली? वो क्यूँ?" दामिनी ने हैरत से पूछा

"क्यूंकी सरला की स्तनया मुझसे काफ़ी बड़ी हैं. कभी कभी तो मुझे खुद को हैरानी होती है. ज़रा सी उमर में ही उसकी स्तनया मुझसे दुगुनी हो गयी हैं" कजरी ने कहा

"तू अपनी ही बेटी की स्तनया क्यूँ देखती है?" दामिनी ने मुस्कुराते हुए पूछा

"माँ हून मालकिन" कजरी ने कहा "जवान बेटी घर में हो तो सब देखना पड़ता है. और वैसे भी उस ज़रा सी बच्ची के जिस्म पर सबसे पहले उसकी बड़ी बड़ी स्तनया ही दिखाई देती हैं"

दामिनी का दिल किया के उसको बताए के जिसे वो ज़रा सी बच्ची कह रही है उसके जिस्म में माँ से भी ज़्यादा आग है और एक लिंग ले भी चुकी है.

"अच्छा वो छोड़" दामिनी बोली "तूने सरला की चोली क्यूँ पहनी?"

"मालकिन उसकी चोली मुझे ढीली आती है क्यूंकी मेरी स्तनया इतनी नही" कजरी ने अपनी स्तनों की तरफ देखते हुए कहा. दामिनी ने भी अपनी नज़र उधर ही डाली

"उसकी स्तनया बड़ी होने की वजह से अगर मैं उसकी चोली पहेन लूँ तो सामने से इतनी ढीली हो जाती है के हल्का सा झुकते ही सारा नज़ारा सामने आ जाता है" कजरी ने समझाते हुए कहा

"ओह अब समझी. फिर?"

"फिर मैं चाय लेकर उनके कमरे में पहुँची और कप बिल्कुल उनके सामने रखा. कप रखते हुए मैं झुकी और बस. मेरी स्तन आपके देवर के सामने थी" कजरी बोली

"तेज ने देखी?" दामिनी अब बेझिझक सवाल पुच्छ रही थी.

"देखी? हाथ बढ़ाकर सीधा एक स्तन पकड़ ली." कजरी हस्ते हुए बोली

दामिनी दिल ही दिल में तेज की हिम्मत की दाद दिए बिना ना रह सकी

"पकड़ ली? तूने क्या कहा?" उसने कजरी से पूछा

"मैं क्या कहती. मैं तो पहली ही तैय्यार थी. स्तन पकड़कर छहोटे ठाकुर ने हल्का सा दबाव डाला और कहा के मेरी स्तन काफ़ी सख़्त हैं. इस उम्र में ज़रा भी ढीली नही हैं. अब बारी थी मेरी तरफ से इशारे की."

दामिनी चुप चाप बैठी सुन रही थी"मैं मुस्कुराइ और कहा के छहोटे ठाकुर चोली के उपेर से हाथ लगाके कहाँ पता चलता है के स्तन सख़्त हैं या उमर के साथ ढीली पड़ गयी हैं" कजरी ने बात जारी रखी

"इतना इशारा काफ़ी था. वो उठे और चोली मेरे जिस्म से ऐसे अलग की जैसे फाड़ रहे हों. जब मैं उपेर से नग्न हो गयी तो उन्होने मेरी स्तनों पर हाथ फेरा और कहा के मैं सही था. तुम्हारी स्तन सही में काफ़ी सख़्त हैं और हाथ से दबाने लगा. तब तक मैं खुद भी गरम हो

चुकी थी. मैं उनके बाल सहलाने लगी. वो कभी मेरी स्तनों को दबाते तो कभी मेरे निपल्स को सहलाते. थोड़ी देर तक यही खेल चलता रहा. जब मुझसे और बर्दाश्त ना हुआ तो मैने उनका सर आगे को खींचा और उनका मुँह अपनी छाती पर दबा दिया. मेरा एक निपल सीधा उनके मुँह में गया और वो ऐसे चूसने लगे जैसे आज के बाद कोई औरत नग्न देखने को नही मिलेगी."

"तुझे मज़ा आया?"दामिनी ने पूछा

"मेरे निपल्स मेरे शरीर का सबसे कमज़ोर हिस्सा हैं मालकिन. मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा निपल्स चुसवाने में आता है " कजरी ने फिर एक बार अपनी स्तनों पर नज़र डाली "पर मेरी किस्मत के ना तो मेरा मर्द ये बात समझ सका और ना ही बबलू. दोनो ही मेरी स्तनों पर कुछ ख़ास ध्यान नही देते थे इसलिए जब छहोटे ठाकुर ने तसल्ली के साथ मेरे निपल्स को रगड़ा तो मैं वही पिघल गयी. मैने खुद अपना ल़हेंगा खोलकर नीचे गिरा दिया और उनके सामने नग्न हो गयी. उनके हाथ मेरे पुर जिस्म पर फिरने लगे और जाकर मेरी नितंब पर रुक गये. उन्होने मेरी आँखों में देखते हुए निपल मुँह से निकाला और बोले के उन्हें सबसे ज़्यादा मेरी नितंब पसंद है और ये कहते हुए नितंब को हल्के से दबा दिया."

"फिर?"दामिनी इतना ही कह सकी

"मैं समझ गयी के आज मेरी योनि के साथ साथ नितंब का भी नंबर लगेगा. मैं मुस्कुराइ और बोली के ठाकुर साहब मैं तो पूरी आपकी हूँ पर पहले आपको तैय्यार तो कर दूँ. ये कहते हुए मैं उनके सामने बैठ गयी और उनका पाजामा नीचे सरका कर उनका लिंग बाहर निकाला" कजरी ने कहा

कैसा था, ये बात दामिनी के मुँह से निकलते निकलते रह गयी. उसे फ़ौरन ये एहसास हुआ के वो अपने देवर के बारे में बात कर रही है और कजरी से इस तरह का कोई सवाल ग़लत साबित हो सकता है. दूसरा उसे खुद ये हैरत हुई के वो तेज के लिंग के बारे में जानना चाहती है. उसने बात फ़ौरन अपने दिमाग़ से झटकी.

"थोड़ी ही देर बाद मैं नग्न उनके सामने बैठी थी और लिंग मेरे मुँह में था" बिंदया ने कहा तो दामिनी मन मसोस कर रह गयी. वो उम्मीद कर रही थी के कजरी खुद ये कहेगी के उसे तेज का लिंग कैसा लगा

"मेरा इरादा तो ये था के बिस्तर पर मैं जो जानती हूँ वो करूँ ताकि छहोटे ठाकुर को खुश कर सकूँ पर ऐसा हो ना सका. थोड़ी देर बाद उन्होने लिंग मेरे मुँह से निकाला और मुझे बिस्तर पर आने को कहा. मैं मुस्कुराते हुए बिस्तर पर आई और उनके सामने लेटकर अपनी टांगे फेला दी. पर उनका इरादा कुछ और ही था. उन्होने मेरी टांगे फिर बंद की और मुझे घूमकर उल्टा कर दिया" कजरी ने कहा

"मतलब तेरी....." दामिनी ने बात अधूरी छोड़ दी

"हां" कजरी समझ गयी के वो क्या कहना चाह रही थी "मैं समझ गयी के पहला नंबर मेरी नितंब का लगने वाला है और ऐसा ही हुआ. तेज ने अपने पुर लिंग पर तेल लगा लिया और थोड़ा मेरी नितंब पर. उनकी इस हरकत से मैं समझ गयी के वो पहले ही किसी औरत की नितंब मार चुके हैं"

"फिर?" खुद दामिनी भी अब गरम हो रही थी

"फिर वो आकर मेरे उपेर आकर बैठ गये और दोनो हाथों से मेरी नितंब को फेला दिया. और फिर लिंग मेरी नितंब पर दबाया और बिना रुके धीरे धीरे पूरा लिंग अंदर घुसा दिया. मैं दर्द से कराह उठी" कजरी ने कहा

"दर्द? पर तू तो पहले भी ये कर चुकी है" दामिनी ने हैरान होते पूछा

"तो क्या हुआ मालकिन" कजरी ने भी उसी अंदाज़ में पूछा "कोई योनि थोड़े ही है के पहली बार में ही दर्द हो. नितंब में लिंग घुसेगा तो दर्द तो होगा ही. चाहे पहली बार हो या बार बार."

"अच्छा फिर ?" दामिनी ने उसे आयेज बताने को कहा

"छहोटे ठाकुर भी बिस्तर पर खिलाड़ी थे. नितंब में लिंग जाते ही समझ गये की मैं आगे से क्या पिछे से भी कुँवारी नही हूँ. धीरे से मेरे कान में बोले के अच्छा तो यहाँ भी कोई हमसे पहले आके जा चुका है. मैं कहा के ठाकुर साहब ये कोई सड़क नही है जहाँ से लोग आए जाएँ तो सड़क खराब हो जाए. यहाँ तो कितने भी आकर चले जाएँ कोई फरक नही पड़ता. जगह वैसे की वैसी ही रहती है, थोड़ी देर बाद वो मेरे उपेर लेते थे और लिंग मेरे अंदर बाहर हो रहा था.

मुझे भी मज़ा आ रहा था इसलिए मैं भी पूरा साथ दे रही थी पर उल्टी लेटी होने की वजह से मैं ज़्यादा कुछ कर नही पा रही थी और ये बात ठाकुर भी समझ गये. थोड़ी देर ऐसे ही नितंब मारने के बाद उन्होने मुझे उपेर आकर लिंग नितंब में लेने को कहा. फिर वो सीधा लेट गये और मैं उनके उपेर बैठ गयी. लिंग एक बार फिर नितंब में घुस गया. फिर मैं कभी आराम से हिलती तो कभी तेज़ी से उपेर नीचे होती. कभी अपनी स्तन खुद दबाती तो कभी उनके मुँह में घुसा देती. बस ये मानिए के मैने तब तक हार नही मानी जब तक के मैं खुद भी ख़त्म गयी और ठाकुर का पानी अपनी नितंब में ना निकाल लिया. उपेर बैठकर सब मुझे करना था इसलिए मैं ख्याल रखा के कोई कमी नई रहने दूं और ठाकुर को खुश कर दूं" कजरी मुस्कुराते हुए ऐसे बोली जैसे कोई जुंग जीत कर आई हो

"शाबाश" दामिनी ने कहा "मतलब पूरी रात योनि और नितंब ली गयी तेरी?"

"कहाँ मालकिन" कजरी ने कहा "ठाकुर ने योनि की तरफ तो ध्यान ही नही दिया. पूरी रात बस मेरी नितंब में ही मारते रहे. कभी लिटाके मारी, तो कभी उपेर बैठके. कभी खड़ी करके मारी तो कभी झुकाके."

"पूरी रात?" दामिनी ने फिर हैरानी से कहा. "तूने कहा नही आगे से करने को?"

"मैं तो बस योनि में लिंग लेने का सोचती ही रही पर कहा नही क्यूंकी मैं ठाकुर को जो वो चाहें बस वो करने देना चाहती थी." कजरी बोली

"फिर?" दामिनी ने पूछा

"बबलू भी रात की ज़िद कर रहा था और मेरा भी योनि में लिंग लेने का दिल हो रहा था इसलिए मैं उसे आने से पहले इशारा कर आई थी के रात को हवेली के पिछे जो तहखाना है वहाँ आ जाए" कजरी ने कहा तो दामिनी चौंक पड़ी

"क्या? बेसमेंट में? क्यूँ?"

"मालकिन अब ठाकुर के पास से उठकर अपने कमरे की तरफ जाती तो उन्हें शक हो सकता था क्यूंकी उनके कमरे की खिड़की से मेरा कमरा साफ नज़र आता है. ये मैने पहले ही देख लिया था इसलिए मैने बबलू को कह दिया था के अब से हर रात मुझे वहीं मिला करे क्यूंकी मैं रात को सरला के कमरे में सोया करूँगी और बाहर नही आ सकूँगी"

कजरी की ये बात सुनकर दामिनी को कल रात की कहानी समझ आ गयी और ये भी समझ आ गया के बबलू के बर्ताव में कोई बदलाव क्यूँ नही था. उसे तो पता भी नही था के बेसमेंट के अंधेरे में उसने कजरी की नही दामिनी की योनि मारी थी.

"तो फिर तू गयी?" दामिनी पक्का करना चाहती थी के कजरी ने वहाँ आकर उसे ठुकते हुए देखा तो नही

"कहाँ मालकिन" कजरी हस्ते हुए बोली "नितंब में से लिंग निकलता तो जाती ना"

"और बबलू?" दामिनी ने कहा

"सुबह इशारा कर रहा था के रात को बेसमेंट में मज़ा नही आया. अब वहाँ नही करेंगे. पता नही क्या कह रहा था. मैं तो वहाँ गयी ही नही तो मज़ा कैसा. पक्का कोई सपना देखा होगा और बेवकूफ़ उसे ही सच समझ बैठा" कजरी ने कहा तो दामिनी की जान में जान आ गयी.

वो रात गुज़ारनी दामिनी के लिए जैसे मौत हो गयी. उसके जिस्म में आग लगी हुई थी. कजरी के साथ की गरम बातों ने उसकी गर्मी को और बढ़ा दिया था. बिस्तर पर पड़े पड़े वो काफ़ी देर

तक करवट बदलती रही और जब सुकून नही मिला तो उसने अपनी नाइटी को उपेर खींचा और योनि की आग को अपनी उंगलियों से ठंडी करने की बेकार कोशिश करने लगी.

तेज शाम ढले घर वापिस आ गया था और कजरी आज रात भी उसके कमरे में थी. दामिनी उस दिन हॉस्पिटल नही जा पाई थी पर फोन पर दामूकाका से बात हुई थी. ठाकुर की हालत अब भी वैसी ही थी. बिस्तर पर पड़े पड़े ठाकुर के दिमाग़ में सिर्फ़ ठाकुर का लिंग घूम रहा था. जब उंगलियों से बात नही बनी तो वो परेशान होकर उठी और तेज के कमरे के सामने पहुँची. कान लगाकर सुना तो अंदर से कजरी के आ ऊ की आवज़ें आ रही थी. दामिनी थोड़ी देर तक वहीं खड़ी सुनती रही. अंदर से कभी कजरी के "धीरे ठाकुर साहब" तो कभी "आराम से करिए ना" की आवाज़ें आ रही थी. उसकी आवाज़ सुनकर दामिनी मुस्कुरा उठी. लगता है तेज उसके लिए बिस्तर पर काफ़ी भारी पड़ रहा था.

सुबह उठी तो दामिनी का पूरा जिस्म फिर से दुख रहा था. गयी पूरी रात वो बिस्तर पर परेशान करवट बदलती रही और ढंग से सो नही पाई. दिमाग़ में कयि बार उठकर सरला के पास जाने का ख्याल आया पर फिर उसने अपना इरादा बदल दिया और सरला को सुकून से सोने दिया.

उसने आज लक्ष्मण प्रसाद से मिलने जाना था. गाओं से शहेर तक जाने में उसे कम से कम 4 घंटे लगने वाले थे तो वो सुबह सवेरे ही उठकर निकल गयी. दोपहर के तकरीबन 11 बजे वो लक्ष्मण प्रसाद के ऑफीस में बैठी थी.

लक्ष्मण प्रसाद कोई 45 साल का एक मोटा आदमी थी. सर से आधे बाल उड़ चुके थे. उसका पूरा खानदान वकील ही था और शुरू से वो ही ठाकुर का खानदानी वकील था. उससे पहले उसका बाप ये काम संभाला करता था और वकील बनने के बाद लक्ष्मण प्रसाद ने अपने बाप की जगह ले ली.

उसने दामिनी को फ़ौरन बैठाया और अपनी सेक्रेटरी को किसी को अंदर ना आने देने को कहकर दामिनी के सामने आ बैठा.

"कहिए छ्होटी ठकुराइन" उसने दामिनी से कहा

दामिनी उम्मीद कर रही थी के वो उसे नाम से बुलाएगा पर लक्ष्मण प्रसाद ने ऐसा नही किया.

"सीधे मतलब की बात पे आती हूँ" दामिनी ने कहा "मैं ठाकुर साहब की वसीयत के बारे में जानना चाहती हूँ"

"मुझे लगा ही था के आप इस बारे में ही बात करेंगी."लक्ष्मण प्रसाद मुस्कुराते हुए बोला "असल में वसीयत ठाकुर साहब की नही आपके पति की है, ठाकुर वीरभद्र सिंग की"

दामिनी ये बात पठाण के मुँह से पहले ही सुन चुकी थी"मैं जानता हूँ के आप ये बात पहले से

जानती हैं इसलिए इसमें आपके लिए हैरानी की कोई बात नही"

"आपको कैसे पता?" दामिनी ने पूछा

"वो पठाण पहले मेरे पास आया था. ज़ोर ज़बरदस्ती करके सब उगलवा गया. मैं जानता था के वो आपसे इस बारे में बात करेगा" लक्ष्मण प्रसाद ने चोर नज़र से दामिनी की और देखते हुए कहा

"आप एक खानदानी वकील हैं. और आपको पैसे हमारे घर के राज़ पोलीस को बताने के नही मिलते. और अगर आप कहें के एक पोलीस वाला आपसे ज़बरदस्ती सब उगलवा गया तो ये बात कुछ हजम नही होती लक्ष्मण प्रसाद जी" दामिनी ज़रा गुस्से में बोली

"मैं एक वकील हूँ छहोटी ठकुराइन. मेरे भी हाथ कई जगह फसे रहते हैं जहाँ हमें पोलीस की मदद लेनी पड़ती है. ऐसी ही कई बातों में मुझे उलझाके सब मालूम कर गया वो कमीना पर मैं माफी चाहता हूँ" लक्ष्मण प्रसाद ने नज़र नीची करते हुए कहा

"खैर" दामिनी भी जानती थी के अब इस बात पर बहेस करने से कोई फ़ायदा नही "मतलब की बात पर आते हैं. ये सारी जायदाद मेरी कैसे है?"

"देखिए बात साफ है" लक्ष्मण प्रसाद कुछ काग़ज़ खोलते हुए बोला. एक काग़ज़ का उसने दामिनी की तरफ सरकाया "ये आपके ससुर ठाकुर इंद्रदेव सिंग के पिता की वसीयत है जिसमें उन्होने अपना सब कुछ आपके पति के नाम कर दिया था. तब ही जब वीरभद्र सिंग छहोटे थे."

"पर पठाण ने तो कुछ और ही कहा" दामिनी थोड़ी हैरान हुई "वो तो कह रहा था वसीयत शकुंतला देवी की थी"

"यहाँ आकर बात थोड़ी टेढ़ी हो जाती है" लक्ष्मण प्रसाद ने दूसरा काग़ज़ आगे सरकाया "ये पहली वसीयत है जिसमें सब कुछ ठाकुर इंद्रदेव सिंग के भाई ठाकुर संग्राम सिंग के नाम किया गया था.

फिर लक्ष्मण प्रसाद ने एक दोसरा काग़ज़ आगे सरकाया"जब ठाकुर संग्राम सिंग और उनकी पत्नी की कार आक्सिडेंट में मौत हो गयी और पिछे उनका एकलौता बेटा राजवर्धन सिंग ही रह गया तो ये दूसरी वसीयत बनाई गयी जिसमें सब कुछ आपकी सास शकुंतला देवी के नाम किया गया था."

फिर एक चौथा काग़ज़ आगे किया"और ये आपके पति की वसीयत है जो उन्होने मरने से कुछ दिन पहले बनाई थी. इसमें सब कुछ आपके नाम किया गया है."

दामिनी परेशान सी अपने सामने रखे पेपर्स को देखने लगी

"तो अब देखा जाए तो पहले ये जायदाद ठाकुर इंद्रदेव सिंग के भाई के पास गयी, फिर उनकी पत्नी के पास, फिर उनके बड़े बेटे के पास और अब उनकी बहू के पास. उनके पास तो कभी आई ही नही."दामिनी थोड़ी देर खामोश रही

"ये मुझे तब क्यूँ ना बताया गया जब मेरे पति की मौत हुई थी?" उसने लक्ष्मण प्रसाद से पूछा

"आप शायद अपने ससुर को नही जानती. इस इलाक़े में राज था उनका जो कुछ हद तक अब भी है. इस इलाक़े के नेता और मिनिस्टर्स भी उनके आगे मुँह नही खोलते और आपके देवर तेज के तो नाम से लोगों की हवा निकल जाती थी. अपनी जान मुझे भी प्यारी थी. मेरी क्या मज़ाल जो मैं उनके हुकुम खिलाफ जाता" लक्ष्मण प्रसाद दामिनी की आँखों में देखते हुए बोला

"आपको ठाकुर साहब ने मना किया था?" दामिनी ने पूछा तो लक्ष्मण प्रसाद ने हां में सर हिला दिया

"इस वसीयत के बारे में किस किसको पता है?" दामिनी ने काग़ज़ उठाते हुए कहा

"अब तो सबको पता है पर आपके पति के मरने के बाद सिर्फ़ ठाकुर साहब को पता था. आपके पति की मौत के बाद जब मैं आपसे मिलने हवेली पहुँचा तो मुझे आपसे मिलने नही दिया गया. आपके पति के मरने के बाद ही इस वसीयत का पता ठाकुर साहब को चला था. उससे पहले सिर्फ़ मैं जानता था के जायदाद आपके नाम हो चुकी है" लक्ष्मण प्रसाद ने जवाब दिया.

"एक बात समझ नही आई" दामिनी ने लक्ष्मण प्रसाद की और देखते हुए कहा "ठाकुर संग्राम सिंग के नाम से जायदाद मेरी सास के नाम पर इसलिए गयी क्यूंकी वो मारे गये. पर मेरी सास के नाम से जायदाद हटाकर मेरी पति के नाम क्यूँ की गयी जो की उस वक़्त सिर्फ़ मुश्किल से 10 साल के थे? और दूसरी बात ये के क्यूँ कभी जायदाद ठाकुर के नाम नही हुई जो की अपने पिता की बड़े बेटे थे?"

लक्ष्मण प्रसाद की पास इन सवालों का कोई जवाब नही था"ये बात तो शायद सिर्फ़ ठाकुर इंद्रदेव सिंग के पिता भी बता सकते थे" लक्ष्मण प्रसाद बोला "ठाकुर के नाम जायदाद ना करने की वजह शायद उनका गुस्सा हो सकता था जो हमेशा से ही बड़ा तेज़ था. सिर्फ़ 15 साल की उमर में उन्होने घर के नौकर को गोली मार दी थी जबकि उनके पिता इसके बिल्कुल उल्टा थे. वो एक शांत आदमी थे जो हर किसी से प्यार से बात करते थे. शायद उन्हें ठाकुर इंद्रदेव सिंग के गुस्से का डर था इसलिए उनके नाम कुछ नही किया. पर आपकी सास के नाम से जायदाद हटाने की वजह मैं खुद भी नही जानता."

"वसीयत आपने ही बदली थी?" दामिनी ने पूछा तो लक्ष्मण प्रसाद हस्ने लगा

"मैं तो उस कॉलेज में ही था शायद. वसीयत मेरे पिताजी ने बदली थी"

"और वो कहाँ हैं?" दामिनी ने पूछा तो लक्ष्मण प्रसाद ने अपनी एक अंगुली आसमान की तरफ उठा दी. दामिनी समझ गयी के लक्ष्मण प्रसाद का बाप मार चुका था.

"और फिर मेरे नाम? वो वसीयत तो आपने बदली होगी?" दामिनी के इस सवाल पर लक्ष्मण प्रसाद ने हां में सर हिलाया

"मरने से कुछ दिन पहले ठाकुर वीरभद्र मेरे पास आए थे. काफ़ी परेशान लग रहे थे. मैने वसीयत बदलने की वजह पुछि तो हॅस्कर कहने लगे के भाई आदमी का सब कुछ उसकी बीवी का ही तो होता है"

"तो अगर मैं कोर्ट में पहुँच जाऊं के ये सब मेरा है और बेचना शुरू कर दूँ तो मुझे कोई नही रोक सकता?" दामिनी ने पूछा

"इतना आसान नही है" लक्ष्मण प्रसाद ने कहा "एक ये बात के वसीयत बार बार बदली गयी आपके खिलाफ जा सकती है. कोई भी आपके पति की वसीयत को कोर्ट में चॅलेंज कर सकता है और जब तक कोर्ट का फ़ैसला ना हो जाए, तब तक कुछ भी किसी को नही मिलेगा"

"कौन चॅलेंज कर सकता है?" दामिनी बोली

"कोई भी" लक्ष्मण प्रसाद ने हाथ फेलाते हुए जवाब दिया "ठाकुर साहब, आपके देवर ठाकुर तेजप्रताप, सबसे छहोटे देवर शमशेर, आपकी ननद श्यामला और सबसे बड़ी परेशानी खड़ी करेगा ठाकुर साहब का भतीजा राजवर्धन सिंग"

"राजवर्धन सिंग?" दामिनी फिर से हैरान हुई

"देखिए राजवर्धन सिंग ने ठाकुर साहब की जायदाद आधी अपने नाम इस लिए कर ली क्यूंकी ठाकुर साहब के नाम पर कभी कुछ नही था. सब कुछ आपके पति के नाम पर था और ठाकुर साहब ने मुझे आपके पति की वसीयत का ज़िक्र करने से मना किया था. मैने नयी वसीयत के बारे में मुँह नही खोला और इस हिसाब से सब कुछ मौत के बाद भी आपके पति के नाम पर था. अब आपके पति को अपने कज़िन राजवर्धन सिंग पर इतना भरोसा था के उन्होने उसे पोवेर ऑफ अटर्नी दे रखी थी जिसका फ़ायदा राजवर्धन सिंग ने उनके मरने के बाद उठाया और धीरे धीरे प्रॉपर्टीस अपने नाम पर करता रहा.

पेपर्स में उसने ये लिख दिया के असल मलिक अब ज़िंदा नही है और बिज़्नेस के भले के लिए ये फ़ैसला लिया जाना ज़रूरी है. अब अगर आप कोर्ट पहुँच जाती हैं ये कहते हुए के सब कुछ आपका है तो जो कुछ राजवर्धन सिंग ने अपने नाम पर किया था वो सब भी चॅलेंज हो

जाएगा. क्यूंकी फिर ये बात उठ जाएगी के पति के मरते ही सब कुछ आपका हो गया था तो आपके पति की दी हुई पवर ऑफ अटर्नी भी बेकार हो जाती है. और उसका फ़ायदा उठाकर आपके पति के मरने के बाद उसने जो भी नये पेपर्स बनाए थे वो सब भी बेकार हो जाएँगे. इस हिसाब से सब कुछ फिर आपकी झोली में आ गिरेगा और राजवर्धन सिंग सड़क पर आ जाएगा"

लक्ष्मण प्रसाद से थोड़ी देर और बात करके दामिनी वापिस हवेली की और चल पड़ी. पठाण ने जो कुछ कहा था उस बात पर लक्ष्मण प्रसाद ने सच्चाई की मोहर लगा दी थी. दामिनी की आँखो के आगे दुनिया जैसे घूम रही थी. उसे समझ नही आ रहा था के किस्पर भरोसा करे और किस्पर नही. हर कोई उसे एक अजनबी लग रहा था. पिच्छले सवालों के जवाब मिले नही थे के नये कुछ और उठ खड़े हुए.

क्यूँ ठाकुर ने उस तक लक्ष्मण प्रसाद को पहुँचने नही दिया. क्यूँ उससे ये बात च्छुपाई गयी? शायद पहले ना बताने की वजह उसका चुप चुप रहना था पर एक बार जब वो ठाकुर के साथ सो चुकी थी तो तब ठाकुर ने उसको कुछ क्यूँ नही कहा? दूसरा उसे सब कुछ अपनी सास के नाम से हटाकर उसके पति के नाम पर कर देने की बात बहुत अजीब लगी? और वीरभद्र मरने से पहले इतने परेशान क्यूँ थे? क्या उन्हें एहसास हो गया था के उन्हें नुकसान पहुँचाया जा सकता है और अगर हां तो उन्होने दामिनी से इस बात का ज़िक्र क्यूँ नही किया?

अब तक ये बात दामिनी के सामने साफ हो चुकी थी की उसकी पति की मौत की वजह ये सारी जायदाद ही थी. पर सवाल ये था के मौत का ज़िम्मेदार कौन था? उसके सामने सबके चेहरे घूमने लगे और उसे हर कोई एक हत्यारा नज़र आने लगा.

"राजवर्धन सिंग ऐसा कर सकता था. सबसे ज़्यादा वजह उसी के पास थी क्यूंकी वो ठाकुर के खानदान से चिढ़ता था. पर तेज भी तो हो सकता है. अपनी अययाशी के लिए उसे पैसा चाहिए जो बहुत जल्दी मिलना बंद हो जाता क्यूंकी सारी जायदाद वीरभद्र के पास थी. और सबसे छोटा भाई शमशेर. वो भी तो उसके पति की मौत के वक़्त यहीं था. चुप चुप रहता है पर है बहुत तेज़ और इस बात का सबूत थी उसके कमरे से मिली वो ब्रा. क्या ठाकुर साहब खुद? हां क्यूँ नही. ये जायदाद बड़ा होने के नाते उन्हें मिलनी चाहिए थी पर मिली नही. कभी नही मिली.

यहाँ से वहाँ होती रही पर उनके नाम नही हुई. और फिर लक्ष्मण प्रसाद को भी तो उन्होने मुँह खोलने से मना किया था. बिल्कुल कर सकते हैं वो ऐसा. शकुंतला देवी? ये सारी जायदाद अचानक ही उनके नाम से हटा दी गयी थी.हाथ आई इतनी सारी दौलत निकल जाए तो क्या बेटा और कहाँ का बेटा. हो सकता है उन्होने किया हो और वीरभद्र मरने से पहले उन्हें ही तो छोड़ने मंदिर गये थे. श्यामला? लड़की थी पर ऐसा करने की हिम्मत बिल्कुल थी उसमें. उसका किसी से प्यार था और ये बात ठाकुर बर्दाश्त ना करते. पर अगर सारी दौलत उसकी हो जाती तो कोई क्या कर सकता था"

श्यामला के प्रेमी के बारे में सोचते ही दामिनी को ध्यान आया के वो अब जानती है के उसका

प्रेमी कौन था. उसका अपना छोटा भाई मनीष जिसने उससे हमेशा ये राज़ च्छुपाकर रखा. पर क्यूँ? उसको भला क्या ऐतराज़ होता अगर मनीष श्यामला से शादी करना चाहता. दामिनी अपने ख्यालों में इतना खोई हुई थी के कई बार आक्सिडेंट होते होते बचा.

भाग - 17

शाम के करीब 4 बजे वो हवेली वापिस पहुँची और हवेली में कदम रखते ही चौंक पड़ी. बड़े कमरे में खड़ा था उसका छोटा भाई मनीष.

"वो आए हैं महफ़िल में चाँदनी लेकर, के रोशनी में नहाने की रात आई है" दामिनी को आता देख मनीष खड़ा हुआ

"कब आया मनीष?" एक पल के लिए अपने भाई को देखकर दामिनी जैसे सब कुछ भूल गयी

"मैं तो सुबह ही आ गया था दीदी" मनीष बहेन के गले लग गया "पता चला के आप सुबह से कहीं गयी हुई हैं"

"हां कुछ काम था" दामिनी भाई के सर पर हाथ फेरते हुए बोली "आ बैठ ना"

"ठाकुर साहब के बारे में पता चला" तेज ने कहा "बहुत अफ़सोस हुआ. मैं आते हुए हॉस्पिटल होता हुआ आया था. अभी भी बेहोश हैं"

"हां जानती हूँ" दामिनी साँस छोड़ते हुए बोली

मनीष करीब 30 साल का एक बहुत खूबसूरत आदमी था. उसको भगवान ने ऐसा बनाया था के लड़कियाँ देखकर दिल थाम लें और लड़के जल जाए. लंबा चौड़ा कद, गोरा रंग, टन्दुस्त शरीर और जब बोलता था तो लगता था के जैसे फूल ख़त्म रहे हों. दामिनी काफ़ी देर तक मनीष के साथ वहीं बैठी बात करती रही और पता ही नही चला के कब रात के 9 बज गये. वक़्त का एहसास तब हुआ जब तेज हवेली में दाखिल हुआ. मनीष को सामने बैठा देख वो एक पल के लिए रुका और फिर हाथ आगे करता मनीष की तरफ बढ़ा.

"कैसे हैं ठाकुर मनीष?" वो हमेशा मनीष को उसके पूरे नाम से ही बुलाता था

"मैं ठीक हूँ बड़े भाय्या" मनीष ने भी आगे बढ़कर हाथ आगे मिलाया

"आज इस तरफ कैसे आना हुआ?" तेज ने पूछा तो मनीष ने मुस्कुरा के कंधे झटकाए

"ऐसे ही आप लोगों की याद आई तो मिलने चला आया"

खाने की टेबल पर तीनो साथ थे. दामिनी ने ध्यान दिया के सरला की नज़र मनीष पर कुछ ज़्यादा ही थी. वो उसका ख़ास तौर पर ध्यान रख रही थी. बार बार आकर उससे पुछित के कुछ चाहिए तो नही. मनीष को देख कर मुस्कुराती. दामिनी भी दिल ही दिल में उसकी हरकत देख कर मुस्कुरा उठी. ये पहली बार नही था के उसने अपने भाई के आस पास लड़कियों की पागल होते हुए देखा था. उसके भाई के पिछे पागल होने वाली एक तो उसकी अपनी ननद ही थी.

मनीष को उसने ग्राउंड फ्लोर पर ही कमरे दे दिया. जब वो और तेज अपने कमरे में चले गये तो वो कजरी और सरला को किचन साफ करने का कहकर अपने कमरे में पहुँची. वो तेज से श्यामला के बारे में और आज हुई लक्ष्मण प्रसाद से मुलाक़ात के बारे में बात करना चाह रही थी इसलिए एक नाइटी पहेनकर तेज के कमरे में पहुँची.

तेज के कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था. वो अंदर दाखिल हुई. एक नज़र केमर में दौड़ाई तो तेज कहीं नज़र नही आया. दामिनी ने उसे बुलाने के लिए आवाज़ देनी चाही ही थी के अचानक उसके पेर हवा में उठ गये. एक हाथ पिछे से उसकी कमर पर होता हुआ सीधा नाइटी के उपेर से उसकी योनि पर आया और दूसरा उसकी एक छाती पर और उसे हवा में थोडा सा उपेर उठा दिया गया. अपनी कमर पर उसे किसी की छाती महसूस हुई और नीचे से एक लिंग उसकी नितंब पर आ दबा.

"आज इतनी देर कहाँ लगा दी थी?" पीछे से तेज की आवाज़ आई

ये सब एक पल में हुआ. दामिनी को कुछ कहने या करने का मौका ही नही मिला. और उसके अगले ही पल तेज को एहसास हुआ के उसने कजरी को नही बल्कि दामिनी को पकड़ रखा है. उसके हाथ दामिनी के जिस्म से फ़ौरन हट गये जैसे दामिनी में अचानक से करेंट दौड़ गया हो. वो जल्दी से 2 कदम पिछे को हुआ और परेशान नज़र से दामिनी को देखने लगा.

"माफ़ कीजिएगा भाभी" उसे समझ नही आ रहा था के क्या कहे "वो मुझे लगा के..... के....."

उसे समझ नही आया के कैसे दामिनी से कहे के वो घर की नौकरानी को ठोक रहा था.

दोनो के लिए वो सिचुयेशन इतनी अजीब हो गयी के दामिनी चाह कर भी कुछ कह ना सकी. वो तेज से कुछ बात करने आई थी पर उस वक़्त उसने कुछ ना कहना बेहतर समझा और चुपचाप कमरे से निकल गयी.

अपने कमरे में पहुँच कर वो बिस्तर पर गिर पड़ी. ये दूसरी बार था के तेज ने उसे इस तरह से पकड़ा था. एक बार नशे में और दूसरी बार अंजाने में. उस्नी दामिनी की छाती को पकड़कर इतनी ज़ोर से दबाया था के दामिनी को अब तक दर्द हो रहा था. उसने अपनी छाती को सहलाया और तभी उसे तेज का वो चेहरा याद आया जब वो उसे खड़ा देख रहा था. और फिर

जिस तरह से वो ये नही कह पाया था के उसने कजरी का सोचकर दामिनी को पकड़ा था वो सोचकर दामिनी की हल्की सी हसी छूट पड़ी. उसे क्या पता था के कजरी उससे ठुकवा सिर्फ़ इसलिए रही है क्यूंकी दामिनी ने ऐसा कहा था.

आज की रात भी कोई अलग रात ना थी. आज की रात भी दामिनी बिस्तर पर पड़ी अपने जिस्म की आग में जल रही थी. उसे समझ नही आ रहा था के क्या करे. उसका जिस्म वासना से तप रहा था जैसे बुखार हो गया हो. थोड़ी देर के लिए उसने अपने हाथ का सहारा लेना चाहा पर बात बनी नही. उसका गला सूखने लगा था. उसने उठकर अपने कमरे में रखे जग की तरफ देखा पर उसमें पानी नही था. बिस्तर से उठकर उसने अपने कपड़े ठीक किए और नीचे उतरकर किचन की तरफ बढ़ी.

किचन में खड़ी वो पानी पी ही रही थी के उसे किसी के कदमो की आवाज़ सुनाई दी. रात का सन्नाटा हर तरफ फेल चुका था और उस खामोशी में किसी के चलने की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी. कोई सीढ़ियाँ चढ़ रहा था. दामिनी को हैरत हुई के इस वक़्त कौन हो सकता है. उसने किचन से बाहर निकालकर देखा तो मनीष सीढ़ियाँ चढ़कर श्यामला के कमरे की तरफ जा रहा था. उसके चलने का अंदाज़ ही चोरों जैसा था जैस वो घर में चुपके से चोरी करने के लिए घुसा हो. श्यामला के कमरे तक पहुँचकर उसने इधर उधर देखा और फिर धीरे से दरवाज़ा खोलने की कोशिश की. दरवाज़ा लॉक्ड था. दामिनी को सबसे ज़्यादा हैरत उस वक़्त हुई जब मनीष ने अपनी जेब से एक चाभी निकाली और श्यामला के कमरे का दरवाज़ा खोलकर अंदर दाखिल हो गया.

दामिनी एक पल के लिए वही खड़ी रही. वो मनीष से अभी श्यामला के बारे में बात नही करना चाहती थी. उसका ख्याल था के सही वक़्त देखकर मनीष के सामने ये बात उठाएगी पर मनीष को श्यामला के कमरे में यूँ घुसता देख दामिनी से रहा नही गया.

वो हल्के कदमों से सीढ़ियाँ चढ़कर पहले अपने कमरे में पहुँची. उसने अलमारी से श्यामला की डाइयरी निकाली और फिर श्यामला के कमरे के सामने आई मनीष ने अपने पीछे श्यामला का कमरा बंद अंदर से कर लिया था पर दामिनी के पास हवेली के हर कमरे की चाबी थी. उसने अपनी चाबी से रूम का लॉक खोला, हॅंडल घुमाया और एक झटके में पूरा दरवाज़ा खोल दिया.

सामने इनडर श्यामला की अलमारी के सामने खड़ा उसके कपड़ो में कुछ ढूँढ रहा था. दरवाज़ा यूँ खोल दिए जाने से वो पलटा और सामने दामिनी को देखकर उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गयी. चेहरा यूँ सफेद हो गया जैसे काटो तो खून नही. हाथ में पकड़े श्यामला के कुछ कपड़े उसके हाथ से छूट कर ज़मीन पर गिर पड़े.

"क्या ढूँढ रहे हो मनीष?" दामीनी ने पूछा

मनीष से जवाब देते ना बना

"क्या ढूँढ रहे थे?" दामिनी ने अपने पिछे दरवाज़ा बंद कर लिया और थोड़ी ऊँची आवाज़ में पूछा

"जी दीदी ... वो .... मैं..... "मनीष की ज़ुबान लड़खड़ा गयी

दामिनी ने अपने हाथ में पकड़ी श्यामला की डाइयरी आगे की

"ये तो नही ढूँढ रहे थे?"

दामिनी के हाथ में डाइयरी देखकर मनीष समझ गया के उसका राज़ खुल चुका है. वो नज़रें नीची करके ज़मीन की और देखने लगा

"काब्से चल रहा था ये सब?" दामिनी ने वहीं खड़े खड़े पूछा

जब मनीष ने जवाब ना दिया तो उसने अपना सवाल फिर दोहराया.

"जी आपकी शादी होने से तकरीबन एक साल पहले से....." मनीष को इस बार जवाब देना पड़ा.

इस बार हैरान होने की बारी दामिनी की थी

"तुम मेरी शादी होने से पहले से श्यामला को जानते थे?"

थोड़ी देर बाद वो दोनो दामिनी के कमरे में बैठे थे. दामिनी को लगा के यूँ श्यामला के कमरे में खड़े होकर बात करना ठीक नही होगा. कोई भी जाग सकता है. वो मनीष को अपने आठ अपने कमरे में ले आई.

"मुझे सब कुछ मालूम करना है, सब कुछ " दामिनी ने पहले श्यामला की डाइयरी बिस्तर पर मनीष के सामने फेंकी और फिर वो काग़ज़ जिसपर मनीष ने एक शेर लिखा था "और तुम शायरी काब्से करने लगे? और वो भी इतनी अच्छी उर्दू में?"

"मेरी नही हैं" मनीष सर झुकाए बोला " श्यामला को शायरी बहुत पसंद थी इसलिए मैं कहीं से पढ़कर उसे ये सब भेजता था. आप जानती हैं शायरी करना मेरे बस की बात नही"

"कैसे शुरू हुआ ये सब?" दामिनी अपने भाई के सामने बैठते हुए बोली

"मेरे एक दोस्त की शादी में मिली थी मुझे श्यामला. वो लड़की वालों की तरफ से आई थी. वहाँ हमारी जान पहचान हो गयी. घर आकर हम अक्सर फोन पर बात किया करते थे और ये

कब ये दोस्ती प्यार में बदली मुझे पता ही नही चला" इनडर किसी तोते की तरह कहानी सुना रहा था.

"इरादा क्या था?" दामिनी का गुस्सा अब थोड़ा ठंडा हो चला था

"शादी करना चाहता था मैं उससे." दामिनी को मनीष की ये बात सुनकर बड़ा अजीब लगा. मनीष शकल सूरत से ऐसा था के वो जिस लड़की की तरफ देख लेता वो लड़की उसे अपनी खुश नसीबी समझती जबकि श्यामला एक बेहद मामूली सी शकल सूरत वाली लड़की थी.

"फिर इसे किस्मत कहिए या कुछ और के आपकी शादी भी श्यामला के घर में ही हुई. उस वक़्त हम लोग बहुत खुश थे. श्यामला खुद बहुत खुश थी. मैने कई बार चाहा के वो आपसे बात करे और हमारे बारे में बताए पर वो हमेशा आपके सामने इस बारे में बात करने से शरमाती थी. कहती थी के भाभी पता नही क्या सोचेंगी." मनीष ने आगे कहा

उसकी ये बात सुनकर दामिनी को जैसे अपने एक सवाल का जवाब मिल गया. तो ये वजह थी के श्यामला उसके सामने आने से कतरा जाती थी. उस वक़्त दामिनी बहुत ज़्यादा पूजा पाठ में रहा करती थी तो श्यामला का ये सोचना के कहीं वो उसके और अपने भाई के रिश्ते के खिलाफ ना हो जाए जायज़ था. उसकी जगह कोई भी लड़की होती तो डरती. ख़ास तौर से जब बाप और भाई ठाकुर इंद्रदेव सिंग और तेज जैसे हों.

"हम लोग शहेर में ही मिला करते थे. वो अपने ड्राइवर और बॉडीगार्ड को हवेली में ही छोड़कर मुझसे मिलने शहेर आ जाया करती थी." मनीष अब बिना पुच्छे ही सब बता रहा था

उसकी इस बात ने दामिनी के दूसरे सवाल का जवाब दे दिया.तो वो मनीष ही था जिससे मिलने श्यामला जाया करती थी, अकेले. तभी उसे कजरी की कही वो बात याद आई जब उसके मर्द ने खेतों में बने ट्यूबिवेल वेल कमरे में श्यामला को ठुकवाते हुए देखा था.

"जब शहेर में मिलते थे तो यहाँ खेतों में मिलने की क्या ज़रूरत थी? डर नही लगा तुम दोनो को?" दामिनी ने पूछा

"खेतों में?" मनीष ने हैरानी से पूछा "आप मज़ाक कर रही हैं? यहाँ मिलना तो खुद मौत को दावत देने जैसा था"

"क्या?" दामिनी कुछ ऐसे बोली के उसकी हैरानी उसकी आवाज़ में छलक उठी "तुम उसे ट्यूबिवेल वाले कमरे में नही मिलते थे?"

"ट्यूबिवेल?" मनीष ने पूछा "कौन सा ट्यूबिवेल?"

दामिनी समझ गयी के उसे इस बारे में कुछ पता नही था और वो उसकी आँखें देखकर बता

सकती थी के वो सच बोल रहा है

"नही कुछ नही" दामिनी बात टालने के अंदाज़ में बोली "वो उसकी डाइयरी पढ़कर मुझे लगा के तुम लोग यहीं खेतों में मिला करते थे"

"नही यहाँ कहीं आस पास तो वो खुद ही नही मिलना चाहती थी. मैने उसे कई बार कहा के हम घर पर बात कर लेते हैं पर वो जाने क्यूँ हर बार मना कर देती थी. और फिर वो धीरे धीरे बदलने लगी. मुझसे उसकी बात भी काफ़ी कम हो गयी. मैने कई बार उससे पुच्छने की कोशिश की पर उसने हर बार टाल दिया. और फिर एक दिन उसका फोन आया के वो मुझसे शादी नही करना चाहती क्यूंकी वो मेरे लायक नही है. ये कहकर उसने फोन रख दिया"

"कबकि बात है ये?" दामिनी ने पूछा

"ठीक उसी दिन जब जीजाजी का खून हुआ था. उसका फोन रखने के थोड़ी देर बाद ही हमें हवेली के नौकर का फोन आया था और उसने मुझे बताया के बड़े भाई साहब का खून हो गया था." मनीष ने कहा

दामिनी की धड़कन तेज़ होने लगी पर उसने अपने चेहरे पर कुछ ज़ाहिर ना होने दिया

"फिर कभी बात नही हुई?" उसने मनीष से पूछा

"मैने कई बार उसे फोन करने की कोशिश की पर वो हर बार मेरी आवाज़ सुनकर फोन काट देती थी. और फिर एक दिन मुझे पता चला के वो विदेश चली गयी और बस हमारी कहानी ख़तम हो गयी" मनीष सर झुकाए बोला.कमरे में थोड़ी देर खामोशी रही

"तो तुम अब उसके कमरे में क्या ढूँढ रहे थे?" दामिनी ने खड़े होते हुए पूछा

"ये" मनीष ने उस काग़ज़ की तरफ इशारा किया जो दामिनी को श्यामला की डाइयरी से मिला था "और ऐसे कई और पेपर्स. मुझे डर था के अगर ये आप के हाथ कभी लग गया तो आप मेरी हॅंडराइटिंग पहचान जाएँगी.

भाग - 18

अगले दिन सुबह दामिनी दामिनी मनीष के साथ हॉस्पिटल पहुँची. डॉक्टर ने बताया के ठाकुर की हालत में अब भी कोई सुधार नही आया था. दामूकाका अब भी ठाकुर के साथ हॉस्पिटल में ही था.थोड़ी देर वहीं रुक कर दामिनी हवेली वापिस आ गयी.

सुबह के 10 बस चुके थे. तेज दामिनी को बड़े कमरे में बैठा मिला."तेज हमें आपसे कुछ बात करनी है. आप हमारे कमरे में आ जाइए" दामिनी ने तेज से कहा और उसके जवाब का इंतेज़ार किए बिना ही अपने कमरे में चली आई

थोड़ी देर बाद ही तेज दामिनी के कमरे में दाखिल हुआ"दरवाज़ा बंद कर दीजिए" दामिनी ने तेज से कहा

दरवाज़ा बंद कर देते ही तेज ने अपने दोनो हाथ जोड़ दिए"हमें माफ़ कर दीजिए भाभी. बहुत बड़ा पाप हो गया हमसे कल रात. पर वो सब अंजाने में हुआ"

दामिनी ने इशारे से तेज को बैठने को कहा."कोई बात नही. हमने उस बारे में बात करने के लिए नही बुलाया है आपको. हमें कुछ और ज़रूरी बात करनी है" कहते हुए दामिनी अपनी टेबल तक गयी और ड्रॉयर से वीरभद्र सिंग की वसीयत निकाली

तेज हैरानी से उसकी और देख रहा था. उसे उम्मीद थी के दामिनी उससे कल रात के बारे में सवाल जवाब करेगी पर वो तो उस बारे में कोई बात ही नही करना चाह रही थी. जैसे कुछ हुआ ही ना हो

"आपने श्यामला से आखरी बार बात कब की थी?" दामिनी तेज की और देखते हुए बोली

"उसके विदेश जाने से पहले" तेज ने सोचते हुए कहा।दामिनी समझ गयी के तेज को श्यामला के बारे में कोई जानकारी नही है

"और शमशेर से?" दामिनी ने पूछा तो तेज सोच में पड़ गया

"शायद जब वो आखरी बार हवेली आया था तब."

"फोन पर बात नही हुई आपकी कभी?" दामिनी ने पूछा तो तेज ने इनकार में सर हिला दिया. दामिनी को इसी जवाब की उम्मीद थी. तेज को अययाशी से टाइम मिलता तो अपने भाई और बहेन के बारे में सोचता

"ये श्यामला का पासपोर्ट है" दामिनी ने अपने हाथ में पकड़ा पासपोर्ट तेज को थमा दिया "अगर ये यहाँ है तो श्यामला विदेश में कैसी हो सकती है?"

तेज हैरानी से पासपोर्ट की तरफ देखने लगा"मतलब? तो कहाँ है श्यामला?" उसने दामिनी से पूछा

"हमें लगा के आपको पता होगा" दामिनी ने जवाब दिया

"ये कहाँ मिला आपको?" तेज ने फिर सवाल किया

"वो ज़रूरी नही है" दामिनी ने उसे बेसमेंट में रखे बॉक्स के बारे में बताना ज़रूरी नही समझा "ज़रूरी ये है के ये यहाँ हवेली में मिला, जबकि हिन्दुस्तान में ही नही मिलना चाहिए था"

तेज खामोशी से बैठा अपनी सोच में खोया हुआ था।"एक बात और है" दामिनी ने कहा और वीरभद्र की वसीयत तेज के हाथ में थमा दी और चुप रही. तेज खुद ही वसीयत खोलकर पढ़ने लगा.जैसे जैसे वो पेजस पलट रहा था, वैसे वैसे उसके चेहरे के भाव भी बदल रहे थे. जब वो पूरी वसीयत पढ़ चुका तो वो थोड़ी देर तक ज़मीन की तरफ देखता रहा और फिर नज़र उठाकर दामिनी की तरफ देखा

"कुछ ग़लत मत सोचना तेज" इससे पहले के वो कुछ कहता दामिनी खुद बोल उठी "मैं ऐसा कुछ नही चाहती. मैं ये वसीयत खुद बदलने वाली हूँ"

तेज अब भी खामोशी से उसे देखता रहा।"मुझे ये दौलत नही चाहिए तेज. मैं सिर्फ़ अपने घर को, इस हवेली को एक घर की तरह देखना चाहती हूँ. तुम चाहो तो मैं अभी फोन करके वकील को बुला लेती हूँ. ये दौलत सारी मुझे मिल जाए, मैं नही चाहती के ऐसा हो"

"ऐसा मैं होने भी नही दूँगा" तेज ने कहा और इससे पहले के दामिनी कुछ कह पाती वो उठकर कमरे से बाहर चला गया

दामिनी जो करना चाहती थी वो हो गया. उसे देखना था के क्या तेज को दौलत को भूख है और वो उसने देख लिया था. अगर तेज खामोशी से बैठा रहता तो इस बात का सवाल ही नही होता था के इस दौलत के लिए उसने अपने भाई को मारा हो पर यहाँ तो उल्टा ही हुआ. दामिनी ने उसे अभी बताया था के उसकी बहेन 10 साल से गायब है और उसकी फिकर करने के बजाय वो हाथ से निकलती दौलत के पिछे चिल्लाता हुआ कमरे से चला गया था. जिसको अपनी बहेन की कोई फिकर नही, वो दौलत के लिए अपने भाई का खून क्यूँ नही कर सकता. बिल्कुल कर सकता है.

थोड़ी देर बाद दामिनी भी नीचे बड़े कमरे में आई. तेज का कहीं आता पता नही था. दामिनी ने खिड़की से बाहर देखा तो उसकी कार भी बाहर नही थी.

सामने रखे फोन को उठाकर दामिनी लक्ष्मण प्रसाद का नंबर मिलाने लगी."कहिए दामिनी जी" दूसरी तरफ से लक्ष्मण प्रसाद की आवाज़ आई

"मैं चाहती हूँ के कल आप हवेली आएँ" दामिनी ने लक्ष्मण प्रसाद से कहा. लक्ष्मण प्रसाद ने हां कर दी तो उसने फोन रख दिया और मनीष के कमरे में आई

मनीष अपने कमरे में नही था. दामिनी किचन में पहुँची तो वहाँ कजरी दोपहर का खाना बनाने में लगी हुई थी. बबलू उसके साथ खड़ा उसकी मदद कर रहा था

"मनीष को देखा कहीं?" दामिनी ने कजरी से पूछा

"अभी थोड़ी देर पहले तो बड़े कमरे में ही थे" कजरी ने कहा

दामिनी ने हवेली के बाहर कॉपाउंड में आकर देखा तो मनीष की कार वहीं खड़ी हुई थी. वो कॉपाउंड में इधर उधर देखने लगी पर मनीष नज़र नही आया. उसे ढूँढती हुई वो हवेली के पीछे की तरफ आई तो देखा के बेसमेंट का दरवाज़ा खुला हुआ था

"ये किसने खुला छोड़ दिया?" सोचते हुए दामिनी दरवाज़े के पास पहुँची. उसने दरवाज़ा बंद करने की सोची ही थी के बेसमेंट के अंदर से एक आवाज़ सुनाई दी. गौर से सुना तो वो आवाज़ सरला की थी.

"ये यहाँ क्या कर रही है?" सोचते हुए दामिनी ने पहली सीधी पर कदम रखा ही था के उसके कदम फिर से रुक गये

"आआअहह क्यार कर रहे हैं आप" ये आवाज़ सरला की थी

दामिनी ने अपने कदम धीरे धीरे सीढ़ियों पर रखे और किसी चोर की तरह उतरती हुई नीचे पहुचि. सीढ़ियों पर खड़े खड़े ही उसने धीरे से गर्दन घूमकर बेसमेंट में झाँका तो उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गयी.

सरला एक टेबल पर बैठी हुई थी. ये वही टेबल थी जिसपर झुका कर बबलू ने उसे ठोका था. वो टेबल के किनारे पर बैठी हुई थी और हाथों के सहारे से पिछे को झुकी हुई थी. उसकी सलवार उतरी हुई एक तरफ पड़ी थी और दोनो टांगे सामने नीचे ज़मीन पर बैठे मनीष के कंधो पर थी. मनीष ने उसकी दोनो टाँगो को पूरी तरह फेला रखा था और बीच में बैठा सरला की योनि चाट रहा था.

"आआआह्ह्ह्ह्ह मालिक" सरला कराह रही थी.

दामिनी फ़ौरन फिर से दीवार की ओट में हो गयी. उसे यकीन नही हो रहा था. वो हमेशा अपने

भाई को बहुत सीधा सा समझती थी और यही वजह थी के श्यामला के साथ उसके रिश्ते के बारे में सुनकर वो चौंक पड़ी थी. और यहाँ उसका भाई घर की नौकरानी की योनि चाट रहा था, वो भी उस नौकरानी की जिससे वो कल ही मिला था.

एक पल के लिए दामिनी ने सोचा के वहाँ से चली जाए पर फिर जाने क्या सोचकर वो फिर दीवार की आड़ में खड़ी मनीष और सरला को देखने लगी.

मनीष अब उठ खड़ा हुआ था और सरला की होंठ चूम रहा था. वो सरला की टाँगो के बीच खड़ा था और सरला ने अपनी टांगे उसकी कमर के दोनो तरफ लपेट रखी थी और हाथों से वो मनीष के सर को सहला रही थी. मनीष ने थोड़ी देर उसके होंठ चूमने के बाद उसकी स्तनों को कमीज़ के उपेर से ही चूमना शुरू कर दिया और उसकी नग्न जाँघो पर हाथ फेरने लगा. सरला वासना से अपने सर को ज़ोर ज़ोर से इधर उधर झटक रही थी.

"जल्दी कीजिए मालिक. कोई आ जाएगा" सरला ने आँखें बंद किए हुए ही कहा

उसकी बात सुनकर मनीष ने दोबारा उसके होंठ चूमने शुरू कर दिए और अपनी पेंट की ज़िप खोलने लगा. थोड़ी ही देर में उसकी पेंट सरक कर नीचे जा पड़ी और दामिनी फ़ौरन फिर से दीवार के पिछे हो गयी. वो अपनी ही छहोटे भाई को नंगा नही देखना चाहती थी. एक पल के लिए उसने कदम उठाए के बेसमेंट से बाहर चली जाए पर तब तक खुद उसके जिस्म में आग लग चुकी थी. उसका एक हाथ कब उसकी योनि पर पहुँच गया था उसे पता भी नही चला था. उसने एक पल के लिए सोचा और फिर से मनीष और सरला को देखने लगी.

मनीष अपना कार्य करम शुरू कर चुका था. उसका लिंग सरला की योनि में अंदर बाहर हो रहा था. अब सरला टेबल पर सीधी लेट गयी थी. उसकी नितंब टेबल के बिल्कुल कोने पर थी और टांगे मनीष के कंधो पर जो उसकी टाँगो के बीचे खड़ा अपना लिंग अंदर बाहर कर रहा था. सरला की कमीज़ उसने खींच कर उपेर कर दी थी और दोनो स्तनों को ऐसा मसल रहा था जैसे आता गूँध रहा हो.

"पहले भी करवा चुकी हो क्या?" उसने सरला से पूछा

"नही" सरला ने सर हिलाते हुए जवाब दिया

"फिर तुम्हें ..... "मनीष ने कुछ कहना चाहा और फिर बात अधूरी छोड़कर सरला की योनि पर धक्के मारने लगा

सीढ़ियों पर खड़ी दामिनी का हाथ उसकी योनि के साथ जुंग लड़ रहा था. उसे यकीन नही हो रहा था के वो च्छुपकर अपने भाई को किसी लड़की को ठोक्ते हुए देख रही है और बजे वहाँ से जाने के खुद भी गरम हो रही थी.

मनीष के धक्के अब काफ़ी तेज़ हो चुके थे.

"और ज़ोर से मलिक" सरला अपनी आह आह के बीच बोल रही थी.

दामिनी को हैरत हुई के कहाँ तक कल की सीधी सी शर्मीली और कहाँ आज खुद ज़ोर से ज़ोर से का नारा लगा रही थी. उसकी खुद की हालत अब तक खराब हो चुकी थी और वो जानती थी के फिलहाल उसके पास योनि की आग भुझाने का कोई तरीका नही था. और जिस तरह से मनीष धक्के मार रहा था, दामिनी समझ गयी के अब काम ख़तम होने वाला है. उसने अपना हाथ योनि से हटाया, अपने कपड़े ठीक किए और धीरे से सीढ़ियाँ चढ़ती बेसमेंट से बाहर निकल गयी.

भाग - 19

थोड़ी देर बाद मनीष और दामिनी दोनो बड़े कमरे में बैठे टीवी देख रहे थे. जबसे मनीष बेसमेंट में सरला को ठोक्कर आया था तबसे उसके और दामिनी के बीच कोई बात नही हुई थी. दामिनी बैठी टीवी देख रही थी और मनीष उसके पास ही आके खामोशी से बैठ गया था.

दामिनी को समझ नही आ रहा था के अपने भाई के बारे में क्या सोचे. वो भाई जिसे वो दुनिया का सबसे सीधा इंसान समझती रही. जिसके सिर्फ़ 2 शौक हुआ करते थे, शिकार करना और अपना बिज़्नेस संभालना. पिच्छले कुछ वक़्त में वो कितना बदल गया था. उसके शौक में कब शायरी और लड़कियाँ जुड़ गयी दामिनी को पता ही ना चला. पर पता चल भी कैसे सकता था. मनीष से पिच्छले 10 साल में मुश्किल से उसने 10 बार बात की होगी और अब पता नही कितने वक़्त के बाद मिली है.

"श्यामला के साथ तेरा रिश्ता कहाँ तक पहुँचा था?" आख़िर में उसने खामोशी तोड़ी और मनीष से पूछा

"मतलब?" मनीष ने उसकी तरफ नज़र घुमाई

तभी सरला के ग्लास में पानी लेकर कमरे में आई तो दामिनी खामोश हो गयी. दामिनी को पानी थमाते हुए सरला ने एक नज़र मनीष को देखा और मुस्कुरा कर वापिस चली गयी.

"मतलब के तुम लोग कितने करीब थे" दामिनी ने पानी पीते हुए कहा "मेरा मतलब ....."वो थोड़ी अटकी और फिर अपनी बात कह ही दी"मेरा मतलब जिस्मानी तौर पर"

मनीष इस बात के लिए तैय्यार नही था. वो चौंक पड़ा"ये कैसा सवाल है?"

"सवाल जैसा भी है" दामिनी ने सीधा उसकी आँखों में देखते हुए कहा "जवाब क्या है?"

"मैं जवाब देना ज़रूरी नही समझता" मनीष ने गुस्से में कहा और उठकर कमरे से बाहर जाने लगा

"मालकिन" कजरी की आवाज़ पर दामिनी ने उसकी तरफ़ नज़र उठाकर देखा

"बाहर पोलीस आई है. वही खाडुस इनस्पेक्टर जो हमेशा आता है"

कजरी ने कहा तो मनीष के कदम भी रुक गये. उसने पलटकर दामिनी की तरफ देखा"अंदर ले आओ" दामिनी ने कजरी से कहा

थोड़ी देर बाद कमरे में इंस्पेक्टर पठाण दाखिल हुआ"सलाम अर्ज़ करता हूँ" वो अपने उसी अंदाज़ में बोला

"तुम अपने कमरे में जाओ" दामिनी ने मनीष को इशारा किया

"अरे नही रुकिये ठाकुर साहब" पठाण ने फ़ौरन मनीष को रोका "मुझे आपसे भी कुछ बात करनी है"

"मुझसे?" मनीष ने हैरानी से पूछा

"जी आपसे. आइए बैठिए ना. अपना ही घर है" पठाण ने उसे सामने रखी कुर्सी की तरफ इशारा करके बैठने को कहा

"आप जानते हैं ये कौन है?" दामिनी हैरत में पड़ गयी थी के मनीष से पठाण क्या बात करना चाहता था

"आपके छहोटे भाई हैं"पठाण खुद भी एक चेर पर बैठता हुआ बोला "ठाकुर मनीष"

"आप कैसे जानते हैं मुझे?" मनीष बैठते हुए बोला

"अजी आप एक ठाकुर हैं. सूर्यवंशी हैं. आपको ना पहचान सकूँ इतनी बड़ा भी बेवकूफ़ नही हूँ मैं" पठाण ने कहा

ना दामिनी की समझ आया के पठाण मनीष की तारीफ कर रहा था या मज़ाक उड़ा रहा था और ना खुद मनीष की

"आपके घर फोन किया था मैने तो पता चला के आप बढ़ी बहेन से मिलने गये हुए हैं. अब पोलीस स्टेशन आना तो आप ठाकुरों की शान के खिलाफ है तो मैने सोचा के मैने के मैं ही जाके मिल आऊँ" पठाण ऐसे कह रहा था जैसे हवेली आकर उसने ठाकुर खानदान पर बहुत बड़ा एहसान किया हो

"कौन है ये आदमी?" मनीष चिड सा गया "और ये क्या बकवास कर रहा है"

"मतलब की बात पर आइए" दामिनी ने मनीष के सवाल का जवाब ना देते हुए पठाण की तरफ पलटकर कहा

"चलिए मतलब की बात ही करता हूँ" पठाण बोला और फिर मनीष की तरफ पलटा "वैसे आपको बता दूं के मुझे इनस्पेक्टर दानिश पठाण कहते हैं, वैसे मेरे चाहने वाले तो मुझे मुन्ना

कहते हैं पर दानिश पठाण मेरा पूरा नाम है और इस इलाक़े में नया आया हूँ. आप चाहें तो आप भी मुझे मुन्ना कहते सकते हैं. अब तो हमारी जान पहचान हो ही गयी है"

"जैसा की आप जानती हैं के आपके पति के खून में मुझे कुछ ज़्यादा ही इंटेरेस्ट है" पठाण दामिनी से बोला "और यकीन मानिए जबसे मैं यहाँ आया हूँ सुबह से शाम तक इसी बारे में सोचता रहता हूँ"

"पर क्यूँ?" दामिनी ने पठाण की बात बीच में काट दी "मैं जानती हूँ के ये आपका काम है पर हमारे देश के पोलिसेवाले अपना काम काब्से करने लगे?"

दामिनी की बात सुनकर पठाण हसणे लगा"फिलहाल के लिए इतना जान लीजिए के मैं ये इसलिए नही कर रहा क्यूंकी ये मेरा काम है. और भी बहुत केस पड़े हैं जिनपर मैं अपना दिमाग़ खपा सकता हूँ. यूँ समझ लीजिए के आपके पति का एक एहसान था मुझपर जो मैं अब उतारने की कोशिश कर रहा हूँ"

"मेरे पति को मरे हुए 10 साल हो चुके हैं" दामिनी ने पठाण को ताना मारा "अब याद आया है आपको एहसान का बदला चुकाना?"

"वो एक अलग कहानी है" पठाण ने दामिनी की बात का जवाब नही दिया "फिर कभी फ़ुर्सत में बताऊँगा. फिलहाल मैं जिसलिए आया था वो बात करता हूँ. क्या है के जब आपके पति की मौत हुई थी उस वक़्त उनका पोस्टमॉर्टम नही हुआ था. पोस्टमॉर्टम के लिए बॉडी गयी ज़रूर थी पर बीच में आपके ससुर और आपका सबसे छोटा देवर बीच में आ गये थे. वहाँ उन्होने डॉक्टर्स के साथ मार पीट की और बॉडी उठा लाए. अब क्यूंकी वो यहाँ के ठाकुर थे और पोलिसेवाले उनकी जेब में थे इसलिए किसी ने मुँह नही खोला."

"तो?" इस बार दामिनी की जगह मनीष बोला

"तो ये ठाकुर साहब के पोस्टमॉर्टम तो पूरा नही हुआ पर रिपोर्ट्स में इतना ज़रूर लिखा हुआ था के ठाकुर वीरभद्र की मौत कैसे हुई थी"

"गोली लगने से. ये तो हम सब जानते हैं" दामिनी ने कहा

"जी हां आप सब जानते हैं पर अब मैं कुछ ऐसा आपको बताता हूँ जो आप नही जानती" पठाण ले बोलने का अंदाज़ अब कासी सीरीयस हो चुका था "रिपोर्ट्स के हिसाब से ठाकुर वीरभद्र सिंग को एक रेवोल्वर से गोली मारी गयी थी और वो रेवोल्वेर ना तो इंडिया में बनती है और ना ही बिकती है."दामिनी और मनीष चुप बैठे थे

"ठाकुर साहब को एक कोल्ट अनकॉंडा 6" बॅरल से गोली मारी गयी थी. इस तरह की रिवॉलवर्स अब इंडिया में मिलती हैं या नही ये तो मैं नही जानता पर आज से 10 साल पहले

तो बिल्कुल नही मिलती थी. हां ऑर्डर करके मँगवाया ज़रूर जा सकती थी पर उसमें काफ़ी परेशानी होती थी क्यूंकी आप एक हथ्यार खरीद कर दूसरे देश से मग़ावा रहे हैं. ये काम सिर्फ़ किसी ऐसी आदमी के बस में था जिसकी अच्छी पहुँच हो और खर्च करने के लिए पैसा बेशुमार हो.जैसे के कोई खानदानी ठाकुर"

"क्या मतलब है आपका" मनीष ने गुस्से में पूछा

"बताता हूँ. सबर रखिए " पठाण ने भी उसी अंदाज़ में जवाब दिया "तो मैने सोचा के ठाकुर साहब के खानदान से ही शुरू करूँ. अब ठाकुर इंद्रदेव सिंग के खानदान में हथ्यार तो बहुत थे, गन्स भी थी, पर ज़्यादातर दोनाली राइफल्स और जो रिवॉलवर्स या पिस्टल थी वो यहीं इंडिया से खरीदी गयी थी. किसी के भी नाम पर किसी विदेशी बंदूक का रिजिस्ट्रेशन नही था. तो मैने सोचा के क्यूँ ना ठाकुर साहब के रिश्तेदारों में तलाश किया जाए. जब पता लगाया तो मालूम चला के ठाकुर मनीष ने आज से 11 साल पहले एक कोल्ट अनकॉडा 6" बॅरल मँगवाई थी."

कमरे में सन्नाटा छा गया. दामिनी और पठाण दोनो ही मनीष की तरफ देख रहे थे.

"वो इसलिए क्यूंकी मुझे शिकार करने और हथ्यारो का शौक था" मनीष ने अपनी सफाई में कहा

"अब आपकी रिवॉलव कहाँ है ठाकुर?" पठाण ने सवाल किया

"वो रिवॉलव 10 साल पहले खो गयी थी. मैं शिकार पर गया था और वहीं जंगल में कहीं गिर गयी थी" मनीष ने जवाब दिया

"आपने पोलीस में रिपोर्ट कराई?" पठाण ने पूछा

"हम ठाकुर हैं इनस्पेक्टर" मनीष गुस्से में बोलता हुआ खड़ा हुआ "हम अपने मामलो में पोलीस को इन्वॉल्व नही करते"ये कहकर मनीष गुस्से में पेर पटकता हुआ कमरे से निकल गया

उसके जाने के बाद दामिनी और पठाण दोनो खामोशी से बैठे रहे. कुछ देर बाद दामिनी ने बोलने के लिए मुँह खोला ही था के पठाण ने उसकी बात बीच में काट दी

"आप ग़लत सोच रही हैं. मैं ये नही कहता के आपके पति को आपके भाई ने मारा है पर ये बहुत मुमकिन है के इन्ही के रेवोल्वेर से आपके पति को गोली मारी गयी."

दामिनी ने सहमति में सर हिलाया और कमरे में फिर खामोशी छा गयी. थोड़ी देर बाद पठाण उठा"मुझे यही पता करना था के वो रेवोल्वेर अब ठाकुर मनीष के पास है के नही. अगर होती तो मैं चेकिंग के लिए माँगता पर ये तो कह रहे हैं के गन ही खो गयी थी. मैं चलता हूँ"

पठाण जाने लगा तो दामिनी ने उसे रोका"आप कल सुबह हवेली आ सकते हैं? कुछ काम है मुझे"

पठाण ने हां में सर हिलाया और कमरे से बाहर निकल गया

थोड़ी देर बाद दामिनी दरवाज़ा खोलकर मनीष के कमरे में दाखिल हुई. मनीष बिस्तर पर सर पकड़े ऐसे बैठा था जैसे लुट गया हो.

"सच क्या है मनीष? मैं जानती हूँ तू कुछ च्छूपा रहा है मुझसे" वो मनीष के करीब जाते हुए बोली मनीष ने कोई जवाब नही दिया. बस सर पकड़े बैठा रहा.

"तुझे बताया नही मैने पर अब सोचती हूँ के बता ही दूँ." दामिनी मनीष के ठीक सामने जा खड़ी हुई "श्यामला का पासपोर्ट मुझे यहीं हवेली में मिला. हर वो चीज़ जो वो जाने से पहले पॅक करके ले गयी थी वो यहीं हवेली में बंद एक कमरे में मिली. वो विदेश कभी गयी ही नही मनीष और कोई नही जानता के पिच्छले 10 साल से कहाँ है"

दामिनी की बात सुनकर मनीष ने उसकी तरफ नज़र उठाई. वो आँखें फेलाए दामिनी की तरफ देख रहा था. आँखों में एक खामोश सवाल था जैसे के वो दामिनी से पुच्छ रहा हो के क्या वो सच बोल रही है. दामिनी ने भी उसी खामोशी से हां में सर हिलाया

"मुझे खुद अभी 3-4 दिन पहले ही पता चला" दामिनी ने कहा"और किसी ने उसके बारे में पता करने की कोशिश नही की?" मनीष को जैसे अब भी यकीन नही हो रहा था

"पता नही. जिससे पूछती हूँ वो यही कहता है के श्यामला विदेश में है. ठाकुर साहब हॉस्पिटल में हैं और उनके आक्सिडेंट होने से पहले मुझे ये बात पता नही थी इसलिए उनसे बात करना अभी बाकी है" दामिनी ने कहा

"मैं जानता था के कुछ गड़बड़ हुई है वरना ऐसा हो ही नही सकता था के वो एक बार भी मुझे फोन ना करे. आपने पोलीस में बताया?" मनीष की आवाज़ से साफ पता चल रहा था के उसे अब भी इस बात पर यकीन नही हो रहा था

"पठाण ये बात पहले से ही जानता है. असल में उसने ही मुझसे ये बात सबसे पहले बताई थी" दामिनी ने कहा

"आपने शमशेर को फोन नही किया? उसके पास ही तो गयी थी श्यामला" मनीष सोचता हुआ बोला

"उसके जितने नंबर मुझे मिल सके मैने सब ट्राइ किए. एक भी काम नही कर रहा" दामिनी ने कहा तो मनीष फिर अपना सर पकड़ कर बैठ गया

"मुझे लगता है के अब वक़्त आ गया है के तुम मुझे सब सच बताओ. शुरू से आख़िर तक." दामिनी ने पूछा तो मनीष इनकार में सर हिलाने लगा

दामिनी ने उसका चेहरा अपने हाथों में लिया और उपेर उठाकर मनीष की आँखों में देखा

"एक वक़्त था जब तेरी हर बात मुझे पता होती थी मनीष. मैं तेरी बहेन से ज़्यादा तेरी दोस्त थी. हर छहोटी बड़ी शरारत तू मुझे बताया करता था और मैं तुझे बचाया करती थी. अब क्या हुआ मेरे भाई? कब इतना बदल गया तू के अपनी बहेन से बातें च्छुपाने लगा?"दामिनी की बात सुनकर मनीष की आँखों से पानी बहने लगा

"कल रात जब मैं श्यामला के कमरे में कुछ तलाश कर रह था और आप आ गयी थी तब मैने आपको कहा था के मैं वो पेपर्स ढूँढ रहा था जिसपर मैने शायरी लिखी हुई थी. ये बात कुछ अजीब नही लगी आपको? आख़िर कुछ काग़ज़ ही तो थे. ऐसी कोई बड़ी मुसीबत तो नही थी के मैं आधी रात को श्यामला के कमरे में जाता" मनीष ने कहा

"आजीब तो लगी थी पर तेरी हर बात पर यकीन करने की आदत सी पड़ गयी है मुझे इसलिए कुछ नही बोली" दामिनी ने मनीष का चेहरा छोड़कर उसके साथ बिस्तर पर जा बैठी

"मैं वो रेवोल्वेर ढूँढ रहा था दीदी. मेरी रेवोल्वेर जंगल में नही खोई थी. वो मैने श्यामला को दी थी. आख़िरी कुछ दीनो में वो बहुत परेशान सी रहती थी. कहती थी के उसे हवेली में डर लगता है. अपने ही घरवाले उसे अजनबी लगते हैं क्यूंकी हर किसी ने अपने चेहरे पर एक नकली चेहरा लगा रखा था. एक दिन वो मुझसे मिलने आई तो रो रही थी. मैने पूछा तो कुछ बोली नही बस मुझसे मेरी गन माँगी. मुझे अजीब लगा. मैं रेवोल्वेर उसे देना नही चाहता था पर उसके आँसू देख भी नही सकता था. दिल के हाथों मजबूर होकर मैने वो रेवोल्वेर श्यामला को दे दी."

उसने वापिस नही दी?" दामिनी हैरान सी मनीष को देख रही थी

"नौबत ही नही आई" मनीष ने सर झटकते हुए कहा "उसके 2 दिन बाद ही जीजाजी का खून हो गया और फिर मैं श्यामला से मिल नही सका. पिच्छले 10 साल से सोचता रहा के आकर उसका कमरा देखूं के शायद वो रेवोल्वेर यहीं कहीं रखा छोड़ गयी हो पर हिम्मत नही पड़ी. एक दो बार आपसे मिलने के बहाने आया भी तो श्यामला के कमरे में जाने का मौका नही मिला"

"तेरे पास श्यामला के कमरे की चाभी कहाँ से आई?" दामिनी को अचानक याद आया के मनीष बड़ी आसानी से कमरा खोलकर अंदर चला गया था

"वो जब आखरी बार मिलने आई तो बहुर घबराई हुई थी. उसी घबराहट में चाभी मेरी गाड़ी में छोड़ गयी थी" मनीष ने जवाब दिया

"शुरू से बता मनीष. सब कुछ" दामिनी ने कहा

"मैने श्यामला को अपने एक दोस्त की शादी में देखा था" मनीष ने बताना शुरू किया.पार्टी पूरे जोश पर थी. मनीष शराब नही पीता था पर आज उसके एक बहुत करीबी दोस्त की शादी थी इसलिए दोस्तों के कहने पर मजबूरन पीनी पड़ी. थोड़ी ही देर बाद उसे एहसास हो गया के नशा अब उसके सर पर चढ़ने लगा है. वो हमेशा से अपनी ज़ुबान पर काबू रखने वाला आदमी था. सिर्फ़ उतना ही बोलता था जितना ज़रूरी हो. कभी भी कहीं पर उसकी ज़ुबान से ऐसी बात नही निकलती थी जो वो ना कहना चाहता हो.

पर इंसान नशे में हो तो ना खुद पर काबू रहता है और ना अपनी ज़ुबान पर और ये बात मनीष अच्छी तरह जानता था. पार्टी में मौजूद हर लड़की बस जैसे उसी की तरफ देख रही थी और उससे बात करने या उसके करीब आने की कोशिश कर रही थी. नशे की हालत में कहीं वो किसी के साथ कोई बदतमीज़ी ना कर दे ये सोचकर मनीष ने सबसे अलग कहीं अकेले जाकर बैठने का फ़ैसला किया. अभी वो नशे में था पर नशा इतना नही था के वो होश खो दे पर अगर दोस्तों के बीच रहता तो वो उसे और पीला देते और फिर बात काबू से बाहर हो जाती.

अकेला मनीष अपने दोस्त की ससुराल के घर की सीढ़ियाँ चढ़ता छत की और चला. छत पर पहुँचते ही ठंडी हवा का झोंका उसके चेहरे पर लगा और उसे कुछ रहट सी महसूस हुई. नीचे सिगरेट के धुएँ में उसका दम सा घुटने लगा था.छहत पर कोई नही था. मनीष ने कोने में रखी एक चेर देखी और जाकर उसपर बैठ गया.

"हे भगवान " उसने ज़ोर से कहा "इंसान शराब क्यूँ पीता है"

तभी उसे छत के कोने पर कुछ आहट महसूस हुई. नज़र घूमकर देखा तो वहाँ एक लड़की खड़ी थी जो उसके ज़ोर से बोलने पर मुड़कर उसकी तरफ देख रही थी.

"माफ़ कीजिएगा" मनीष फ़ौरन चेर से उठ खड़ा हुआ "मैने आपको देखा नही. शायद ये चेर आप लाई हैं उपेर. आपकी है"

उस लड़की ने एक नज़र मनीष पर डाली और फिर आसमान की तरफ देखने लगी. मनीष को ये थोड़ा अजीब लगा. नीचे खड़ी हर लड़की बस उसी की तरफ देखे जा रही थी और इस लड़की ने उसपर एक नज़र डाली थी. आख़िर आसमान में ऐसा क्या है जिसके लिए उसे भी नज़र अंदाज़ कर दिया गया. ये सोचते हुए मनीष ने आसमान की तरफ नज़र उठाई.

"शिकन लिए मुस्कुराते लबों पे,बात आती है कभी कभी,

क़ुरबतों में पली वो ज़िंदगी, साथ आती है कभी कभी

आसमान से चाँद चुराकर कहीं ले जा तू आज सितम्गर,

जी लेने दे अंधेरे को, के अमावस की रात आती है कभी कभी"

आसमान की तरफ देखते हुए उस लड़की ने कहा

"जी?" मनीष ने उसकी तरफ देखा "अपने मुझसे कुछ कहा?"

वो लड़की फिर से मनीष की तरफ देखने लगी"आप यहाँ उपेर अकेले में क्या कर रहे हैं? आइए नीचे चलें" लड़की ने कहा तो इस बार मनीष को और ज़्यादा हैरानी हुई. कहाँ तो हर लड़की अकेले में उससे बात करना चाह रही थी और कहाँ ये लड़की उसे वापिस नीचे जाने को कह रही थी.

मनीष ने एक नज़र उसपर डाली. वो एक मामूली सूरत की आम सी दिखने वाली लड़की थी. हल्का सावला रंग, गोल चेहरा, काली आँखें और काले बाल.

"मैं अगर नीचे गया तो मुसीबत आ जाएगी. मेरे दोस्त फिर से मेरे हाथ में शराब थमा देंगे" उसने मुस्कुराते हुए उस लड़की से कहा

"तो क्या हुआ? यहाँ तो हर कोई पी रहा है" उस लड़की ने कहा

"जी हां पर अगर मैं पी लूँ तो मैं पागल हो जाता हूँ. अपने होश में नही रहता. अगर एक बार मुझे नशा चढ़ जाए तो मैं बीच बाज़ार में नाचना शुरू कर दूं" मनीष ने हल्का शरमाते हुए जवाब दिया

उसकी बात सुनकर वो लड़की हस पड़ी. उसके हासणे की आवाज़ ऐसी थी के मनीष बस उसे देखता रह गया. लड़की ने हाथ के इशारे से उसे फिर नीचे चलने को कहा तो मनीष ने फ़ौरन इनकार में सर हिला दिया

"जी बिल्कुल नही. ना तो मेरा आज पागल होने का इरादा है और ना कहीं नशे में नाचने का, ना बाज़ार में और ना ही यहाँ पार्टी में"

उसकी बात सुनकर वो लड़की उसके थोडा करीब आई और हल्की सी आवाज़ में ऐसे बोली जैसे कोई राज़ की बात बता रही हो

"आज बाज़ार में पबाजोला चलो

दस्त अफ्शान चलो,मस्त-ओ-रकसान चलो

खाक बरसर चलो,खून बदमा चलो

राह तकता है सब,शहेर-ए-जाना चलो

हाकिम-ए-शहेर भी, मजमा-ए-आम भी

तीर-ए-इल्ज़ाम भी, संग-ए-दुश्नाम भी

सुबह-ए-नाशाद भी, रोज़-ए-नाकाम भी

इनका दम्साज अपने सिवा कौन है

शहेर-ए-जाना में अब बसिफ़ा कौन है

दस्त-ए-क़ातिल के शायन रहा कौन है

रखत-ए-दिल बाँध लो, दिलफ़िगारो चलो

फिर हम ही क़त्ल हो आएँ यारो चलो"

"जी?" एक शब्द भी मनीष के पल्ले नही पड़ा "ये कौन सी भाषा थी"

उसकी बात सुनकर वो लड़की फिर खिलखिलाकर हस्ने लगी और सीढ़ियाँ उतरकर नीचे चली गयी.

नीचे आकर मनीष ने पता किया तो लड़की का नाम श्यामला था और वो ठाकुर इंद्रदेव सिंग की बेटी थी. श्यामला में ऐसा कुछ भी नही था जिसपर आकर किसी की नज़र थम जाए पर जाने क्यूँ मनीष की नज़र बार बार उसी पर आकर रुकती. जिस तरह से वो उपेर खड़ी आसमान को देख रही थी, जिस तरह से उसने हाथ से इशारा करके मनीष को नीचे चलने को कहा था, और जिस तरह से वो कुछ धीरे से कहती थी जो मनीष को समझ नही आया था, इन सब बातों में मनीष उलझ कर रह गया थे. पूरी रात पार्टी में वो बस श्यामला को ही देखता रहा और उसने महसूस किया के वो भी पलटकर उसी की तरफ देख रही थी. कई बार दोनो की नज़र आपस में टकराती और दोनो ने मुस्कुरा कर नज़र फेर लेते.

भाग - 20

सुबह के 4 बाज रहे थे. मनीष लड़केवालों की तरफ से बारात के साथ आया था जबकि श्यामला लड़की वालो की तरफ से थी. विदाई की वक़्त हो गया था और हर कोई दूल्हा और दुल्हन के आस पास भटक रहा था. मनीष जानता था के थोड़ी देर बाद उसको जाना होगा पर वो श्यामला से एक बार बात करना चाहता था. जाने क्या था के उसकी नज़र पागलों की तरह भीड़ में श्यामला को तलाश रही थी पर वो कहीं नज़र नही आई. अचानक मनीष को छत का ख्याल आया और वो भागता हुआ फिर छत पर पहुँचा. जैसा की उसने सोचा था, श्यामला वहीं खड़ी फिर से आसमान की तरफ देख रही थी. मनीष भागता हुआ छत पर आया था इसलिए उसकी साँस फूल रही थी. उसके हाफने की आवाज़ सुनकर श्यामला उसकी तरफ पलटी और खामोशी से उसे देखने लगी. कुछ देर तक मनीष भी कुछ नही बोला और छत की दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया.

"शुक्रिया" थोड़ी देर बाद श्यामला बोली

मनीष ने सवालिया नज़र से उसकी तरफ देखा"किस बात के लिए?" उसने श्यामला से पूछा

"आज रात के लिए. आज रात आप हमारे साथ रहे उसके लिए" श्यामला ने एक नज़र मनीष की तरफ देखा और फिर आसमान की तरफ देखने लगी

"मैं आपके साथ कहाँ था. आपको तो अपनी दोस्तों से वक़्त ही नही मिला" मनीष ने श्यामला की तरफ देखा. वो अब भी उपेर ही देख रही थी।"क्या देख रही हैं आप? क्या है आसमान में" आख़िर मनीष ने पुच्छ ही लिया

उसकी बात सुनकर श्यामला ने उसकी तरफ देखा और उसके सवाल को नज़र अंदाज़ कर दिया।"भले आप खुद हमारे साथ नही थे पर आपकी नज़र ने हमें एक पल के लिए भी अकेला कहाँ होने दिया. पूरी रात आपकी नज़र हमारे साथ रही" श्यामला ने कहा तो मनीष ने मुस्कुराते हुए नज़र नीची कर ली

"तो आप जानती थी?" उसने श्यामला से पूछा

जवाब में श्यामला कुछ नही बोली. बस खामोशी से उसके करीब आई और फिर उसी हल्की सी आवाज़ में बोली, जैसे कोई बहुत बड़े राज़ की बात बता रही हो

"कुछ इस अदा से आप यूँ पहलू-नसहीन रहे

जब तक हमारे पास रहे, हम नहीं रहे

या रब किसी के राज़-ए-मोहब्बत की खैर हो

दस्त-ए-जुनून रहे ना रहे आस्तीन रहे"

मनीष को एक बार फिर पूरी तरह से श्यामला की बात समझ नही आई पर वो किस मोहब्बत के राज़ की बात कर रही थी ये वो अच्छी तरह समझ गया था. उसने श्यामला की तरफ देखा.

"दुआ करती हूँ के मैने जो अभी कहा है, इसके बाद की लाइन्स कहने की नौबत कभी ना आए" श्यामला ने धीरे से पिछे होते हुए कहा

"जी?" मनीष ने श्यामला की और देखते हुए पूछा

श्यामला फिर से हस्ने लगी और मनीष फिर उसको एकटूक देखने लगा"कभी इस जी के सिवा कुछ और भी कहिए ठाकुर मनीष" श्यामला ने कहा और सीढ़ियाँ उतरकर नीचे चली गयी

मनीष समझ गया था के जिस तरह वो अपने दोस्तों से श्यामला के बारे में मालूम करने की कोशिश कर रहा था वैसे ही श्यामला ने भी उसका नाम कहीं से मालूम किया था. थोड़ी ही देर बाद बारात विदा हो गयी. जाते हुए मनीष को श्यामला कहीं नज़र नही आई पर वो जानता था के वो उसे फिर ज़रूर मिलेगा.

शादी के 2 दिन बाद मनीष अपने कमरे में सोया हुआ था. सुबह के 9 बाज रहे थे पर उसे देर से सोने और देर तक सोते रहने की आदत थी. उसके पास रखा फोन बजने लगा तो चिड़कर मनीष ने तकिया अपने मुँह पर रख लिया. फोन लगातार बजता रहा तो उसने गुस्से में फोन उठाया.

"हेलो" आधी नींद में मनीष बोला.

दूसरी तरफ से वही ठहरी हुई धीमी आवाज़ आई जिसने 2 दिन पहले मनीष को पागल सा कर दिया था.

लज़्ज़त-ए-घाम बढ़ा दीजिए,

आप यूँ मुस्कुरा दीजिए,

क़यामत-ए-दिल बता दीजिए,

खाक लेकर उड़ा दीजिए,

मेरा दामन बहुत साफ है

कोई इल्ज़ाम लगा दीजिए

"श्यामला" मनीष बिस्तर पर फ़ौरन उठ बैठा."हमें तो लगा के आप हमें भूल गये" दूसरी तरफ से श्यामला की आवाज़ आई

"कैसे भूल सकता हूँ पर आप अपने नंबर देकर ही नही गयीं" मनीष अपनी सफाई में बोला

"नंबर तो आपने भी नही दिया पर हमें तो मिल गया" श्यामला ने कहा तो मनीष के पास अब कोई जवाब नही था.

कुछ देर तक वो इधर उधर की बातें करते रहे. श्यामला ने उसे अपने बारे में बताया और मनीष ने श्यामला को अपने बारे में. खबर ही नही हुई के दोनो को बात करते करते कब 2 घंटे से ज़्यादा वक़्त हो गया. आख़िर में मनीष ने फिर से मिलने की बात की तो श्यामला खामोश हो गयी.

"क्या हुआ?" मनीष ने पूछा "आप मिलना नही चाहती?"

"अगर इंसान के चाहने से सब कुछ हो जाया करता तो फिर दुनिया में इतनी मुसीबत ना हुआ करती" दूसरी तरफ से श्यामला की आवाज़ आई "हम फिर फोन करेंगे"

कहकर श्यामला ने फोन रख दिया. मनीष परेशान सा फोन की तरफ देखने लगा. इस बार भी श्यामला ने उसे अपना फोन नंबर नही दिया था.

"फिर क्या हुआ?" दामिनी खामोशी से बैठी मनीष की बात सुन रही थी

"उसने उस दिन फोन ऐसे ही रख दिया पर मैं समझ चुका था के वो भी मुझे चाहती है. मैने अपने उस दोस्त को फोन किया जिसकी शादी में मुझे श्यामला मिली थी और उसकी बीवी के ज़रिए मैने श्यामला का फोन नंबर निकाल लिया. यानी यहाँ हवेली का नंबर" मनीष ने कहा

":ह्म्म्म्म "दामिनी ने हामी भारी

"पर मुसीबत ये थी के अगर मैं फोन करूँ तो पता नही श्यामला उठती या कोई और. फिर भी मैने कोशिश की. 3 दिन तक मैं लगातार कोशिश करता रहा पर हर बार कोई और ही फोन उठता और मुझे फोन काटना पड़ता. इस बीच श्यामला ने भी मुझे फोन नही किया. 3 दिन बाद एक दिन मैने फोन किया तो फोन श्यामला ने उठाया.

पहले तो वो मेरे फोन करने पर ज़रा परेशान हुई के मुझे यूँ फोन नही करना चाहिए था और

अगर घर में किसी को पता चला तो मुसीबत आ जाएगी. पर फिर खुद ही हस्कर कहने लगी के वो देखना चाहती थी के मैं फोन करूँगा या नही इसलिए खुद भी मुझे 3 दिन से फोन नही कर रही थी. ये थी मेरी और उसकी पहली मुलाक़ात. इसके बाद हम दोनो के बीच फोन शुरू हो गये और हम घंटो एक दूसरे से बातें करते रहते. मुझे खबर ही नही हुई के मैं कब श्यामला को इतना चाहने लगा था पर वो थी के मुझसे मिलने को तैय्यार ही नही होती थी. फिर तकरीबन 6 महीने बाद वो मुझसे मिलने को तैय्यार हुई." मनीष अब बिना रुके अपनी पूरी कहानी बता रहा था

"शहेर में मिलते थे तुम दोनो?" दामिनी ने पूछा

"हां" मनीष ने हां में सर हिलाया "श्यामला गाड़ी अकेली ही लाती थी. ना ड्राइवर ना बॉडीगार्ड. उन दीनो वो काफ़ी खुश रहती थी. हम साथ रहते, बातें करते और कुछ वक़्त साथ गुज़रने के बाद वो वापिस चली आती. उन दीनो में ऐसा कुछ नही हुआ जो कुछ अजीब हो. बस एक लड़का लड़की मिलते और एक दूसरे का हाथ थामे घंटो बातें करते रहते. कुछ दिन बाद जाने कैसे पर आपकी शादी श्यामला के घर ही पक्की हो गयी. हम दोनो इस बात को लेकर बहुत खुश थे और इसे अपनी खुशमति मान रहे थे.

मैं इसलिए खुश था के मैं आपकी शादी के बाद बिना किसी परेशानी के हवेली में आ जा सकता था और वो इसलिए खुश थी के उसे मेरे साथ शादी की बात चलाने का एक बहाना मिल गया था, यानी के आप. पर वो चाहकर भी कभी आपसे बात नही कर सकी और ना ही मैं और इसकी वजेह थी के आप मंदिर से कभी बाहर ही नही निकलती थी. हम दोनो ये सोचकर चुप रह जाते के जाने आप कैसे रिक्ट करेंगी. इसी उलझन में कब वक़्त गुज़रता चला गया हमें पता ही नही चला. कभी कभी मैं आपसे मिलने के बहाने हवेली आ जाया करता था पर अब भी हम ज़्यादातर बाहर ही मिला करते थे"

"श्यामला में बदलाव कब देखा तुमने" दामिनी ने पूछा

"आखरी कुछ दीनो में. जीजाजी के मरने से कोई 2 महीने पहले से. एक दिन वो मुझसे मिलने शहेर आई" मनीष ने बताना शुरू किया

मनीष अपनी गाड़ी रोके कोई एक घंटे से श्यामला का इंतेज़ार कर रहा था. कभी ऐसा नही होता था के श्यामला देर से पहुँचे, बल्कि वो मनीष से पहले ही पहुँच जाती थी पर आज मनीष को इंतेज़ार करना पड़ रहा था. वो शहेर के बाहर एक सुनसान इलाक़े में गाड़ी रोके खड़ा था. श्यामला और वो अक्सर यहीं मिला करते थे.थोड़ी देर बाद उसे श्यामला की गाड़ी आती हुई नज़र आई. वो अपनी कार से बाहर निकला. श्यामला ने उसकी कार के पिछे लाकर अपनी कार रोकी और उसकी तरफ चलती हुई आई.

"सॉरी" श्यामला ने करीब आते हुए कहा "आज देर हो गयी"

"कोई बात नही" मनीष ने मुस्कुराते हुए कहा "इतने वक़्त से तुम मेरा इंतेज़ार करती थी. आज

मैने कर लिया तो कौन सी बड़ी बात है"

मनीष ने अपनी कार का दरवाज़ा खोला और वो दोनो उसकी कार की बॅक्सीट पर बैठ गये. दोपहर का वक़्त था और गर्मी सर चढ़कर बोल रही थी. मनीष ने कार का एसी ऑन कर दिया

श्यामला आज मनीष से पूरे 2 महीने बाद मिल रही थी. वो 2 महीने से कोशिश कर रहा था पर श्यामला मना कर देती थी. उसने हवेली जाने की सोची पर वहाँ वो अकेले में वक़्त नही बिता पाते थे.

"क्या हुआ?" मनीष ने श्यामला के माथे पर हाथ फेरते हुए कहा "परेशान सी लग रही हो""कुछ नही" श्यामला ने ज़बरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा "तक गयी हूँ"

"मनीष कार की बॅक्सीट पर एक कोने में हो गया और श्यामला को इशारा किया के वो लेट जाए. श्यामला ने पहले तो मना किया पर मनीष के ज़ोर डालने पर वो लेट गयी और अपना सर मनीष की जाँघ पर रख लिया

"क्या हुआ आज हमेशा की तरह कोई शायरी नही?" मनीष ने पूछा

"जब ज़िंदगी खुद अपनी शायरी सुनाना शुरू कर दे तो इंसान कहाँ शायरी कर पता है" श्यामला ने उदास सी आवाज़ में जवाब दिया

"क्या हुआ?" मनीष ने दोबारा पूछा

"कुछ नही. बस इंसान का चेहरा देखकर कभी कभी समझ नही आता के असली कौन सा है और नकली कौन सा" श्यामला ने कहा और अपनी आँखें बंद कर ली

मनीष ने उसके उदास चेहरे की तरफ देखा और आगे कुछ ना पुछा. वो प्यार से श्यामला के सर पर हाथ फेरता रहा

श्यामला ने सलवार कमीज़ पहेन रखी थी. मनीष की गोद में लेटे होने की वजह से उसका दुपट्टा सरक कर कार में नीचे गिर पड़ा था. वो इस तरीके से लेटी हुई थी के दोनो टांगे भी उपेर सीट पर थी और उसका पूरा जिस्म मुड़ा हुआ था जिसकी वजह से नीचे दे दबाव पड़ने के कारण उसकी स्तन कमीज़ के उपेर से बाहर को निकल रही थी.

मनीष की नज़र श्यामला की स्तनों पर पड़ी तो पहले तो उसने नज़र फेर ली पर फिर दोबारा उसी तरफ देखने लगा. श्यामला और उसके बीच अब तक कोई जिस्मानी रिश्ता नही बना था. कभी कभी वो दोनो एक दूसरे को चूम लेते थे और बस. ना तो कभी इससे आगे बात गयी और ना ही मनीष ने कोशिश की के इससे आगे कुछ और करे. पर आज श्यामला को यूँ इस हालत में देखकर उसके दिल की धड़कन तेज़ होने लगी.

उसका हाथ श्यामला के सर पर रुक गया था. कुछ देर तक आँखें बंद रखने के बाद श्यामला ने आँखें खोली और मनीष की तरफ देखा. मनीष की नज़र अब भी उसकी स्तनों पर थी. श्यामला ने शर्मा कर अपने दोनो हाथ अपने सीने पर रख लिए.

उसकी इस हरकत से मनीष ने उसकी आँखों में देखा. वो धीरे से नीचे झुका और अपने होंठ श्यामला के होंठ पर रख दिए. श्यामला के मुँह से आह निकल गयी और उसका हाथ मनीष का सर सहलाने लगा. दोनो के होंठ आपस में एक दूसरे से चिपक गये और ज़ुबान एक दूसरे की ज़ुबान से टकराने लगी. अपने होंठ श्यामला के होंठों से चिपकाए हुए ही मनीष ने अपने एक हाथ से श्यामला के हाथों को उसके सीने से हटाया.

श्यामला ने इनकार करना चाहा पर मनीष की ज़िद के आगे हार मानकर अपने हाथ हटा दिए. मनीष का हाथ उसके गले से होते हुआ उसके सीने पर आया और कमीज़ के उपेर से ही श्यामला की स्तन दबाने लगा. अब तक श्यामला की साँसें भी भारी हो चली थी. ये पहली बार था के वो और मनीष इतने करीब आए थे और मनीष ने उसके जिस्म को च्छुआ था. उसने भी पलटकर पूरे ज़ोर से मनीष को चूमना शुरू कर दिया.

थोड़ी देर कमीज़ के उपेर से ही स्तन सहलाने के बाद मनीष का हाथ फिर श्यामला के गले पर आया और इस बार उसके कमीज़ के गले से होते हुए अंदर गया और फिर ब्रा के अंदर घुसता हुआ सीधा श्यामला की नग्न स्तन पर आ गया. श्यामला का पूरा जिस्म ऐसा हिला जैसे उसे कोई ज़बरदस्त झटका लगा हो. उसने अपने होंठ मनीष के होंठ से हटाया, उसका हाथ पकड़कर बाहर खींचा और उठकर बैठ गयी. बैठकर वो ज़ोर ज़ोर से साँस लेने लगी और अपने बाल ठीक करने लगी. नीचे पड़ा दुपट्टा उठाकर उसने अपने गले में डाल लिया

"क्या हुआ?" मनिष ने पूछा.

श्यामला ने जवाब नही दिया तो उसने अपना हाथ उसके हाथ पर रखा।"क्या हुआ श्यामला? बुरा लगा क्या?" मनीष ने उसके करीब होने की कोशिश की पर श्यामला दूर होती हुई कार का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल गयी

"ओक आइ आम सॉरी" मनीष भी अपनी तरफ का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकला "तुम जानती हो मैं तुमसे प्यार करना चाहता हूँ और शादी करना चाहता हूँ इसलिए शायद थोड़ा आगे बढ़ गया. कुछ ग़लत किया मैने?"

"नही. कुछ ग़लत नही किया"श्यामला पलटकर चिल्लाई "ये तो हमारे रिश्ते के लिए बहुत ज़रूरी था ना"

"श्यामला !!!!! " मनीष ने पहली बार श्यामला को यूँ चिल्लाते देखा था इसलिए हैरानी से उसकी तरफ देखने लगा

"इस जिस्म में ऐसा क्या है मनीष जो हर कोई पागल हुआ रहता है इसके पिछे. के अपनी आग लोगों से संभाली नही जाती" श्यामला अब भी गुस्से में थी

"क्या मतलब?" मनीष को समझ नही आ रहा था के श्यामला यूँ ओवर रिक्ट क्यूँ कर रही थी

"हर किसी को यही चाहिए, है ना? हर किसी को बस इसी एक चीज़ की ख्वाहिश लगी रहती है. फिर ना तो रिश्ते मतलब रखते हैं और ना कोई और चीज़. फिर चाहे जितना गिरना पड़े पर जिस्म की आग बुझनी चाहिए, चाहे किसी के साथ भी हो. फिर ये नज़र नही आता के कौन अपने घर का है और कौन ....." श्यामला ने बात अधूरी छोड़ दी. मनीष अब भी उसको चुप खड़ा देख रहा था

"बस यही एक चीज़ चाहिए सबको" श्यामला ने दोनो हाथ हवा में फेलते हुए फिर अपनी बात दोहराई

"सबको मतलब" मनीष बस इतना ही कह सका. श्यामला उसकी बात का जवाब दिए बिना अपनी कार में बैठी और वहाँ से निकल गयी.

"उसके बाद?" दामिनी मनीष से पूछा

"वो आखरी बार था जब श्यामला मेरे इतने करीब आई थी. उसके बाद अगले 2 महीने तक मैं फोन ट्राइ करता रहा पर उससे बात नही हो पाई. मैं कई बार हवेली आपसे मिलने आया पर वो मुझे देखकर अपने कमरे में चली जाती थी और तब तक बाहर नही आती थी जब तक के मैं वापिस ना चला जाऊं" मनीष बोला

"उसने कुछ नही बताया के वो किस बात को लेकर इतना परेशान थी?" दामिनी को समझ नही आ रहा था के क्या सोचे

"इस बात का मौका ही नही मिला दीदी के मैं उससे आराम से बैठकर बात कर पाता या कुछ पुच्छ पाता. उस दिन जब वो मिली तो मुझसे लड़कर चली गयी थी. पता नही किसका गुस्सा उसने मुझपर निकाला था और उसके बाद कभी हमें मौका ही नही मिला के आराम से बैठकर बात कर पाते" मनीष ने कहा

"तो अपनी रेवोल्वेर कब दी तुमने उसको?" दामिनी ने पूछा

"जीजाजी के खून से 3 दिन पहले उसका मेरे पास फोन आया" मनीष ने आगे बताना शुरू किया

मनीष अपने कमरे में बैठा एक किताब पढ़ रहा था. फोन की घंटी बजी तो उसने आगे बढ़कर फोन उठाया. फोन के दूसरी तरफ से श्यामला के रोने की आवाज़ आई.

"श्यामला" मनीष जैसे चिल्ला उठा "ओह थैंक गॉड श्यामला. मुझे तो लगा था के तुम मुझसे अब कभी बात ही नही करोगी. मेरी ग़लती की इतनी बड़ी सज़ा दे रही थी मुझे?"

दूसरी तरफ से श्यामला ने कुछ नही कहा. बस रोती रही. उसके रोने की आवाज़ ऐसी थी जैसे वो बहुत तकलीफ़ में हो. मनीष से बर्दाश्त नही हुआ. उसकी अपनी आँखो में पानी आ गया

"मुझे माफ़ कर दो श्यामला. मैं मानता हूँ के ग़लती मेरी है. मुझे शादी से पहले ऐसी हरकत नही करनी चाहिए थी. पर तुम जानती हो मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ. मैं आज ही तुमसे शादी करने को तैय्यार हूँ अगर तुम कहो तो. हम अपने घर में बात कर लेंगे. नही माने तो कोर्ट मॅरेज कर लेंगे. मेरा यकीन करो श्यामला" मनीष पागलों की तरह कहता जा रहा था.

कुछ देर दोनो खामोश रहे. थोड़ी देर बाद श्यामला ने रोते रोते कहा

"मुझे नही पता के अब मैं किसका यकीन करूँ और किसका नही मनीष. अब तो हर कोई अजनबी सा लगने लगा है. हर किसी की शकल देखकर ऐसा लगता है जैसे उसने अपनी शकल पर एक परदा सा डाल रखा हो. अंदर से कुछ और और बाहर से कुछ और. किस्मत का खेल तो देखो मनीष के जो अपने थे वो पराए हो गये और जो पराया था वो अपना गया."

"मैं कभी पराया नही था श्यामला. मैं तो हमेशा से तुम्हारा अपना था. तुम ऐसी बातें क्यूँ कर रही हो?" मनीष तदपकर बोला।फोन पर फिर थोड़ी देर तक खामोशी बनी रही

"मेरी जान को ख़तरा है मनीष" श्यामला ने रोना बंद करते हुए कहा

मनीष को ऐसा लगा जैसे उसको 1000 वॉट का झटका लगा हो"किससे?" उसने पूछा

"ये सब बातें बाद में. मैं अभी ज़्यादा देर बात नही कर सकती. तुम मेरी बात सुनो. तुम मुझे कोई हथ्यार दे सकते हो? हिफ़ाज़त के लिए? तुम्हारी कोई पिस्टल या रेवोल्वेर?" श्यामला अब बहुत धीरे धीरे बोल रही थी

"पिस्टल? रेवोल्वेर? तुम क्या कह रही हो मेरी कुछ समझ नही आ रहा" मनीष के सचमुच कुछ भी पल्ले नही पड़ रहा था

"अभी समझने का वक़्त नही है. तुम एक काम करो. कल दोपहर 2 बजे उसी जगह पर मेरा इंतेज़ार करना जहाँ हम आखरी बार मिले थे. और अपनी रेवोल्वेर लेकर आना" श्यामला ने कहा

"श्यामला मेरी बात सुनो" मनीष बोला "कल 2 बजे तो मैं आ जाऊँगा पर ....."

वो अभी कह ही रहा था के पिछे से शकुंतला देवी की आवाज़ आई"

"श्यामला बेटा" और श्यामला ने फोन काट दिया.

अगले दिन मनीष श्यामला की बताई हुई जगह पर खड़ा इंतेज़ार कर रहा था. श्यामला ने 2 बजे आने को कहा था पर 3 दिन बज चुके थे और वो अब तक नही आई थी. कल रात से मनीष का सोच सोचकर दिमाग़ फटा जा रहा था. जान को ख़तरा? अपने अजनबी हो गये? श्यामला की कही कोई बात उसे समझ नही आ रही थी.

जब घड़ी में 3 बज गये तो वो समझ गया के श्यामला नही आएगी. उसने वापिस जाने का फ़ैसला किया और कार स्टार्ट ही की थी के रिव्यू कार में उसे श्यामला की गाड़ी आती हुई दिखाई दी. उसकी जान में जान आई. श्यामला ने उसकी कार के पिछे अपनी कार लाकर रोकी. मनीष अपनी गाड़ी से निकालने ही वाला था के श्यामला खुद अपनी कार से निकलकर जल्दी जल्दी मनीष की गाड़ी की तरफ आई और दरवाज़ा खोलकर अंदर आ गयी.

"गन लाए?" श्यामला ने गाड़ी में बैठते ही पूछा

"हां लाया हूँ पर मेरी बात सुनो श्यामला" मनीष ने कुछ कहना चाहा ही था के श्यामला ने सामने रखी रेवोल्वेर देखी और जल्दी से उठा ली

"अभी कुछ कहने या सुनने का वक़्त नही है मनीष. मैं ये गन कुछ दिन बाद तुम्हें लौटा दूँगी और तब सब कुछ समझा दूँगी" कहकर श्यामला ने अपनी तरफ का दरवाज़ा खोला और इससे पहले के मनीष कुछ कह पता या कर पाता वो कार से बाहर निकल गयी. मनीष भी जल्दी से अपनी तरफ का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकला. श्यामला तेज़ कदमों से चलती अपनी कार की तरफ जा रही थी और जब तक के मनीष उस तक पहुँचता, वो कार स्टार्ट कर चुकी थी.

"रूको श्यामला" मनीष भागता हुआ श्यामला की तरफ आया और कार की विंडो पर हाथ रखकर झुका "तुम मेरे साथ ऐसा नही कर सकती. तुम्हें बताना होगा के आख़िर हो क्या रहा है"

श्यामला उसकी तरफ देखकर मुस्कुराइ और मनीष के चेहरे पर प्यार से हाथ फेरा."मनीष" उसने मुस्कुराते हुआ कहा "मेरा मनीष"

"मैं हमेशा तुम्हारा हूँ श्यामला पर .... "मनीष ने कुछ कहना चाहा ही था के श्यामला ने उसके होंठ पर अपनी अंगुली रख कर उसे चुप करा दिया

"तुम्हें याद है मनीष जब हम पहली बार मिले थे तब मैने तुम्हें एक शेर सुनाया था और मैने कहा था के खुदा ना करे मुझे कभी इसकी आखरी लाइन्स भी तुम्हें कहनी पड़ें?" श्यामला ने

पूछा तो मनीष ने हां में सर हिला दिया

श्यामला खिड़की के थोडा नज़दीक आई और मनीष के गले में हाथ डालकर उसे थोड़ा नज़दीक किया. अगले ही पल दोनो के होंठ मिल गये. श्यामला उसे धीरे धीरे प्यार से चूमने लगी और फिर अपने होंठ मनीष के होंठ से हटाकर उसके कान के पास लाई. अपनी उसी अंदाज़ में फिर वो ऐसे बोली जैसे कोई बहुत बड़े राज़ की बात बता रही हो.

"कुछ इस अदा से आप यूँ पहलू-नॅशिन रहे

जब तक हमारे पास रहे हम नहीं रहे

ये दिन भी देखना फाज़ था तेरी आश्की में,

रोने की हसरत है मगर आँसू नहीं रहे,

जा और कोई सुकून की दुनिया तलाश कर,

मेरे महबूब हम तो तेरे क़ाबिल नहीं रहे"

और इससे पहले के मनीष कुछ समझ पाता, श्यामला के कार उसकी आँखो से तेज़ी के साथ दूर होती जा रही थी."बस" मनीष ने एक लंबी साँस ली "इतनी ही थी हमारी कहानी. आप पुच्छ रही थी ना के हम कितना करीब आए थे? इतना करीब आए थे हम दीदी"और मनीष अपना सर अपने हाथों में पकड़कर रोने लगा

"तुमने ये बात किसी से कही क्यूँ नही?" दामिनी ने पूछा

"मैं क्या कहता? मनीष बोला "जीजाजी का खून होने के बाद अगर मैं किसी से ये कहता के मैने गन श्यामला को दी थी तो सब लोग क्या समझते? और अगर ये कहता के मेरे से गुम हुई है तो सब मेरे बारे में क्या सोचते? बिल्कुल वही सोचते जो इस वक़्त वो इनस्पेक्टर सोच रहा है"

दामिनी थोड़ी देर तक मनीष के सामने चुप बैठी रही. उसे समझ नही आ रहा थे के क्या कहे और मनीष को कैसे संभाले. माहौल को हल्का करने के लिए उसने बात बदलने की सोची

"एक लड़की के इश्क़ में यूँ रो रहे हो और हरकतें कुछ और कर रहे हो?" उसने मनीष के सर पर हल्के से थप्पड़ मारा

"क्या मतलब" मनीष ने अपना सर उपेर उठाया

"मैने देखा था बेसमेंट में. तुम्हें और वो कल की छछोकरी सरला को

मनीष का मुँह हैरानी से खुला रह गया. वो दामिनी के मुस्कुराते चेहरे को थोड़ी देर तक देखता रहा और फिर खुद शरमाता हुआ हस पड़ा

"आप वहाँ कब आई?"

"जिस तरह से वो सरला टेबल पर लेटी शोर मचा रही थी उससे तो मुझे हैरानी है के पूरा गाओं क्यूँ नही आ गया" दामिनी ने जवाब दिया तो दोनो भाई बहेन हस पड़े

"मैं क्या करता दीदी" मनीष ने कहा "श्यामला जिस तरह से गयी उससे मैं बोखला उठा था. सोचा मैं क्यूँ एक लड़की के इश्क़ में मारा जा रहा हूँ. उसके बाद जो सामने आई मैं नही रुका. पता नही क्या साबित करना चाह रहा था या पता नही दिल ही दिल में शायद श्यामला को दिखाना चाह रहा था के मैं उसके बिना जी सकता हूँ. कमी नही है मेरे पास"

उसके बाद दामिनी और थोड़ी देर मनीष के कमरे में बैठी रही. उसके बाद वो उठकर अपने कमरे में आ गयी. अचानक उसे श्यामला के कमरे में मिली सिगरेट की बात याद आई. उसने सोचा के मनीष से पुच्छे के क्या वो श्यामला को सिगरेट लाकर देता था? ये सोचकर वो वापिस मनीष के कमरे पर पहुँची तो कमरा अंदर से बंद था।

दामिनी ने खोलने की कोशिश की तो कमरे को अंदर से लॉक पाया. वो मनीष का नाम पुकारने ही वाली थी के अंदर से आती सरला की आवाज़ सुनकर उसका हाथ रुक गया. आवाज़ से साफ पता चल रहा था के अंदर सरला और मनीष क्या कर रहे हैं.

दामिनी का मुँह हैरत से खुला रह गया. उसे अभी मनीष के कमरे से गये मुश्किल से 15 मिनट ही हुए थे. जो लड़का अभी थोड़ी देर पहले बैठा श्यामला के इश्क़ में आँसू बहा रहा था वो 15 मिनट में ही सरला पर चढ़ा हुआ था. वो भी भरे दिन में. तब जबकि उसकी अपनी बड़ी बहेन और सरला की माँ उसी हवेली में मौजूद थी.

दामिनी वापिस अपने कमरे की और चल पड़ी. मनीष की हरकत से उसे शक़ होने लगा था के जो मनीष ने श्यामला के और अपने बारे में कहानी दामिनी को सुनाई थी, क्या वो सच थी. और अगर सच थी तो कितनी सच थी.

भाग - 20

रात ढाल चुकी थी. पिच्छली कुछ रातों की तरह ये रात भी अलग नही थी. दामिनी अपने बिस्तर पर पड़ी थी. पूरी तरह नग्न. टांगे फेली हुई, एक हाथ उसकी छाती पर और दूसरा टाँगो के बीच उसकी योनि पर. उसे अपने उपेर हैरत थी के कहाँ कल की एक सीधी सादी घरेलू औरत और कहाँ एक ये औरत जिससे अपने जिस्म की गर्मी एक रात भी नही संभाली जाती थी. उसने अपनी 3 अंगुलिया अपनी योनि में घुसा रखी थी पर जिस्म था के खामोश होने का नाम ही नही ले रहा था. चिढ़कर दामिनी ने अपना हाथ टाँगो के बीच से हटाया और गुस्से में बिस्तर पर ज़ोर से मारा.

रात के तकरीबन 9 बजे तेज वापिस आ गया था. उसने दामिनी या किसी और से कोई बात नही की थी. चुप चाप बस अपने कमरे में चला गया था. काम ख़तम करके कजरी को भी दामिनी ने उसके ही कमरे में जाते देखा था. आज की रात दामिनी ऐसा भी नही कर सकती थी के सरला के साथ ही अपने जिस्म की आग भुझाने की कोशिश करे क्यूंकी सरला भी अपने कमरे में नही थी और दामिनी अच्छी तरह जानती थी के इस वक़्त वो मनीष के कमरे में ठुक रही होगी.

इस ख्याल से उसका जिस्म और भड़कने लगा. परेशान होकर वो बिस्तर से उठी और नीचे बड़े कमरे में जाकर टीवी देखने का फ़ैसला किया क्यूंकी नींद आँखो से बहुत दूर थी.

सीढ़ियाँ उतरती दामिनी के कदम अचानक से रुक गये. बड़े कमरे में टीवी ऑन था. इस वक़्त कौन देख रहा हो सकता है? टीवी आखरी बार वो खुद ही देख रही थी और उसको अच्छी तरह से याद था के वो टीवी बंद करके गयी थी. सोचती हुई वो सीढ़ियाँ उतरी और जैसे ही बड़े कमरे में आई उसकी आँखें खुली रह गयी.

कमरे में टीवी ऑन था और उसपर कोई गाना चल रहा था. सामने बबलू बैठा हुआ था. गाने में हेरोयिन भीगी हुई सारी में हीरो को रिझाने की कोशिश कर रही थी जो उसके करीब नही आ रहा था. बबलू सामने ज़मीन पर टांगे मोड बैठा था. उसका पाजामा नीचे था और कुर्ता उसने उपेर करके अपने गले में फसाया हुआ था.आँखें टीवी पर गाड़ी हुई और उसका हाथ लिंग को पकड़े उपेर नीचे हो रहा था.

दामिनी उसे एक पल वहीं खड़ी देखती रही. बबलू टीवी में इतना खोया हुआ था के उसे दामिनी के आने का आभास ही नही हुआ. दामिनी कभी टीवी की तरफ देखती तो कभी बबलू के हाथ जो उपेर नीचे हो रहा था. दामिनी की आँखों के आगे फिर वो नज़ारा आ गया जब बबलू ने उसको बस्मेंट में कजरी समझकर अंधेरे में ठोक दिया था. दामिनी की पहले से गीली योनि से जैसे नदी सी बहने लगी. उसका दिल किया के आयेज बढ़कर बबलू का लिंग पकड़ ले पर फिर वो खुद ही रुक गयी और उसका दिल खुद से ही सवाल जवाब करने लगा

सवाल : "एक नौकर के साथ?"

जवाब : तो क्या हुआ. दामूकाका भी तो नौकर ही था. सरला के साथ भी दामिनी सोई थी और सरला भी तो नौकरानी थी.

सवाल : पर वो एक ठकुराइन है

जवाब : तो क्या हुआ. जब उसका भाई घर की नौकरानी को ठोक सकता है तो वो क्यूँ नही. और आज से पहले कौन सा उसने इस बारे में सोचा था.

सवाल : और ठाकुर साहब? उनसे तो वो प्यार करती थी.

जवाब : तो क्या हुआ? उस रात दामिनी के कहने पर जब ठाकुर ने सरला को ठोका था तब उन्होने तो ऐसा कुछ नही सोचा

सवाल : किसी को पता लगा तो

जवाब : बबलू उससे डरता है. उसकी मज़ाल नही के किसी से कुछ कहे. और फिर वो तो गूंगा है. चाहे भी तो कुछ कह नही सकता

दामिनी अपने सवाल जवाब में ही उलझी हुई थी के टीवी पर गाना ख़तम हो गया. बबलू का ध्यान टीवी से हटा तो उसको एहसास हो गया के पिछे कोई खड़ा है. पलटा तो दामिनी को देखकर वो डर से काँप उठा. फ़ौरन खड़ा हो गया. उसको इतना भी होश नही रहा के उसका पाजामा नीचे था. बस उसने जल्दी से अपने दोनो हाथ जोड़ दिए.

दामिनी के दिल ने जैसे फ़ैसला कर लिया. वो आगे बढ़ी. उसे करीब आता देख बबलू और भी डर से काँपने लगा. आँखो से आँसू तक गिर पड़े.

दामिनी चुपचाप उसके करीब आई और कुछ भी नही कहा. एक पल चंदे की आँखो में देखा और हाथ से उसका लिंग पकड़ लिया.

दामिनी का हाथ लिंग पर पड़ते ही बबलू उच्छल पड़ा और 2 कदम पिछे को हो गया. दामिनी भी उसके साथ साथी ही आगे को बढ़ी और फिर से बबलू का लिंग पकड़ लिया. डर के मारे बबलू का लिंग बिल्कुल बैठा हुआ था. दामिनी ने थोड़ी देर पाजामे के उपेर से लिंग को सहलाया और फिर धीरे से हाथ बबलू के कुर्ते के अंदर डाल कर उसका लिंग पकड़ लिया.

बबलू ने इस बार फिर से पिछे होने की कोशिश की पर दामिनी ने उसका लिंग अपनी मुट्ठी में पकड़ रखा था इसलिए पिछे हो नही पाया. वो परेशान नज़र से दामिनी की तरफ देखने लगा.

दामिनी ने एक बार उसकी तरफ देखा और फिर अपने दोनो तरफ नज़र घुमाई. उसने बबलू का लिंग छोड़ा और उसे अपना पाजामा उपेर करने को कहा. बबलू ने जल्दी से अपना पाजामा उपेर करके बाँध लिया और फिर से अपने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया.

दामिनी ने उसका एक हाथ पकड़ा और उसे लगभग खींचते हुए अपने कमरे में लाई. दरवाज़ा बंद करने के बाद दामिनी बबलू की तरफ बढ़ी ही थी के रुक कर मुस्कुराइ. उसे कजरी के कही वो बात याद आ गयी जब उसने ये बताया था के बबलू कह रहा था रात बेसमेंट में मज़ा नही आया. दामिनी बबलू की तरफ बढ़ी और उसको धक्का देकर बिस्तर पर गिरा दिया.बबलू बिस्तर पर गिरते ही दोबारा उठने लगा पर दामिनी ने उसको लेट रहने का इशारा किया. बबलू फिर बिस्तर पर लेट गया.

दामिनी अपनी अलमारी की तरफ बढ़ी और उसमें से अपने चार दुपट्टे निकाल लाई. बबलू अब भी उसको हैरान नज़र से देख रहा था. दामिनी उसके करीब आई और बिस्तर पर चढ़कर उसका कुर्ता उतारने लगी.बबलू ने मना करना चाहा तो उसने उसको घूरके देखा और बबलू ने अपने हाथ उपेर उठा दिया.

कुर्ता उतेर जाने के बाद दामिनी ने इशारे से बबलू को अपने दोनो हाथ उपेर करने को कहा जो उसने कर दिए. दामिनी ने मुस्कुराते हुए उसका एक हाथ पकड़ा और अपने दुपट्टे से उसका हाथ बिस्तर के कोने पर बाँध दिया. यही हाल उसने उसके दूसरे हाथ और फिर उसकी टाँगो का भी किया. अब बबलू बिस्तर पर पूरी तरह से बँधा हुआ पड़ा था.

जब दामिनी को यकीन हो गया के बबलू चाहकर भी नही हिल सकता तो वो उठकर सीधी खड़ी हुई. उसने महसूस किया के बबलू कमरे में नज़र घूमकर कुछ ढूँदने की कोशिश कर रहा है. जब दामिनी ने उसकी तरफ देखा तो बबलू ने अपने होंठ हिलाए. आवाज़ तो नही आई पर होंठ पढ़कर दामिनी समझ गयी के वो पुच्छ रहा है के कजरी कहाँ है. उसे याद आया के कजरी ने बबलू को ये कह रखा है के वो रात को दामिनी के साथ सोती है. दामिनी ने अपने कमरे के बीच के दरवाज़े की तरफ इशारा किया और कहा के कजरी उस तरफ दूसरे कमरे में है.

इशारा करके वो उठ खड़ी हुई. बिस्तर पर खड़े खड़े ही उसने अपनी नाइटी उपेर खींची और उतारकर फेंक दी. बबलू उसके नंगे जिस्म को घूरता ही रह गया. बड़ी बड़ी स्तनया, भरा हुआ जिस्म, साफ की हुई योनि, बबलू की नज़र जैसे दामिनी के जिस्म का एक्स्रे कर रही थी. दामिनी एक पल के लिए यूँ ही बिस्तर पर खड़ी रही और बबलू को अपनी तरफ घूर्ने दिया.

थोड़ी देर बाद वो झुकी और अपनी दोनो स्तन लाकर बबलू के मुँह पर दबा दी. बबलू का पूरा चेहरा उसकी स्तनों के बीच जैसे खो सा गया. दामिनी को इस सब में एक अजीब सा मज़ा आ रहा था. आज से पहले वो जितनी बार भी ठुकी थी, वो ठुक रही होती थी पर आज ऐसा लगा रहा था जैसे के वो खुद चुड़वा रही है. वो कंट्रोल में है. बिस्तर पर कोई और उसके जिस्म से नही खेल रहा बल्कि वो खुद एक मर्दाना जिस्म से खेल रही है.

स्तनों को थोड़ी देर बबलू के चेहरे पर रगड़ने के बाद वो थोड़ा सा उपेर हुई और अपने निपल्स उसके होंठों पर लगाने लगी. बबलू ने निपल अपने मुँह में लेने के लिए जैसे ही मुँह खोला दामिनी ने अपनी स्तन पिछे कर ली. फिर वो बार बार ऐसा ही करती. स्तन बबलू के मुँह के करीब लाती और जैसे ही वो निपल मुँह में लेने लगता वो पिछे को हो जाती. बबलू जैसे बोखला सा रहा था. वो चाहकर भी कुछ नही कर पा रहा था. उसके दोनो हाथ मज़बूती से बँधे हुए थे.

दामिनी थोडा नीचे खिसकी और अपनी स्तन बबलू के सीने पर रगड़ने लगी. एक हाथ से उसने बबलू के पाजामे को खोलना शुरू किया और खींचकर नीचे कर दिया. बबलू का लिंग फिर से खड़ा हो चुका था जिसे दामिनी अपने हाथ में पकड़कर उपेर नीचे करने लगी. दामिनी के हाथ के साथ साथ बबलू की कमर भी उपेर नीचे हो रही थी. दामिनी का दूसरा हाथ खुद उसकी योनि पर था.

जब उससे और बर्दाश्त नही हुआ तो वो उठ खड़ी हुई और बबलू के उपेर आ गयी. एक पल के लिए उसने नीचे होकर लिंग योनि में लेने की सोची पर फिर इरादा बदलकर आगे को हुई और ठीक बबलू के चेहरे पर आकर खड़ी हो गयी. बबलू के चेहरा ठीक उसकी टाँगो के बीच था और नज़र दामिनी की योनि पर. दामिनी नीचे हुई और अपनी योनि लाकर बबलू के होंठो पर रख दी.

वो फ़ौरन पहचान गयी के बबलू ने आजसे पहले योनि पर मुँह नही लगाया था और शायद उसको पसंद भी नही था क्यूंकी वो अपना चेहरा इधर उधर करने की कोशिश कर रहा था पर दामिनी की भरी हुई नितंब में जैसे उसका पूरा चेहरा दफ़न हो गया था. दामिनी को इसमें एक अलग ही मज़ा सा आ रहा था. उसे महसूस हो रहा था के वो आज जो चाहे कर सकती है, जैसे चाहे अपने जिस्म को ठंडा कर सकती है. उसने अपनी नितंब आगे पिछे करनी शुरू की और योनि बबलू के मुँह पर रगड़ने लगी. उसकी साँस भारी हो चली थी और मुँह से आहह आहह की आवाज़ आनी शुरू हो गयी थी.

कुछ देर यही खेल खेलने के बाद वो फिर से खड़ी हुई और पिछे होकर फिर से नीचे बैठी पर इस बार उसकी योनि बबलू के मुँह के बजाय उसके लिंग पर आई जो बहुत आसानी के साथ अंदर घुसता चला गया. लिंग के अंदर जाते ही दामिनी के मुँह से एक लंबी आह निकल गयी. उसे लगा जैसे किसी प्यासे को पानी मिल गया हो. वो कुछ देर तक यूँ ही बैठी रही, लिंग को योनि में महसूस करती रही, और फिर उपेर नीचे हिलना शुरू कर दिया. बबलू का लिंग ठाकुर के लिंग के मुक़ाबले कुछ भी नही था और दामिनी को इस बात की कमी खल रही थी पर इस वक़्त उसका वो हाल था के जो मिले वो अच्छा. वो किसी पागल की तरह बबलू के उपेर कूदने लगी. वो आगे को झुकती, अपने निपल्स बबलू के मुँह पर रगड़ती तो कभी उसकी स्तन पर. लिंग का योनि में अंदर बाहर होना बराबर जारी रहा.

थोड़ी देर बाद दामिनी के दिमाग़ में एक ख्याल आया. उसके पति और खुद ठाकुर ने कई बार उसकी नितंब मारने की कोशिश की थी पर दामिनी ने करने नही दिया था. बबलू का लिंग

दोनो के मुक़ाबले छोटा था क्यूंकी वो खुद अभी बच्चा था. दामिनी ने कोशिश करने की सोची. वो थोड़ा सा उपेर हुई और लिंग योनि से निकालकर हाथ में पकड़ लियाबबलू ने उसकी तरफ ऐसे देखा जैसे पुच्छ रहा हो के हो गया क्या? दामिनी मुस्कुराइ, उसके लिंग को अपनी नितंब पर रखा और धीरे धीरे नीचे होने की कोशिश करने लगी.

वो नीचे को होती और लिंग जैसे ही नितंब में जाता उसके जिस्म में दर्द होना शुरू हो जाता और वो फिर उपेर हो जाती. कई जब कई बार कोशिश करने पर भी वो लिंग ले नही सकी तो उसने गुस्से में एक लंबी साँस खींची, अपनी आँखें बंद की, लिंग नितंब पर रखा और नीचे बैठती चली गयी.

दर्द की एक ल़हेर उसके जिस्म में उपेर से नीचे तक दौड़ गयी पर वो रुकी नही. अगले ही पल उसकी नितंब नीचे बबलू की जाँघ से मिल गयी और लिंग पूरी तरह नितंब में समा गया. दामिनी से दर्द बर्दाश्त नही हो रहा था और आँखो से आँसू बह रहे थे. वो अभी रुक कर साँस ही ले रही थी के नीचे से बबलू ने नीचे से कमर झटक कर नितंब पर एक धक्का मारा. दामिनी की चीख निकल गयी.

भाग - 21

अगले दिन दामिनी की आँख जल्दी खुल गयी. वो अब भी बिस्तर पर नग्न पड़ी थी और नितंब में अब तक दर्द हो रहा था. कल रात उसने उस वक़्त तो नितंब मारा ली थी क्यूंकी थोड़ी देर बाद मज़ा आने लगा था पर बबलू के जाने के बाद उसका सोना मुश्किल हो गया था. इतना दर्द तो उसे तब भी नही हुआ था जब वो शादी के बाद पहली बार ठुकी थी.वो बिस्तर से उठके नीचे आई और सबसे पहले लक्ष्मण प्रसाद को फोन करने की सोची जिसे उसने आज घर आने को कहा.

"मैं बस अभी निकल ही रहा था" लक्ष्मण प्रसाद ने कहा

"आप हवेली ना आएँ" दामिनी ने कहा

"जी?" लक्ष्मण प्रसाद की समझ ना आया

"आप सीधे राजवर्धन सिंग के घर पहुँचे. मैं दोपहर 12 बजे आपसे वहीं मिलूंगी" दामिनी ने कहा और फोन रख दिया

तेज सुबह सुबह ही कहीं गायब हो गया था और मनीष अब तक सो रहा था. सरला और कजरी दामिनी को किचन में मिले.

कजरी अब भी अपने पुराने कपड़े में ही खड़ी थी जबकि सरला ने दामिनी की दिए हुए कपड़े पहेन रखे थे.

कजरी को देखकर दामिनी के दिल में ख्याल आया के उसे भी कुछ कपड़े दे दे पर सवाल था के किसके. सोचा तो उसके दिमाग़ में अपनी सास का नाम आया. शकुंतला देवी के मरने के बाद से उनके कपड़े सब यूँ ही रखे थे.

दामिनी उस कमरे में पहुँची जिस में शकुंतला देवी ने अपने आखरी कुछ दिन गुज़ारे थे. बीमार होने के बाद उन्हें इस कमरे में शिफ्ट कर दिया गया था और उनका सारा समान भी यहीं था. दामिनी कमरे में आई और कपड़े उठा उठाकर देखने लगी

कुछ कपड़े पसंद करने के बाद वो कमरे से निकल ही रही थी के उसे वो डिब्बा नज़र आया जिसमें शकुंतला देवी अपनी दवाई रखा करती थी. कुछ गोलियाँ डिब्बे में अब भी थी. अब उनका कुछ काम नही था ये सोचकर दामिनी ने डिब्बा उठाया और खोला.

उसमें नीचे एक पेपर मॉड्कर रखा हुआ था और उसपर कुछ गोलियाँ रखी हुई थी. दामिनी ने

डिब्बा उलटकर दवाइयाँ बिस्तर पर गिराई. गोलियों के साथ ही अंदर रखा वो काग़ज़ भी निकालकर बिस्तर पर गिर पड़ा और तब दामिनी का ध्यान पड़ा के वो असल में एक काग़ज़ नही बल्कि एक तस्वीर थी.

तस्वीर ब्लॅक आंड वाइट थी. उसमें श्यामला एक लड़के के साथ खड़ी हुई थी. लड़का कौन था ये दामिनी पहचान नही सकी पर सबसे ज़्यादा हैरत उसे श्यामला के कपड़ो पर हुई. श्यामला कभी इस तरह के कपड़े नही पेहेन्ति थी और तब दामिनी ने ध्यान से देखा तो उसको एहसास हुआ को वो लड़की श्यामला नही बल्कि खुद शकुंतला देवी थी. ये उनकी जवानी के दीनो की तस्वीर थी. श्यामला शकल सूरत से बिल्कुल अपनी माँ पर गयी थी इसलिए कोई भी इस तस्वीर को देखकर ये धोखा खा सकता था के तस्वीर में श्यामला खड़ी है.

दामिनी का ध्यान शकुंतला देवी के साथ खड़े लड़के पर गया. जहाँ तक उसको पता था शकुंतला देवी का कोई भाई नही था और फोटो में खड़ा लड़का ठाकुर साहब तो बिल्कुल नही थे. लड़का शकल सूरत से खूबसूरत था पर शकुंतला देवी से हाइट में छोटा था. दामिनी ने तस्वीर उठाकर अपने पास रख ली और कमरे से बाहर निकल आई.

बाहर आकर उसने इंस्पेक्टर पठाण को फोन किया और उसको भी हवेली आने के बजाय राजवर्धन सिंग के घर पर मिलने की हिदायत दी.मनीष अब तक सो रहा था. दामिनी ने उसे जगाना चाहा पर फिर अपनी सोच बदलकर तैय्यार हुई और खुद ही अकेली कार लेकर निकल पड़ी.

थोड़ी देर बाद वो हॉस्पिटल पहुँची.ठाकुर अब भी बेहोश थे. दामूकाका वहीं बेड के पास बैठा हुआ था. दामिनी को देखकर वो खड़ा हुआ.दामिनी वो तस्वीर अपने साथ लाई थी जो उसे शकुंतला देवी के कमरे में मिली थी. वो जानती थी के अगर कोई उसको तस्वीर में खड़े लड़के के बारे में बता सकता था तो वो एक दामूकाका ही था.

दामिनी ने तस्वीर निकालकर दामूकाका को दिखाई."कौन है ये आदमी काका?" उसने दामूकाका से पूछा

तस्वीर देखते ही दामूकाका की आँखें फेल गयी."आपको ये कहाँ मिली?" दामूकाका ने पूछा

"माँ के कमरे से" दामिनी अपनी सास को माँ कहकर ही बुलाती थी "कौन है ये?"

"था एक बदनसीब" दामूकाका ने कहा "जिसकी मौत इस हवेली में लिखी थी और उसको यहाँ खींच लाई थी"

"मतलब?" दामिनी ने पूछा

"ये ठकुराइन के बचपन का दोस्त था. ये लोग साथ में पले बढ़े थे. शकुंतला देवी इसको अपने

भाई की तरह मनती थी पर इसके दिल में शायद कुछ और ही था. जब उनकी शादी ठाकुर साहब के साथ हुई तो इसने बड़ा बवाल किया था सुना है पर शादी रोक नही पाया क्यूंकी शकुंतला देवी खुद ऐसा नही चाहती थी."

"फिर?" दामिनी ने पूछा

"फिर शादी हो गयी और सब इस बात को भूल गये. ठाकुर साहब को तो इस बात की खबर भी उस दिन लगी जब ये हवेली में आ पहुँचा"

"हवेली?"दामिनी बोली

"हां" दामूकाका ने कहा "शादी के कोई 1 महीने बाद की बात है. एक दिन ये हवेली के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ और इसकी बदक़िस्मती के सबसे पहले ठाकुर साहब से ही टकरा गया. उनसे गुहार करने लगा के वो ठकुराइन से प्यार करता है और उनके बिना जी नही सकता. और जैसे इसके दिल की मुराद पूरी हो गयी"

दामिनी खामोश खड़ी सुन रही थी

"ठाकुर साहब ने इसे इतना मारा के इसने वहीं दम तोड़ दिया. लोग प्यार में जान देते हैं मैने सुना था पर उस दिन देखा पहली बार था" दामूकाका ने कहा

दामिनी को अपने कानो पर यकीन नही हो रहा था. उसे समझ नही आ रहा था के क्या कहे और क्या सोचे. उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली. दोपहर होने को थी. उसने फ़ैसला किया के तस्वीर के बारे में बाद में सोचेगी और वहाँ से निकालकर राजवर्धन सिंग के घर की तरफ बढ़ी.

12 बजने में थोड़ी ही देर थी जब दामिनी ने राजवर्धन सिंग के घर के बाहर कार रोकी. लक्ष्मण प्रसाद और इंस्पेक्टर पठाण बाहर ही खड़े उसका इंतेज़ार कर रहे थे.

"यहाँ क्यूँ बुलाया?" पठाण ने दामिनी को देखते हुए पूछा

"सोचा के जो मेरा है वो वापिस ले लिया जाए" दामिनी ने कहा तो लक्ष्मण प्रसाद और पठाण दोनो उसकी तरफ हैरानी से देखने लगे

"आप ही ने कहा था ना के मेरे पति की मौत होते ही सब मेरे नाम हो गया था.पवर ऑफ अटर्नी बेकार थी तो मतलब के राजवर्धन सिंग ने जिस हक से ये घर खरीदा वो भी ख़तम था. तो मतलब के ये घर मेरा हुआ?" दामिनी ने कहा तो पठाण और लक्ष्मण प्रसाद दोनो मुस्कुरा दिए और उसके साथ राजवर्धन सिंग के घर के गेट की तरफ बढ़े.

वॉचमन ने बताया के राजवर्धन सिंग घर पर ही था और अंदर जाकर राजवर्धन सिंग को उनके आने की खबर करके आया. कुछ देर बाद वो तीनो राजवर्धन सिंग के सामने बैठे थे.

राजवर्धन सिंग तकरीबन वीरभद्र की ही उमर का था. शकल पर वही ठाकुरों वाली अकड़. बैठा भी ऐसे जैसे कोई राजा अपने महेल में बैठा हो.

दामिनी को हैरत थी के वो कभी राजवर्धन सिंग से मिली नही थी. वो उसकी शादी से पहले ही अलग घर बनाकर रहने लगा था पर कभी किसी ने उसका ज़िक्र दामिनी के सामने नही किया था और ना ही दामिनी ने उसको अपनी शादी में देखा था जबकि वो उसके पति का सबसे करीबी था. पर इसका दोष उसने खुद को ही दिया. उन दीनो तो उसे अपनी पति तक की खबर नई होती थी, राजवर्धन सिंग की क्या होती.

"कहिए" उसने दामिनी को देखते हुए पूछा

"गेट आउट" दामिनी ने उसे देखते हुए कहा

"क्या?" राजवर्धन सिंग ने ऐसे पूछा जैसे अँग्रेज़ी समझ ही ना आती हो

"मेरे घर से अभी इसी वक़्त बाहर निकल जाओ" दामिनी ने कहा

"आपके घर से?" राजवर्धन सिंग ने हस्ते हुए पूछा

दामिनी ने लक्ष्मण प्रसाद की तरफ देखा. लक्ष्मण प्रसाद आगे बढ़ा और वो सारी बातें राजवर्धन सिंग को बताने लगा जो उसने पहले दामिनी को बताया था. धीरे धीरे राजवर्धन सिंग की समझ आया के दामिनी किस हक से उसके घर को अपना कह रही थी और वो परेशान अपने सामने रखे पेपर्स को देखने लगा.

"और अगर मैं जाने से इनकार कर दूँ तो?" राजवर्धन सिंग ने पेपर्स एक तरफ करते हुए पूछा

दामिनी ने खामोशी से इंस्पेक्टर पठाण की तरफ देखा. वो जानती थी के राजवर्धन सिंग ऐसा बोल सकता है इसलिए पठाण को साथ लाई थी

"मैं ये मामला अदालत में ले जाऊँगा. ऐसे कैसे घर आपका हो गया? मैं अपने वकील को बुलाता हूँ" राजवर्धन सिंग ने फोन की तरफ हाथ बढ़ाया

"बाहर एक एसटीडी बूथ है. वहाँ से करना. फिलहाल घर से बाहर निकल" पठाण बीचे में बोल पड़ा

"तमीज़ से बात करो" राजवर्धन सिंग पठाण पर चिल्लाते हुए बोला

"ये देखा है?" पठाण ने अपना हाथ आगे किए "एक कान के नीचे पड़ा ना तो तमीज़ और कमीज़ में फरक समझ नही आएगा तुझे. चल निकल"

राजवर्धन सिंग चुप हो गया. वो उठकर घर के अंदर की तरफ जाने लगा."वहाँ कहाँ जा रहा है?" पठाण फिर बोला "दरवाज़ा उस तरफ है"

"अपना कुछ समान लेने जा रहा हूँ" राजवर्धन सिंग रुकते हुए बोला

"वो समान भी मेरे पैसो से आया था तो वो भी मेरा हुआ. अब इससे पहले के मैं ये कपड़े जो तुमने पहेन रखे हैं ये भी उतरवा लूँ, निकल जाओ" दामिनी खड़ी होते हुए बोली

"फिलहाल तो जा रहा हूँ पर इतना आसान नही होगा आपके लिए मुझे हराना" राजवर्धन सिंग ने कहा तो दामिनी मुस्कुराने लगी

"आपको क्या लगता है के ये सब उस नीच ठाकुर का है जो अपने ही भाई को दौलत के लिए मार डाले? जो साले अपने घर की नौकरानी को भी नही छोड़ते?" राजवर्धन सिंग ने दामिनी के करीब आते हुए कहा.

उसकी इस हरकत पर पठाण उसकी तरफ बढ़ा पर दामिनी ने उसको हाथ के इशारे से रोक दिया

"क्या मतलब?" उसने राजवर्धन सिंग से पूछा "क्या बकवास कर रहे हो?"

"सच कह रहा हूँ" राजवर्धन सिंग ने कहा "आपको शायद नही पता पर मैने देखा है. वो दामूकाका की बीवी, उसे ठाकुर के खानदान ने अपनी रखैल बना रखा था. ज़बरदस्ती सुबह शाम रगड़ते थे उसे. ठाकुर, तेज, शमशेर और खुद आपके पति वीरभद्र सिंग जी"

"दामूकाका की बीवी?" दामिनी हैरान हुई

"जी हां" तेज बोला "जब उस बेचारी ने जाकर सब कुछ दामूकाका या आपकी सास को बता देने की धमकी दी तो गायब हो गयी और बात ये फेला दी गयी के अपने किसी आशिक़ के साथ भाग गयी"

दामिनी के दिमाग़ की बत्तियाँ जैसे एक एक करके जलने लगी. हवेली में मिली लाश जो श्यामला की नही थी, शमशेर के कमरे में मिला वो ब्रा. खुद पठाण भी चुप खड़ा सुन रहा था.

"तुम्हें ये कैसे पता?" दामिनी ने पूछा

"हवेली में बचपन गुज़ारा है मैने. देखा है सब अपनी आँखो से. जैसे ही वो हवेली में काम करने आई तो सबसे पहले ठाकुर की नज़र उस पर पड़ी तो पहले उन्होने काम किया. फिर उनकी देखा देखी उनके सबसे बड़े बेटे वीरभद्र सिंग जिन्हें दुनिया भगवान राम का अवतार समझती थी उन्होने अपना सिक्का चला दिया बेचारी पर. जब बड़े भाई ने मुँह मार लिया तो बाकी के दोनो कहाँ पिछे रहने वाले थे. मौका मिलते ही तेज और शमशेर ने फ़ायदा उठा लिया"

दामिनी की आँखों के आगे अंधेरा सा च्याने लगा."बकवास कर रहे हो तुम" उसने राजवर्धन सिंग से कहा

"सच बोल रहा हूँ मैं. अपनी हवस संभाली नही जाती इन लोगों से, फिर चाहे वो औरत की हो या दौलत की और इसी के चलते वीरभद्र भी मरा.आपसी लड़ाई थी वो इन लोगों की दौलत के पिछे. एक भाई ने दूसरे को मारा है" राजवर्धन सिंग ने कहा

पर दामिनी का दिमाग़ उस वक़्त दूसरी ही तरफ चल रहा था. उसे मनीष की कही बातें याद आ रही थी जो श्यामला ने उसको कही थी.

"बस जिस्म की आग बुझनी चाहिए. फिर नज़र नही आता के कौन अपने घर का है और कौन ....."

उसे अपने पति का वो रूप याद आया जो वो रोज़ रात को बिस्तर पर देखा करती थी. किस तरह से वो उसको नग्न करते ही इंसान से कुछ और ही बन जाता था. उसे याद आया के किस आसानी से कजरी तेज के बिस्तर पर पहुँच गयी थी और तेज ने मौका मिलते ही उसको ठोक लिया था. उसको याद आया के किस आसानी से उस रात ठाकुर ने उसके सामने ही सरला को ठोक लिया था. ज़रा भी नही सोचा था दोनो ने के वो एक मामूली नौकरानी है और वो वहाँ के ठाकुर. पर क्या कोई इतना गिर सकता था के अपनी ही बहेन के साथ? सोचकर दामिनी का दिमाग़ फटने लगा. तो ये वजह थी सरला के गायब होने की. अपने भाई को गोली मारकर छुपति फिर रही थी.

थोड़ी देर बाद पठाण और दामिनी वापिस हवेली में दाखिल हुए. राजवर्धन के जाने के बाद दामिनी ने घर पर ताला लगा दिया था. लक्ष्मण प्रसाद वापिस शहेर चला गया था और पठाण उसके साथ वापिस हवेली तक आया था.

भाग - 22

दामिनी के दिमाग़ में लाखों बातें एक साथ चल रही थी. वो समझ नही पाई के कैसे उसको ये सब बातें पहले समझ नही आई. श्यामला का यूँ अपने ही घर में चुप चुप रहना. अगर उसके अपने भाई ही उसका फ़ायदा उठाएँ बेचारी अपने ही घर में भीगी बिल्ली की तरह तो रहेगी ही. वो हवेली में मिली लाश. दामिनी को उसी वक़्त समझ जाना चाहिए था के ये लाश किसकी है जब कजरी ने उसको दामूकाका की बीवी के बारे में बताया था.

शमशेर के कमरे में मिली ब्रा, बेसमेंट में रखे बॉक्स में वो कपड़े, सब उस बेचारी के ही थी जिसको मारकर यहाँ दफ़ना गया था. उसको हैरानी थी के उसको तभी शक क्यूँ नही हुआ जब ठाकुर ने ये कहा के उन्हें नही पता के वो लाश किसकी थी. ऐसा कैसे हो सकता है के घर के मलिक को ही ना पता हो के लाश कहाँ से आई. उस वक़्त हवेली के बाहर गार्ड्स होते थे, हवेली के कॉंपाउंड में रात को कुत्ते छोड़ दिए जाते थे तो ये ना मुमकिन था के कोई बाहर का आकर ये काम कर जाता. वो खुद अपनी वासना में इतनी खोई हुई थी के उसको एहसास ही नही हुआ के कितनी आसानी से उसने सरला और कजरी को ठाकुर और तेज के बिस्तर पर पहुँचा दिया था.

हवेली के अंदर पहुँच कर उसने कजरी और सरला को आवाज़ लगाई पर दोनो कहीं दिखाई नही दे रही थी."ये दोनो कहाँ गयी" बैठते हुए दामिनी ने कहा. पठाण उसके सामने रखी एक कुर्सी पर बैठ गया

"क्या लगता है कौन है आपके पति के खून के पिछे ? तेज?" पठाण ने कहा तो दामिनी ने इनकार में सर हिलाया

"श्यामला." दामिनी ने कहा तो पठाण ने हैरानी से उसको तरफ देखा

"कल आपके जाने के बाद मनीष से बात हुई थी मेरी. काफ़ी परेशन थी वो मेरे पति के मरने से पहले और गन उसने मनीष से ली थी" दामिनी ने कहा

"पर मुझे तो कहा गया था के ....." पठाण ने कल की मनीष की बताई बात को याद करते हुए कहा

"झूठ बोल रहा था. गन उसने श्यामला को दी थी. बाद में बताया मुझे" दामिनी ने आँखें बंद करते हुए कहा

"सोचा नही था के ये सब ऐसे ख़तम होगा. मैं तो तेज पर शक कर रहा था और एक वक़्त पर तो मुझे आप पर भी शक हुआ था. पर श्यामला पर कभी नही" पठाण ने कहा

"एक बात समझ नही आई" दामिनी ने आँखें खोलते हुए कहा "आपका मेरे पति से क्या रिश्ता था? किस एहसान की बात कर रहे थे?"

"बचपन में इसी गाओं में रहा करता था मैं. मेरे अब्बू यहीं के थे" पठाण मुस्कुराते हुए बोला "ठाकुर साहब के खेतों में काम करते थे. एक बार ठाकुर साहब खेतों में शिकार कर रहे थे. वो जिस परिंदे पर निशाना लगा रहे थे मुझे उसपर तरस आ गया और मैने शोर मचाकर उसको

उड़ा दिया. बस फिर क्या था. ठाकुर को गुस्सा आया और उन्होने बंदूक मेरी तरफ घुमा दी. उस वक़्त आपके पति वहाँ थे. उन्होने बचा लिया वरना उस दिन हो गया था मेरा काम"

दामिनी भी जवाब में मुस्कुराइ

"उसके बाद हम लोगों ने गाओं छोड़ दिया. मैं शहेर में पाला बढ़ा, पोलीस जोइन की और उस बात को भूल गया. जब मेरा यहाँ ट्रान्स्फर हुआ तो मैने सोचा के आपके पति से मिलुगा पर यहाँ आके पता चला के उन्हें मरे तो 10 साल हो चुके हैं" पठाण ने कहा

"नही शायद उन्हें मरे एक अरसा हो गया था. आज एक नया ही रूप देखा मैने ठाकुर वीरभद्र सिंग का जो मेरे पति का तो बिल्कुल नही था. जो आदमी इस हद तक गिर जाए उसको अपना पति तो नही कह सकती मैं" दामिनी ने कहा "सच कहूँ तो आज इस हवेली के हर आदमी का एक नया चेहरा देखा. मेरी सास का भी"

"आपकी सास का? वो तो मर चुकी हैं ना?" पठाण ने पूछा

दामिनी ने अपने पर्स से वो तस्वीर निकली और पठाण को थमा दी।"सुना है उनका भी कोई चाहने वाला था. यही जो इस तस्वीर में है. ये भी ठाकुर साहब के गुस्से की बलि चढ़ गया था." दामिनी ने फिर आँखें बंद कर ली

"पर चलिए आपको आपके सवालों के जवाब तो मिले" पठाण अब भी तस्वीर को देख रहा था

"जवाब तो मिल गये पर अब समझ ये नही आ रहा के इन जवाबों के साथ आगे की ज़िंदगी कैसे गुज़रेगी" दामिनी ने फिर आँखें खोलकर पठाण की तरफ देखा. वो अब भी तस्वीर को घूर रहा था.

"ऐसे क्या देख रहे हैं?" दामिनी ने पूछा

"ये श्यामला नही है?" पठाण ने कहा तो दामिनी हस्ने लगी

"मैने भी यही सोचा था पर ये मेरी सास की जवानी की तस्वीर है. श्यामला बिल्कुल उन्ही पर गयी थी" दामिनी बोली

"पता नही क्यूँ ऐसा लग रहा है के मैने इस आदमी कोई भी कहीं देखा है" पठाण तस्वीर में खड़े आदमी की तरफ इशारा करता हुआ बोला

"इसको मरे तो एक अरसा हो चुका है" दामिनी बोली " और सच कहूँ तो कुछ सवाल अब भी ऐसे हैं जिनका जवाब मुझे समझ नही आ रहा"

"जैसे के?" पठाण ने पूछा

"जैसे के रात को हवेली में आने वाला आदमी कौन था, जैसे की श्यामला के साथ ट्यूबिवेल पर उस दिन दूसरा आदमी कौन था, जैसे की जो चाबियाँ मुझे हवेली में मिली उनकी असली किसके पास है और एक चाभी शकुंतला देवी के पास क्यूँ थी जबकि वो कभी खेतों की तरफ जाती ही नही थी" दामिनी ने कहा

पठाण ने हैरत से उसकी तरफ देखा तो दामिनी को याद आया के वो इस बारे में कुछ नही जानता था."बताती हूँ" उसने कहना शुरू किया ही था के पठाण ने उसको हाथ के इशारे से रोक दिया. उसने तस्वीर सामने टेबल पर रखी, जेब से पेन निकाला, तस्वीर में खड़े आदमी के

चेहरे पर थोड़ी सी दाढ़ी बनाई, हल्के से नाक ने नीचे बाल बनाए, सर के बाल थोड़े लंबे किए और चेहरे पर झुर्रियाँ डाली और तस्वीर दामिनी की तरफ घुमाई.

"पहचानती हैं इसे?" पठाण ने पूछा

दामिनी ने तस्वीर की तरफ देखा तो उसके पैरों तले ज़मीन जैसे हिलने लगी. तस्वीर में शकुंतला देवी के साथ दामूकाका खड़ा था.

"अब जहाँ तक मेरा ख्याल है सिर्फ़ एक सवाल बाकी रह गया है. श्यामला कहाँ है?" पठाण ने कहा

"मर चुकी है. हवेली के पिछे जहाँ मेरी बीवी की लाश मिली थी वहीं पास ही उसकी भी लाश दफ़न है" पीछे से आवाज़ आई तो पठाण और दामिनी दोनो पलते. सामने दामूकाका खड़ा था.

पर ये दामूकाका वो नही था जिसे दामिनी ने हमेशा देखा था. सामने एक बुद्धा आदमी तो खड़ा था पर अब उसकी कमर झुकी हुई नही थी, अब वो शकल से बीमार नही लग रहा था और ना ही कमज़ोर. सामने जो दामूकाका खड़ा था वो सीधा खड़ा था और उसके हाथ में एक गन थी.

"आप यहाँ? ठाकुर साहब के साथ कौन है?" दामिनी ने पूछा

"कोई नही क्यूंकी अब उसकी ज़रूरत नही. ठाकुर साहब नही रहे. गुज़र गये" दामूकाका ने कहा

उसके ये कहते ही पठाण फ़ौरन हरकत में आया. उसका हाथ उसकी गन की तरफ गया ही था के दामूकाका के हाथ में थमी गन के मुँह पठाण की तरफ मुड़ा, एक गोली चली और अगले पल दामिनी के कदमों के पास पठाण की लाश पड़ी थी.

दामिनी चीखने लगी और दामूकाका खड़ा हुआ उसको देखने लगा. दामिनी को उस वक़्त जो भी नाम याद आया उसने चिल्ला दिया. कजरी, सरला, बबलू, तेज, मनीष पर कोई नही आया.

उसने घबराकर चारों तरफ देखा और जब कोई नही दिखा तो उसने फिर दामूकाका पर नज़र डाली.

"कजरी और सरला" दामूकाका ने बोला "वहाँ किचन में पड़ी हैं. तेज की लाश बाहर कॉपाउंड में पड़ी है, मेरे कमरे के पास. मनीष खून से सने अपने बिस्तर पर पड़ा है. वो तो बेचारा सोता ही रह गया. सोते सोते दिमाग़ में एक गोली घुसी और नींद हमेशा की नींद में बदल गयी"

दामूकाका दामिनी की तरफ बढ़ा तो दामिनी पिछे होकर फिर चिल्ल्लाने लगी.

"चिल्लओ" दामूकाका ने आराम से कहा "ये हवेली इतनी मनहूस है के किसी ने सुन भी लिया तो इस तरफ आएगा नही"

थोड़ी देर चिल्लाने के बाद दामिनी चुप हो गयी"क्यूँ?" उसने दामूकाका से पूछा

"क्यूँ?" दामूकाका बोला "क्यूंकी तुम अपने आपको झाँसी की रानी समझने लग गयी थी अचानक. मैं ये सब ऐसे नही चाहता था. मैं तो ठाकुर के खानदान को एक एक करके, सड़ सड़के, रिस रिसके मरते हुए देखना चाहता था. बची हुई इज़्ज़त को ख़तम होने के बाद मारना चाहता था. पर तुमने सारा खेल बिगाड़ दिया. क्या ज़रूरत थी वो तस्वीर दुनिया को दिखाते

हुए फिरने की?"

"पर क्यूँ?" दामिनी ने सवाल फिर दोहराया

"क्यूंकी बर्बाद किया था मुझे ठाकुर ने. सारी ज़िंदगी मैने एक नौकर बनके गुज़ार दी. प्यार करता था मैं शकुंतला से और वो मुझसे पर क्यूंकी मैं ग़रीब उनके घर के नौकर का बेटा था इसलिए उसकी शादी मुझसे हो नही सकती थी. हम दोनो भाग जाने के चक्कर में थे के जाने कहाँ से ये इंद्रदेव सिंग बीच में आ गया. ना शकुंतला कुछ कर सकी और ना मैं" दामूकाका गुस्से से चिल्लाते हुए बोला

"तो वो कहानी जो हॉस्पिटल में सुनाई थी?" दामिनी ने कहा

"झूठ थी. शादी के बाद मैने हार नही मानी. मैं शकुंतला के बिना ज़िंदा नही रह सकता था इसलिए यहाँ चला आया. पड़ा रहा एक नौकर बनके क्यूंकी यहाँ मुझे वो रोज़ नज़र आ जाती थी" दामूकाका ने कहा

"तो फिर ये सब क्यूँ?" दामिनी बोली

"2 वजह थी. पहली तो ये के इन्होने मेरी बीवी को मार दिया. शकुंतला के कहने पर मैने उस बेचारी से शादी की थी ताकि किसी को शक ना हो पर यहाँ लाकर तो मैने जैसे उसे मौत के मुँह में धकेल दिया. इन सबने उसे अपनी हवस का शिकार बनाया और फिर मारके पिछे ही दफ़ना दिया. जानती हो उसकी गर्दन पर तलवार से वार किसने किया था? तुम्हारे सबसे छहोटे देवर शमशेर ने जो उस वक़्त मुश्किल से 18-19 साल का था. और दूसरी वजह थी श्यामला. उसे पता चल गया था के वो मेरी बेटी है और सबको बता देना चाहती थी"

"आपकी बेटी?" दामिनी ने कहा

"हां मेरी बेटी थी वो. पर एक दिन उसने मुझे और शकुंतला को खेतों में नग्न हालत में देख लिया था और शकुंतला को उसको मजबूर होते हुए सब बताना पड़ा." दामूकाका की ये बात सुनते ही दामिनी को जैसे अपने बाकी सवालों के जवाब भी मिल गये.

टुबेवेल्ल पर कजरी के पति ने श्यामला और किसी आदमी को नही बल्कि शकुंतला देवी और दामूकाका को देखा था. क्यूंकी श्यामला की शकल शकुंतला देवी से मिलती थी इसलिए दूर से उसको लगा के श्यामला है क्यूंकी इस हालत में होने की उम्मीद एक जवान औरत से ही की जा सकती है, ना के एक जवान बेटी की माँ से. और इसलिए ट्यूबिवेल के कमरे की चाभी उसको शकुंतला देवी के पास से मिली थी. और यही वजह थी के श्यामला की शकल उसके भाइयों से नही मिलती थी. क्यूंकी वो ठाकुर की औलाद थी ही नही. जहाँ उसके चारों भाई बेहद खूबसूरत थे वहीं वो एक मामूली सी सूरत वाली थी क्यूंकी वो ठाकुर पर नही बल्कि अपनी माँ और घर के नौकर पर गयी थी.

"वो जो आदमी हवेली में रात को आता था" दामिनी ने पूछा

"झूठ था. मैने तो तुम्हें पहले दिन ही कहा था के तुम्हारे पति की मौत का राज़ इसी हवेली में है. मैं था इस हवेली में पर तुम देख नही सकी. शुरू से मैं तुम्हें वो दिखाता रहा जो तुम देखना चाहती थी."दामूकाका बोला

"और शमशेर?" दामिनी बोली

"उस साले को तो मैने श्यामला से पहले ही मार दिया था. उसकी लाश भी वहीं आस पास है जहाँ मेरी बीवी की लाश मिली थी." दामूकाका बोला

"श्यामला को आपने मारा था?" दामिनी को यकीन नही हुआ "अपनी बेटी को"

"तो क्या करता. वो खुद अपनी माँ को मारना चाहती थी जिसके लिए वो गन तुम्हारे भाई से लाई थी. ये गन" दामूकाका गन दामिनी को दिखता हुआ बोला

दामिनी को धीरे धीरे बाकी बात भी समझ आने लगी. दश्यामला अपनी माँ के बारे में बात कर रही थी ना की अपने बारे में जब उसने मनीष को ये कहा था के सबको बस जिस्म की भूख मिटानी है क्यूंकी उसने अपनी माँ को घर के नौकर के साथ नग्न हालत में देखा था. तब उसकी माँ ये भूल गयी थी के कौन अपने घर का उसका अपना पति है और कौन एक मामूली नौकर. इसलिए उसने मनीष को कहा था के वो उसके काबिल नही क्यूंकी मनीष एक ठाकुर था और वो एक नौकर की बेटी.

"ठाकुर साहब?" दामिनी ने पूछा

"अभी अपने हाथों से गला दबाके मारकर आया हूँ. यहाँ इरादा तो तेज को ख़तम करने का था पर पहले कमरे में मनीष मिल गया. तो उसी को निपटा दिया. गोली की आवाज़ से कजरी और सरला आई तो उन दोनो को भी मारना पड़ा. अभी मैं तेज को ढूँढ ही रहा था के बाहर से उसकी कार आती हुई दिखाई दी. साले की मौत सही वक़्त पर ले आई थी उसको यहाँ. मैं वही घर का बुद्धा नौकर बनके उसके पास गया, कमर झुकाए हुए और जैसे ही वो करीब आया, एक गोली उसके जिस्म में. खेल ख़तम"

"शमशेर और श्यामला के बारे में किसी को पता कैसे नही था?" दामिनी जैसे आखरी कुछ सवाल पुच्छ रही थी

"क्यूंकी उनको मैने रास्ते में मारा. क्या है के उन दोनो के साथ मैं उन्हें एरपोर्ट तक छोड़ने गया था. गाड़ी का ड्राइवर बनके. मेरा काम था उनको छोड़ना और गाड़ी वापिस लाना. दोनो को रास्ते में ख़तम किया और डिकी में लाश डालकर वापिस हवेली ले आया. रात को दफ़ना दिया" दामूकाका ने जवाब दिया. वो भी जैसे चाहता था के मारने से पहले दामिनी को सब बता दे.

"पर एक सवाल रहता है जिसने ये सारा बखेड़ा शुरू किया. मेरे पति को क्यूँ मारा?" दामिनी ने कहा

"उस दिन श्यामला शकुंतला को मारने के इरादे से निकली थी. वो सोच रही थी के जाकर शकुंतला को मंदिर में ही मारकर आ जाएगी तब जबकि वीरभद्र उसको छोड़के चला जाएगा. मुझे उसके इरादे नेक नही लग रहे थे इसलिए उसपर नज़र रखा हुआ था. वो हवेली से कुछ दूर ही गयी थी के मैने उसका पिच्छा करके उसको रास्ते में रोक लिया.

उससे बात करते हुए मैने ये गन उसके हाथ से छीन ली और अभी हम बात कर ही रहे थे के वीरभद्र जाने क्यूँ हवेली वापिस आ गया. श्यामला मुझपर चिल्ला रही थी और मेरे हाथ में रेवोल्वेर थी. जाने उसने क्या सोचा पर वो चिल्लाता हुआ मेरी तरफ बढ़ा. मैने गोली मार दी.

ये मेरी किस्मत ही थी के उस वक़्त कोई भी नौकर वहाँ से नही गुज़रा वरना घर के सारे नौकर उसी रास्ते से उसी वक़्त घर वापिस जाते थे. वीरभद्र को मारने के बाद मैने श्यामला को डराकर चुप तो कर दिया पर मुझे पता था के वो मुँह खोल देगी इसलिए उसको भी मारना पड़ा."

"अपनी ही बेटी को?" दामिनी ने कहा "प्यार नही था उससे?"

"मुझे सिर्फ़ शकुंतला से प्यार था" दामूकाका बोला

"क्या हो रहा है यहाँ?" दरवाज़े की तरफ से आवाज़ आई तो दामूकाका और दामिनी दोनो पलटे.

दरवाज़े पर राजवर्धन सिंग खड़ा था. इससे पहले के वो कुछ समझ पाता दामूकाका का हाथ फिर सीधा हुआ और रेवोल्वेर से गोली चली और राजवर्धन सिंग के सीने पर लगी.

राजवर्धन सिंग लड़खदाया और अगले ही पल दामूकाका की तरफ बढ़ा. दामूकाका ने फिर फाइयर करने की कोशिश की पर वो पूरी 6 गोलियाँ चला चुका था. गन से फाइयर नही हुआ और राजवर्धन सिंग उस तक पहुँच गया. उसने दामूकाका को गले से पकड़ा और पिछे की तरफ धकेलना शुरू कर दिया. पीछे रखे सोफे पर दामूकाका का पेर फँसा और दोनो नीचे टेबल पर गिरे और फिर ज़मीन पर.

दामिनी खड़ी दोनो की तरफ देख रही थी. दामूकाका नीचे गिरा हुआ था और राजवर्धन सिंग उसके उपेर पड़ा था. दामूकाका के सर से खून नदी की तरह बह रहा था जो टेबल पर गिरने की वजह से लगी चोट से था. इसके बाद ना दामूकाका हिला और ना राजवर्धन सिंग. दामिनी ने झुक कर राजवर्धन सिंग को हिलाने की कोशिश की पर दामूकाका की चलाई गोली ने देर से सही मगर अपना असर ज़रूर दिखाया था. वो मर चुका था.

दामिनी उठकर खड़ी हो गयी. उसे आस पास 7 लाशें पड़ी थी और इनमें से एक लाश उस आदमी की भी थी जिसने उसके पति को मारा था. वो वहीं नीचे ज़मीन पर बैठ गयी. समझ नही आ रहा था के क्या करे. रात का अंधेरा धीरे धीरे फैलने लगा था.

★★★★★★★★★समाप्त★★★★★★★★★